चीन-कल और आज

चीन—कल और आज

के. एम. पणिक्कर

बनारस
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

प्रथम संस्करण, फाल्गुन, संवत् २०१२

मूल्य ४॥)

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस.

मुद्रक—ओम् प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, बनारस. ४८५१-१२

विषय-सूची

पहला परिच्छेद

चीनमें भारतका प्रथम राजदूत

स्वतन्त्रताकी घोषणाके कुछ मास पूर्व ही श्रीमती सरोजिनी नायडूने मुझसे कह रखा था कि देशी रियासतोंके भारतसङ्घमें विलयनका कार्य समाप्त होते ही प्रधान मन्त्रीने मुझे राजदूत बनाकर बाहर भेजनेका निश्चय किया है। प्रान्तों और देशी रियासतोंके बिखरे हुए टुकड़ोंको जोड़कर एक संयुक्त भारतके निर्माणका मुख्य भार श्री कृष्णमाचारी और मुझपर पड़ा था। भारतके तत्कालीन गवर्नर जनरल और भारतीय नरेशोंके सम्बन्धमें ब्रिटिश नरेशके प्रतिनिधि लार्ड माउण्टबैटनके सक्रिय सहयोगसे राष्ट्रीय नेताओंके साथ वार्ता करके हम लोग इन राज्योंपरसे ब्रिटेनकी प्रभुसत्ताकी समाप्तिके फलस्वरूप देशमें उत्पन्न होनेवाले शून्यको भर सकनेमें समर्थ हो सके और देशपरसे ब्रिटिश आधिपत्यकी समाप्तिके लिए नियत तिथि १५ अगस्त १९४७के पूर्व ही इन राज्योंके शान्तिपूर्ण विलयनंका कार्य सम्पन्न हो गया।

१५ अगस्तके कुछ दिनों पूर्व मुझे संयुक्त राष्ट्रसंघकी साधारण सभामें, जिसकी बैठक सितम्बरके मध्यमें न्यूयार्कमें होनेवाली थी, शामिल होनेके लिये भारतीय प्रतिनिधि मण्डलके साथ जानेका निमन्त्रण मिल चुका था। चूँकि यह पहला अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन था जिसमें भारतका प्रतिनिधित्व होनेवाला था, मुझे इससे बड़ी प्रसन्नता हुई कि प्रधान मन्त्रीने उस प्रतिनिधि मण्डलमें शामिल होनेके लिए मुझे चुना है जिसका नेतृत्व श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित करनेवाली थीं। इसके लिए बीकानेर महाराजने भी अपनी सहमति प्रसन्नतापूर्वक प्रदान कर दी, किन्तु अन्तिम क्षणमें अप्रत्याशित कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गयीं। देशके विभाजनके फल-

स्वरूप ऐसी उथल-पुथल मच गयी जिसकी कल्पना पहले किसीको न थी। अभागे पञ्जाबमें आग लग चुकी थी। भारत सङ्घके सीमावर्ती-क्षेत्रोंके मुसलमान और पश्चिमी पाकिस्तानके सिख एकाएक अपना घर-बार छोड़कर भागनेके लिये बाध्य किये गये। दोनों ओर अमानवीय नृशंसता, सामूहिक हत्याओं और भीषण बर्बरताका जैसा नङ्गा नाच हुआ उसकी अब केवल दुःखद स्मृतियाँ ही शेष रह गयी हैं, किन्तु उस समय इन दर्दनाक घटनाओंने सारी दुनियाको हिला दिया था। जिस बीकानेर राज्यका मैं प्रधान मन्त्री था वह इन तमाम उपद्रवोंके बिलकुल केन्द्रमें ही पड़ता था। इसके उत्तर और पूर्वकी ओर पूर्वी पञ्जाब पड़ता था जहाँ हिन्दू और सिख मिलकर मुसलमानोंके खिलाफ खड्गहस्त थे और हत्या, लूट तथा अग्निकाण्डमें लिप्त थे। पश्चिमकी ओर पाकिस्तानमें बहावलपुर पड़ता है जहाँ एक ही दिनमें पाँच हजार हिन्दुओंको तलवारके घाट उतार दिया गया। पाकिस्तानके कोने-कोनेसे हिन्दू और सिख शरणार्थियोंकी बाढ़ राजमें चली आ रही थी। बीकानेरकी मुसलिम जनतामें आतंक फैला हुआ था। मैं यह अच्छी तरह जानता था कि यदि मैंने समय रहते बीकानेरकी सीमाओंपर लगी हुई इस आगको तुरत नहीं बुझाया और इसे फैलनेसे नहीं रोका तो फिर इसे आगे नहीं रोका जा सकेगा और यह आग बम्बई तक फैल जायगी जिसके भयंकर परिणामोंकी कल्पना कोई भी नहीं कर सकता। बीकानेरसे मुसलमानोंको पाकिस्तान खदेड़ देनेकी माँग बढ़ती जा रही थी। राजके सिंचाईकी सुविधासे सम्पन्न क्षेत्र गंगा नगरमें सिखोंका एक शक्तिशाली समुदाय रहता था। पञ्जाबमें उनके भाइयोंपर जो कुछ बीती थी उससे वे मुसलमानोंके खूनके प्यासे हो रहे थे। पड़ोसके पाकिस्तानस्थित बहावलपुर राजके हजारों शरणार्थी उस क्षेत्रमें भी आ चुके थे। इसने जलती आगमें घीका काम किया और मेरी मुसीबतें बढ़ गयीं।

मैंने किसी भी कीमतपर बीकानेरमें उपद्रवको बढ़नेसे रोकनेका पक्का निश्चय कर लिया। मेरे इस निश्चयके पीछे केवल मानवीय विचार और

भावनाएँ ही काम नहीं कर रही थीं, मैं अच्छी तरह जानता था कि राजपूतोंके हृदयमें सोयी हुई मुसलिम विरोधी-भावनाके जग जानेका क्या परिणाम होगा और यदि मैंने इस मामलेमें जरा भी कमजोरी दिखलायी तो राजपूताना पञ्जाबके भीषण रक्तकाण्डके इतिहासको सम्भवतः उससे भी कहीं अतिरञ्जित रूपमें दोहरा देगा। महाराजा सादूलसिंहने मेरे इस विचारका पूर्ण समर्थन किया और पञ्जाबमें उपद्रव शुरू होनेका पहला समाचार मिलते ही मैंने महाराजाकी अनुमतिसे राजकी सर्वोत्तम सैनिक टुकड़ियोंको पञ्जाब और बहावलपुरकी सीमापर स्थित गंगा नहर क्षेत्रमें भेज दिया। मैंने व्यक्तिगत रूपसे भी उस क्षेत्रका दौरा किया और लोगोंको यह स्पष्ट बता दिया कि सरकार अपनी मुस्लिम प्रजापर होनेवाले किसी आक्रमणको बर्दाश्त न करेगी। सेनाको उपद्रवियोंको गोली मारनेका आदेश दे दिया गया है। सरकारी अधिकारियोंको सामूहिक जुर्माने लगाने और जमीनोंको जब्त करनेका अधिकार भी प्राप्त हो चुका है। एक सप्ताहके अन्दर ही स्थिति इतनी शान्त हो गयी कि मैंने सोचा कि अब मैं निश्चिन्त होकर प्रतिनिधि मण्डलमें शामिल हो सकता हूँ और न्यूयार्क जा सकता हूँ।

किन्तु सितम्बरके पहले सप्ताहमें ही एक नयी और उससे भी भयानक स्थिति उत्पन्न हो गयी, यद्यपि राजमें असाधारण शान्ति थी और किसी प्रकारकी कोई अप्रिय घटना नहीं हुई थी। मुझे यह समाचार मिला कि सीमापर विभिन्न स्थानोंपर शिविरोंमें हजारोंकी संख्यामें मुस्लिम शरणार्थी बीकानेरसे होकर पाकिस्तान जानेके इरादेसे एकत्र हो रहे हैं। इनकी कुल संख्या ८० हजार थी और ये तीन शिविरोंमें बँटे हुए थे। इनके किसी भी समय बीकानेरके प्रदेशमें घुस आनेका खतरा उत्पन्न हो गया था। भारत सरकारने इन शिविरोंके लिए जितने सैनिक रक्षक भेजे थे वे बिलकुल अपर्याप्त थे, क्योंकि भारतीय सेनाका अधिकांश अभी पाकिस्तानमें ही था और जो सेना भारतमें सुलभ हो सकती थी उसकी आवश्यकता दूसरे महत्त्वपूर्ण कार्योंके लिए थी। मुझे पता चल गया था

कि शरणार्थी-शिविरोंपर आक्रमण करनेके लिए तैयार गुण्डोंके दलके दल निकटस्थ क्षेत्रमें जमा हो गये हैं। मैं यह स्पष्ट रूपसे समझ रहा था कि उनमें व्यापक संघर्ष छिड़ गया तो शरणार्थी विभिन्न स्थानों और दिशाओंसे बलात् राजमें घुस आयेंगे और गड़बड़ी पैदा कर देंगे। मैंने इस बातकी बहुतेरी कोशिश की कि भारत सरकार इन आक्रमणोन्मुख समूहों-को हटानेके लिए रेलगाड़ियोंकी व्यवस्था करे। मैं तो स्वेच्छाप्रयोगके लिए सरकारको रेलके डब्बे देनेके लिए भी तैयार था, यदि वह रेल-गाड़ियोंके लिए सैनिक रक्षकोंकी व्यवस्था कर सकती। पञ्जाबसे उद्-वासित लाखों हिन्दू और सिख शरणार्थियोंकी समस्यासे भारत-सरकार इतनी परेशान थी कि वह मुझे इस मामलेमें कोई सहायता करने की स्थितिमें ही न थी। इन सारी परिस्थितियोंको देखते और यह समझते हुए कि सीमापर विभिन्न स्थानोंमें परिस्थिति किस प्रकार क्षण-क्षणपर खतरनाक होती जा रही है, मैंने अपनी ही जिम्मेदारीपर एक बहुत ही साहसिक निर्णय कर डाला। मैंने यह तय किया कि कुछ शरणार्थियोंको बीकानेर राज रेलवेकी स्पेशल गाड़ियोंसे और कुछको पैदल ही राजसे होकर गुजरनेकी व्यवस्था कर उन्हें राजसे बाहर कर दिया जाय। किन्तु इस निर्णयको कार्यान्वित करनेकी समस्या बड़ी टेढ़ी थी, क्योंकि राजका जनमत बहुत ही उत्तेजित था और गंगा नगर क्षेत्रमें, जहाँसे ये शरणार्थी गुजरते, ऐसे कई हजार पाकिस्तानी शरणार्थी एकत्र हो गये थे जो प्रतिशोधके लिए बौखला उठे थे। जब मैंने महाराजके सामने यह सारी स्थिति स्पष्ट की तो उन्होंने मेरे विचारका उत्साहपूर्वक स्वागत किया और लोगोंको यह बता दिया कि मुसलमानोंको पाकिस्तान ले जानेवाली मुसाफिर गाड़ियोंपर यदि राजकी जनता या शरणार्थियों-मेंसे किसीने भी किसी प्रकारका हमला या हस्तक्षेप किया तो उसके खिलाफ कड़ीसे कड़ी कारवाईकी जायगी और महाराजको यह जरा भी बर्दाश्त न होगा। मुसलिम शरणार्थियोंका पहला जत्था सुरक्षित ढंगसे पाकिस्तान गुजर गया और रास्तेमें कोई भी अप्रिय घटना नहीं हुई।

इससे मेरा साहस बढ़ा और मैंने दूसरे जत्थेको इस बार पैदल ही रवाना होनेका आदेश दिया। इस जत्थेके साथ केवल पुलिस-रक्षक थे। कुछ हजार लोगोंको, जिनमें स्त्रियाँ और बच्चे भी शामिल हों, दो सौ मील रेगिस्तानसे ले जानेके लिए व्यापक प्रबन्ध करना पड़ा। उनके लिए भोजन और जलकी व्यवस्था करनी पड़ी, हमेशा स्थानीय जनताको उनसे दूर रखना पड़ा और हर समय इस बातकी सावधानी रखनी पड़ती थी कि कहीं क्रुद्ध हिन्दू शरणार्थियोंका हमला न हो जाय। जब शरणार्थियोंका यह लम्बा-चौड़ा जत्था भी सारी मुसीबतोंको झेलता हुआ पाकिस्तान पहुँच गया तो मैंने संतोषकी साँस ली। महाराजको भी इससे बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्हें इस बातका बड़ा गर्व हुआ कि केवल उन्हींका राज एक ऐसा राज निकला जिसमें न केवल कोई मुसलिम विरोधी घटना नहीं हुई, बल्कि जहाँ स्थिति इतनी सामान्य और शान्तिपूर्ण बनी रही कि हजारों मुसलिम शरणार्थियोंको केवल पुलिसके संरक्षणमें राजसे बाहर किया जा सका और उन्हें पाकिस्तान पहुँचाया जा सका। उन्होंने यह अनुभव किया कि अब स्थिति पूर्णतः सामान्य है और मैं संयुक्तराष्ट्रसंघकी साधारण सभाके कार्योंमें शामिल होनेके लिए निश्चिन्ततापूर्वक न्यूयार्क जा सकता हूँ।

विगत कुछ सप्ताहोंका कार्यभार दिल और दिमागको बुरी तरहसे थका डालनेवाला था, किन्तु राजका दौरा करके मुझे इस बातसे बड़ा संतोष हुआ कि अब किसी गम्भीर घटनाकी सम्भावना नहीं रह गयी है। इसलिए मैं १७ सितम्बरको बीकानेरसे न्यूयार्क रवाना हो गया। रास्तेमें मुझे लन्दनमें श्री कृष्ण मेनन तथा अन्य मित्रोंसे विचार विमर्श करनेके लिए दो दिनोंके लिए वहाँ रुकना पड़ा। जब मैं न्यूयार्क पहुँचा तो साधारण सभाकी बैठक एक सप्ताह पहलेसे ही आरम्भ हो चुकी थी और प्रतिनिधि मण्डलमें मेरे स्थानकी पूर्ति अस्थायी रूपसे श्री विधानचन्द्र राय, जो बादमें बंगालके मुख्यमन्त्री बने और जो संयोगसे उस समय न्यूयार्कमें ही थे, कर रहे थे।

प्रतिनिधि मंडलकी नेत्री श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित थीं और राजा महाराजसिंह (जो बादमें बम्बईके राज्यपाल नियुक्त हुए), पटना उच्च न्यायालयके मुख्य न्यायाधीश श्रीफजले अली, भारतके महाधिवक्ता श्री सीतलवाड, श्री बी० शिवराव तथा मैं उसमें सदस्य रूपसे शामिल था। हम लोगोंके अतिरिक्त प्रतिनिधि मण्डलमें विशिष्ट परामर्शदाता और हम लोगोंकी अनुपस्थितिमें हम लोगोंके स्थानकी पूर्ति करनेवाले व्यक्ति भी शामिल थे। श्रीमती पण्डित आरम्भसे ही मुझमें अपना विश्वास प्रकट करने लगीं। जिस दिन मैं न्यूयार्क पहुँचा उसी दिन उन्होंने साधारण सभामें यूक्रेनके प्रतिनिधिमण्डलके नेता श्री मैनुएलस्कीसे, जो एक तपेतपाये बोल्शेविक नेता थे, वार्ता करनेके लिए मुझे अपने साथ चलनेको कहा। हमलोग लेक सक्सेससे कुछ मील दूर एक बहुत बड़े शाही महल जैसे भवन तक मोटरसे गये। वहाँ हमलोगोंके लिए दावतका विस्तृत आयोजन किया गया था। दावतके बाद हमलोग बातचीत करनेके लिए बैठे। श्रीमती पण्डितने श्री मैनुएलस्कीसे जिज्ञासा प्रकटकी कि इस वर्ष भारतीय प्रतिनिधिमण्डलके प्रति सोवियत यूनियनके दृष्टिकोणमें हार्दिकताकी कमी होनेका क्या कारण है। श्री मैनुएलस्की बहुत स्पष्टवादी थे। उन्होंने जो उत्तर दिया उसका मुख्य आशय यह था कि 'कोरिया और यूनानमें आपका क्या स्वार्थ है? प्रतिरक्षाकी दृष्टिसे हमारे लिए इन क्षेत्रोंका बड़ा महत्त्व है। इन मामलोंमें भारत हमारे हितके विरुद्ध क्यों दिलचस्पी लेता है?' इससे यह स्पष्ट हो गया कि भारतके दृष्टिकोणके प्रति रूसियोंमें एक अनिश्चयकी भावना घरकर गयी थी और वे अपने महत्त्वके प्रश्नोंके प्रति हमारे दृष्टिकोणको सामान्यतः सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगे थे।

साधारण सभाकी १९४७ की बैठक बहुत मानोंमें एक बड़ी विभाजक रेखा थी। मार्शल योजनाका कार्यान्वय आरम्भ होनेके बाद यह पहली बैठक थी और चेकोस्लोवाकियामें होनेवाले उन परिवर्तनोंके पूर्व, जिन्होंने सोवियत प्रतिरक्षाकी व्यवस्थाके अन्तर्गत उस देशको एक जनवादी लोकतान्त्रिक राष्ट्रका रूप दे दिया था, होनेवाली यह अन्तिम बैठक थी।

पूर्व और पश्चिमकी प्रतिद्वन्द्विता धीरे-धीरे स्पष्ट हो रही थी और सोवियत गुट संसारको यह दिखानेका गम्भीर प्रयत्न कर रहा था कि अमेरिका और पश्चिमी मित्रराष्ट्र उन युद्धकालीन समझौतोंसे निश्चित रूपसे दूर होते जा रहे हैं जो उसकी रायमें संयुक्तराष्ट्रसंघके आधार हैं। कोरिया और यूनानके प्रश्नोंने उन्हें यह हमला करनेके लिए शस्त्र प्रदान कर दिये। कोरियाके सम्बन्धमें सोवियत रूसकी स्थिति बिलकुल स्पष्ट और सरल थी। उसका दृष्टिकोण यह था कि साधारण सभाको अपने घोषणापत्रके अनुसार युद्ध सम्बन्धी समझौतेसे सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नोंपर विचार करनेका अधिकार नहीं है; कोरियाका प्रश्न एक ऐसा प्रश्न है जिसका निबटारा पूर्वकी चार महाशक्तियों, अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत यूनियन और चीनके बीच विचार-विमर्शसे ही हो सकता है और साधारण सभा अपने विचारणीय विषयोंकी सूचीमें कोरियाके प्रश्नको लाकर दूसरेके अधिकारोंका बलपूर्वक अनुचित ढंगसे उपयोग कर रही है। यूनानके सम्बन्धमें श्री मैनुएल्स्कीका दृष्टिकोण यह था कि यह उस देशकी आन्तरिक राजनीतिमें आंग्ल-अमेरिकी हस्तक्षेपका प्रश्न है और रूस इससे अधिक कुछ नहीं चाहता कि यूनानकी समस्याका समाधान स्वयं यूनानियोंको ही करने दिया जाय। श्री मैनुएल्स्कीने सोवियत दृष्टिकोणका समर्थन करनेकी नहीं बल्कि उसके प्रति केवल तटस्थताकी माँग की।

तीसरी समिति (आर्थिक और सामाजिक) की कार्यवाहियोंमें मेरी बड़ी दिलचस्पी थी किन्तु उससे भी अधिक दिलचस्पी मुझे उस उच्च-स्तरीय राजनीतिक नाटकमें हुई जो क्रमशः हमलोगोंके सामने खुलता जा रहा था। जैसे-जैसे दिन बीतते गये वाद-प्रतिवाद अधिकसे अधिक उग्र होते गये। कभी-कभी इनकी उग्रता इतनी बढ़ जाती थी कि इन बहसोंका स्तर गन्दे गाली-गलौजतक उतर आता था। यह स्पष्ट होने लगा कि हम एक ऐसे लम्बे अन्तरराष्ट्रीय तनातनीके युगमें प्रवेश कर रहे हैं जिसमें संसार दो प्रतिद्वन्द्वी शिविरोंमें बँटता जा रहा है। रूसके सारे कार्योंकी प्रेरणा, ऐसा प्रतीत होता था, इस बातसे मिल रही थी कि उसे विश्वास

हो गया था कि संयुक्त राष्ट्रसंघ यदि आवश्यक हुआ तो 'निरोधक' युद्धसे भी साम्यवादका प्रसार सीमित करनेके लिए कृतसंकल्प है और कोरिया तथा यूनानकी समस्याएँ साम्यवादी राजको परितः सीमित रखनेके बड़े उपक्रमकी दिशामें उठाये गये आरम्भिक कदमोंके परिणाम हैं। चेकोस्लोवाकियाकी घटनाओंसे, जिन्हें पश्चिमी राष्ट्र यूरोपीय सुरक्षाके लिए एक बड़ा खतरा मानते थे, अमेरिका अपनी अनिश्चयकी स्थितिसे बाहर आनेके लिए बाध्य हो रहा था। मैं चेकोस्लोवाकियाके परराष्ट्र मन्त्री श्री जान मसारिक को युद्धके पहलेसे ही जानता था जब वे लन्दनमें अपने देशका प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वे साधारण सभामें चेक प्रतिनिधि मण्डलका नेतृत्व कर रहे थे। उनके साथ समस्याओंपर विचार-विमर्श करनेका मुझे एक मौका मिल गया। वे रूसी गुटके साथ अपने देशके रहनेके निश्चयका बड़े जोरदार ढंगसे समर्थन कर रहे थे। इसके लिए उनका तर्क यह था कि अमेरिकी समर्थन और सहायतासे जर्मनीमें सैनिकवादके पुनरुज्जीवित हो जानेकी सम्भावना है। जर्मनीका यही खतरा उनका पीछा करता हुआ नजर आ रहा था। इससे मुझे और अधिक आश्चर्य हुआ क्योंकि १९३५ और '३६ में, जब मेरा उनसे परिचय शुरू हुआ, उनके मित्र और सहयोगी मुख्यतः जर्मन व्यापारी ही थे। किन्तु यह स्थिति उस समयकी है जब हिटलरने चेकोस्लोवाकियाके विरुद्ध आक्रमण नहीं किया था और हाचाके फुहरेरसे मिलनेके बाद विपत्तियोंसे भरे हुए जो आठ वर्ष बीते उनमें श्री मसारिक प्रत्येक दृष्टिसे स्वयं भी पश्चिमी थे।

संयुक्त राष्ट्रसंघके सामने एक दूसरा प्रश्न भी था जिसमें मेरी गहरी दिलचस्पी थी। यह प्रश्न था फिलस्तीनके विभाजन और एक स्वतन्त्र यहूदी राजकी स्थापना सम्बन्धी यहूदी दावेका। कर्नल जोसिया वेजउडने १९२६ में ही यहूदियोंके महान् नेता प्रेसिडेण्ट चाइम वीजमैनसे मेरा परिचय करा दिया था। १९४३ में मैं उनसे पुनः न्यूयार्कमें मिला था। इस बार मुझे श्री जानफास्टर उनके पास ले गये थे और हमलोगोंकी एक घंटेतक वार्ता हुई थी। श्री एहिलू एप्सटीन

(अब एलाट) तथा मोशे शैरेट जैसे कतिपय अन्य यहूदी नेताओं-से मेरा वर्षोंका मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध था। फिर भी फिलस्तीनमें स्वतन्त्र यहूदी राजके निर्माणके प्रश्नपर मेरी पूरी सहानुभूति जिओनिस्टों (यहूदियों) के साथ नहीं थी। अरबोंके प्रति भारतका दृष्टिकोण सदासे मैत्रीपूर्ण रहा है। यहूदियोंके इस दावेसे, कि फिलस्तीनमें उनके लिए एक राष्ट्रीय आवास होना चाहिये, सहानुभूति रखते हुए भी मेरे विचारसे साम्प्रदायिक और धार्मिक ऐकान्तिकतापर आधृत उनकी एक स्वतन्त्र राज बनानेकी माँगसे एक तो इस्लामी धर्मोन्मादके पुनरुज्जीवित हो जाने-का खतरा था, दूसरे, यह माँग फिलस्तीनके अरबोंकी दृष्टिसे भी अनुचित और अन्यायपूर्ण थी। अतएव भारतीय प्रतिनिधिमण्डलके हम सदस्यगण एक ऐसा क्षेत्रीय सङ्घ बनानेके पक्षमें थे जिसमें यहूदी और अरब एक साथ पड़ोसियोंकी तरह रह सकें। डाक्टर वीजमैन न्यूयार्कमें सवाय प्लाजा होटलमें रहते थे। श्रीमती पण्डितकी सहमतिसे मैं उनसे भारतीय दृष्टि-कोणको स्पष्ट करनेके लिए कई बार मिला। इसमें सन्देह नहीं कि वे मेरी बातें बड़े धैर्यपूर्वक सुनते थे किन्तु, जब कोई ऐसा प्रश्न आ जाता था जिसे वे एकान्त न्यायका प्रश्न मानते थे तो फिर सभी महान् पुरुषोंकी तरह वे भी उसपर टससे-मस नहीं होते थे। मैं अबतक जितने आदमियोंसे मिल चुका हूँ उनमें वीज़मैनकी गणना निस्सन्देह सर्वाधिक महत्त्वके व्यक्तियोंमें होगी। उनकी उपस्थितिमें मुझे सम्भ्रम, समादर और विनयकी वैसी ही भावना हुई है जैसी महात्मा गांधीकी उपस्थितिमें होती थी। दोनोंमें वही उच्चतम आध्यात्मिक गुण था जो उनके पास आनेवाले लोगोंपर स्वतः अपना प्रभाव डाल देता था। उनसे अरबोंके अधिकार और प्रस्तुत समस्याके भारतीय समाधानकी बुद्धिमत्तापर कोई विचार अथवा बहस करना वस्तुतः बिलकुल व्यर्थ था किन्तु ऐसा करनेमें मैं संकोच नहीं करता था क्योंकि मैं यह अनुभव करता था कि उनसे वार्ता करना स्वयं एक गौरवकी बात है और यदि किसी भी बहानेसे इसका मौका मिलता है तो चूकना नहीं चाहिये। फिर, इस मामलेमें स्वयं बहाना

भी कुछ ऐसी चीजका था जिससे शान्तिका मार्ग ढूँढ़ निकालनेका प्रयत्न किया जा सकता था।

वह दृश्य साधारण सभाके उस सत्रके सबसे प्रभावकारी और अनुप्रेरक दृश्योंमेंसे था जब डाक्टर वीज़मैनने राजनीतिक आयोगके समक्ष साक्ष्य देनेके लिए स्वयं पदार्पण किया। सारा कमरा ठसाठस भरा हुआ था। सांस लेनेकी भी जगह न रह गयी थी क्योंकि लेक सक्सेसमें सभी लोग यह सोचते थे कि यह ऐतिहासिक अवसर है। बाइबिलमें वर्णित किसी देवपुरुषके समान दिखाई पड़नेवाली वयोवृद्ध जिओनिष्ट नेताकी वह गरिमामयी मूर्ति, अपने दोनों ओरके नवयुवकोंका सहारा लिये हुए, धीरे-धीरे आगे बढ़ती हुई सभामण्डलमें उपस्थित हो गयी। स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि यह कष्ट उठा पाना उस वृद्ध पुरुषकी शक्तिकी सीमाके परे है। एकमात्र अपनी लौह-संकल्प-शक्तिके सहारे ही वे विश्वके राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंकी उस सभामें अपने देशकी जनताका पक्ष उपस्थित करने और उसकी वकालत करनेके लिए आ सके हैं। उनके आते ही सभामें निःस्तब्धता छा गयी और जब अध्यक्षने उन्हें भाषण करनेके लिए कहा तो सभी लोग उनकी बातें सुननेके लिए उत्कर्ण हो उठे। उनके लिए पढ़ सकना भी कठिन था क्योंकि उनकी आँखें बिलकुल कमजोर हो गयी थीं। उनके बोलनेका ढंग भी कोई खास प्रभावकारी न था। वे अंग्रेजी रुक-रुक कर बोल रहे थे और उनका उच्चारण स्वर भी विलक्षण ही था। किन्तु फिर भी वहाँ एकत्र सभी व्यक्तियोंने उनकी उपस्थितिके चुम्बकीय प्रभावका अनुभव किया और सभीको यह महसूस हुआ कि यह जो वृद्ध पुरुष उनके सामने भाषण कर रहा है इसने किसी एक ऐसी वस्तुके प्रति अपनेको समर्पित कर दिया है जिसके सामने उसके लिए दुनियाकी सारी दौलत कुछ नहीं है। व्यक्तिगत दृष्टिसे भी यह अवसर उच्चकोटिके नाटकीय तत्त्वोंसे समन्वित हो गया था। जिस क्षणके लिए डाक्टर वीजमैन जीवनभर अनवरत परिश्रम करते रहे वही अमूल्य क्षण आ पहुँचा था। संसारमें ऐसे भाग्यवान् बिरले ही मिलेंगे जिनके जीवनमें ही उनके आदर्श

चरितार्थ हो सके हों। श्री चाइम वीजमैनके लिए यह विजयोल्लासका क्षण था फिर भी उनकी मनोदशा हर्षोल्लासकी नहीं बल्कि विनम्रता और विनयकी थी। दूसरे दिन मैं उन्हें व्यक्तिगत रूपसे बधाई देनेके लिए सवाय प्लाजा गया। उनके अभिनन्दनमें मैंने जो चन्द शब्द कहे उससे मुझे ऐसा लगा कि प्रगाढ़ अनुभूतिसे उनका हृदय विचलित हो उठा है।

महत्त्वका एक और भी विषय था जिसमें मुझे मामूली हिस्सा बटाना पड़ा है। साधारण सभाकी बैठक अभी होही रही थी कि अमेरिकी पत्रोंमें इस आशयके समाचार छपने शुरू हो गये कि कश्मीरपर कबायलियोंका आक्रमण हो रहा है, पाकिस्तानकी सक्रिय सहायतासे सशस्त्र आक्रामकोंकी एक बड़ी सेना राजमें घुस गयी है और महाराजकी सरकारका शीघ्र ही पतन होनेवाला है। दूसरे ही दिन यह समाचार मिला कि आक्रामक कश्मीरकी घाटीमें घुस गये हैं और राजधानी श्रीनगरके निकट बढ़ते जा रहे हैं। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल इन समाचारोंसे अत्यन्त उद्विग्न हो उठा था। किन्तु उसी दिन शामको श्रीमती पण्डितको प्रधानमन्त्री श्री नेहरूका एक व्यक्तिगत तार प्राप्त हुआ जिसमें बताया गया था कि राजके सबसे बड़े राजनीतिक दलके समर्थनसे महाराजने भारतसंघमें कश्मीरका विलय कर दिया है। सेनाएँ विमानोंसे श्रीनगर भेज दी गयी हैं और वे शत्रुका सामना कर रही हैं।

कश्मीरमें हस्तक्षेप और कबायलियोंके आतंकसे उसकी रक्षा करनेकी भारतके निश्चयकी कहानी सभीको मालूम है। किन्तु भारत सरकारके इस निश्चयसे उन अनेक सरकारोंको बड़ा आश्चर्य हुआ जो किसी भी कारणसे यह मान बैठी थीं कि कश्मीर पाकिस्तानमें चला जायगा। जब नयी दिल्ली से आनेवाले संवादोंमें यह संकेत मिलने लगा कि भारत सम्भवतः सुरक्षा-परिषद्के सामने पाकिस्तानपर आक्रमण करनेका अभियोग लगानेवाला है तो इससे संयुक्तराष्ट्रसङ्घीय क्षेत्रोंमें एक दबी हुई सनसनी दौड़ गयी। प्रश्नके इस पहलूके सम्बन्धमें यद्यपि प्रतिनिधिमण्डलको कोई सूचना नहीं मिली थी फिर भी प्रधान मन्त्रीने अपने एक व्यक्तिगत सन्देशमें श्रीमती

पण्डितसे कहा था कि वे अमेरिकी परराष्ट्र मन्त्री जेनरल मार्शलसे सम्पर्क स्थापित करके उन्हें भारतके दृष्टिकोणसे परिचित करा दें। उन्हें मालूम था कि मैं एक समय कश्मीरकी सरकारी सेवामें रह चुका हूँ और तबसे भारतीय नरेश मण्डल सम्बन्धी अपने कार्यमें कश्मीरके घटनाचक्रके सम्बन्धमें बराबर पूरी जानकारी रखता रहा हूँ। अतएव उन्होंने मुझे न केवल वार्ताके समय उपस्थित रहनेको कहा बल्कि भारतके दृष्टिकोणको उपस्थित करनेका भार भी मुझपर छोड़ दिया।

जार्ज मार्शल एक सम्मेलनमें शामिल होनेके लिए ब्रिटेन जानेवाले थे। अतः उन्होंने न्यूयार्कमें श्रीमती पण्डितसे मिलकर उक्त विषयपर विचार-विमर्श करनेका भार श्री लाय हण्डरसनपर, जो बादमें भारतमें अमेरिकी राजदूत बनाये गये, छोड़ दिया। इस बीच मैंने समूचे प्रश्नपर एक स्मृतिपत्र तैयार कर लिया था। अतः श्री हण्डरसनने जब श्रीमती पण्डितसे उनके होटलमें मुलाकातकी तो श्रीमती पण्डितने मुझे उनके सामने न केवल कश्मीरमें कबायली आक्रमणके विरुद्ध की गयी सैनिक काररवाईके सम्बन्धमें बल्कि भारत संघमें महाराजके विलयसे उत्पन्न होनेवाली संवैधानिक स्थितिके सम्बन्धमें भी भारत सरकारकी स्थिति स्पष्ट करनेको कहा। मैंने हण्डरसनको अपना तैयार किया हुआ स्मृतिपत्र भी दे दिया। जहाँ तक मैं समझता हूँ कश्मीरके प्रश्नपर अमेरिका और भारतके प्रतिनिधियोंके बीच होनेवाला यह प्रथम विचार-विमर्श था।

मुझे यह सोचकर सन्तोष हुआ कि कश्मीरमें जो हुआ है उसकी प्रतिक्रिया अन्य देशी रियासतोंमें भी होगी। बीकानेरसे मुझे इस आशयकी सूचना मिली कि वहाँकी लोकप्रिय पार्टियाँ महाराजपर दबाव डाल रही हैं कि वे अपनी निरंकुश शक्ति भारतसंघको समर्पित कर दें। इस सूचनासे मेरा तत्काल भारत लौट आना आवश्यक हो गया। तीसरी समितिका कार्य भी समाप्त हो चुका था। अतः प्रधान मन्त्रीकी अनुमतिसे मैं प्रतिनिधि मण्डलके अन्य सदस्योंसे पहले ही भारत लौट आया। मैं एक दिनके लिए लन्दनमें रुक गया। वहाँ मुझे एक बहुत ही महत्त्व-

पूर्ण सूचना मिल गयी। सवाय होटलमें, जहाँ मैं ठहरा हुआ था, मेरी मुलाकात बरारके राजकुमारके पार्श्वचर कर्नल वाघरेसे हो गयी। उनसे मालूम हुआ कि हैदराबाद सरकार चोरी-चोरी भारी परिमाणमें शस्त्रास्त्रोंकी खरीद कर रही है। उन्होंने शस्त्रास्त्रोंके कुछ सौदोंका ब्योरेवार विवरण भी दिया। इनका एकमात्र उद्देश्य भारतके विरुद्ध गम्भीर सैनिक काररवाई करना ही हो सकता था। यह स्मरण रखनेकी बात है कि इसी समय भारतीय सेना कश्मीरमें बुरी तरह व्यस्त थी और विभाजनके फलस्वरूप अनेक सैनिक इकाइयोंका पूरी तरहसे पुनः संघटन भी नहीं हो पाया था। सैनिक दृष्टिसे भारत एक कमजोर स्थितिमें था। जैसा कि बादकी घटनाओंसे स्पष्ट हो गया, भारतकी इसी दुर्बलताको निजामके सलाहकारोंने बहुत बढ़ा-चढ़ाकर समझ लिया था।

दिल्ली पहुँचकर पहला काम मैंने यह किया कि संविधान सभामें, जिसका मैं सदस्य था, जाकर गृहमन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेलको कर्नल-वाघरे द्वारा प्राप्त सूचनासे अवगत कराया। उन्होंने ब्रिटेनमें हैदराबाद सरकार द्वारा शस्त्रास्त्रोंकी खरीद और ऐसे शस्त्रास्त्रोंको जिनका सौदा हो चुका था, हैदराबाद पहुँचनेसे रोकनेकी तत्काल काररवाई की। बीकानेरमें कुछ समय तक ठहरनेके बाद मैं संसदकी वैदेशिक-विषय समितिकी बैठकमें शामिल होनेके लिए दिल्ली लौट आया। बैठकके बाद नेहरूजीने मुझसे बिल्कुल योंही मोटरमें साथ चलनेको कहा। मुझे आगे जो कुछ आनेवाला था उसका जरा भी ख्याल न था। मोटरमें चुपचाप चलते अभी दस मिनट बीते होंगे कि नेहरूजी मुझसे एकाएक पूछ बैठे— 'क्या आप एक राजदूतका पद सम्भालनेके लिए बाहर जानेको मुक्त हैं?' मैंने जवाब दिया कि बीकानेरमें मेरा कार्य करीब-करीब समाप्त हो रहा है और ज्योंही मुझे वहाँके कामसे छुट्टी मिली मुझे वे जहाँ भी चाहें सेवाके लिए भेज सकते हैं। उन्होंने पूछा—'अन्दाजन कबतक आपको छुट्टी मिल जायगी?' मैंने कहा—'यही पहली अप्रैलतक'। 'इससे पहले क्यों नहीं? क्योंकि महाराज तो राजमें लोक-प्रिय सरकार बनाने जा रहे हैं?'

मैंने उन्हें बताया कि राजके अनेक छोटे-मोटे कामोंको दुरुस्त करनेके अलावा मैं संविधान सभा की, जिसका मैं नामजद सदस्य हूँ, विभिन्न समितियोंमें अपना कार्य जारी रखनेके लिए उत्सुक हूँ। मैं समझता हूँ कि पहली अप्रैल तक इन समितियोंका कार्य भी समाप्त हो जायगा। मैं संविधानके मौलिक सिद्धान्तों तथा मौलिक अधिकारोंके सम्बन्धमें गठित समितियों, अल्पसंरक्षकों तथा पिछड़ी जातियोंके सम्बन्धमें बनी कमेटियाँ एवं अन्य छोटी-मोटी संस्थाओंका सदस्य हूँ। इनके प्रतिवेदन तैयार हो चुके हैं किन्तु अभी संविधान सभा द्वारा पारित नहीं हुए हैं। जब मैंने अपने राष्ट्रके संविधानके निर्माणकी आखिरी मंजिलसे सम्बद्ध रहनेकी अपनी इच्छा प्रकट की तो नेहरूजी हँस पड़े। बोले—'इसमें जितना आप सोचते हैं उससे कहीं अधिक समय लगेगा। चूँकि समितियोंने अपनी रिपोर्टें भेज दी हैं और मामला अब संविधान सभाके हाथमें आ गया है मेरी समझमें अब आपको इस सम्बन्धमें अधिक चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है। मैं तो चाहता था कि आप और जल्दी ही खाली हो जाते। खैर हम अप्रैल तक इन्तजार कर सकते हैं।' यहीं हमारी वार्ता समाप्त हो गयी। यह नेहरूजीकी विशेषताका ही परिचायक है कि उन्होंने यह भी नहीं बताया कि आखिर मेरी नियुक्ति कहाँ होनेवाली है। दूसरे दिन श्री गिरिजाशंकर वाजपेयीने, जो उस समय परराष्ट्र विभागके महा-सचिव थे, बताया कि प्रधानमन्त्री मुझे चीनमें नियुक्त करना चाहते हैं।

अनेक लोगोंने यह दावा किया है कि प्रधान मन्त्रीको मेरे नामका सुझाव देनेका श्रेय उन्हें मिलना चाहिये। शायद उन्होंने ऐसा किया भी था। मुझे मालूम है कि मेरी नियुक्तिके सम्बन्धमें नेहरूजीने श्रीमती सरोजिनी नायडू तथा श्रीमती पण्डितसे विचार-विमर्श किया था। मैंने १९२४ से १९२७ तक नेहरूजीके साथ काम किया था और वे मुझे उस समय अच्छी तरह जानते थे। भारतीय संविधानके अन्तर्गत देशी रियासतों-के लानेके कार्यके सिलसिलेमें हमें पुनः एक साथ काम करनेका अवसर मिला था। यद्यपि मैंने इसका पता लगानेका कभी प्रयत्न नहीं किया किन्तु

यह सम्भव है कि मेरे प्रति श्रीमती सरोजिनी नायडूका, जो मुझे हमेशा अपने परिवारका एक सदस्य समझती थीं, जो अनन्य स्नेह था उसका भी नेहरूजीके विचारोंको मेरे पक्षमें मोड़नेमें बड़ा हाथ रहा हो। जो भी हो, ज्योंही मेरी नियुक्ति तय हो गयी मैंने लखनऊ जाकर, जहाँ वे भारतके सबसे बड़े प्रान्तके राज्यपालके रूपमें निवासकर रही थीं, उनको व्यक्तिगत रूपसे इसकी जानकारी देना अपना कर्तव्य समझा।

मैंने अन्तिम बार इस प्रभावशालिनी महिलाके दर्शन किये जिसका स्थान देशके लम्बे इतिहासमें पैदा होनेवाली महान् महिलाओंमें अन्यतम है। उच्चकोटिकी कवयित्री, अनुपम वाग्मितासे सुसम्पन्न वक्ता, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकी, उसकी महत्तम शक्ति और प्रभावके दिनोंमें, अध्यक्षता करनेवाली राष्ट्रीय नेत्री तथा वाग्विदग्धता, आकर्षण और लालित्यके वरदानसे विभूषित महिला—और इन सबसे ऊपर एक अन्यतम सुहृद, अत्यन्त मानवीय और करुणामयी नारीके रूपमें श्रीमती नायडूने चालीस वर्षोंसे भी अधिक समयतक देशके बुद्धिजीवी वर्गके जीवनको प्रभावित किया है। उन्होंने प्राचीन और नवीनके बीच सेतुका काम किया है। वे गोखलेकी मित्र हैं और बहुत पहलेसे ही महात्मा गाँधीकी अनुयायिनी रही हैं। जहाँ कहीं भी वे रहती थीं उनका स्थान आवारा शायरों, बदनाम कलाकारों, नये फैशनकी महिलाओं और राष्ट्रीय नेताओंका सम्मिलन स्थल बन जाता था। उनके यहाँ हरेकका स्वागत था। हरेकके लिए वे भारतमाता ही थीं। जिस समय वे संविधान सभामें शामिल होनेके लिए दिल्लीमें थीं उन्हें संसद भवनतक ले जाना और वहाँसे वापस ले आना मेरा कर्तव्य था। जिस दिन वे संयुक्तप्रान्त (उत्तरप्रदेश) के राज्यपालका पद सम्भालनेके लिए दिल्लीसे बिदा हुई थीं दिल्ली रेलवे स्टेशनपर जनताने अपनी हृद्गत भावनाओं और प्रेमका जैसा प्रदर्शन किया था वह देखते ही बनता था।

लखनऊमें तो एक रानीकी तरह उनका दरबार लगा करता था। सरकारी भवनके मुसलिम मुलाजिम तो, जिन्हें उनके आनेके पूर्व बर्खास्तगीका डर बना हुआ था, उनकी पूजा करते थे। लखनऊ सदियों

तक मुसलिम संस्कृतिका केन्द्र रहा है। लखनऊकी सम्भ्रान्त मुसलिम महिलाएँ उन्हें अपना संरक्षक और मित्र मानती थीं। श्रीमती नायडूमें एक कमजोरी थी—वे बढ़िया किस्मका खाना हदसे ज्यादा पसंद करती थीं। जहाँ कहीं भी, कुछ समयके लिये भी, उनका डेरा पड़ जाता था वहाँके उनके मित्रों और प्रशंसकोंमें तरह-तरहके बढ़िया, स्वादिष्ठ और दुर्लभ प्रकारके असाधारण व्यंजनोंसे उनकी टेबुलको लाद देनेकी होड़-सी लग जाती थी। लखनऊमें—जो सारे देशमें अपने सुस्वादु व्यंजनोंके लिए प्रसिद्ध है—सरकारी भवन शीघ्र ही ऊँचे नवाबी परिवारोंके परम्परागत पाकविज्ञानकी कुशलताओंकी प्रदर्शनी बन गया। मैं लखनऊमें श्रीमती नायडूके साथ तीन दिनोंतक रहा। इस बीच भोजनके समय कभी भी ऐसा नहीं हुआ जब हम लोगोंके सामने खास तौरसे तैयार किये गये और ऊँचे घरोंकी मुसलिम महिलाओं द्वारा प्रेमकी निशानीके रूपमें भेजे गये तीन-चार प्रकारके व्यंजन न परसे गये हों।

लखनऊसे विदा होते समय मैं दिलके दिलमें अनुभव कर रहा था कि इस महान् वृद्ध महिलाके मेरे लिए ये अन्तिम दर्शन हैं। श्रीमती नायडू गत अठारह महीनोंसे बीमार थीं फिर भी वे बहादुरीसे अपना काम करती जा रही थीं—उनकी आत्मा शरीरकी बढ़ती हुई दुर्बलताके सामने झुकनेको तैयार न थी। जब मैं उन्हें नमस्कार कर विदा लेने लगा उन्होंने श्रीमती सनयात सेनके नाम एक सन्देश दिया और बोलीं—'मैं नहीं समझती कि मैं तुमसे कैथे[1]की कहानियाँ सुननेके लिए जिन्दा रहूँगी।'

बीकानेर महाराजने मुझे १४ मार्चको राजके मुख्यमन्त्रिपदसे अवकाश ग्रहण करनेकी अनुमति दे दी। मैं राजधानीसे विदा हुआ। विदाईके समय राजकी जनताका स्नेह उमड़ आया था। कुछ लोग तो मेरे साथ दिल्ली तक आये और मुझे चीन विदा करनेके लिए कलकत्ता तक गये।

---

१. चीनका पुराना और काव्यमें प्रचलित नाम

बीकानेरमें पद-त्याग करनेकी तिथिसे मैं परराष्ट्र विभागसे सम्बद्ध हो गया और राजदूत नियुक्त हुआ। कुछ दिनों बाद नानकिंगसे मेरी नियुक्तिको आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त हो गयी। १३ अप्रैल, १९४८ की शामको मैं कलकत्तासे चीन रवाना हुआ और १४ की तीसरे पहर शंघाई पहुँच गया। मैंने अब ऐसा जीवन शुरूकर दिया था जो मेरे लिए सर्वथा नया और अपरिचित था।

दूसरा परिच्छेद

नानकिंग—च्यांगकाई-शेकके शासनमें

चीनमें जिस स्थानपर मैं पहले पहल उतरा वह शंघाई नगर था। इस नगरकी रचना अत्यन्त अवास्तविक और काल्पनिक ढंगसे हुई थी। लगभग सौ वर्षोंतक यह सुदूर पूर्वमें यूरोपीय व्यापारका प्रमुख केन्द्र और गौराङ्ग प्रभुताके दंभका प्रतीक रहा है। बहुत हद तक नगरकी पुरानी शोभा-समुज्ज्वलता बिदा हो चुकी थी, क्योंकि जापानी युद्धके बाद चीनियोंको लौटाये जानेपर नगरके वैदेशिक अधिकार क्षेत्र, वाणिज्य दूतावासोंके शानदार दरबारों, वैदेशिक पुलिस तथा यूरोपियनों द्वारा नियन्त्रित सुविख्यात म्युनिस्पल काउन्सिलकी सारी आडम्बरपूर्ण साज-सजा लुप्त हो गयी थी। शंघाई अब सुदूर पूर्वमें छठे नम्बरकी महान् शक्ति नहीं बल्कि आधुनिक चीनकी व्यापारिक राजधानी मात्र रह गया था। बाँधपरके यातायातका नियन्त्रण अब दाढ़ीवाले सिख नहीं कर रहे थे। निगमके मेयर और नगरके गवर्नर सुविख्यात श्री के० सी० वू थे जिनकी महान् योग्यता और चारित्रिक दृढ़ताका लोहा सभी मानते थे। अपनी प्राकाराकार भव्यता और बाँधपर बनी विशाल अट्टालिकाओंके बावजूद नगर कुछ-कुछ टूटा-फूटा और ध्वस्त-सा दिखाई पड़ रहा था। उत्तर और मध्य चीनसे शंघाईमें आनेवाले शरणार्थियोंका तांता लगा हुआ था। नगरकी मुख्य सड़कोंपर हजारोंकी तादादमें ये गरीबलोग जिस प्रकार मारे-मारे फिर रहे थे चीन पहुँचनेपर मुझे खटकनेवाली सबसे पहली चीज यही थी।

मैं नगरमें केवल एक दिन ठहरा, क्योंकि मैं राजधानी पहुँचकर अपना कार्यभार अविलम्ब सम्भाल लेनेके लिए चिन्तित था।

राजनीतिक और कूटनीतिक कारणोंसे च्यांगकाई-शेकने नानकिंगको अपनी राजधानी बना ली थी। नानकिंग एक पुराना और आकर्षक नगर है। जैसे कि चीन और भारतके अधिकांश नगर हैं उसी प्रकार नानकिंग भी प्राचीन और नवीनका अद्भुत सम्मिश्रण उपस्थित करता है। कुछ सड़कें तो काफी चौड़ी और सुनियोजित एवं सुन्दर ढंगसे बनी हुई हैं, जब कि दूसरी इतनी सँकरी, गन्दी और जनाकीर्ण हैं कि भारतमें उनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। मुख्य सड़कोंकी बगलमें ही छोटे-छोटे भूमिखण्डोंपर खेतीका दृश्य देखा जा सकता है और अगर हिन्दुस्तानमें सड़कोंपर मुक्त विचरते हुए गाय-भैंस आदि यातायातको विशृङ्खलित करते हुए नजर आते हैं तो नानकिंगमें भी सड़कोंपर मुर्गियाँ और मुर्गियोंके बच्चे सहसा भीड़ लगाते देखे जा सकते हैं। नानकिंग दीवालोंसे घिरा हुआ नगर है। इसकी विशालकाय दीवालें सचमुच ऊबड़-खाबड़ पत्थरोंके बड़े-बड़े ढोकोंसे बनी हुई हैं। मुझे बताया गया है कि पीकिंगकी मशहूर दीवालोंसे ये दीवालें कुछ ही कम चौड़ी हैं। नगरके एक द्वारके बाहर कमल सरोवर (लोटस लेक) है। गर्मियोंमें इस स्थानका सौन्दर्य बड़ा ही चित्ताकर्षक और मनोरम हो जाता है। इस सरोवरमें मीलोंतक कमलोंकी मनोहारी छटा और बीच-बीचमें रमणीक उद्यानोंसे सुसज्जित द्वीपों, चायकी दूकानों आदिका सौन्दर्य देखते ही बनता है। नानकिंगका परिपार्श्व भी बड़ा ही सुन्दर है। कुछ ही दूर बाहर जाकर बैगनी रंगकी पर्वत श्रेणियोंका विस्तार मिलता है जिसमें जगह-जगह 'मिंगचैत्य', प्राचीन मूर्तियोंकी शृङ्खलाएँ तथा अद्भुत कुतूहलजनक वेधशाला मिलती है। यहींपर कोमिंतांग द्वारा अपने संस्थापक श्रीसुनयातसेनके सम्मानमें निर्मित विशाल मकबरा भी है। यह इमारत भी अनाकर्षक नहीं है। इसका निर्माण चीनकी नवोत्थित परम्परागत स्थापत्य शिल्पशैलीमें हुआ है। कोमिंतांग दल उस समय इसी शिल्पशैलीका समर्थन कर रहा था।

हमारा दूतावास पीकिंग लूमें अवस्थित था। यद्यपि इसकी इमारत

छोटी और एक दूतावासके लिए अनुपयुक्त थी, तथापि स्थान और पास-पड़ोसकी दृष्टिसे अच्छी थी क्योंकि इसीके आस-पास कूटनीतिज्ञोंके अनेक आवास थे। हमारी इमारतके ठीक सामने मिस्री दूत-मण्डलका आवास था। पुर्तगाली मंत्री डा० फानसेका भी करीबमें ही रहते थे, किन्तु अधिक सुविधाजनक सभी मकानोंपर अमेरिकी नौबलाध्यक्षों और जनरलोंने, जिनके बारेमें लोगोंकी ऐसी धारणा था कि वे कोमितांग सरकारको परामर्श दे रहे थे, कब्जा कर रखा था। हमारी इमारतके साथ एक छोटा-सा बगीचा भी था जिसमें कुछ अच्छे पेड़ लगे हुए थे। मुझे इसके बारेमें कोई खास शिकायत नहीं थी। बर्मी, अफगान और आस्ट्रेलियन दूतावास भी सुविधाजनक दूरीपर स्थित थे। इस तरह कुल मिलाकर कार्यकी दृष्टिसे हमारी अवस्थिति ठीक थी।

चीनी सरकार तथा विभिन्न कूटनीतिक दलों सभीने बड़ी सहृदयता और सौजन्यसे मेरा स्वागत किया। ब्रिटिश दूतावास तथा अन्य राष्ट्र-मण्डलीय शिष्टमण्डल मैत्री भावना प्रदर्शित करनेमें विशेष रूपसे उत्सुक थे, क्योंकि कूटनीतिक संसारमें भारत व्यवहारतः एक नवागन्तुक था। ब्रिटेनके राजदूत सर राल्फ स्टीवेंसनने शुरूसे ही मुझसे यह स्पष्ट रूपसे कह दिया था कि मैं कोई भी कठिनाई उपस्थित होनेपर उनसे मैत्रीपूर्ण परामर्श प्राप्त कर सकता हूँ। कनाडाके राजदूत श्री टी० सी० डेवीजका व्यवहार तो और भी हार्दिक था। वे बिलकुल मैत्रीपूर्ण तथा अनौपचारिक ढंगसे बर्ताव करते और कूटनीतिक प्रथाओंकी उतनी परवाह नहीं करते थे। उन्होंने पहले दिनसे ही मुझे उदारतापूर्वक अपनी जिस मैत्रीकी भावना प्रदानकी वह हमारे लिए हमेशा बड़ी शक्तिका स्रोत बनी रही।

जहाँतक चीनका प्रश्न है, मेरे भाग्यसे, मेरे चीन पहुँचनेके समय संयोगवश डाक्टर लो चिया-लुन, जिन्हें मैं भारतमें ही अच्छी तरह जान गया था, नानकिंगमें मौजूद थे। परराष्ट्र विभागमें श्री जार्ज येहके रूपमें मुझे एक अच्छा मित्र मिल गया। श्री येह उस समय परराष्ट्र विभागके उपमन्त्री थे। इस प्रकार मेरा कूटनीतिक बेड़ा अच्छे मौसममें बड़ी सद्-

भावनाओंके साथ शान्त समुद्रपर उतरा।

कुछ राजदूत और मन्त्री मुझसे ठीक कुछ ही समय पूर्व पहुँचे थे और अपने परिचयपत्रोंके समर्पण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अतः जनरलिस्सिमो चांगकाई-शेकने इस आयोजनमें अब और विलम्ब न करनेका निश्चय किया। मेरे चीन पहुँचनेके दो दिन बाद ही वैदेशिक मन्त्री डाक्टर वाङ् शिह-चियेहने मुझे अपने भाषणकी अग्रिम सूचना भेज देनेको कहा। इससे मैं परेशानीमें पड़ गया, क्योंकि मेरे प्रमाण-पत्र जिनपर ब्रिटिश नरेशके हस्ताक्षर होनेवाले थे, अभी तक मेरे पास नहीं पहुँचे थे। मैंने यह बात श्री जार्ज येहसे विश्रब्ध ढंगसे बता दी। उन्होंने इसे कोई खास महत्व नहीं दिया और कहा कि इस समय मैं एक सरकारी ढंगके लिफाफेमें सादा कागज ही रखकर उसे समर्पित कर सकता हूँ और बादमें वैदेशिक कार्यालयमें अपने परिचयपत्र जमा कर सकता हूँ।

मैं जिस समय नानकिंग पहुँचा कोमिंतांगका इतिहास एक नया मोड़ लेनेकी स्थितिमें था। राष्ट्रीय सभा की बैठक हो चुकी थी। उसके बाद राजधानीमें अभूतपूर्व उत्तेजना व्याप्त थी। अमेरिकी दबावमें आकर जेनरल च्यांग,काई-शेकने 'सैनिक अभिभावकत्व'के कालको समाप्त करना अनिच्छापूर्वक स्वीकार कर लिया था जिसे चीनी गणतन्त्रके संस्थापक श्री सुनयांत सेनने लोकतान्त्रिक संविधानके आरम्भ करनेके पूर्व तैयारीके लिए आवश्यक कालके रूपमें घोषित किया था। अतः जेनरल मार्शलके कुछ उकसानेपर श्री च्यांगकाई-शेकने राष्ट्रव्यापी आमचुनावका आदेश दे दिया था। यद्यपि चीनके अनेक विशाल क्षेत्रोंमें कोई चुनाव नहीं हुआ और अन्य दलोंके साथ चुनावके पूर्व हुए समझौतोंका पालन भी नहीं किया गया, तथापि एक राष्ट्रीय सभाका निर्माण हो गया जो समस्त चीनके प्रतिनिधित्व करनेका दावा करती थी। इस सभामें ऐसा लगता था जैसे चीनमें सम्मिलित तिब्बतका भी प्रतिनिधित्व हो रहा हो, क्योंकि इसमें तिब्बती प्रतिनिधि भी अपनी वेशभूषामें शामिल हुए थे। इस सभाका एकमात्र कार्य एक राष्ट्रपति और एक उप-राष्ट्रपतिका निर्वाचन

कर देना था। विधान-निर्माणका कार्य एक अन्य संस्था विधान निर्मातृ युवान (समिति या परिषद)के जिम्मे था और सामान्य नियन्त्रण एवं अधीक्षणका अधिकार नियन्ता युवानको प्राप्त था।

राष्ट्रपतिके चुनावके प्रश्नको लेकर जनतामें बड़ा क्षोभ फैला हुआ था। एक प्रबल जनमत इस पक्षमें था कि अब जेनरल च्यांगकाई-शेकके अवकाश ग्रहण करनेका समय आ गया है। ऐसा लगता है कि स्वयं च्यांगकाई-शेकने भी एक समय ऐसा ही सोचा था कि अब जापान विरोधी युद्धमें विजयका सेहरा हासिल करने और अपनी कीर्त्तिके उच्चतम शिखरपर पहुँच जानेके बाद उनके लिए अवकाश ग्रहण कर लेना ही अच्छा होगा। उन्होंने तो यहाँतक घोषणा कर दी थी कि वे स्वयं उम्मेद-वारके रूपमें भी खड़ा नहीं होना चाहते। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कह रखा था कि डाक्टर हू शिह ही आदर्श राष्ट्रपति हो सकते हैं। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि कोमिंतांग दलके प्रधान और श्री च्यांगकाई-शेककी कुचक्री प्रतिभा श्री चेन ली फूने उन्हें समझा-बुझाकर राष्ट्रपतिके चुनावके लिए खड़ा कर दिया। सम्भवतः श्री च्यांगकाई-शेककी भी इच्छा इसके विरुद्ध नहीं थी। उनके एक बार उम्मीदवार खड़ा हो जानेपर फिर किसी दूसरे व्यक्तिके चुने जानेका कोई प्रश्न ही नहीं था, इसलिए विरोध उप-राष्ट्रपति पदपर ही केन्द्रित हुआ। इसके लिए आधिकारिक उम्मेदवार श्री सुन फो थे। ये एक ढुलमुल यकीन राजनीतिज्ञ थे। इन्हें गणतन्त्रके संस्थापक श्री सुन यातसेनके पुत्र होनेका गौरव प्राप्त था। उपराष्ट्रपति पदके लिए और भी दूसरे कई उम्मीदवार थे, किन्तु उनमें क्वांग्सी दल (क्वांग्सी प्रान्तके राजनीतिज्ञोंका एक गुट) के प्रधान और श्री च्यांगके जीवन-पर्यन्त विरोधी जेनरल ली जुंग-जेनपर ही विरोध पक्षकी सारी आशाएँ केन्द्रित थीं। जेनरल लीने अपने सहकर्मी और मित्र, युद्धकालके महान् नेता श्री पाइ चुंङ् ह्सीके सहयोग और समर्थनसे जापानी युद्धके पहले वर्षोंतक च्यांगकी सत्ताको ललकारा था और क्वांग्सीमें एक स्वतन्त्र सरकारकी स्थापना की थी। जापानियोंके विरुद्ध राष्ट्रीय एकता कायम

करनेके समय उन्होंने पुनः च्यांगके प्रति निष्ठा दिखायी थी, किन्तु एक सेनापतिके रूपमें उनकी जो अपनी महान् योग्यताएँ थीं, कोमिंतांग सेनापतियोंमें सर्वाधिक तेजस्वी और विचक्षण सेनापति श्री पाइ चुंङ्-ह् सीके साथ उनकी जो मित्रता थी और दक्षिणके एक महत्त्वपूर्ण प्रान्तपर उन दोनोंका जो संयुक्त अधिकार था उसके कारण वे श्री च्यांगके अधीनस्थ नहीं बल्कि प्रतिद्वन्द्वी बन बैठे थे। ऐसा कहा जाता था, कमसे कम अमेरिकी दूतावासका तो यही विचार था कि जेनरल ली बड़े ही उदार विचारोंके व्यक्ति हैं। व्यक्तिगत रूपसे उन्हें बहुत ईमानदार समझा जाता था। यह एक ऐसी विशेषता थी जो कोमिंतांगके सैनिक नेताओंमें अपवाद ही समझी जायगी। श्री च्यांगने निर्वाचन-सङ्घर्षसे हट जानेके लिए उनपर बड़ा दबाव डाला, किन्तु अमेरिकनोंके, जिन्हें श्री सुन फोपर विश्वास नहीं था, प्रोत्साहनसे वे मैदानमें डटे रहे और अन्तमें बहुत बड़े बहुमतसे निर्वाचित हुए। जेनरल च्यांगकाई-शेककी यह पहली राजनीतिक पराजय थी और आगामी १२ महीनोंमें होनेवाली घटनाओंपर इसका बहुत जबर्दस्त प्रभाव पड़ा।

श्री सुन फोको विधान निर्मातृ युवानकी अध्यक्षतासे ही सन्तोष करना पड़ा जिसपर केवल विधान-निर्माणका ही भार था और जो इस प्रकार एक प्रभावहीन संसद थी। शाही सेन्सर बोर्डके उत्तराधिकारी नियन्ता युवानने कोमिंतांगके पहलेके क्रान्तिकारी और १९१२ के आन्दोलनके एक नेता श्री यू यूजेनको अपना अध्यक्ष चुना। परीक्षण युवान (भारतीय जनसेवा आयोगकी तरहकी संस्था) के अध्यक्ष श्री ताइ चीताओ बने। श्री ताओ पक्के बौद्ध और कम्युनिस्ट पार्टीके संस्थापक सदस्योंमें थे। बादमें उन्होंने बौद्ध-धर्मका परित्याग कर दिया। ये एक समयमें ईसाई विरोधी संघके नेता भी रह चुके थे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि संसदीय संस्थाओंका यह अभिनव प्रयोग उस रूपमें कार्यान्वित न हो सका जैसा कि श्री च्यांगने आशा की थी अथवा जैसी उनकी पार्टीके सर्वप्रमुख नेता चेन बन्धुओंने उन्हें विश्वास दिलाया

था। इस आमचुनावकी सर्वत्र इसी रूपमें व्याख्या की गयी कि यह 'सी० सी० गुट'[1] में, जिसके कि श्री चेन ली फू प्रधान थे, अविश्वासकी अभिव्यक्ति है। श्री च्यांगने समयके रुखको पहचानते हुए श्री चेन ली-फूको अमेरिका और यूरोपकी शिक्षण यात्रापर जानेकी अनुमति दे दी। यह उनकी बर्खास्तगीका एक अच्छा सौजन्यपूर्ण तरीका था। कुछ महीनों बाद श्री चेन ली फू डाक्टर बुचमैनके नैतिक पुनःसज्जा सम्मेलन-के चीनी प्रतिनिधि मण्डलके नेताके रूपमें अमेरिका पहुँचे।

राष्ट्रपतिके रूपमें श्री च्यांगकाई-शेकके पदारोहणका समारोह चीनका वह पहला सार्वजनिक समारोह था जिसमें मैं शामिल हुआ था। यह समारोह बड़े ही प्रभावकारी सज-धज और तड़क-भड़कके साथ सम्पन्न हुआ था और इसमें चीनी गणतन्त्रके राष्ट्रपतिका पद ग्रहण करनेके बाद स्वयं जनरलरस्सिमो च्यांगकाई-शेकने जो भाषण किया उसमें उन्होंने पूरी गम्भीरताके साथ तीन महीनेके अन्दर कम्युनिस्ट सेनाओंका उन्मूलन कर देनेका वादा किया था। इससे सभी लोग बड़े खुश हुए और अमेरिकनों तथा, उनसे कुछ कम, अंग्रेजोंने भी यह अनुभव किया कि अब चीन लोकतान्त्रिक विकासके पथपर अच्छी तरह आरूढ़ हो गया। लोगोंमें परस्पर बधाइयोंका खूब आदान-प्रदान हुआ। कोई भी व्यक्ति जनवादी मुक्ति सेना अथवा दुर्गम क्षेत्रोंमें श्री माओ त्से-तुंग द्वारा स्थापित शासनके बारेमें जरा भी चिन्तित नहीं दिखाई देता था।

नयी सरकारके लिए सर्वत्र कल्याण ही कल्याण नहीं है, इसका पहला संकेत नये उप-राष्ट्रपतिके संदिग्ध और विलक्षण व्यवहारमें मिला। उन्होंने बड़े आडम्बरपूर्ण ढंगसे शासनसे हाथ धो लिया और राजधानीमें कुछ सप्ताह ठहरकर वे चुपकेसे राजधानीके बाहर चले गये और अपने मित्र जेनरल फू त्सो-यीके, जो पीकिंगमें केन्द्रीय सरकारके प्रतिनिधि और उत्तरी चीनकी प्रतिरक्षाके लिए उत्तरदायी थे, संरक्षणमें पीकिंगमें

१. चेन ली फू और चेन ताओ फू नामक दो शक्तिशाली भाइयोंका गुट जिसका कोमिंतांग संघटनपर नियन्त्रण था।

रहने लगे।

उस समय इन बातोंसे मैं बहुत ज्यादा परेशान नहीं हुआ था। जिस चीजसे मुझे गम्भीर चिन्ता हुई वह मुद्रा विनिमयकी नयी स्थिति और उसके फलस्वरूप मेरी आर्थिक स्थितिपर पड़नेवाला प्रभाव था। राष्ट्रीय चीनी डालर या पाईका मूल्य इस शीघ्रतासे गिर रहा था कि धनका मूल्य भी बड़ी तेजीसे गिरने लगा। विनिमयकी सरकारी दरका वास्तविक दरोंसे कोई सम्बन्ध नहीं रह गया और मामूली बाजार करनेके लिए सन्दूक भर नोटोंकी जरूरत पड़ने लगी। अधिकांश दूतावासोंको इससे तकलीफ नहीं थी, क्योंकि उन्हें बराबर अच्छी तरहसे अमेरिकी डालर, जो देशकी गैरसरकारी प्रचलित मुद्रा हो गया था, सुलभ था। किन्तु भारत सरकार इस मामलेमें बहुत सख्त थी और उसने खुद अपने यहाँ डालरकी कमी देखते हुए रुपयेके अतिरिक्त हम लोगोंको कोई दूसरी मुद्रा भेजनेसे इनकार कर दिया था और इस रुपयेकी यह स्थिति थी कि सरकारी दरसे साठ प्रतिसे भी अधिक घाटा उठाकरके ही इसका विनिमय किया जा सकता था। वस्तुतः इस तेजीका परिणाम कल्पनातीत स्थितिमें पहुँच चुका था। सारी दुनियामें चीन ही वह एक मात्र स्थान था जहाँ किसी भी प्रकारका नियन्त्रण नहीं था। वहाँ हर चीज सुलभ थी और यदि भुगतान अमेरिकी डालरोंमें किया जाय तो अत्यन्त उचित कीमतोंपर चीजें खरीदी जा सकती थीं। चीनी मुद्रामें या सरकारी दरोंसे कीमतें अत्यधिक चढ़ गयी थीं। सभी सार्वजनिक स्थानोंमें खुलेआम अमेरिकी मुद्रा बेची और खरीदी जा सकती थी। यहाँ तक पता चला था कि चीनी सरकारके कुछ उच्चतम अधिकारी भी इस खरीद-बिक्रीमें शामिल थे। एक बहुत बड़ा चीनी अधिकारी तक, जिसने मेरे सैनिक संलग्नाधिकारीको अपना मकान किरायेपर दिया था, हर महीने किराया अमेरिकी डालरोंमें अदा करनेपर जोर देता था। जब हमने उसे यह बताया कि हम लोगोंके पास डालर नहीं है तब कहीं जाकर उसने अन्तमें किराया रुपयोंमें लेना

स्वीकार किया ।

जनताका कष्ट सीमा पारकर चुका था, क्योंकि मुद्राकी दरें घण्टे-घण्टेपर बदलती रहती थीं । नौकरोंको जीवन-निर्वाहके व्ययके संकेतांकोंपर आधृत एक बड़ी ही जटिल प्रणालीके अनुसार वेतन दिया जाता था और इन संकेतोंका निर्धारण ब्रिटिश दूतावास करता था । वेतन मिलते ही कर्मचारी बाजारोंको दौड़ पड़ते थे और एक पखवारेके लिए चावल आदि खाद्यान्न तथा जीवनोपयोगी अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीद लाते थे ।

इस महँगीके कारण होनेवाली असुविधाओंको छोड़कर नानकिंगका जीवन बड़ा ही सुखद एवं सुहावना था । मेरे नानकिंग पहुँचनेपर आरम्भ के दो महीनोंमें देशके प्रमुख व्यक्ति राष्ट्रीय सभाके उद्देश्यसे नानकिंगमें ही एकत्र हो गये थे, इसलिए मुझे उनमेंसे कुछ व्यक्तियोंसे मिलने और विभिन्न विषयोंपर सामान्यतः विचार करनेका अवसर मिल गया । मैं चीनके प्रसिद्ध विद्वान् और पीकिंग राष्ट्रीय विश्वविद्यालयके तत्कालीन अध्यक्ष डाक्टर हू शिह् तथा अन्तरराष्ट्रीय विधानके सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ डाक्टर एस० आर० चाओ एवं अन्य व्यक्तियोंसे, जिनसे मैं इसके पूर्व स्वयं न्यूयार्क अथवा लन्दनमें मिल चुका था, अच्छी तरह परिचित हो गया । इनके अतिरिक्त उस समय नानकिंगमें विशिष्ट योग्यता और सांस्कृतिक गुणोंसे सम्पन्न अधिकारी भी एकत्र हो गये थे जिनमें परराष्ट्र मन्त्री वाङ्-शिह्-चिह् तत्कालीन यातायात मन्त्री, विज्ञानवेत्ता और प्रभाव शाली व्यक्तिवाले विद्वान् श्री यू ता-वी, उपवैदेशिक मन्त्री जार्ज येह तथा सु-प्रसिद्ध गिं-लिं महिला कालेजके, जिसके छात्रावासमें स्वयं मेरी पुत्री प्रविष्ट हुई थी, आचार्य डाक्टर वू आदि विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं ।

मुझे जेनरल च्यांगकाई-शेक और उनकी पत्नी मैडम च्याङ् (सूङ् मी-लिङ्) से भी मिलनेका अवसर मिला । वे हमारे प्रति खास तौरसे मेहर-बान थे और उन्होंने हमें एकाधिक बार अपने साथ बिलकुल पारिवारिक ढंगसे भोजन करनेका निमन्त्रण दिया था । जेनरल च्याङ्का व्यक्तित्व मुझे बड़ा ही सशक्त मालूम पड़ा । वे एक ऐसे देशभक्त नेता थे जो

हमेशा चीनकी महानताका ध्यान रखते थे और जिन्होंने अपने प्रभावशाली नेतृत्वसे हमेशा उस महानताकी ईमानदारीसे रक्षा की थी। उनके व्यवहारोंसे सरलता टपकती थी और उनका जीवन बड़ा ही संयमित था। किसीने भी उनपर कभी भी व्यक्तिगत रूपसे भ्रष्टाचारका आरोप नहीं लगाया। जनताकी आलोचना मुख्यतः उन्हें घेरे रहनेवाले लोगोंके, जिनमें उनके परिवारके कुछ निकट-सम्बन्धी भी थे, विरुद्ध थी।

च्याङ् काई-शेक एक ऐसे महापुरुष थे जो अपने अनुकूल युगसे एक शताब्दी बाद पैदा हुए थे। उनमें वे सभी गुण मौजूद थे जिनसे वे प्राचीन कालमें एक नये राजवंशकी अनिवार्यतः स्थापना कर जाते और चीनकी प्राचीन परम्पराओंको जीवनकी नयी मीयाद दे जाते। च्याङ्में न तो अधिकारियोंकी प्रमत्तता और ठाट-बाट था और न वे विद्वत्ताका झूठा दावा करते थे। वे मुख्यतः एक किसान थे और जीवन भर किसान ही बने रहे। कुछ हदतक इसीमें उनकी शक्ति भी निहित थी। नामके लिए वे मेथडिस्ट ईसाई थे। मुझे बताया गया है कि वे प्रत्येक रविवारको अपने निजी गिरजाघरमें एकत्र कुछ चुने हुए लोगोंको धर्मोपदेश भी किया करते थे, किन्तु यही मेथडिस्ट धर्मोपदेष्टा नये कन्फ्यूशियनवादका जबर्दस्त समर्थक भी बन गया। उनमें चीनकी परम्पराओंके प्रति जींवन्त निष्ठा थी। वस्तुतः वे अनेक विरोधी तत्वोंके समवाय थे। वे ईसाई होते हुए भी कन्फ्यूशियनवादमें और लोकतान्त्रिक राष्ट्रपति होते भी सैनिक तानाशाहीमें विश्वास करते थे और अत्यन्त ईमानदार व्यक्ति होते हुए भी अपनेको घेरे रहनेवाले लोगोंमें व्यापक भ्रष्टाचारको भी तरह दे जाते थे।

मैडम च्याङ्का व्यक्तित्व बिलकुल दूसरे ढंगका था। लावण्य और लालित्यसे समन्वित उनका निराला व्यक्तित्व, उनकी शिक्षा सम्पन्नता और विभिन्न विषयोंका उनका व्यापक ज्ञान उनसे मिलनेवालोंपर ऐसा प्रभाव डालता था जिससे उनकी अजस्र सजीवता और संकल्प शक्तिकी दृढ़ताका सहज ही भान होने लगता था। अपनी उच्चताके प्रति चेतन

व्यक्तित्वके सारे अनुभाव और उपकरण उन्हें निसर्गतः प्राप्त थे। अनेक वर्षोंतक चीनकी मुख्यतम महिला होनेका गौरव प्राप्त करनेके कारण उनमें एक रानीका व्यक्तित्व स्वभावतः विकसित हो गया था। जेनरल च्यांगकाई-शेक और उनकी पत्नी दोनों ही भारतके राष्ट्रीय आन्दोलनके प्रबल समर्थक रहे हैं। भारतकी स्वतन्त्रता से उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई थी। हमारे प्रति मैडम च्याङ्के व्यवहारमें स्वाभाविक हार्दिकता रहती थी, किन्तु जहाँतक कूटनीतिक मण्डलका सम्बन्ध था, वे हमसे हमेशा उस पर्वतारोहीकी भाँति दूर ही रहा करती थीं जो जमीनसे दूर आकाशमें पहाड़ोंकी ऊँचाईपर विचरण कर रहा हो। पहली बार उन्होंने मेरा और मेरी पत्नीका स्वागत राष्ट्रपति भवनमें आयोजित एक ऐसी गैररस्मी दावतमें किया था जिसमें बर्मी राजदूत और उनकी पत्नी, यूनानी राजदूत तथा फिलीपाइनके दूत और उनकी पत्नी भी आमन्त्रित थीं। इस अवसरपर यूनानी राजदूतने, जो चीनी मिट्टी और काँसेकी कारीगरीका विशेषज्ञ होनेका दावा करते थे, जेनरलस्सिमोके साथ सुदूर पूर्वकी कलापर एक लम्बी वार्ता छेड़ दी और उन्हें एथेन्समें अपनी चीनी वस्तुओंके विशाल संग्रहका वर्णन सुनाया। श्री च्याङ्को इस विषयमें कोई दिलचस्पी न थी। वे रह-रहकर 'आचो!' कह पड़ते थे। वार्ताके प्रति उनकी यही एकमात्र प्रतिक्रिया थी। मैं जानता था, चेकियाङ् बोलीमें जो श्री च्याङ्की अपनी बोली थी, 'आचो' का अर्थ 'अच्छा' होता है। फिलीपाइनके मंत्री, उनकी पत्नी और दोनों पुत्रियोंने मैडम च्याङ्से उस पोशाककी बारीकियाँ बतलायी जिन्हें वे फिलीपाइनकी राष्ट्रीय पोशाक कहते थे और उन्हें उदारतापूर्वक वह पोशाक भेंट करनेका वादा भी किया। मेरी समझमें फिलीपाइनकी तथाकथित 'राष्ट्रीय पोशाक' १९ वीं शताब्दीकी स्पेनिश पोशाकका औपनिवेशिक और उष्ण कटिबन्धके उपयुक्त एक परिवर्तित रूप मात्र है इससे अधिक और कुछ नहीं। इस पोशाकके राष्ट्रीय रूपपर जो इतना अधिक जोर दिया जा रहा था उससे मैडम च्याङ्को भी काफी मनोविनोद हो रहा था। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा

कि प्रत्येक देशकी पोशाक उस देशकी जनता और जलवायुके अनुकूल होती है। इसके बाद वे मेरी पत्नीकी ओर मुड़ गयीं और बोलीं कि भारत जानेके समय श्रीमती पण्डित तथा अन्य लोगोंने मुझे अनेक साड़ियाँ भेंट की थीं, किन्तु उन्हें पहननेका आजतक मौका ही न मिला। श्रीच्याङ् से वार्ता करना बड़ा कठिन था, क्योंकि किसी भी विषयपर वे कुछ विशेष बोल ही नहीं सकते थे। उन्होंने मुझसे पंडित नेहरूके सम्बन्धमें कुछ पूछा और कश्मीर रियासतके सम्बन्धमें भी कुछ प्रश्न किये। इसका उद्देश्य केवल यह संकेत करना था कि वे भारतके सम्बन्धमें गहरी दिलचस्पी रखते हैं।

मुझे यह समझते देर न लगी कि भारतके प्रति कोमिंतांगका दृष्टिकोण यद्यपि वास्तविक मैत्रीका था फिर भी इसके पीछे कुछ पृष्ठपोषणकी भावना थी। यह दृष्टिकोण उस बड़े भाईके दृष्टिकोणके समान था जो उम्रमें काफी बड़ा है दुनियामें काफी अरसेसे जम चुका है और दुनियामें अपना रास्ता बनानेके लिए सङ्घर्ष करनेवाले अपने एक छोटे भाईको सलाह देनेके लिए तैयार है। कोमिंतांग भारतकी स्वतन्त्रताका स्वागत तो करता था, किन्तु उसके ख्यालसे युद्धके बाद पूर्वमें चीन ही एक महान् सर्वमान्य शक्ति था और भारतको उसे इसी रूपमें स्वीकार करते हुए विश्वमें अपनी स्थितिको पहचान लेना चाहिये। चीनका वैदेशिक कार्यालय वाई चिआओपू सरकारका सबसे अधिक संघटित विभाग था और उक्त सिद्धान्तका सबसे दृढ़तासे पालन इसी विभागमें होता था। मुझे यह कुछ अजीब-सा लगता था कि कोमिंतांग चीन जो प्रायः अपनी सभी चीजोंके लिए, यहाँतक कि 'महान् शक्ति'की प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके लिए भी, अमेरिकापर निर्भर था, भारतके प्रति इस प्रकारका दृष्टिकोण रखे। किन्तु मुझे शीघ्र ही यह अनुभव हो गया कि अमेरिकाके प्रति भी चीनका दृष्टिकोण कुछ इसी प्रकारके पृष्ठपोषण और अनुग्रह करनेका है। चीनको अमेरिकासे जो कुछ भी आर्थिक और अन्य प्रकारकी सहायताएँ मिलती थीं उसपर वह अपना स्वाभाविक

दावा मानता था और उन्हें उस पुराने बड़े रईसकी तरह स्वीकार करता था जो संकटके समयमें नये-नये अमीर बने हुए पड़ोसीसे सहायता ले लेना स्वीकार कर लेता है। कोमिंतांगके लिए, जिसे पृथ्वीपर 'ईश्वर-पुत्र'का उत्तराधिकार प्राप्त था, अमेरिका उस बड़े बर्बरसे ज्यादा और कुछ नहीं था जिसके डालरों और सरोसामानकी तो उसे तात्कालिक आवश्यकता थी, किन्तु जिसकी संस्कृतिके प्रति उसके दिलमें कोई खास आदर की भावना नहीं हो सकती थी। स्वयं श्री च्याङ् भी, किसी भी अर्थमें, अमेरिकी पक्षके नहीं थे और उनके चारों ओर रहनेवाले चेनपू-ली और चेनली-फू जैसे लोग भी आक्रामक कन्फ्यूशियसवादी थे जो चीनियोंकी जातीय और नैतिक श्रेष्ठतामें विश्वास करते थे। मैडम च्याङ्की शिक्षा-दीक्षा अमेरिकी कालेजमें हुई थी और ईसाई परिवारकी पृष्ठभूमिमें ही उनके व्यक्तित्वका विकास हुआ था, इसलिए वे चीन और अमेरिकाकी बीचकी दुनियामें रहती थीं। अपनी बाहरी रूपरेखा और आचार-व्यवहार-में तो वे पूरी तरहसे यूरोपियन हो गयी थीं, किन्तु मुझे सन्देह है कि उनके हृदयमें भी जातीय अभिमानकी भावना विद्यमान थी जिससे वे अमेरिकी दृष्टिकोणके प्रति असन्तुष्ट रहती थीं।

नानकिंग स्थित अमेरिकी बस्तीका व्यवहार सामान्यतः ऐसा नहीं था जिससे चीनियोंके दिलमें मैत्रीकी भावना जागरित होती। उधार-पट्टेकी एक उलटी प्रणालीसे नानकिंगके सर्वोत्तम स्थानोंपर अमेरिकनोंने अधिकार कर लिया था। जापान विरोधी युद्धके पूर्वके राष्ट्रपति श्री वाङ् चिङ्-वीका निवास स्थान अपने विशाल उद्यानोंके साथ अमेरिकन क्लबके रूपमें परिवर्तित कर दिया गया था। सर्वोत्तम इमारतें अमेरिकी सेना-पतियों और विशेषज्ञोंके लिए सुरक्षित हो गयी थीं। विदेशोंसे प्रशीतन यन्त्र, रेडियो सेट तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ पुनः बिना चुँगी दिये ही चीनके बाजारोंमें बड़े पैमानेपर आने लगीं और चीनी स्त्रियोंके प्रति अश्लील व्यवहारकी अफवाहें उड़ने लगीं। इसी प्रकारकी एक घटना पीकिंग विश्वविद्यालयकी एक छात्राके साथ हुई जिससे एक राष्ट्रीय संकट-

सा उपस्थित हो गया। उसपर एक खानगी अमेरिकी सैनिकने हमला कर दिया था। सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि सरकारी क्षेत्रों और गैर-सरकारी राजनीतिक समूहोंमें यह सन्देह बढ़ने लगा कि मैक आर्थरके नेतृत्वमें अमेरिका पुनः जापानका शस्त्रीकरण एवं सैनिकीकरणकर रहा है। कुल मिलाकर कोमिंतांग और अमेरिकनोंका पारस्परिक सम्बन्ध उतना मैत्रीपूर्ण नहीं था जितना लोग सोचते हैं। चीनी यह समझते थे कि अमेरिकनोंके बिना उनका काम नहीं चल सकता और अमेरिका भी यह समझता था कि उसकी एशियाई नीतिकी सफलता चीनके साथ दृढ़ सम्बन्धपर ही निर्भर है। इसीलिए इन दोनोंका साथ चलता रहा, किन्तु इन दोनोंकी एकताको हार्दिक एकता नहीं कहा जा सकता।

नानकिंगमें कुछ समय बितानेके बाद मैं सरकारी कामोंसे शंघाई गया। शंघाई अभी भी चीनका वित्तीय और व्यावसायिक केन्द्र था जहाँ भारतने अपना वाणिज्य दूतावास खोल रखा था। इसके अतिरिक्त उस समय शंघाईमें भारतीय भी काफी संख्यामें रहते थे। इनमें अधिकांशतः सिख लोग थे जिन्हें ब्रिटिश अधिकारके दिनोंमें शंघाई नगरपालिकामें पुलिसका काम मिला था। बादमें ये लोग वहीं बस गये और औद्योगिक प्रतिष्ठानोंमें पहरेदारोंका काम करने लगे। वहाँ छिटपुट भारतीय व्यापारी भी रहते थे। इनमें पारसियोंके कुछ पुराने औद्योगिक प्रतिष्ठान थे, कुछ नये गुजराती सौदागर और अन्य लोग थे। भारतीयोंसे मिलने और सरकारी अधिकारियोंसे सम्पर्क स्थापित करनेके अलावा मैं मैडम सुनयात सेनसे भी, जिनके लिए पण्डित नेहरूने मुझे एक पत्र दिया था, मिलनेको उत्सुक था। मैडम सुन च्यांग सरकारके पक्षमें नहीं थीं। वस्तुतः वे शंघाईमें सरकारकी कड़ी निगरानीमें रह रही थीं और सामान्यतः लोगोंका यह विश्वास था कि उन्हें नगरके बाहर जानेकी अनुमति नहीं थी। किन्तु स्वयं शंघाईमें रानियोंकी तरह उनका बाकायदे दरबार लगता था। नगरमें आनेवाले विदेशके प्रमुख व्यक्तियोंसे वे प्रायः मिला करती थीं

और अनेक सार्वजनिक तथा दातव्य संस्थाओंका प्रबन्ध करती थीं। उस समय भी उनके प्रति यह व्यापक सन्देह किया जाता था कि उनका श्री माओ त्से-तुंगसे गुप्त सम्पर्क है और उनकी सहानुभूति कम्युनिस्टोंके साथ है। जो भी हो वे इस तथ्यको बिल्कुल नहीं छिपाती थीं कि कोमिंतांगके साथ उनकी कोई सहानुभूति नहीं है।

उन्होंने मेरा और मेरे परिवारका अत्यधिक हार्दिकतासे स्वागत किया और भारतके उन प्रमुख व्यक्तियोंके सम्बन्धमें हमसे बड़ी बातचीत की जिनसे वे विभिन्न अवसरोंपर मिल चुकी थीं। वे शरणार्थियोंमें जो काम कर रही थीं और शरणार्थी शिविरोंमें बच्चोंके लिए जिस प्रकार पाठशालाओं और अन्य संस्थाओंका सञ्चालन कर रही थीं उस सम्बन्धमें भी उन्होंने मुझे बहुत कुछ बताया। इस काममें उनकी सहायता करनेवालोंमेंसे डाक्टर अन्ना वाङ् नामक एक जर्मन महिला भी थीं जिनकी कम्युनिस्ट सेनाके श्री वाङ् पिङ्-नानसे शादी हुई थी। मैडम सुनयांतसेनके साथ हमने उनके द्वारा सञ्चालित स्कूलों, चिकित्सा-केन्द्रों, बच्चोंके खेलघरों (थियेटरों) तथा अन्य प्रकारकी सांस्कृतिक संस्थाओंका निरीक्षण किया। मुझे यह बिलकुल स्पष्ट हो गया कि उनका यह सारा कार्य केवल अन्तरिमकालीन है और वे उस दिनकी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रही हैं जब कि परिस्थितियाँ बिलकुल बदल जायँगी और उन्हें पुनः राष्ट्रीय कार्योंमें प्रमुख भाग लेनेका पूरा अवसर मिलेगा।

सूंङ् चिन-लिङ् (मैडम सुन) का व्यक्तित्व अपनी बहन सूंङ् मी-लिंङ् (मैडम च्याङ्) से बिलकुल भिन्न प्रकारका था। मैडम सुनमें जो शालीनता, सन्तुलन और गरिमा थी उसका उनकी अधिक संजीदा बहनमें अभाव था। वे अपनी चाल-ढाल और बाहरी रूपरेखासे नहीं बल्कि प्रकृत्या एक महान् महिला थीं। वे बड़े शान्त और कोमल स्वरोंमें बोलती थीं और उनके चारों ओर प्रशान्त स्निग्धताका वातावरण बना रहता था। वस्तुतः उनका व्यक्तित्व बड़ा ही धीर, गम्भीर और शालीन था। उनमें श्रीमती सरोजिनी नायडूकीसी संजीदगी और विचक्षणता

नहीं थी और न तो उनसे मिलनेवालोंको उस प्रकारकी घरेलू आत्मीयता का ही अनुभव होता था जैसा कि श्रीमती नायडूसे पहली बार मिलनेपर ही होता था। उनके दर्शकोंपर उस प्रकारकी असाधारण शक्ति और सजीवताका भी प्रभाव नहीं पड़ता था जो मैडम च्यांगके लिए बिलकुल स्वाभाविक थी। किन्तु जिस किसीको भी मैडम सुनसे मिलनेका अवसर मिला है वह उनकी उस स्वाभाविक शालीनता और आकर्षणसे इनकार नहीं कर सकता जो उनकी विलक्षण ईमानदारी और राजनीतिक सिद्धान्तोंके प्रति उनकी अडिग निष्ठासे मिलकर उन्हें हमारे युगकी सर्व-श्रेष्ठ महिलाओंमें गौरवपूर्ण पद प्रदान कर देता है।

शंघाई उस समय सन्ध्याकालीन आभाका आनन्द ले रही थी। अब यह प्रशान्तकी अभिमानिनी महारानी नहीं रह गयी थी जो चीनमें अपना स्वार्थ रखनेवाले राष्ट्रोंकी नीतिका निर्देश करती हो। युद्धके बाद इसकी उस बड़ी नगरपालिकाके स्थानपर चीनी प्रशासन कायम हो गया जिसका चुनाव वे विदेशी करदाता कर देते थे जिन्होंने वैदेशिक अधि-कारोंके संरक्षणमें चीनके व्यापारसे अपार धन कमाया था और इस महान् नगरीका निर्माण किया था। अब शंघाईके मेयर सीधे सादे श्री के. सी. वू थे जिनके कार्योंमें उनके योग्य सेक्रेटरी श्री पर्ल चेन सहायता देते थे। फिर भी वैदेशिक प्रभुताके कुछ बाहरी प्रतीक नगरमें शेष रह गये थे। नगरके मध्यमें घुड़दौड़का विशाल मैदान बना हुआ था जिसके बिना अंग्रेजोंका विदेशोंमें रह पाना ही बड़ा कठिन है। स्वयं बाँधपर शंघाई क्लब बना हुआ था जिसके सम्बन्धमें यह ख्याति थी कि यहाँ दुनियाका सबसे बड़ा बार (आपानक) है जहाँपर लंचके समय सभी बड़े-बड़े अंग्रेज व्यापारियोंका तांता लग जाता था। चीनके इस सर्वप्रमुख व्याव-सायिक केन्द्रमें बने हुए लम्बे-चौड़े मैदानों और आरामदेह शानदार कमरोंसे सुसज्जित अंग्रेजी, फ्रांसीसी और इटालियन क्लब विभिन्न यूरोपीय जातियोंकी महत्ता घोषित करते थे। शंघाईमें उस समय भी ६० हजारसे भी अधिक यूरोपियन रहते थे और यूरोपके बाहर निस्सन्देह यह सबसे

बड़ा यूरोपीय नगर था। यूरोपवालोंके लिए सचमुच यह एक ऐसी समृद्धिका युग था जिसका दूसरा उदाहरण नहीं मिलता।

किन्तु नगरपरसे यूरोपियनोंका अधिकार समाप्त हो चुका था और यह पता न चलता था कि अधिकार वस्तुतः अब किसमें केन्द्रित है। नगरमें श्री के. सी. वूकी मेयर सरकार अवश्य स्थापित थी किन्तु लोग यह जानते थे कि उनके पीछे और ऊपर तू येन-शेन नामक उस शैतानका प्रभाव व्याप्त है जो नगरका एक कुख्यात डाकू था और अपने आप राजा बन बैठा था। यह व्यक्ति युद्धके बाद न जाने किस अज्ञात प्रक्रिया-से नगरका सबसे बड़ा लोकहितैषी और सर्वाधिक समादृत नागरिक बन बैठा। तूका जीवन शंघाई और सच पूछिये तो आधुनिक चीनकी एक रोमाण्टिक कहानी बन गया है। तू फ्रेंच अधिकृत क्षेत्रकी गन्दी बस्तियों-में पैदा हुआ। बादमें उसने समय-समयपर नारंगी बेचनेवालों, रेलवे स्टेशनों और बाजारोंमें तरह-तरहके व्यापार करनेवालों आदिके विभिन्न व्यावसायिक पेशे अख्तियार किये और धीरे-धीरे शंघाईके नागरिक जीवनके पीछे छिपे संसारमें वह अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ अदा करता गया। किसी समय वह हरी कमीजवालोंके शक्तिशाली गुप्त दलमें भी, जिसने चीनपर बहुत प्रभाव डाला है, शामिल हो गया और इसी समय दलमें शामिल होनेवाले एक नये-जूनियर सदस्य च्यांगकाई शेकके सम्पर्कमें आया। कहा जाता है कि १९१५ से १९२३ के बीचमें च्यांग-काई शेककी हालत बड़ी खराब थी और वे मदिरालयोंका ठेका लेकर जीविका निर्वाह कर रहे थे। इस सम्बन्धमें सत्य चाहे जो भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि तू येन-शेन जबतक जीवित रहा उसका च्यांगपर व्यापक प्रभाव बना रहा।

जब च्यांगकी सेनाएँ शंघाईकी सीमापर पहुँच गयी थीं और नगरमें उथलपुथल हो जानेकी पूरी सम्भावना थी, फ्रांसीसियोंने तूसे ही सहायता माँगी थी। उसीके प्रयत्नसे फ्रेंचअधिकृत क्षेत्रमें शान्ति कायम रह सकी थी किन्तु अन्तरराष्ट्रीय अधिकृत क्षेत्रमें कम्युनिस्टों द्वारा संघटित बड़ा

विद्रोह फूट पड़ा। इस विद्रोहका नेतृत्व कम्युनिस्ट उपसेनापति श्री चाओ एन-लाई कर रहे थे। यह च्यांगकी नीतिके विरुद्ध था क्योंकि च्यांगने अपने कम्युनिस्ट साथियोंसे हर प्रकारका सम्बन्ध-विच्छेद कर लेनेका निश्चय कर लिया था। इस संकटके समय सहायताके लिए च्यांग गुप्त दलके अपने 'बड़े भाई' तूकी ओर ही मुड़े और तू के प्रभावसे ही क्रांतिको दबाया जा सका। तू ने इसके लिए कम्युनिस्टोंके विरुद्ध गुप्तदलों और गिल्डोंकी समूची संघटित शक्ति लगा दी थी।

नानकिंगमें कोमिंतांग सरकारकी स्थापनाके बाद शंघाईमें तूकी सत्ता बहुत कुछ प्रत्यक्ष रूपमें चरितार्थ हो रही थी किन्तु उसने अपने फ्रांसीसी संरक्षकोंको न छोड़ देनेकी बुद्धिमानी बराबर बरती और फ्रांसीसी लोग भी संकटके समय प्राप्त उसकी सहायताके कारण उसे बराबर बड़ी इज्जत करते थे। १९२६ से १९३६ तक तू येन-शेन नगरका सबसे प्रभावशाली चीनी था। वह एक प्रकारकी अदृश्यशक्ति—फू मांचू—था जो छिपे रूपमें परदेकी ओट से सारे काम करता था और उसका शंघाईके नागरिक जीवनके पीछे छिपे संसारकी सारी कारगुजारियोंमें, जिनके लिए उस समय शंघाई बदनाम हो गया था, हाथ रहता था। शंघाईपर जापानियोंका कब्जा होनेके समय तू फ्रेंच अधिकृत क्षेत्रमें ही रहने लगा था और वहाँसे उसने नगरकी जनताके साथ राष्ट्रवादियोंका सम्पर्क बराबर बनाये रखकर उनकी बड़ी सहायता की थी। स्वयं श्री जार्ज येहने मुझसे कहा था कि एक बार जब वे जापानी अधिकृत क्षेत्रमें फँस गये थे तो तूने ही उनकी मुक्तिकी व्यवस्था की थी।

युद्धके बाद जब शंघाई चीनको वापस मिल गया तो तू येन-शेनको, नगरके एक बड़े व्यक्तिके रूपमें, उच्च समाजमें भी सम्मान मिलने लगा। अखबारोंमें उसका उल्लेख सामान्यतः एक बड़े लोकहितैषीके रूपमें होता था। देखनेमें वह पुराने ढंगका विशिष्ट, गम्भीर और उदार व्यक्तित्व वाला चीनी अफसर मालूम पड़ता था। व्यवहारमें वह बहुत ही सौजन्यपूर्ण था और संसारकी सभी गतिविधि और विषयोंपर मैत्रीपूर्ण

तटस्थतासे विचार करता था।

नगरका कारबार और व्यापार काफी समृद्ध अवस्थामें दिखाई पड़ता था। दिनमें नगरकी सड़कोंपर आने जानेवाले रिक्शों और 'पेडीकैबों'का ताँता लगा रहता था तथा रातमें नगर विविध प्रकारकी रोशनियोंसे जगमगाता रहता था। टैक्सी डांसर और सड़कोंपर घूमकर सामान बेचनेवाले असंख्य अड्डों और क्लबोंमें मानों स्वर्गका आनन्द लूटते हुए नजर आते थे, फिर भी किसी साधारणसे पर्यवेक्षकको भी यह स्पष्ट रूपसे प्रतीत हो सकता था कि नगरपर मृत्युकी छाया पड़नी शुरू हो गयी है। सड़कें भिखमंगोंसे भर गयी थीं। शरणार्थी चूहोंकी भाँति मर रहे थे, कोई भी उनका ख्याल करनेवाला न था। चोरबाजारी खुले-आम बढ़ती जा रही थी और हर प्रकारकी नागरिक भावना कूचकर चुकी थी। मेयर श्री के० सी० वूने इन परिस्थितियोंमें कुछ व्यवस्था लानेके लिए बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उन्हें अपनी विवशता स्वयं स्वीकार करनी पड़ी। यह एक भयानक स्थिति थी। जब मैं यहाँसे नानकिंग वापस गया तो वहाँके अपेक्षाकृत सरल और साधारण जीवनमें मुझे बड़ी राहत मिली।

तीसरा परिच्छेद

नानकिंग सरकारका पतन

अन्तमें जुलाईमें सरकारने मुद्रा सुधारकी योजना कार्यान्वित करनेका निश्चय किया। युवान नामक एक नयी स्वर्ण मुद्रा जारी की गयी और पुरानी फा पी मुद्राका प्रचलन समाप्त कर दिया गया। घोषित किया गया कि नयी मुद्राके पीछे संचित स्वर्ण निधिकी पूरी शक्ति है और इस बातकी पूरी कोशिश की जायगी कि इस मुद्राका मूल्य न गिरने पाये। इस योजनाके कार्यान्वयमें अपना दृढ़ निश्चय दिखानेके उद्देश्यसे सरकारने जेनरल च्यांगकाई शेकके पुत्र श्री च्यांङ् चिङ् कुओको, जो अपनी दृढ़ता और निर्भीकताके लिए सुप्रसिद्ध थे, शंघाईमें योजनाके सम्यक् संचालनके लिए विशेष अधिकारीके रूपमें नियुक्त किया। युवक च्याङ् को नगरके किसी भी व्यक्तिके प्रति उसकी सामाजिक श्रेणी, स्थिति अथवा मर्यादाका कोई भी ख्याल किये बिना कड़ीसे कड़ी संक्षिप्त कानूनी काररवाई करने और नगरके आर्थिक जीवनको सुधारनेके लिए असीम अधिकार दे दिये गये। च्याङ् चिङ् कुओने अपने कर्तव्यका पालन सैनिक दृढ़ता और तत्परतासे किया जिससे चोरबाजारियों, मुद्राके सट्टे-बाजों और अवैध व्यापारमें शामिल लोगोंके दिलोंमें आतंक समा गया। चार सप्ताहतक शंघाईमें आतंकग्रस्तताके कारण पर्याप्त सुधार नजर आया किन्तु टाइगर च्याङ्को शीघ्र ही तूके अन्तर्हित साम्राज्यकी अदृश्य शक्तिका सामना करना पड़ा। च्याङ् चिङ् कुओ द्वारा गिरफ्तार किये गये तथा विशेष न्यायालयके सम्मुख उपस्थित किये गये आदमियोंमें एक ऐसा आदमी आया जो तूका माना-जाना एजेण्ट था। टाइगर च्याङ् ने उसे गिरफ्तार करके जान-बूझकर तू की सत्ताको चुनौती दी थी।

चीनका हर आदमी यह समझ रहा था कि अब इन दोनोंका युद्ध छिड़ गया है और मुद्राका भविष्य इसीके परिणामपर निर्भर है। सचमुच बड़ी तनातनीकी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। तूने कुछ समयतक धैर्य-पूर्वक इस बातका इन्तजार किया कि युवक च्याङ्के होश अपने आप ठिकाने आ जायँगे, किन्तु जब टाइगरके नरम पड़नेका कोई लक्षण नजर न आया तो चुपकेसे वह नानकिंग चला गया। शक्तिशाली जेनरलिस्सिमोने उससे धीरेसे समझौता कर लिया और तूका एजेण्ट नाममात्रकी सजा देकर रिहा कर दिया गया।

करीब-करीब उसी समय टाइगर च्याङ्को एक वैसे ही शक्तिशाली दूसरे शत्रुका सामना करना पड़ा था। उसके एजेण्टोंने याङ्त्सी विकास निगमके गोदामोंमेंसे भारी परिमाणमें निषिद्ध वस्तुएँ बरामद की थीं। इस निगमका नियन्त्रण एच० एच० कुंग जैसा व्यक्ति कर रहा था जिसकी पत्नी मैडम च्यांगकाई-शेककी बड़ी बहिन थी। एच० एच० कुंग-का लड़का और मैडम च्यांगका बहिनौता डेविड कुंग व्यापारका सर्वेसर्वा था। टाइगरने न केवल उसकी व्यापारिक प्रतिष्ठापर छापा मारा और उसके मालगोदामोंपर कब्जा कर लिया, बल्कि स्वयं डेविड कुंगको गिरफ्तार कर लेनेकी धमकी दी। उस युवकने तुरत अपनी मौसीको फोन कर दिया। जिस समय उसका फोन आया मैं और मेरी पत्नी दोनों संयोगवश जेनरलिस्सिमोके साथ खाना खानेके लिए उनके घरपर ही पहुँचे हुए थे। मैडम च्यांग फोन सुननेके लिए तुरन्त ही टेबुलसे उठ गयीं। फोन सुनकर लौटनेपर वे क्रोधसे बिलकुल लाल हो रही थीं। उन्होंने रूखे और खिझलाये हुए स्वरमें कहा कि वे कल तड़के ही शंघाई रवाना हो रही हैं। उस समय मुझे मालूम न था कि मामला क्या है, किन्तु घर वापस आते ही मैंने शंघाई स्थित अपने वाणिज्यदूतको इस आशयका संवाद भेज दिया कि वे मैडमके एकाएक शंघाई जानेका क्या उद्देश्य है, इसका पता लगानेका प्रयत्न करें। किन्तु मुझे इस सम्बन्धमें कुछ भी परेशान होनेकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि दूसरे दिन शामतक

सारे चीनको मालूम हो गया कि मैडम च्याङ्ने अपने सौतेले लड़केके खिलाफ निश्चित रूपसे हस्तक्षेप किया है और उसे साफ-साफ बता दिया है कि कुंगके स्वार्थोंपर आघात करके वह अपने अधिकारकी उचित सीमाओंका उल्लङ्घन कर रहा है। कुछ दिनों बाद डेविड कुंग ऐसी परिस्थितियोंमें अमेरिका चला गया जिससे देशमें उसके खिलाफ बड़ा अपवाद फैल गया।

इस प्रकार मुद्राकी स्थिरताके लिए होनेवाली लड़ाई समाप्त हो गयी। च्याङ् चिङ्-कुओने निराश होकर पद-त्याग कर दिया। तब यह स्पष्ट हो गया कि फा पी के स्थानपर आनेवाला स्वर्ण युवान भी उसीके रास्तेपर जायगा। इसका अवसान कुछ दिनों बाद हुआ जब मैं संयोगवश पीकिंगमें मौजूद था।

मैंने जेनरलिस्सिमोके साथ हुई जिस दावतका ऊपर उल्लेख किया है उस अवसरपर श्री च्यांगकाई शेकने मुझसे पूछा था कि मैं अबतक पीकिंग गया हूँ या नहीं। मैंने उन्हें उत्तर दिया था कि मैं कुछ दिनोंमें ही पीकिंग जानेकी आशा करता हूँ। उन्होंने पीकिंग यात्राके लिए मुझे अपने एक निजी विमानका उपयोग करनेको कहा जिसे मैंने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लिया। दो सप्ताह बाद मैं विमानसे पीकिंग गया। उस समय पीकिंग उत्तरी चीनकी राजधानी थी। उस समय मुझे इस बातका जरा भी ख्याल न था कि गृहयुद्धमें एक ऐसे संकटकी स्थिति इतनी जल्दी आ जानेवाली है जिससे छ महीनेके अन्दर ही च्यांगको राजधानीसे भाग खड़ा होना पड़ेगा। जब हम लोग सबेरे नानकिंगसे रवाना हुए तो सारी स्थिति बिलकुल सामान्य थी। तीसरे पहर ही पीकिंग पहुँचनेपर वातावरणमें बड़ा तनाव आ गया था। पीकिंगमें अभी-अभी समाचार मिला था कि प्रान्तोंकी बड़ी राजधानियोंमेंसे एक त्सिनानका पतन हो गया है और कम्युनिस्टोंने उसपर कब्जा कर लिया है। चीनका कम्युनिस्टों द्वारा अधिकृत होनेवाला यह पहला नगर था। इस समाचारसे जैसे सारे नगरको लकवा मार गया। जिस होटलमें हम ठहरे हुए थे वहाँ सभी लोगोंकी

जबानपर केवल एक ही प्रश्न था कि क्या अब कम्युनिस्ट लोग पीकिंगपर आक्रमण करेंगे। नगरमें आतंक छाया हुआ था। क्योंकि कम्युनिस्ट सेनाएँ ५० मीलसे भी कम दूरीपर स्थित थीं। किन्तु लोगोंकी यह सामान्य धारणा थी कि कम्युनिस्टोंके पास बड़े नगरोंपर कब्जा करने और उनपर अपना अधिकार बनाये रखनेकी ताकत नहीं है। वस्तुतः उन्होंने कभी इसकी कोई प्रवृत्ति भी नहीं दिखायी थी। इसीलिए त्सिनानपर उनका कब्जा होनेकी खबरसे लोगोंको बड़ा धक्का लगा।

पीकिंग बड़ा ही सुन्दर नगर है। इसका वातावरण एक बड़ी शाही राजधानीका-सा है। इस 'प्रतिषिद्ध नगर'[1]की पीली अंग्रेजी खपरैलोंसे बनी, दूर-दूरतकके क्षेत्रोंमें फैली और राजधानीपर अपने व्यापक विस्तारमें सोनेकी तरह चमकती छतें, उद्यानों, उपवनों और कृत्रिम पहाड़ियोंसे समन्वित बड़ी-बड़ी झीलें, असंख्य प्राङ्गणों, जलाशयों और प्रमोद वनोंवाले,[2] और नीची छतोंवाले मकान, नगरकी विशालकाय दीवारें, उनमें बने प्रभावशाली आकार-प्रकारके ऊँचे-ऊँचे दरवाजे और पटहघोषके लिए बनी मीनारें उन यात्रियोंको भी प्रभावित किये बिना नहीं रह सकतीं जो लन्दन, पेरिस और न्यूयार्कके दृश्योंको देख चुके हैं। किन्तु जब हमने इसे पहली बार देखा तो इसकी दशा दयनीय थी। दो दशकोंसे भी अधिक समयसे जानबूझकर इसकी उपेक्षा होती रही है। मुझे बताया गया था कि इसके 'प्रतिषिद्ध नगर' की सार-सँभारके लिए जो अनुदान मिलता है वह मेहतरोंके वेतनके लिए भी पूरा नहीं पड़ता। नगरकी सुन्दर झीलें सेवार और गन्दगीसे भर गयी थीं, कोई उनकी देखभाल करनेवाला न था। कम्युनिस्ट अधिकृत क्षेत्रोंसे आनेवाले शरणार्थियोंने नगरकी विश्वविश्रुत ऐतिहासिक इमारतों और स्मारक-भवनोंपर जबर्दस्ती कब्जा कर लिया था और वे उसमें

१. पुराना शाही महल।

२. चीनके विशेष प्रकारके उद्यान जिनमें कृत्रिम पहाड़ियाँ बनी होती हैं।

भेड़ बकरियोंकी तरह भरे हुए थे, स्वास्थ्य और सफाईका कोई साधारण प्रबन्ध भी न था। दुनियाकी सर्वाधिक सुन्दर इमारतोंमें गिने जानेवाले 'स्वर्गके मन्दिर'[1]में एक हजारसे भी अधिक छात्र भरे हुए थे और जैसे भी चाहते थे, रह रहे थे। पचाससे भी अधिक छात्र देवपुत्र[2] के नेपथ्यकक्षमें सो रहे थे। इन पवित्र स्थानोंकी गन्दगी वर्णनातीत थी। यहाँतक कि कन्फ्यूशियसका मन्दिर और 'शास्त्रोंका सभामण्डप'[3] भी नहीं बचा पाया था। वस्तुतः यह एक बड़ा ही दर्दनाक दृश्य था। जब मैं नगरके मेयरसे मिलने गया तो मैंने नगरपालिकाके अधिकारियोंसे इस दुरवस्थाकी चर्चा की। जवाबमें उन्होंने कहा कि ये नौजवान लोग, जिन्हें सैनिकोंके रूपमें हमारे आगे-आगे चलना चाहिये, अपनेको हमारा मालिक समझते हैं। मेरा इनपर कोई अधिकार नहीं चलता। यदि इनकी इच्छा हो तो ये और किसी भी इमारतपर कब्जा कर सकते हैं, इससे इन्हें कोई रोक नहीं सकता! यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि नागरिक अधिकारियोंकी यही स्थिति थी, किन्तु पीकिंगके सैनिक शासकोंके साथ व्यवहार करना इतना आसान न था। इस क्षेत्रकी सर्वोच्च कमानका अधिकार सुप्रसिद्ध जेनरल फू-त्सोयी को दिया गया था। इन्हें उस समय अमेरिकी लोग उत्तरी चीनमें कोमिंताङ्ग सेनाओंकी एकमात्र आशा समझते थे। कुछ समयसे अमेरिका जेनरलिस्सिमोपर इस बातका दबाव डाल रहा था कि वे उसे फू-त्सोयीके पास सीधे शस्त्रास्त्र भेजनेकी अनुमति दे दें, क्योंकि जेनरल योकी एक अरसेसे यह शिकायत थी कि च्यांग उनके लिए शस्त्रास्त्रोंकी पूर्तिमें बराबर कमी रखते हैं। च्यांग अपने आदमीको बहुत अच्छी तरह पहचानते थे। इसका प्रमाण आगेकी घटनाओंसे मिल गया। जब अमेरिका जेनरल

१. वह मन्दिर जिसमें चीनी सम्राट देवताओंको प्रसन्न करने के लिए उनके नामपर बलि चढ़ाया करते थे।

२. चीनके सम्राटों की उपाधि।

३. प्राचीन ग्रन्थों और शास्त्रोंके सम्मानमें बना हुआ भवन।

यीको सीधे शस्त्रास्त्र देने लगा तो उनके पास शस्त्रास्त्रोंका एक अच्छा-खासा भण्डार बन गया। निस्सन्देह वे एक कुशल सैनिक थे। मुझे उनसे मिलनेका अवसर नहीं मिला, क्योंकि जब मैं वहाँ था तो वे मोरचे-पर थे, किन्तु उनके सहायक अधिकारीने भूतपूर्व जापानी दूतावासमें एक औपचारिक दावतका आयोजन करके मेरा स्वागत किया था। हम लोगों-का स्वागत उस ऐतिहासिक कक्षमें हुआ था जिसमें कुख्यात २१ माँगें चीनियोंपर लाद दी गयी थीं। दावतमें दिये गये व्यंजन भी अत्यन्त स्वा-दिष्ठ थे। वहाँ हमने पीकिंगको घेरनेवाली कम्युनिस्ट सेनाओंको एक ही दौरमें खत्म कर देनेके बारेमें सुना। दूसरे ही दिन मुझे कुछ ऐसी सूचना मिली जिससे इस बातका पता चल गया कि ऊँट किस करवट बैठने जा रहा है। मेरे एक सहकर्मीने, जो एक पश्चिमी राष्ट्रका विशिष्ट प्रतिनिधि था, मुझे बातचीतके सिलसिलेमें बताया कि उसने पीकिंगमें कम्युनिस्टोंके साथ एक ऐसा सौदा किया है जिसके अनुसार उसके देशके कुछ लोग लाखों पौण्डके शस्त्रास्त्र उन्हें देने जा रहे हैं। मैं यह सुनकर आश्चर्य-चकित रह गया और उससे पूछा कि फूत्सो-यीकी नाकके नीचे वह ऐसा कर कैसे सका? वह इसपर केवल आँखें मारकर रह गया और बोला—कुछ भी किया जा सकता है। अगले तीन महीनोंमें फूत्सो-यी माओ-त्से-तुंगके हाथमें चले गये। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उक्त व्यवस्था पूरी तरहसे सम्पन्न हो गयी थी।

सुप्रसिद्ध पीता विश्वविद्यालयने मुझे भाषण करनेके लिए आमन्त्रित किया था और पीकिंगकी दूसरी शिक्षण-संस्थाओंकी भी मेरे प्रति बड़ी उदार आतिथ्यभावना थी। इससे मैं नगरके प्रधान बुद्धिजीवियोंके सम्पर्क-में आ गया। यद्यपि डाक्टर हू-शिह दूसरे विश्वविद्यालयमें भाषण देने गये थे तथापि उन्होंने अपने मित्रोंको जैसा लिखा भेजा था, उन्होंने मेरा बड़ी हार्दिकता और सहृदयतासे स्वागत किया। जिन परिस्थितियोंमें प्राध्यापकगण रह रहे थे वह तो भयावह थी। उन्हें अत्यल्प वेतन मिलता था और इस अल्प वेतनके पूरकके रूपमें कुछ चावलका अनुदान मिला

करता था। सच पूछिये तो अधिकांश प्राध्यापकोंको खाने और साफ-सुथरे, एवं सभ्य ढंगसे वस्त्र पहननेके लिए भी पर्याप्त पैसे नहीं मिलते थे, फिर भी वे चीनकी शैक्षिक परम्पराओंको कायम रखनेके लिए वीरतापूर्वक संघर्ष कर रहे थे। ऐसी स्थितिमें कोई आश्चर्य नहीं कि अधिकांश प्राध्यापक असन्तुष्ट रहे हों। मुझे तो इस बातका सन्देह है कि अध्यापकोंकी एक अच्छी-खासी संख्याकी सहानुभूति माओ-त्से-तुंगके साथ थी। कम्युनिस्ट शिविरके अनेक युवक नेता अर्थात् पोयी-पो छात्र थे, जो समय-समयपर कम्युनिस्ट शिविरमें जा मिलते थे। मुझे विश्वविद्यालयके अध्यापकोंने बताया कि उच्च श्रेणीके छात्रोंके जत्थे नगरसे बाहर कुछ मील दूर स्थित कम्युनिस्ट क्षेत्रोंमें नियमित रूपसे जाते रहते हैं। दूसरी आश्चर्यकी बात यह भी थी कि विदेशी अध्यापकोंकी सहानुभूति भी मुख्यतः कम्युनिस्टोंके साथ ही थी।

मैं पीकिंगमें बारह दिन रहा। मेरे ठहरनेके आखिरी दो दिनोंमें एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना हुई। लोग इसे 'खरीदारीका नशा' कहते थे। यह एक प्रकारकी नैतिक महामारी थी जिसके प्रभावके कारण नगरके प्रायः सभी लोग जो कुछ भी पैसा उनके पास था उसे लेकर दूकानोंपर जो कुछ भी मिल सकता था उसे खरीदनेके लिए दौड़ पड़े। मेरा परिचित एक चीनी दूकान-दूकान घड़ियाँ खरीदता फिरा और दूसरेको फाउण्टेन कलमें ही खरीदनेकी धुन समा गयी थी। बात यह हुई कि जनताके पास जो कागजी सिक्के थे उनसे वह जल्दीसे जल्दी छुटकारा पानेके लिए उतावली हो रही थी और कुछ ऐसी चीज हाथमें कर लेना चाहती थी जो ठोस हो। यह स्पष्ट था कि जिस स्वर्ण 'युवान'पर लोगोंकी इतनी आशाएँ टिकी हुई थीं वह अपने भूतपूर्व सिक्केके रास्तेपर जा रहा था। एकाएक उत्पन्न होनेवाली इस दुस्स्थितिका कारण स्पष्ट नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि जनता किसी प्रकार मंचूरियामें होनेवाली विनाशकारी घटनाको, जिसे अबतक सेंसर छिपानेमें सफल हुआ था, भाँप गयी थी।

जिस समय हम लोग पीकिंगमें थे, जेनरल च्याङ् काई-शेक स्वयं वहाँ पहुँचे थे और अधिकारियोंसे जल्दी-जल्दी परामर्श करके विमानसे मुकदन चले गये। वहाँ उन्होंने उस क्षेत्रके सेनापतियोंका सम्मेलन बुलाकर देहाती इलाकोंपर जेनरल लिन् पियावके अधीनस्थ शक्तिशाली कम्युनिस्ट सेनाओंको समाप्त करनेकी एक योजना तैयार की। मंचूरियामें वास्तविक युद्ध शुरू होनेके पूर्व हम लोग १० वीं अक्तूबरको, जिसे कोमिंतांग राष्ट्रीय दिवसके रूपमें मनाते थे, राजधानीमें उपस्थित रहनेके लिए वापस आ गये। इस वर्ष राष्ट्रीय दिवसपर कोई समारोह नहीं हुआ। इस आशयके समाचार आने लगे थे कि सैनिक नेतृत्व, प्रशिक्षण, शस्त्रास्त्र तथा अन्य सरोसामानकी दृष्टिसे च्याङ्की सर्वोत्तम मंचूरियन सेनाएँ जेनरल लिन् पियाव द्वारा घेर ली गयी हैं और बड़ी संख्यामें आत्म-समर्पण कर रही हैं। मंचूरियाका अभियान बड़ी तेजीसे सम्पूर्ण विनाशकी ओर अग्रसर हो रहा था और यह स्पष्ट हो रहा था कि उत्तरी चीन भी कम्युनिस्टोंके मुकाबले बहुत समयतक टिका न रह सकेगा। इसीलिए १० अक्तूबर निराशा और विषादके वातावरणमें मनाया गया।

श्री च्याङ् काई-शेकपर प्रशासनपरसे अपना नियन्त्रण ढीला करनेके लिए दबाव बढ़ने लगा। यह दबाव सेना, राजनीतिज्ञ, स्वतन्त्र विचारक और यहाँतक कि उच्च अधिकारियोंकी तरफसे भी पड़ने लगा। एक बड़ी विलक्षण और अप्रत्याशित घटना यह हुई कि विधान-निर्मातृ युवान (संसद)का स्वरूप ही बदलने लगा। कोमिंतांग द्वारा निर्मित संविधानके अन्तर्गत सरकार विधान निर्मातृ युवानके प्रति उत्तरदायी नहीं थी, किन्तु सहसा यह सभा जनताका असन्तोष प्रभावकारी ढंगसे व्यक्त करने लगी और इस तरह इसने श्री च्याङ्के प्रशासनका चलना मुश्किल कर दिया। इसने हर चीज और हर व्यक्तिकी आलोचना करनेकी नीति अख्तियार कर ली और मन्त्रिमण्डलको नियुक्त करनेके जेनरलिस्सिमोके अधिकारको भी अप्रत्यक्ष ढंगसे चुनौती देने लगी। प्रधान मन्त्री श्री वोङ् वेन होवाने पदत्याग कर दिया था, किन्तु विधान निर्मातृ-युवान प्रधान मन्त्रिपदपर

श्री च्याङ्के सुझावपर किसी अन्य व्यक्तिकी नियुक्तिमें बराबर बाधा डालती रही। यह बराबर ऊँची आवाजसे गृहयुद्धको समाप्तकर शान्ति स्थापित करनेकी माँग करती रही। नियंतृ-युवान भी, जिसे संविधानके सम्यक् पालन कराने और प्रशासकीय गड़बड़ियों और गोलमालकी सीधी जाँच करनेका अधिकार था, धीरे-धीरे श्री च्याङ् और उनके नजदीकी लोगोंको बदनाम करनेवाले मामलोंपर प्रत्यक्षतः विचार करने लगी। याङ्त्सी विकास निगमके विरुद्ध श्री च्याङ्-चिङ्-कुओ द्वारा की गयी कारवाईके बाद डेविड कुंगके अमेरिका चले जानेपर महीनों बाद भी नियंतृ-युवानने उनके मामलेकी जाँच करनेपर जोर दिया जिसका स्पष्ट उद्देश्य मैडम च्याङ् काई-शेकपर आरोप करना और उन्हें बदनाम करना था। १० वीं अक्तूबर (१९४८) के बादके कुछ हफ्तोंमें ही यह स्पष्ट होने लगा कि जेनरलिस्सिमो और उनकी सरकारके प्रति विरोध और देशमें शान्ति स्थापित करनेका जनप्रिय आन्दोलन व्यापक रूपमें बढ़ता जा रहा है।

इस बढ़ते हुए विरोधके प्रति च्यांङ्की प्रतिक्रिया भी निराले ढंगकी ही थी। उन्होंने अपने एक दूसरे भाषणमें आगामी तीन महीनोंमें कम्युनिस्टोंको जड़मूलसे समाप्त कर देनेकी प्रतिज्ञा की। जब इसी प्रकारका वादा उन्होंने मईमें किया था तो यह बहुत असम्भव नहीं मालूम पड़ा था और न तो साधारण जनताने ही इसे कोई लम्बी-चौड़ी बात समझा था। मईमें कम्युनिस्ट क्षेत्र अनिश्चित थे। यद्यपि सभी लोग यह जानते थे कि माओ-त्से-तुंगके पास काफी सशक्त सेना मौजूद है फिर भी कम्युनिस्ट सेनाने तबतक किसी निर्णयकारी युद्धमें भाग नहीं लिया था। उस समय कम्युनिस्ट किसी भी एक प्रान्तपर अपने एकान्त और अविभाजित अधिकारका दावा नहीं कर सकते थे। वे विशाल क्षेत्रोंमें इधर-उधर छिटफुट हमला करते और अधिकार करते नजर आते थे, किन्तु चीनका प्रत्येक बड़ा नगर और उसके अधिकांश प्रान्त केन्द्रीय सरकारके नियन्त्रणमें थे जिसके पास चालीस लाखसे भी अधिक पूर्ण सुसज्जित

सेना मौजूद थी। इस सेनाकी कुछ इकाइयोंको अमेरिकनोंने प्रशिक्षित किया था और उसे बर्मामें लड़ाईका भी अच्छा अनुभव प्राप्त हो चुका था किन्तु नवम्बरमें श्री च्यांगकी उक्त घोषणा व्यर्थकी डींग मालूम पड़ने लगी, क्योंकि न केवल उनकी मंचूरियन सेना ही, जिसमें करीब १० लाख सैनिक थे, पराजित होकर आत्मसमर्पण कर चुकी थी और उत्तर-पूर्वीय प्रान्त उनके हाथ से निकल चुके थे बल्कि पीकिंग और तिन्सिन्पर भी हमले होने लगे थे और उनकी प्रभावकारी प्रतिरक्षाकी भी सम्भावना बहुत क्षीण थी। इसके अतिरिक्त ल्यु-पे-चेङ्, जो एकाक्ष अजगरके रूपमें प्रसिद्ध थे और प्रबल आक्रमणकारी चेन् यी जैसे महान् सेनापति सुचाउमें, जो नानकिंगका दरवाजा समझा जाता है, दिखाई पड़ने लगे थे। सुचाउमें भीषण युद्ध छिड़ गया था। स्थिति यह थी कि यदि इस युद्धमें च्याङ्की सेना हार जाती है और सुचाउका पतन हो हो जाता है तो इससे नानकिंगके और वस्तुतः कोमिंताङ्ग सरकारके भाग्यका भी आखिरी फैसला हो जायगा। च्याङ्ने इस युद्धमें अपनी सारी सेना झोंक दी। ऐसा कहा जाता है कि सैनिक काररवाईका बहुत बड़ा भार उन्होंने अपने ऊपर उठा लिया था। गृहयुद्धके दौरानमें होनेवाली एकमात्र बड़ी और गम्भीर लड़ाई यही थी। करीब एक महीने-तक सेनाओंके घेरे जाने और मौतके घाट उतारे जानेका क्रम चलता रहा। अन्तमें युद्धका परिणाम भी निर्णायक हुआ। च्याङ्की सेनाएँ बुरी तरह परास्त हुईं और विजयश्री कम्युनिस्टोंके हाथ लगी।

चीनकी आन्तरिक स्थिति भी विस्फोटक हो रही थी। सुचाउ अभियान शुरू करनेके पूर्वसे ही श्री च्याङ्ने दमनकी नीति जारी कर दी थी। विश्वविद्यालयोंमें, जो च्याङ् विरोधी आन्दोलनके गढ़ बन रहे थे, छात्रवेशधारी कोमिंतांग युवकदलके फासिस्ट गुण्डोंको डण्डोंके बलसे असन्तुष्ट लोगोंकी जबान बन्द कर देनेका आदेश प्राप्त था, सुरक्षाकी काररवाई कड़ी कर दी गयी थी। किन्तु इन काररवाइयोंका असर बहुत कम हुआ। विधाननिर्मातृयुवान विरोधपक्षकी प्रवक्ता बन चुकी थी

और अमेरिकी लोग इसे चीनमें लोकतन्त्रकी शुरुआत मानकर इसपर खुश हो रहे थे। इस सभाके खिलाफ कोई काररवाई करनेमें च्याङ्के हाथ बँधे हुए थे। वस्तुतः स्वयं अमेरिकी दूतावास उपराष्ट्रपति श्री ली त्सुङ्-जेनका सावधानीसे समर्थन करनेकी नीतिकी ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगा था और गैररस्मी तौरसे उसे यह समझा रहा था कि रक्षाका एकमात्र रास्ता यही है कि च्याङ् अपदस्थ हो जायँ।

इसी समय अमेरिकाविरोधी एक उग्र आन्दोलन भी छिड़ गया था। जापानके आर्थिक पुनस्संघटन और श्री मैकआर्थरके खुलेआम यह कहनेसे कि चीनकी मुख्य भूमिपर बढ़ती हुई कम्युनिस्ट शक्तिको रोकनेका एकमात्र उपाय यह है कि जापानको शक्तिशाली बनाया जाय, चीनी जनताको अपने देशमें अमेरिकाके विरोधमें व्यापक आन्दोलन छेड़नेका अच्छा आधार मिल गया। अब यह स्पष्ट हो गया है कि इस आन्दोलनको निश्चय ही कम्युनिस्टोंसे ही प्रेरणा मिली थी, किन्तु प्रेरणा चाहे कहींसे भी मिली हो, इसे व्यवहारतः जनताके सभी वर्गोंने स्वीकार कर लिया था, स्वयं सरकारको भी इस भावनाके समर्थनमें वक्तव्य देने पड़े थे। शंघाईस्थित अमेरिकी महावाणिज्यदूतके, जिन्होंने इस आन्दोलनको अकृतज्ञताका कार्य बतलाया था, दृष्टिकोणसे तथा शंघाईके अमेरिका-अधिकृत 'इवनिंग न्यूज़'के अग्रलेखोंसे भी, जिसमें इस आन्दोलनके कारण सामान्यतः चीनियोंकी भर्त्सना की जाती थी, स्थितिमें कोई सुधार नहीं हुआ। अमेरिकी दूतावास एक ओर अमेरिकाविरोधी आन्दोलन और दूसरी ओर च्याङ्के कट्टर समर्थक होनेका सन्देह किये जानेके कारण दिग्भ्रान्त-सा हो गया, उसकी नीतिमें स्थिरता न रह गयी और उसने सावधानीसे स्वतन्त्र विचारवालोंका समर्थन करना शुरू कर दिया।

सुचाउ और पेङ्-पूके पतनसे च्याङ्की स्थिति डाँवाडोल हो गयी। मुसलिम सेनापति पाइ चुङ्सीकी अधीनस्थ सेना ही एकमात्र ऐसी सेना रह गयी थी जो अभी हारी न थी और जिसमें कुछ शक्ति थी। जेनरल पाइ उपराष्ट्रपतिके अन्तरंग मित्र और सहयोगी थे। उनका मुख्य

कार्यालय हान् चाऊमें था। उन्होंने सुचाउके युद्धमें अपनी सेनाको भेजनेसे साफ इनकार कर दिया। सुचाउ-युद्धके विनाशकारी परिणामके बाद जब च्याङ्ने नानकिंगमें अपने सेनापतियों और गवर्नरोंका सम्मेलन बुलाया तो उसमें बहुत कम लोगोंने आनेका कष्ट उठाया। इसे चीनी अखबारोंमें 'विनम्र अवज्ञाकी महामारी'की संज्ञा दी गयी थी। इससे च्याङ् को यह विश्वास हो गया कि अस्थायी रूपसे ही सही अब उनके अवकाश ग्रहण करनेका समय आ गया है।

जिस समय परिस्थितियाँ इस रूपमें बदल रही थीं, एक दिन शामको मैडम च्याङ्काई-शेकने मेरी पत्नीको क्रिसेन्थेमम फूलोंका एक बहुत ही सुन्दर गुच्छा उपहारके रूपमें भेजा। हमें इससे कुछ आश्चर्य हुआ और हमने फ्रेञ्च राजदूतकी पत्नी मैडम मेरियरको यह जाननेके लिए फोन किया कि क्या उन्हें भी इसी प्रकारका कोई उपहार मिला है। मालूम हुआ कि उन्हें भी ऐसा उपहार भेजा गया था। मैंने यह भी सुना कि एक दूसरे राजदूतकी पत्नीको भी इसी प्रकारका उपहार भेजा गया था। दूसरे दिन प्रातःकाल अखबारोंमें यह समाचार आया कि मैडम च्याङ् अमेरिका रवाना हो गयीं। तब हमें उनके उक्त सौजन्यपूर्ण कार्यका अर्थ समझमें आया।

शान्तिकी माँग बराबर तेज होती जा रही थी। जेनरलिस्सिमोके अत्यन्त विश्वासपात्र अधिकारी तथा सामरिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण उत्तर-पश्चिमी प्रान्तोंमें, जिसमें सिंक्याङ्ग भी शामिल था, उनका प्रतिनिधित्व करनेवाले जेनरल चाङ् चिह्-चुन् सहसा शान्तिदलके नेताके रूपमें नानकिंग पहुँचे। वे मुझसे मिलनेके लिए आये। मेरे यह पूछनेपर कि वे कब-तक नानकिंगमें रहनेका विचार करते हैं उन्होंने जवाब दिया कि जबतक सब कुछ ठीकठाक न हो जाय। मुझे यह समझमें आ गया कि श्री चाङ् चिह्चुन् अबतक कम्युनिस्ट अधिकारियोंके, जिनमेंसे वे बहुतोंको अच्छी तरह जानते थे, अच्छी तरह सम्पर्कमें आ चुके हैं। वस्तुतः वे जेनरल मार्शलकी मध्यस्थतामें कम्युनिस्टोंसे हुई वार्तामें श्री च्याङ् काई-

शेकके एक प्रतिनिधि भी रह चुके थे। शान्तिके अन्य समर्थकोंकी भाँति उन्होंने कोई भाषण नहीं किया, किन्तु यह स्पष्ट था कि वे शान्तिके प्रश्न-पर जेनरलिस्सिमोपर दबाव डालनेका पक्का इरादा रखते हैं।

अन्तमें जेनरलिस्सिमोको झुकना पड़ा। मुझे मालूम हुआ कि सहसा उन्होंने जो यह निश्चय कर लिया उसका एक कारण यह भी था कि उनकी पत्नी जिस उद्देश्यसे अमेरिका गयी थीं उसमें उन्हें सफलता न मिल सकी। अमेरिकी परराष्ट्र विभागने उन्हें कोई तात्कालिक सहायता देनेसे साफ-साफ इनकार कर दिया। घरमें स्वयं अपने सेनापतियोंसे और बाहर जिन्हें वे अपना मित्र समझते थे उनसे धोखा खाकर च्याङ्ने अनिच्छापूर्वक कार्यकारी राष्ट्रपतिके रूपमें श्री ली-त्सुंग-जेनको सत्ता समर्पित करना स्वीकार कर लिया। इसके बाद वे अपनी माँके मकबरेकी यात्राके बहाने अपने प्रान्त चेकियांग चले गये।

ऊपर जिन घटनाओंका संक्षेपमें उल्लेख किया गया है उनपर विचार करते हुए मुझे इस बातमें जरा भी सन्देह नहीं है कि इस समय जेनरलि-स्सिमोने अपने नेतृत्वका जो समर्पण किया उसमें कोमिंतांगका सहसा पतन करानेवाली घटनाओंका बड़ा हाथ है। च्याङ् ही एकमात्र वह व्यक्ति थे जिनके आधारपर कोमिंतांगके पक्षका समर्थन संघटित किया जा सकता था। सेनामें और राष्ट्रवादी क्षेत्रोंकी जनतामें केवल वे ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें पर्याप्त अधिकार और प्रतिष्ठा प्राप्त थी। कभी न झुकनेका दृढ़ संकल्प भी उन्हींमें था। किन्तु वास्तविकता यह थी कि मध्यमवर्गीय जनता और बुद्धिजीवियोंमें पराजयकी भावना घर कर गयी थी और उन्हें यह विश्वास हो गया था कि भाई-भाईकी लड़ाई वार्ताके जरिये सम्मानपूर्ण ढंगसे समाप्त की जा सकती है। संसदमें ऐसे लोगोंका एक शक्तिशाली समूह था जो च्याङ्को वार्ताके रास्तेमें सबसे बड़ा रोड़ा समझता था और इसीलिए उसका सारा विरोध च्याङ्-पर ही केन्द्रित था। कम्युनिस्ट रेडियो भी बराबर इस बातपर जोर दे रहा था कि यदि देशमें विदेशी अर्थात् अमेरिकी प्रभाव कार्य न करता होता

तो चीनमें एकता और शान्ति न-जाने कबकी स्थापित हो गयी होती। इस प्रकार नवम्बरके मध्यसे श्री च्याङ् यह समझने लग गये थे कि उन्हें भविष्यमें अवकाश ग्रहण करना ही पड़ेगा। इसीलिए उन्होंने सतत प्रतिरोधके लिए फारमोसामें निधि, साजसज्जा तथा अन्य प्रकारकी सभी वस्तुओंका संचय और संघटन शुरू कर दिया था। श्री मैकआर्थर, जो उस समय मिकाडो[1] की भूमिका अदा कर रहे थे, फारमोसाको कम्युनिस्ट नियन्त्रणसे बाहर रखनेके लिए कृतसंकल्प थे, अतः एक दिन बिना कोई शोरगुल मचाये बड़ी शान्तिसे जेनरलिस्सिमो इस आशयकी घोषणा करते हुए कि वे राष्ट्रपति पदपर, जब कभी भी वे उचित समझेंगे, पुनः आरूढ़ होनेका अपना अधिकार सुरक्षित रखते हैं, अपने पदसे हट गये। यह उनका पदत्याग नहीं बल्कि अस्थायी अवकाशग्रहण था।

कार्यकारी राष्ट्रपति श्री ली त्सुंग-जेन बड़े ही मिलनसार व्यक्ति थे। उनकी पत्नी बड़ी महत्त्वाकांक्षिणी और मैडम च्यांगकाई-शेकके प्रति ईर्ष्यालु थीं। उन्होंने शासन सँभालते ही अनेक उदार घोषणाएँ कीं। एक अध्यादेशसे आतंककारी खुफिया पुलिस समाप्त कर दी गयी। दूसरी आज्ञासे उन राजनीतिक विरोधियोंको मुक्त कर दिया गया जो वर्षोंसे जेलोंमें सड़ रहे थे। तीसरी आज्ञासे कोमिंतांग युवक संघटनोंका, जिन्होंने विश्वविद्यालयोंको आतंकित कर रखा था, दमन किया गया किन्तु इन उदार आज्ञाओंका व्यवहारतः कोई खास प्रभाव न पड़ा। खुफिया पुलिस केवल श्री च्यांगके प्रति ही उत्तरदायी थी और उन्हींके आदेशानुसार कार्य करती थी। कार्यकारी राष्ट्रपतिकी स्पष्ट आज्ञाके बावजूद मंचूरियन युद्धके नेता श्री चांग त्सो-लिनका लड़का 'युवक मार्शल' चांग सुएह-लिआङ्, जो सिआन घटनामें हाथ होनेके कारण किसी अज्ञात स्थानमें बन्द कर रखा गया था, जेलमें ही रह गया। सेनापति जेनरल लीकी बराबर उपेक्षा करते और च्याङ्के एजेण्टोंसे ही आदेश प्राप्त करते थे। वस्तुतः नानकिंगमें बड़ी गड़बड़ी फैली हुई थी।

१. जापानके सम्राट्की उपाधि।

इस कठिन स्थितिमें श्री लीको संसदपर ही अधिकाधिक निर्भर करना पड़ता था। श्री च्याङ्गके चले जानेसे संसदमें शान्ति समर्थक सदस्योंकी शक्ति बहुत बढ़ गयी थी। दिन प्रतिदिन कम्युनिस्टोंसे प्रत्यक्ष वार्ता करनेकी माँग बढ़ती गयी और उसी अनुपातमें प्रतिरोधकी इच्छा भी घटती गयी। अन्तमें जब कम्युनिस्ट सेनाएँ यांग्त्सीके किनारे नानकिंगके ठीक सामने पुकाओ पहुँच गयीं तो श्री ली त्सुङ्ग-जेनने समझौतेकी वार्ताके लिए श्री माओ त्से-तुंगके पास एक तार भेजा। कम्युनिस्ट नेताओंने, जो नानकिंगके शीघ्रतासे होनेवाले राजनीतिक विघटनसे पूरी तरह अवगत थे, इस प्रस्तावका स्वागत किया और वार्ताके लिए अपनी अष्ट-सूत्रीय योजना उपस्थित कर दी।

नानकिंगकी स्थिति अराजकताकी सीमा तक पहुँच रही थी। एक दिन प्रातःकाल नानकिंग प्रशासनसे सम्बद्ध अमेरिकी सैनिक परामर्श दातृमण्डल तथा उच्च स्थल एवं नौसैनिक अधिकारी बिना कोई खास चेतावनी दिये ही चले गये। इसे जनताने इस बातका निश्चित संकेत समझा कि युद्धमें पराजय हो चुकी है। मुझे सहसा एक कठिन समस्याका सामना करना पड़ा। अमेरिकनोंने डेढ़सौसे अधिक भारतीयोंको सैनिक पुलिसके रूपमें भरती किया और काममें लगाया था। ये भारतीय पूरी तरह प्रशिक्षित और अनुशासित थे। अमेरिकी मालिकोंके चले जानेपर ये न केवल बेरोजगार हो गये बल्कि इनके भारत लौटनेकी भी सम्भावना जाती रही। अमेरिकनोंने इन्हें चीनमें भरती किया था। अतः इनके प्रत्यर्पणकी कोई व्यवस्था नहीं की गयी थी। स्वभावतः इस कठिनाईमें इन्हें मेरी सहायता माँगनी पड़ी। साधारण स्थिति बड़ी तेजीसे बिगड़ती जा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें यह मेरी समझमें नहीं आया कि इन डेढ़सौ भूतपूर्व भारतीय सैनिकोंका, जो ऐसा प्रतीत होता था कि, अमेरिकी शस्त्रास्त्रोंसे लैस हैं, क्या किया जाय। उसी समय मुझे एक उपाय सूझा। नानकिंग स्थित दूतावास इस बात से चिन्तित और सतर्क हो रहे थे कि नगरमें पुलिसकी व्यवस्था क्रमशः अपर्याप्त होती जा रही

है। दूतावासोंमें सुनियोजित चोरियोंकी अनेक घटनाओंके समाचार भी मिल चुके थे। कम्युनिस्टों द्वारा नगरके घेर लिए जानेकी स्थितिमें क्या किया जाय इस सम्बन्धमें ब्रिटिश अधिकारी भी, जो पहलेसे ही आनेवाली परिस्थितियोंको समझ लेनेमें अभ्यस्त होते हैं, सोच-विचार कर रहे थे। राष्ट्रमण्डलीय कूटनीतिज्ञों और कर्मचारियोंको नगरसे हटानेकी व्यापक योजना तैयार हो चुकी थी। खाद्यसामग्रीका भी प्रचुर भाण्डार एकत्र कर लेनेकी व्यवस्था हो चुकी थी। योजनाका सबसे मुख्य अंग यह था कि नानकिंगमें एक ब्रिटिश विध्वंसक लंगर डाल देगा जिसमें हम सभी लोग बैठकर शाही नौसेनाके तोपोंके संरक्षणमें यांग्त्सी नदीसे रवाना हो जायँगे। प्रत्येक सप्ताह एक नया विध्वंसक यांग्त्सीसे नानकिंग पहुँचता था और नदीके दोनोंतटोंपर स्थित प्रतिद्वन्द्वी चीनी सेनाएँ यह देख सकती थीं कि राष्ट्रमण्डलीय देशोंके लोगोंकी रक्षाके लिए उनपर कमसेकम प्रतीकात्मक रूपमें ही सही नौसेनाकी कुछ व्यवस्था हुई है। सभीलोग यह सोचकर निश्चिन्त थे कि कम्युनिस्ट विध्वंसकपर गोली या तोप चलाकर ब्रिटेनको अपना शत्रु बनानेका साहस न करेंगे और खासकर तब जब कि पासमें ही प्रशान्तमें ब्रिटिश नौबेड़ा मौजूद है और पहलेकी तरह किसी भी समय आसानीसे यांग्त्सीमें आकर गश्त लगा सकता है। ये सारे अनुमान कितने गलत थे इसे बादकी घटनाओंने शीघ्र ही प्रमाणित कर दिया किन्तु फरवरी महीनेमें हमलोग अपनेको बड़ा ही सुरक्षित समझ रहे थे। ब्रिटिश और आस्ट्रेलियन विध्वंसक बारीबारीसे घड़ीकी सूईकी तरह आते रहते थे और हम उनके अधिकारियों तथा आदमियोंको दावत देने और उनका स्वागत करनेमें बड़े आनन्दका अनुभव करते थे।

इस योजनामें एक कमजोरी थी। नगरमें कानून और शान्ति व्यवस्थाके पूरी तरह भंग हो जाने और नगरपर छिपे हुए खतरनाक गुण्डादलका कब्जा हो जानेपर जनताकी सुरक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था। अतीतमें नगरमें रहनेवाले विदेशियोंकी जैसी सामूहिक हत्या हो चुकी थी, उनकी जायदादें जिस तरहसे नष्ट कर दी गयी थीं और

उनके गिरजाघरोंको जिस प्रकारसे भ्रष्ट किया गया था उसकी स्मृति नगरके प्रत्येक यूरोपियनको उद्विग्न बनाये हुई थी। उन्हें इसका पूरा भय था कि नानकिंगके घिर जानेपर उनका जीवन सुरक्षित न रहेगा। जब यह समस्या विचारार्थ सामने आयी तो मेरे मस्तिष्कमें एकाएक यह विचार आया कि विघटित अमेरिकी सैनिक पुलिसको एक निजीसेनाके रूपमें संघटित करके उसपर राष्ट्रमण्डलीय देशोंके दूतावासोंपर पहरा देने और उनकी रक्षा करनेका भार सौंपा जा सकता है। मैंने यह सुझाव दिया कि यदि राष्ट्रमण्डलीय देशोंके कूटनीतिकमण्डल अनुपातसे इस व्यवस्थामें होनेवाला व्यय वहन करनेको तैयार हों तो मैं यह व्यवस्था करनेको प्रस्तुत हूँ। राष्ट्रमण्डलीय कूटनीतिकमण्डलोंने मेरा सुझाव बड़ी प्रसन्नतासे स्वीकार कर लिया। फलतः मैंने एक दो दिनोंमें ही अपनी एक निजी सेना खड़ी कर ली और उसका निरीक्षण करने लगा। यह सेना दूतावासों और कूटनीतिकमण्डलोंके उच्च अधिकारियोंके निवासस्थानोंपर पहरा देने लगी। २३ अप्रैलको कम्युनिस्टोंके नगरमें प्रवेश करनेके पूर्वतक यह प्रहरी सेना सार्वजनिक ढंगसे कार्य करती रही। उनके आचरण, व्यवहार तथा अनुशासनकी सभी लोग प्रशंसा करते थे। नगर पर कम्युनिस्टोंके कब्जा हो जानेके बाद भी इस सेनाको तत्काल ही विघटित नहीं कर दिया गया। इसे दूतावासोंके अहातोंमें ही रहने और पृष्ठभूमिमें ही बने रहकर काम करने का आदेश दिया गया। किसी भी रूपमें सही ये प्रहरी सैनिक बने रहे। इनसे राष्ट्रमण्डलीय समुदायमें बराबर निजी सुरक्षाका भरोसा बना रहा। इसकी सभीने सराहना की।

परस्पर विरोधी परामर्शोंसे बाध्य होनेके कारण जेनरल लीने पहले तो कुछ टालमटूल किया किन्तु अन्तमें श्री माओ त्से-तुङ्ग द्वारा प्रेषित अष्टसूत्रीय योजनाके आधारपर शान्तिकी शर्तोंपर विचार-विमर्श करनेके लिए एक प्रतिनिधिमण्डल पीकिंग भेजनेका निश्चय कर लिया। भूतपूर्व राजदूत श्री डब्ल्यू० डब्ल्यू० येनके नेतृत्वमें गये हुए एक गैरसरकारी प्रतिनिधिमण्डलने यह रिपोर्ट दी थी कि कम्युनिस्ट तथाकथित युद्धापराधियों

(जिनमें जेनरल च्यांग और मैडम च्यांग मुख्य थीं) के आत्मसमर्पणकी अपनी माँगपर जिद न पकड़ेंगे इसके अलावे वे अपनी अन्य शर्तोंको भी ढीला करनेके लिए तैयार हैं। अतएव मार्चके तीसरे सप्ताहमें जेनरल चाङ् चिह-चुन, शाओ ले-त्सी तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियोंके नेतृत्वमें एक सरकारी प्रतिनिधिमण्डल पीकिंग रवाना हुआ। पीकिंगमें इन लोगों-का बड़ी हार्दिकतासे स्वागत हुआ। माओ त्से-तुंग, चाओ एन लाई आदिने इनके स्वागतमें दावतें दीं।

१९४९ के प्रथम तीन महीनोंमें जब कि नानकिंग सरकार की प्रति-रक्षा व्यवस्था व्यवहारतः ढह चुकी थी, किस प्रकारके कृत्रिम वातावरणमें यह सरकार चल रही थी इसका एक उदाहरण निम्नलिखित घटना में मिलता है। श्री वाङ् शिह-चीहके स्थानपर परराष्ट्रमन्त्रीका पद यहाँ के वैयक्तिक आकर्षण रखनेवाले और एक क्रान्तिकारी सेनापतिकी कीर्ति अर्जित करनेवाले जेनरल वू ते-चेनने, जो वू ते के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध थे, ग्रहण कर लिया था। उन्होंने नानकिंग स्थित सभी एशियाई-राष्ट्रों—बर्मा, श्याम, फिलिपाइन तथा भारतके राजदूतोंका एक सम्मेलन बुलाया और उसमें रस्मी तौरपर सर्वत्र साम्यवादके विरुद्ध युद्ध करनेके लिए मित्रराष्ट्रोंका एक संघटन बनानेका प्रस्ताव किया। मैं तो इस प्रस्तावसे दंग रह गया क्योंकि व्यवहारतः उनके सुझावका यह अर्थ होता था कि हम लोग कोमिन्तांगके पक्षको अपना पक्ष समझें और गृहयुद्धमें श्री च्यांगकी सहायता करनेके लिए उनके साथ एक संयुक्त मोर्चा बनायें। बर्मी राजदूत और मैंने इसका सख्त विरोध किया। इसलिए प्रस्ताव जन्म लेते ही मर गया किन्तु इस प्रकार संयुक्त मोर्चा बनानेका विचार श्री च्यांगकाई शेकको बहुत प्रिय था इसीलिए उन्होंने आगे चलकर श्री सिंगमन री तथा श्री क्विरिनोंके संयुक्त तत्वावधानमें इसे पुनरुज्जीवित करनेका प्रयत्न किया।

श्री ली त्सुङ्ग-जेनकी पहली कठिनाई अपने मन्त्रिमण्डलके साथ संबंध में थी। नये मन्त्रिमण्डलके प्रधान स्वर्गीय सुनयातसेनके पुत्र श्री सुन फो

थे जिनके सम्बन्धमें लोगोंका कुछ ऐसा ख्याल बन गया था कि वे प्रगतिशील हैं। उन्होंने और उनके मित्रोंने राजधानीको कैण्टन, जिसे परम्परासे कोमिन्तांग भावना और विचारोंका केन्द्र माना जाता है, ले जानेका निश्चय किया किन्तु राष्ट्रपतिने समझा कि सामान्य जनता इस निश्चयका यह अर्थ लगायेगी कि गृहयुद्धको जारी रखनेका प्रयत्न किया जा रहा है। इसलिए सरकार तो अपने सभी प्रशासकीय कार्यालयोंके साथ कैण्टन चली गयी किन्तु राष्ट्रपति और विधान निर्मातृयुवान नानकिंगमें ही बनी रही। परराष्ट्र विभागने दूतावासोंको इस परिवर्तनकी सूचना दे दी और उन्हें अपने साथ कैण्टन चलनेके लिए आमन्त्रित किया। उन्होंने हमें एक भोजनालयमें आवास देनेकी व्यवस्था करने तथा अन्य सुविधाएँ प्रदान करनेका वचन दिया। इसपर सबसे वयोवृद्ध और अनुभवी कूटनीतिज्ञ फ्रेंच राजदूत श्री एम. मेरियरने दूतावासोंके सदस्योंकी एक बैठक बुलायी। बैठकमें हम सब लोगोंने मिलकर यह तय किया कि हमें सरकारके साथ कैण्टन नहीं जाना चाहिये क्योंकि इसका कोई निश्चय नहीं कि सरकार वहाँ कुछ समयके लिए भी कायम रह सकेगी। दूसरे यह कि जब राष्ट्रपति कैण्टन नहीं जा रहे हैं तो हम वैधानिक दृष्टिसे उस नगरको नहीं छोड़ सकते जो सिद्धान्ततः राजकी राजधानी बनी हुई है। अतः अपवाद रूपमें रूसी राजदूतको छोड़कर हम सभी लोगोंने अपना प्रतिनिधित्व करनेके लिए दूतावासके केवल नीचेके अधिकारियोंको ही कैण्टन भेज दिया।

रूसी राजदूतने कोमिंतांगके साथ स्वयं कैण्टन जाना ही क्यों पसंद किया यह अभी भी एक रहस्य बना हुआ है। यह जरूर था कि रूस इस आखोरी स्थितिमें भी सिंकियांग सम्बन्धी उड्डयन समझौतेको नया करनेके लिए कोमिन्तांगसे वार्ता कर रहा था। यह भी पता चला था कि रूसने कोमिंतांग सरकारसे चीनमें खानें खोदनेके सम्बन्धमें रियायतें प्राप्त करनेके लिए समझौता करना चाहा था। इन सारी बातों तथा अन्य कारणोंसे यह पता चलता है कि रूसको राष्ट्रवादियोंपर कम्युनिस्टोंकी

शीघ्र विजय की आशा नहीं थी और वह कोमिंतांगको ही चीनकी वैध-सरकार मानते हुए अपने वैध-प्रतिनिधिको कैण्टनमें ही रखकर काम चलानेको तैयार था।

जिस समय कैण्टनके सम्बन्धमें यह विचार-विमर्श चल रहा था डाक्टर हू शिह मुझसे मिलने आये और उन्होंने भविष्यके सम्बन्धमें मुझसे देरतक वार्ता की। वे एक बड़े मानसिक द्वन्द्व और तनावकी स्थितिमें थे। परिस्थितियोंसे बाध्य होकर उन्हें जो निश्चय करना पड़ा था उससे वे बड़े दुःखी थे। उन्हें इस बातका असीम कष्ट था कि वे जिन महान् उदारविचारोंके लिए गत पैंतीस वर्षोंसे अथक परिश्रम करते आरहे थे आज वे ही विचार उनकी आँखोंके सामने ध्वस्त हो रहे हैं। उस समय उन्होंने मुझसे एक ऐसी बात कही जो मुझे बहुत जँची थी। उन्होंने कहा—'यह सब हम उदार और स्वतन्त्र विचार रखनेवालोंकी ही गलतीका परिणाम है। जब हमने १९३६ में यह देखा कि परिस्थितियाँ किस प्रकार बदल रही हैं, कोमिंतांग किस प्रकारसे क्रान्तिके लोकतान्त्रिक विचारको तिलांजलि देकर तानाशाही और प्रतिक्रियाके रास्तेपर जारहा है तो हम लोगोंको इसका डटकर विरोध करना चाहिये था और एतदर्थ एक विरोधपक्षके रूपमें अपनेको प्रभावकारी ढंगसे संघटित करना चाहिये था। किन्तु यह न करके हमने अपेक्षाकृत सरल मार्गको ही चुना। मेरी तरह कुछ लोग उस समय देशको ही छोड़कर बाहर चले गये। श्री वाङ्-शिह-चीहकी तरहके कुछ लोग सरकारमें इस आशासे शामिल हो गये कि वे उसे अन्दरसे सुधारनेमें सफल हो जायेंगे। दूसरे मौन बने रहे और अध्ययन, लेखन तथा अन्य शास्त्रीय कार्योंसे ही सन्तोष लाभ करते रहे। यदि हम संघटित होकर खड़े हो जाते और अपनी बात लोगोंको सुना सकते, तो मुझे इसका पूरा विश्वास है, कि हम उदारतावादी क्रान्तिकी रक्षा कर ले जाते।' उन्होंने इसी धारा और आवेगमें मुझसे और भी बहुत-सी बातें कीं। इन बातोंका मुझपर गम्भीर प्रभाव पड़ा क्योंकि मुझे न केवल डाक्टर हू शिहके विश्वकोश जैसे व्यापक

ज्ञान और पाण्डित्यके प्रति ही बल्कि उनके उदार आदर्शवाद और उनकी बौद्धिक दृढ़ताके प्रति भी श्रद्धा थी। मुझे इस बातका बड़ा दुःख हुआ कि अपने देशके बौद्धिक पुनर्जागरणके लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर देनेके बाद इस महान् व्यक्तिको जीवनकी सन्ध्यामें अपनेको ऐसी वीरान हालतमें पाना पड़ा—और विदेशमें शरणार्थी बनना पड़ा। उन्होंने मुझसे जो कुछ कहा उससे यह यह स्पष्ट हो गया कि च्यांगकाई शेकके भाग्यपथका अनुसरण करनेका उनका कोई इरादा नहीं है। किसी अमेरिकी विश्व-विद्यालयमें, जहाँ चीनी ग्रन्थोंका अच्छा संग्रह हो, प्राध्यापककी वृत्ति स्वीकार कर लेना ही अब उनके लिए एकमात्र रास्ता रह गया है। यह सचमुच एक बहुत ही निराशाजनक विचार था और इससे मैं कई दिनोंतक दुःखी बना रहा क्योंकि श्री हू शिह जैसे व्यक्तिके लिए, जिसमें इतनी बौद्धिक स्वतन्त्रता हो, अपनेको बदली हुई परिस्थितियोंके अनुकूल बना लेना बिलकुल असम्भव है।

जब कोमिंतांग प्रतिनिधिमण्डल पीकिंग रवाना हो गया तो मैंने अनुमान लगाया कि उसके वापस आनेतक कमसेकम तीन सप्ताहका समय लग जायगा। इस बीच मैं दिल्ली जाकर परामर्श करके वापस आ सकता हूँ। कम्युनिस्ट सेनाएँ यांग्त्सीके दूसरे किनारेपर डटी हुई थीं। ऐसी स्थितिमें और खासकर जब मुझे अपने बीबी-बच्चोंको यहीं छोड़ जाना था, दिल्ली जाना एक बड़ा खतरा मोल लेना था। यदि मेरे वापस आनेके पूर्व ही वार्ता भंग हो गयी और कम्युनिस्टोंने आक्रमण करनेका ही निश्चय किया तो मेरे पास महीनोंतक उनके पास पहुँचनेका कोई साधन ही नहीं रह जायगा। लेकिन मैंने अनुमान किया कि वार्ताको भंग होनेमें भी कमसेकम तीन सप्ताह लग जायँगे, यदि मैं २० अप्रैलतक वापस आ सकूँ तो नानकिंगपर कम्युनिस्टोंके कब्जा होनेके समय उपस्थित रह सकूँगा। इसलिए मैं भारत रवाना हो गया और नानकिंगपर कम्युनिस्टोंके कब्जा हो जाने तथा शेष दुनियासे हमारा सम्बन्ध-विच्छेद हो जानेकी

स्थितिमें मुझे क्या करना चाहिये, इस सम्बन्धमें आवश्यक निर्देश प्राप्त कर मैं २१ अप्रैलको नानकिंग वापस आ गया। २३ अप्रैलको कम्युनिस्ट नानकिंगमें घुस गये।

जिस दिन मैं दिल्ली जा रहा था जेनरल ली त्सुंग-जेनने मुझे भोजके लिए आमन्त्रित किया। उन्होंने मुझसे दो घण्टेतक वार्ता की। मुझे उनके व्यक्तित्व तथा जिस आधारपर वे शान्तिकी सम्भावनाका विचार कर रहे थे उसका मूल्यांकन करनेका बहुत अच्छा अवसर मिल गया। मैं इसके पूर्व कई अवसरोंपर जेनरल लीसे मिल चुका था, किन्तु उनके कार्यकारी उपराष्ट्रपति होनेके बाद उनसे होनेवाला यह हमारा प्रथम विचार-विमर्श था। मुझे जेनरल लीके इरादे बहुत अच्छे मालूम हुए, किन्तु इसके साथ ही मैंने यह भी अनुभव किया कि वे व्यावहारिक दृष्टिसे बिलकुल शून्य हैं। वे इस बातकी आशा कर रहे थे कि कोमिंतांग चीनके स्वतन्त्र और उदार विचार रखनेवाले लोग उनके पीछे आ जायँगे और अमेरिका उन्हें सक्रिय सहायता प्रदान करेगा। उनके अनुयायियोंमें क्वांग्सी गुटके कुछ ऐसे सेनापति और कुछ ऐसे प्राध्यापक और पत्रकार थे जिन्हें विश्वास था कि वक्तव्यों और घोषणाओंसे विश्व विजय की जा सकती है। उनकी पत्नी चीनकी एक अनुपम सुन्दरी थीं और उनकी एकमात्र महत्वाकांक्षा मैडम च्यांगको हर प्रकारसे पराभूत कर देना था। शान्ति सम्बन्धी जेनरल लीकी धारणाएँ बड़ी भोली-भाली थीं। उनका वास्तविकतासे कोई सम्बन्ध न था। उन्होंने मुझे बताया कि कम्युनिस्ट दो-तिहाई चीनपर, जो अभी उनकी सत्ताको मान्यता प्रदान करता है, विजय प्राप्त करनेकी आशा नहीं कर सकते और अन्ततः उन्हें अपनी शर्तोंमें रद्दोबदल करनी होगी और उनके साथ समझौता स्वीकार करना होगा। यह सच है कि अभी भी यांग्त्सीके दक्षिणका विशाल क्षेत्र, शेचुआन और युन्नान जैसे बड़े प्रान्त, चीनकी मुख्य भूमिपर स्थित सिकांग, कांग्सू और चिंघाई जैसे बाहरी क्षेत्र तथा सिंकिंग और तिब्बतके विस्तृत प्रदेश कम्युनिस्ट प्रभावके बाहर थे। श्री माओ त्से-तुंग द्वारा अधिकृत

क्षेत्र जापानियों द्वारा अधिकृत क्षेत्रसे भी बहुत छोटा था। श्री लीका यह ख्याल था कि यदि कम्युनिस्ट दक्षिणमें भी बढ़ गये तो वे चुंकिंग जाकर वहाँसे कम्युनिस्टोंको उसी प्रकार ललकार सकते हैं जैसे च्यांगने जापानियोंको ललकारा था। उन्होंने कहा कि आज तो स्थिति कहीं अच्छी है, क्योंकि हमने अमेरिकी सहायतासे सिकियाङ्गतककी सारी सीमा रेखापर हवाई अड्डे बना लिये हैं, इसलिए अब उनके हमें पराजित कर सकनेकी कोई सम्भावना नहीं रह गयी है। इसलिए हमने शान्तिकी जो शर्त्तें रखी हैं उन्हें उनको झख मारकर मानना पड़ेगा। उनके विचार करनेका यही मुख्य रूप था।

सिद्धान्ततः उनके विचार ठीक थे, किन्तु उन्होंने कम्युनिस्टोंकी जापानियोंसे जो तुलना की थी वह नितान्त भ्रामक थी। दक्षिणी चीनमें भी जिसे वे अपना गढ़ समझते थे, मुझे यह सूचना मिली थी कि जनमत कोमिंतांगके विरुद्ध हो चला है। पुराने अनुभवसे यह मालूम हो चला था कि कोमिंतांग सैनिक लड़ाईसे थक गये हैं और विभिन्न प्रान्तोंके युद्धनेताओंका संकल्प टूट चुका है। सामरिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण युन्नान प्रान्तमें हुए एक सैनिक उलट-फेरने वहाँके कोमिंतांग युद्धनेताको अपदस्थ कर दिया था और उसका भतीजा, जो स्वयं अधिकारी बन बैठा था, माओ त्से-तुंगसे वार्ता कर रहा था। मैंने श्री लीके सामने अपने ये सन्देह नहीं रखे और उनसे केवल यह पूछा कि उनके विचारसे वार्ताके रास्तेमें पड़नेवाले रोड़े कौन-से हैं? उन्होंने स्पष्ट रूपमें उत्तर दिया कि वे ऐसी कोई भी शर्त्त स्वीकार नहीं कर सकते जिससे अमेरिकाके साथ सम्बन्ध दुर्बल हो। उस समय मुझे मालूम हो गया कि ये वार्ताके जरिये समझौता करनेकी आशा करके मूर्खोंके स्वर्गमें रह रहे हैं।

उसी दिन रातमें मैं भारत रवाना हो गया। तीन हफ्ते भारतमें रहनेके बाद जब मैं २० अप्रैलको शंघाई लौटा तो यह बिलकुल स्पष्ट हो गया कि मैं घटना चक्रका अनुमान करनेमें थोड़ा-सा ही चूका था। शंघाईमें जोरोंकी अफवाह थी कि कम्युनिस्ट एक या दो दिनोंके अन्दर ही

यांग्त्सी पार कर लेंगे। ऐसी स्थितिमें यदि मैं शामकी ही गाड़ीसे रवाना नहीं हो जाता तो नानकिंग और शंघाईका सम्बन्ध विच्छेद हो सकता था। असलमें उसी दिन रातमें मैं जिस गाड़ीसे नानकिंग गया वह नानकिंगकी यात्रा करनेवाली अन्तिम कोमिंतांग ट्रेन थी। अन्तिम कोमिंतांग अधिकारी नानकिंग छोड़ चुके थे। स्वयं जेनरल ली भी, ज्योंही उन्हें वार्ताके भंग होने और अपने प्रमुख प्रतिनिधियोंके पीकिंगमें ही टिक जानेके निश्चयका समाचार मिला, नगर छोड़नेकी तैयारी कर रहे थे। नगरमें पहुँचनेके दूसरे ही दिन (२२ अप्रैल) मैं परिस्थितिकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए अमेरिकी राजदूत डाक्टर लीटन स्टुअर्टसे मिला। डाक्टर लीटन एक असाधारण कूटनीतिज्ञ थे। वे एक ऐसे मिशनरी शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने चीनियोंके ईसाई शिक्षणके कार्यमें अपने जीवनके चालीस वर्ष लगा दिये थे। चीनियोंके चरित्रमें उनकी असीम निष्ठा थी। वे चीनको अपना दूसरा घर समझते थे। उनके जीवनमें महान् नैतिक ऋजुता और असाधारण सरलता थी। इस दृष्टिसे वे एक छोटे महात्मा थे। उन्हें संसारकी अधमतापर बराबर आश्चर्य हुआ करता था। उनकी एक कमजोरी यह थी कि चीनी-चरित्रके सम्बन्ध में, जिसे उन्होंने कई मानेमें बड़ा ही आदर्शरूप दे रखा था, उनकी जो धारणा थी उसपर वे बहुत ज्यादा निर्भर करने लगते थे। उदाहरणके तौरपर वे मुझसे प्रायः कहा करते कि गुरु और शिष्यका सम्बन्ध चीनी नीतिशास्त्रका एक आधारभूत तत्त्व है। वे अनेक युवक कम्युनिस्ट नेताओंके गुरु रह चुके हैं, अतः इस स्थितिसे कम्युनिस्टोंकी नीतिको पश्चिमके पक्षमें बनानेमें सहायता मिलेगी। अपने इस भोले दृष्टिकोणके कारण उन्हें अनेक मामलोंमें बुरी तरहसे निराश होना पड़ा।

डाक्टर लीटन स्टुअर्टने मुझे विश्वास दिलाया था कि कम्युनिस्टोंके यांग्त्सी पार करनेका कोई तात्कालिक खतरा नहीं है। यदि उन्होंने ऐसा करनेका प्रयत्न किया तो उनके दस लाख आदमी काम आ आयेंगे और उन्हें दक्षिणी किनारेपर पैर जमानेके पहले बड़ी कीमत चुकानी

पड़ेगी। उन्होंने कहा कि अमेरिकन विशेषज्ञोंका भी यही सुविचारित मत है। उनकी इस आत्मसन्तोष और आसूदगीकी भावनासे मुझे कुछ आश्चर्य हुआ, किन्तु उन्हें इस बातका पूरा विश्वास था कि प्रतिरक्षाकी व्यवस्था पूर्ण है और कम्युनिस्टोंके पास, जो आखिरकार छापेमार मात्र हैं, कमसे कम पाँच लाख सैनिकोंको यांग्त्सी नदी, जिसका पाट कमसे कम तीन चौथाई मील चौड़ा है, पार करा देनेकी लम्बी-चौड़ी योजना कार्यान्वित करनेकी प्राविधिक दक्षता नहीं हो सकती।

इस मुलाकातके बाद मैं ब्रिटिश राजदूत सर राल्फ स्टीवेंसनसे मिलने गया। वे अपेक्षाकृत अधिक सतर्क थे, किन्तु उनके भी अपने विशेषज्ञोंकी राय यही थी कि कम्युनिस्टोंके लिए यांग्त्सी पार करना कोई आसान काम न होगा। उन्होंने कहा कि यह तो कोई नहीं बतला सकता कि कम्युनिस्ट यांग्त्सी पार करनेके लिए कौन-सी तरकीब कर रहे हैं, हो सकता है कि उन्होंने कोई तरकीब सोची हो। किन्तु साधारणतः यदि प्रतिरोध और संघर्ष किया जाय तो यांग्त्सी पार करना कठिन होगा। परिस्थितिके इस अत्यन्त सतर्क मूल्यांकनसे मुझे सन्तुष्ट होना ही पड़ा। स्टीवेंसनके पाससे घर लौटनेपर ही मुझे एक दूसरी सूचना मिली जो अशान्तिकारक थी। मेरे एक चीनी मित्रने बताया कि नगरमें अमन कानून कायम रखनेके लिए गिन् लिङ् कालेजके सुप्रसिद्ध अध्यक्ष डाक्टर वू के नेतृत्वमें नानकिंगमें नागरिकोंकी एक समिति बनायी गयी है और कम्युनिस्ट अधिकारियोंसे सम्पर्क स्थापित करनेके लिए एक प्रतिनिधि मण्डल यांग्त्सी पार करके पुकाऊ आया है। इस बातकी गरम अफवाह है कि यांग्त्सीके उस पार स्थित एक कस्बेकी सेनाका सेनापति शत्रुओंसे मिल गया है। उस क्षेत्रमें कम्युनिस्ट सेना यांग्त्सी पार कर रही है और स्थानीय कोमिंतांग अधिकारी रातोरात चुपकेसे नगरके बाहर हो जानेका विचार कर रहे हैं।

२२ अप्रैलको नानकिंगमें एक विचित्र दृश्य उपस्थित हुआ। नगरके सरकारी अधिकारी भाग खड़े हुए और नगर अनियन्त्रित जन समूहके

अधिकारमें आ गया। इस जनसमूहने बाक़ायदे कोमिंतांग नेताओं और अधिकारियोंका एक-एक घर लूट लिया, किन्तु और किसी प्रकारका उपद्रव नहीं हुआ। मैं स्वयं अपनी चांसरीमें बैठा हुआ देख रहा था कि मेयरका सरकारी आवास स्थानीय जनता द्वारा लूटा जा रहा है। यह लूट बड़े ही सभ्य और व्यवस्थित ढंगसे हो रही थी। लूटसे जो कुछ एकत्र होता था उसमेंसे मनचाही चीजें ले जानेमें नवजवान लोग वृद्धों की सहायता कर रहे थे। यह अनियन्त्रित भीड़ किसी भी चीजको बरबाद नहीं करती थी। केवल दरवाजे, खिड़कियोंके चौखटे जैसी चीजों को ही वह तोड़ती चलती थी जो तोड़ने ही लायक थीं और कुछ लोग इन चीजोंको लेकर इस प्रकार इतमीनानसे चले जाते थे जैसे वे किसी बैंकमें जमा अपनी रकम ही लेकर जा रहे हों। प्रधान सैनिक कार्यालय, युवक संघटन कार्यालय तथा इसी ढंगकी अन्य इमारतें ही बुरी तरहसे क्षतिग्रस्त हुईं। किन्तु कुल मिलाकर भीड़ने व्यवस्थित और शान्तिपूर्ण ढंगसे ही व्यवहार किया। तीसरे पहरतक जनव्यवस्था समितिने नगरपर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया और जनताके प्रति विभिन्न प्रकारके आदेश और घोषणाएँ जारी कर दीं।

दूसरे दिन प्रातःकाल सभीको मालूम हो गया कि कम्युनिस्टोंका अग्रिम दल नानकिंगमें प्रविष्ट हो चुका है और उनकी मुख्य सेना बिना किसी प्रतिरोधके नदी पार कर रही है। मैं नानकिंगमें प्रवेश करती हुई सेनाको देखनेके लिए सड़कपर चला गया। कम्युनिस्ट सेनाके नगर-प्रवेशका दृश्य सचमुच विलक्षण था। सड़कोंपर दर्शकोंकी भीड़ एकत्र थी। मैं जहाँतक समझता हूँ लोगोंमें इसके प्रति कोई विशेष उत्साह नहीं था, किन्तु सेनाके विरुद्ध कोई शत्रुतापूर्ण व्यवहार भी नहीं किया गया। हम मोटरसे सर्वत्र निर्बाधरूपसे घूमते और प्रसिद्ध चुङ्शान स्ट्रीटपर मार्च करती हुई जनमुक्ति सेनाके लम्बे-चौड़े विशाल जुलूसका निरीक्षण करते रहे। हम लोगों, बर्मियों (और निस्सन्देह रूसियों) को छोड़कर अन्य देशोंके कूटनीतिज्ञ बाहर नहीं निकले। वे अपने घरोंमें ही बने रहे।

उन्हें सन्देह था कि उनकी उपस्थितिसे शायद कोई अप्रिय घटना न हो जाय। शाम होते-होते कम्युनिस्ट सेनाके यांग्सी पार करनेका कार्य पूरा हो गया और कोमिंतांगकी राजधानीपर कम्युनिस्टोंका पूरी तरह कब्जा हो गया। एकाक्ष अजगरके नामसे प्रसिद्ध जेनरल ल्यू पो-चेङ् नगरके मेयर घोषित कर दिये गये। कूटनीतिक बस्तीके सदस्यगण औत्सुक्य और अनिश्चयकी स्थितिमें थे। हम लोगोंने घटनाचक्रकी ही प्रतीक्षा करनेका निश्चय किया और कम्युनिस्टों द्वारा ही पहले सम्पर्क स्थापित किये जानेकी आशामें अपने दूतावासोंमें ही बने रहे। किन्तु ऐसी कोई बात नहीं हुई। उन्होंने हमारी उपेक्षा कर दी।

चौथा परिच्छेद

जब हम नानकिंगमें घिर गये थे

आगामी तीन-चार दिनोंतक शान्ति रही। इस बीच कुछ ऐसी घटनाएँ अवश्य हो गयीं जिनसे हमें परेशानी हुई। जनमुक्ति सेनाके कुछ सैनिक बहके-बहके अमेरिकी दूतावासमें घुस गये और राजदूतके शयनागारतक पहुँच गये। वे बुखारमें पड़े थे। उनसे थोड़ी देर वार्ता करनेके बाद वे दूतावाससे चले गये। इसी प्रकार कुछ सैनिकोंने ब्रिटिश दूतावासके उद्यानमें भी घुसनेका प्रयत्न किया, किन्तु उन्हें ऐसा करनेसे विरत कर दिया गया। फ्रेंच दूतावासका संयोग कुछ खराब निकला। तीन दिनोंतकके लिए उसका हम लोगोंसे सम्बन्धविच्छेद हो गया था, किन्तु स्थितिके अनिश्चयके अतिरिक्त कोई ऐसी बात नहीं हुई जिसके खिलाफ हम लोगोंको कोई बड़ी शिकायत करनेका मौका मिलता। बाजारसे जो चीजें गायब हो गयी थीं वे काफी परिमाणमें मिलने लगीं। युवान शिह्-काईके चाँदीका डालर स्वीकृत मुद्रा बन गया। सभी लोग इन्तजार कर रहे थे कि आगे क्या होनेवाला है।

कूटनीतिज्ञ मण्डलोंमें मुख्यतः दो प्रकारकी विचारधाराएँ चल रही थीं। आस्ट्रेलियाके राजदूत श्री कीथ आफिसरका यह दृढ़ मत था कि कम्युनिस्ट कूटनीतिज्ञोंके साथ अच्छा व्यवहार करके विदेशोंकी सद्भावना अर्जित करनेके लिए उत्सुक होंगे। अन्य कुछ लोग भी श्री कीथके इसी मतका समर्थन कर रहे थे। इसके विपरीत डच राजदूत श्री बैरनवान आर्सेनने लाल क्रान्तिके समय मास्कोमें रहनेवाले अपने एक सहकर्मीके अनुभवोंके आधारपर एक स्मृतिपत्र तैयार करके प्रचारित किया जिसमें यह कहा गया था कि कम्युनिस्ट हमारे साथ कड़ाईका व्यवहार करेंगे,

इसलिए इस मामलेमें अन्तरराष्ट्रीय कानून और प्रथापर निर्भर रहनेका कोई उपयोग नहीं है। कम्युनिस्ट हम लोगोंके सम्बन्धमें क्या करना चाहते थे, यह जाननेमें हमें देर न लगी। नगरपर अधिकार होनेके एक या दो दिन बाद ही हमें नम्रतापूर्वक किन्तु दृढ़तासे यह सूचित किया गया कि हमें किसी प्रकारके कूटनीतिक विशेषाधिकार नहीं दिये जायँगे और हमारे प्रति केवल विशिष्ट विदेशियोंके समान व्यवहार किया जायगा। इस सूचनामें हम लोगोंका उल्लेख भूतपूर्व राजदूतोंके रूपमें हुआ था। हम लोगोंके साथ व्यवहार करनेके लिए कोई वैदेशिक कार्यालय नहीं खोला गया। केवल एक विदेशी कर्मचारी समितिका संघटन कर दिया गया। हमारे सचिवोंको इस समितिके समक्ष दुभाषियोंके साथ उपस्थित होना पड़ता था, क्योंकि सारा कारबार चीनी भाषामें ही चलाया जाता था। किसी दूसरी भाषामें दी गयी कोई सूचना या पत्रादि स्वीकार नहीं किये जाते थे। सारे वार्तालापके समय शीघ्र लिपिक उपस्थित रहा करते थे जो बोले गये प्रत्येक शब्दको अंकित कर लेते थे। हमें संकेताक्षरों अथवा संवादप्रेषकोंका उपयोग करनेकी अनुमति नहीं थी। वस्तुतः प्राविधिक दृष्टिसे देखा जाय तो अब हमलोगोंकी स्थिति कूटनीतिज्ञोंकी नहीं रह गयी थी।

हमलोगोंपर ऐसे अनेक प्रकारके प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे जिन्हें शायद उन परिस्थितियोंमें उचित नहीं कहा जा सकता। हमें नगरकी चहारदीवारीके बाहर जानेकी भी अनुमति न थी, यहाँतक कि हम सैर-सपाटेके लिए भी कमल सरोवर अथवा सुनील पर्वतमालाओंकी ओर नहीं जा सकते थे। इसके लिए कारण यह बताया जाता था कि अभी नगरके बाहरी क्षेत्रोंसे कोमिंतांग लुटेरोंका सफाया नहीं हुआ है। ऐसी हालतमें जनमुक्ति सेना नगरके बाहर विदेशियोंकी जीवन-रक्षाकी जिम्मेदारी नहीं ले सकती। दूतावासोंके उपयोगमें आनेवाली मोटर गाड़ियोंकी संख्या कड़ाईसे सीमित कर दी गयी थी। अमेरिकी दूतावासके पास पहले ११० कारें थीं, इनकी संख्या ५ कर दी गयी। ब्रिटेन और फ्रांसके दूतावास भी

इतनी ही गाड़ियाँ रख सकते थे। रूस, इटली, हालैण्ड और बेलजियमके दूतावासोंको ३ तथा भारत, ईरानको दो गाड़ियाँ रखनेकी अनुमति थी। दूसरे दूतावास केवल एक गाड़ी ही रख सकते थे। इसमें सन्देह नहीं कि मोटरोंकी संख्याकी कटौतीकी आवश्यकता पेट्रोलकी कमीके कारण ही हुई थी।

इन असुविधाओंके अतिरिक्त हमारे जीवनमें और किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं होता था। आरम्भके कुछ दिनोंकी छोटी-मोटी घटनाओंके बाद दूतावासों और कूटनीतिक मण्डलोंके अधिकार क्षेत्रका कभी भी उल्लंघन नहीं किया गया। कोई भी सैनिक या पुलिस कभी भी किसी भी बहानेसे किसी भी दूतावासके अहातेमें नहीं घुसा। सड़कोंपर अथवा अन्यत्र किसी कानूनके उल्लंघन किये जानेके अतिरिक्त अन्य किसी भी कारणसे दूतावासके कर्मचारियों तथा अधिकारियोंको किसी भी तरहसे कभी परेशान नहीं किया गया। यहाँतक कि विदेशी कर्मचारी समिति भी अपनी कठोर औपचारिकता और हमें कूटनीतिज्ञोंके रूपमें स्वीकार न करनेके अपने निश्चयके बावजूद व्यवहारतः वे सारी सुविधाएँ देती थीं जिनकी हमें आवश्यकता होती थी। दो एक बार तो ऐसा हुआ कि मुद्रा-विनिमय सम्बन्धी नियमोंके लागू न रहनेकी स्थितिमें उसने हमारे शिष्ट मण्डलोंके व्ययके लिए अपेक्षित धन भी प्रदान कर दिया। हमारी गति-विधिपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था और हमारे कूटनीतिक क्रिया-कलाप भी असम्भव हो गये थे। किन्तु इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार-का हस्तक्षेप नहीं किया जाता था और हम अपने ढंगसे रह सकते थे। प्रथम दो सप्ताहोंके बाद नानकिंगमें जीवननिर्वाहकी स्थिति भी सुधर गयी। चीजोंके दाम स्थिर हो गये और मुद्राकी स्थिति भी दृढ़ हो गयी। अतः अब जीवनकी असुविधाएँ समाप्त हो गयीं।

नयी परिस्थितियोंमें हमारे लिए एक ऐसी परेशानी भी पैदा हो गयी थी जो हमें प्राप्त सारी सुविधाओंपर पानी फेर देती थी। चीनी नौकर और कर्मचारी, जो साधारणतः बड़े नम्र और वश्य होते हैं,

सहसा ऐसी माँगें करने लगे जिनका पूरा कर सकना असम्भव था। उन्हें यह मालूम हो गया था कि अब हमें कूटनीतिज्ञोंको प्राप्त होनेवाली विशेष सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं। अतः कई बार तो ऐसा हुआ कि वे इस नयी स्थितिसे उत्पन्न कमजोरीके कारण अपने मालिकोंसे नाजायज फायदा उठानेकी कोशिश करने लगे। किसी कसूरपर उन्हें निकालना असम्भव हो गया क्योंकि इसके लिए क्षतिपूर्तिके रूपमें भारी रकम देनी पड़ती थी। उचित मजदूरी न मिलनेके बहानेसे वे मालिकोंका सामान और निजी उपयोगमें आनेवाली चीजें रख लेते थे। दो एक बार तो ऐसा हुआ कि उन्होंने मालिकोंको मारने-पीटनेतककी धमकी दी। एक अमेरिकी अफसरको, जिसपर एक नौकरको पीटनेका अभियोग लगाया गया था, अदालतमें पेश किया गया। उसे भारी जुर्माना देना पड़ा। इसी तरह एक मोटर दुर्घटनामें एक चीनीको चोट लग जानेपर एक दूसरे अधिकारीको भी भारी जुरमाना देना पड़ा था। वस्तुतः नौकर मालिकोंपर बिलकुल हावी हो गये थे। नगरमें रहनेवाले विदेशी लोग, जिनमें दूतावासोंके अधिकारी भी थे, इस स्थितिसे बेहद घबरा गये थे। यद्यपि अपनी चांसरीके चीनी कर्मचारियोंसे (जिन्हें विदेशी कर्मचारी समितिकी ओरसे किसी प्रकारका बढ़ावा नहीं मिलता था) हमें कुछ परेशानी अवश्य होती थी किन्तु सौभाग्यवश मैं अपने घरमें हर प्रकारकी दिक्कतोंसे बचा रहा। मेरा एक नम्बरका सेवक (मुख्य सेवक—बेयरा) जिसका नाम शिह था, एक पुराने फैशनका चीनी और भला आदमी था। उसने जीवनभर कूटनीतिज्ञोंके यहाँ ही नौकरी की थी। वह कट्टर बौद्ध और सुशिक्षित था। उसकी चाल-ढाल भी बहुत सुन्दर थी। जब उसने देखा कि परिस्थितियाँ कौनसा रूप ले रही हैं तो वह मेरे पास आया और बताया कि कम्युनिस्ट दूतावासोंके घरेलू नौकरोंकी यूनियनें संघटित कर रहे हैं और जल्दी या देरसे इससे नये लोगोंको परेशानी होगी। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि जहाँतक मेरे घरका सम्बन्ध है कोई दिक्कत पैदा न होगी क्योंकि घरका सारा कामधाम उसे ही संभालना है और उसने

शुरूसे ही बहुत समझबूझकर नौकर रखे हैं। बुड्ढा शिह अपने वचनका पक्का निकला। एक दिन मैंने देखा कि दूसरे नम्बरका सेवक, जो टेबुल-पर खानेका सामान लाने आदिका काम करता था, अनुपस्थित है। मैंने शिहसे पूछा—'वह कहाँ गया है?' उत्तरमें उसने मुसकराकर कहा—'वह हटा दिया गया है।' इससे मैं बड़ी परेशानीमें पड़ गया क्योंकि इसका मतलब यह होता था कि उसे हटानेके बदलेमें मुझे कमसे कम छः महीनेका वेतन देना होगा और इसके साथ और भी अनेक मुसीबतोंका सामना करना पड़ेगा। शिह मेरी परेशानीको ताड़ गया और तुरन्त बोला—'वह अपनी इच्छासे चला गया है। जाते वख्त उसे इस बातका अफसोस था कि वह अपने मालिकको सलाम न कर सका। इसके लिए उसने माफी माँगी है।' इसके बाद मैंने कुछ नहीं कहा। बादमें मुझे पता चला कि उसने संकट पैदा कर दिया है और अपना मामला यूनियनमें ले जानेवाला है। इसपर शिहने मुझसे कहा कि वह सेनासे भाग आया है, अतः वह कम्युनिस्टोंको उसके कोमितांग आवारा होनेकी रिपोर्ट दे देगा और उसे गिरफ्तार करा देगा।

कूटनीतिक मण्डलोंने शीघ्र ही अपनेको परिस्थितियोंके अनुकूल बना लिया और उपेक्षाके वातावरणमें ही अपना संघटन करने लगे। कना-डियन राजदूत, न्यायाधीश टाम डेविस, जो कभी कोई चिन्ता नहीं करते थे और न किसी बातपर उद्विग्न होते थे, अथकरूपसे सबका उत्साह बढ़ाने और ढाढ़स बँधाने लगे। जिन्होंने अभी हाल में ही कूटनीतिज्ञोंका कार्य आरम्भ किया है ऐसे लोगोंके लिए उन्होंने एक ब्रिज क्लब शुरू कर दिया। वे उन्हें नित्य क्लबमें एकत्र करने और उनकी परेशानियोंको भुल-वानेका प्रयत्न करने लगे। श्री डेविस प्रत्येक दृष्टिसे एक विशिष्ट व्यक्ति थे। उनमें मैत्रीका सहज गुण था और वे हमेशा इस प्रकारसे प्रसन्नता-पूर्वक व्यवहार करते थे जिससे पता चलता था कि उनका यह दृढ़ विश्वास है कि संसारमें सर्वत्र सब कुछ ठीक है। उनका यह दृष्टिकोण ऐसे लोगोंके लिए जो उदास या निराशावादी होने लगते थे एक बड़ी ही

अच्छी शक्तिदायक औषधिका-सा काम करता था। पुर्तगाली मंत्री डाक्टर फॉनसेका, जो एक तपेतपाये कर्मठ कूटनीतिज्ञ थे और जिन्होंने सर्वत्र सेवाकी भावनाका परिचय दिया था, इस कार्यमें बड़े उत्साह और साहसके साथ सहायता कर रहे थे। डाक्टर फॉनसेका मानवतावादी विद्वान् थे और सभी वस्तुओंपर विधिपूर्वक विचार करते थे। उनका व्यक्तित्व अपेक्षाकृत अधिक जटिल था, इसलिए वे श्री डेविसकी तरह निरन्तर आशावादी नहीं रह सकते थे, फिर भी इन दोनोंकी मैत्री सुखावह हुई और पीकिंग-लू ब्रिज क्लब इनके ऐसे साथियोंके लिए जो परिस्थितियोंसे अपेक्षाकृत अधिक घबरा जानेवाले थे एक अच्छा सहारा बन गया।

यद्यपि मैं समय-समयपर क्लबमें चला जाया करता था, किन्तु मैंने जबर्दस्ती मिलनेवाले इस अवकाशका उपयोग दूसरे अधिक लाभदायक कार्योंमें करनेका निश्चय किया। मैंने समझ लिया कि हम अब बुरी तरहसे फँस गये हैं और इस घेरेसे बाहर निकलनेका तबतक कोई उपाय नहीं हो सकता जबतक मामला इस पार या उस पार न हो जाय, इसीलिये मैंने अपने समयको तीन भागोंमें बाँटनेका निश्चय कर लिया। मैंने तय किया कि प्रातःकालका समय चीनी इतिहास और साहित्यके अध्ययनमें, तीसरे पहरका समय भारतीय क्रान्तिपर एक पुस्तक तैयार करनेमें तथा शामका समय महाकवि कालिदासके काव्य 'कुमार संभव'का मलयालम कवितामें अनुवाद करनेमें लगाया जाय। मेरी यह योजना काफी सफलतासे कार्यान्वित हुई। नानकिंग विश्वविद्यालयके एक प्राध्यापककी सहायतासे मैंने अंग्रेजीमें सुलभ चीन सम्बन्धी गम्भीर साहित्यका एक अच्छा खासा संग्रह कर लिया और उसके अध्ययनमें इस प्रकार दत्तचित्त हो गया कि मानो मैं आक्सफोर्डकी किसी आनर्स डिग्रीकी तैयारीमें जुट गया होऊँ। चीनी इतिहास और साहित्यके अध्ययनमें मुझे कुछ ऐसे अमेरिकी विद्वानोंके परामर्शका लाभ मिल गया जो हमलोगों की ही तरह फँस गये थे। मैंने इस कार्यको बहुत पसंद किया, क्योंकि इससे मेरा एक नये विश्वसे परि-

चय होने लगा। मैंने शूमा चिन् तथा चीनके तीन राज्योंके सुप्रसिद्ध इतिहास, चीनके विभिन्न सामाजिक एवं वैधानिक सिद्धान्तोंकी अनेक प्रणालियों तथा ताओवाद संबंधी दार्शनिक रचनाओंकी अभिज्ञता प्राप्त की। भारतीय क्रान्तिपर लिखी गयी पुस्तकने, जो चाणक्यके उपनामसे प्रकाशित हो चुकी है, मुझे भारतीय समस्याके विभिन्न पहलुओंपर अपने विचारोंको संघटित करनेका अवसर दिया। भारत संबंधी पुस्तकालयमें पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रह था। मैंने उसका पूरा लाभ उठाया। श्री तिलक तथा श्री अरविन्दके आधुनिक भाष्योंसे समन्वित भगवद्गीता तथा महात्मा गांधी, विवेकानन्द एवं आधुनिक भारतके अन्य निर्माताओंकी रचनाओंसे मुझे विशेष प्रेरणा प्राप्त हुई। किन्तु निस्संदेह मुझे सबसे बड़ा आनन्द तो उस समय प्राप्त होता था जब मैं सन्ध्याकालमें 'कुमारसंभव'-के श्लोकोंको उच्चस्वरमें पढ़ता और उन्हें मलयालम कवितामें रूपान्तरित करनेका प्रयत्न करता था। यह प्रयास काव्यात्मक प्रयासकी अपेक्षा बौद्धिक अनुशासन ही अधिक था। मलयालममें कुमारसंभवका कमसे कम एक उच्चकोटिका अनुवाद प्रस्तुत है, अतः एक दूसरा साधारण-सा अनुवाद प्रस्तुत करनेका कोई खास तुक न था। अनुवादसे एक प्रकारका जो अनुशासन प्राप्त होता है, उसे मैंने बराबर पसन्द किया है। एक महाकविकी सर्वमान्य अन्यतम कृतिके अनुवाद करनेका प्रयत्न एक ऐसी चीज थी जिसे करनेका साहस मैं केवल उसी स्थितिमें कर सकता था जिसमें मैं उस समय चीनमें पड़ गया था। यद्यपि मेरा अनुवाद बड़ा ही सीधा-सादा था, तथापि मुझे इस बातकी बड़ी प्रसन्नता है कि तीन वर्ष बाद प्रकाशित होनेपर उसका सर्वत्र स्वागत हुआ।

दक्षिण-पूर्वी एशियाकी समस्यामें मेरी बराबर रुचि रही है। एक प्रकारसे युद्धकालमें प्रकाशित होनेवाली मेरी पुरानी रचना 'द फ्यूचर आफ साउथ-ईस्ट एशिया' (दक्षिण-पूर्वी एशियाका भविष्य) ने इस क्षेत्रके नीति-निर्धारणमें सहायता प्रदान की है। बर्मा और श्यामकी सीमाओंतक कम्युनिज्मके विस्तारकी, जिसकी संभावना अच्छी

तरह जानी जा सकती थी, समस्यामें मैं पर्याप्त रुचि लेने लगा। मैंने सोचा कि अब एक ऐसी नीति बना लेनेका समय आ गया है जिससे इस क्षेत्रका आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ढाँचा मजबूत बनाया जा सके। इस उद्देश्यसे मैंने एक स्मृतिपत्र तैयार किया जिसमें यह विचार उपस्थित किया गया था कि आर्थिक क्षेत्रमें तात्कालिक और पर्याप्त सहा-यता मिले बिना दक्षिणी-पूर्वी एशियाका राजनीतिक ढाँचा साम्यवादके प्रसारके विरुद्ध एक दुर्बल व्यवधानकी अपेक्षा अधिक कारगर न होगा। मैं जानता था कि मेरी सरकार इस मामलेमें कोई प्रभावकारी प्रयत्न नहीं कर सकती, इसलिए मैंने ब्रिटिश और आस्ट्रेलियन राजदूतोंका सहयोग प्राप्त करके अपने स्मृतिपत्रको राष्ट्रमण्डलीय सरकारोंके समक्ष एक संयुक्त प्रस्तावके रूपमें रखनेका निश्चय किया। आस्ट्रेलियन राजदूत श्री कीथ आफिसरने, जिनके पास अपनी सारी रूढ़िवादिताके बावजूद एक कल्पना-शील मस्तिष्क था, मेरे इस विचारको बहुत पसन्द किया। सर राल्फ स्टीवेंसनने भी मेरा समर्थन किया। उन्होंने मेरे स्मृतिपत्रको श्रीलीटन स्टुअर्टको भी दिखाया। श्रीस्टुअर्टने इसे स्वतन्त्र रूपसे सिफारिशके साथ अपनी सरकारके पास भेजना स्वीकार कर लिया। राष्ट्रमण्डलीय राजदूतों-की दूसरी बैठकमें यह स्मृतिपत्र साधारण शाब्दिक परिवर्तनोंके साथ स्वीकार कर लिया गया और राष्ट्रमण्डलीय सरकारोंके पास संयुक्त प्रस्तावके रूपमें भेज दिया गया। इसकी एक प्रति गैररस्मी तौरपर सिंगापुरके कमिश्नर जेनरल श्री मालकम मैकडानल्डके पास भी भेज दी गयी जिससे वे सिंगापुरमें ब्रिटिश शिष्टमण्डलीय प्रधानोंके होनेवाले महत्वपूर्ण सम्मेलनमें इसपर विचार-विमर्श कर सकें। बादमें श्री कीथ आफिसरने मुझसे कहा कि मैंने अपने स्मृतिपत्रमें जो प्रस्ताव उपस्थित किया था उसीके आधारपर हुए विचार-विमर्शसे आगे चलकर कोलम्बो योजना तैयार हुई।

जैसे-जैसे समय बीतता गया कूटनीतिक मण्डलमें अधिकाधिक घबड़ाहट और उद्विग्नता बढ़ने लगी। हमलोग न केवल विशेषाधिकार और सुविधाओंसे ही अशोभन ढंगसे वंचित कर दिये गये बल्कि

समयके बीतनेका साथ ही स्पष्ट होने लगा कि चीनसे बाहर हो पाना भी आसान न होगा। पहले यह सोचा जाता था कि शंघाईपर कब्जा हो जानेके बाद बाहरी संसारसे वार्तावहन आदिका सम्बन्ध पुनः स्थापित हो जायगा और हमलोगोंमेंसे जो लोग बाहर जाना चाहेंगे वे जा सकेंगे। नानकिंगके पतनके बाद एक महीनेके अन्दर ही शंघाईपर भी कम्युनिस्टों-का कब्जा हो गया। वहाँपर भी जब असली लड़ाई लड़नेका प्रश्न आया तो कोमिंतांगके सैनिक टाँय-टाँय फिस् हो गये। कुछ लोग इसकी भी आशा लगाये बैठे थे कि शंघाईका वातावरण, रातमें चलनेवाले उसके क्लब और उसका भोग-विलासपूर्ण जीवन कम्युनिस्टोंको भी उसी प्रकार भ्रष्ट कर देगा जैसे उसने पूर्वके इस बैबीलोनके सम्पर्कमें पहलेपहल आने-वाले कोमिंतांगके नौजवान राष्ट्रवादियोंको कर दिया था। उन्होंने इसके लिए नियत तीन सप्ताहों तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की, किन्तु कम्यु-निस्टोंके भ्रष्ट हो जाने और उनकी क्रांतिकारी आत्माके कमजोर पड़ जानेके स्थानपर नानकिंगस्थित कूटनीतिक मण्डलोंको यह जानकर बड़ा धक्का लगा कि कम्युनिस्टोंने अमेरिकी उपवाणिज्यदूतके प्रति बड़ा ही कड़ा व्यवहार किया है और उसे सैनिक अधिकारियोंके आदेशोंका उल्लंघन करनेके अपराधमें जेलकी हवा खानी पड़ रही है। उसे क्षमाप्रार्थना और अपने साम्राज्यवादी कारगुजारियोंका त्याग करनेके लिए बाध्य किया गया है। चीनसे सुविधापूर्वक बाहर चले जानेकी आशा भी गायब हो गयी। कोमिंतांगने ह्वामपाओ नदीमें सुरंगें बिछा दीं और तटावरोधकी घोषणा करते हुए शंघाईमें विदेशी जहाजोंका प्रवेश निषिद्ध कर दिया। पूर्वके सबसे बड़े बन्दरगाहका सारा कारबार ठप पड़ गया, किन्तु फिर भी कम्युनिस्टोंकी हिम्मत टूट जानेकी जो आशाकी गयी थी वह पूरी न हुई। खाद्यान्न पहलेकी भी अपेक्षा प्रचुरमात्रामें सुलभ होता रहा। जनताके उपयोगके लिए कोयलेका आयात उत्तरकी कोयलेकी खानोंसे होता रहा। कुल मिलाकर ऐसा प्रतीत होता था कि कम्युनिस्टोंको शंघाईमें विदेशी जहाजोंके न आनेसे कोई परेशानी नहीं है।

हमारी तकलीफ इस बातसे बहुत बढ़ गयी कि आये दिन दिनके समय कोमिंतांग विमान नियमित रूपसे नानकिंग पर मंडराने लगे। उनकी इस काररवाईका उद्देश्य यह बताया जाता था कि वे यांग्त्सीके संतरणमें प्रयुक्त उन वैद्युतिक साधनोंको बमवर्षा करके नष्ट कर देना चाहते हैं जिनके द्वारा उत्तरसे कम्युनिस्टोंकी सैनिक गाड़ियाँ नानकिंग लायी गयी थीं। बिजलीघर और पानीकलको भी वे बमोंका निशाना बनाना चाहते थे। यद्यपि उनकी बमवर्षाकी काररवाई बहुत मामूली थी और उससे किसी सैनिक महत्त्वकी सिद्धि न हो सकी फिर भी इससे हमलोगोंकी तकलीफ बहुत बढ़ गयी।

मुझे अपनी सरकारसे अन्त तक नानकिंगमें ही बने रहनेका आदेश मिला था, किन्तु मैं जानता था कि अधिकांश पश्चिमी कूटनीतिज्ञ चीनसे बाहर चले जानेको उत्सुक हैं। प्रतिदिन केवल इसी विषयपर चर्चा होती थी कि सम्मानपूर्वक ढंगसे अपनी बिदाईकी व्यवस्था कैसे की जाय। ब्रिटिश राजदूत सर राल्फ स्टीवेंसनकी स्थिति भिन्न थी। वे नानकिंगसे तबतक न हटनेके लिए कृतसंकल्प थे जबतक ब्रिटिश पोत एच० एम० एस० एमिथिस्ट, जो टूटी-फूटी हालतमें यांग्त्सीमें पड़ा हुआ था, अनुमतिसे अथवा बिना अनुमतिके ही रवाना न हो जाय। वे हर तरहसे इस सम्बन्ध में कोई समझौता कर लेनेके लिए वार्ता करनेकी कोशिश कर रहे थे। ब्रिटेनमें इस पोतके टूट-फूट जाने और इसकी रक्षामें आये अन्य जहाजों-के क्षतिग्रस्त हो जानेकी घटना शाही नौसेनाकी प्रतिष्ठा और सम्मानका प्रश्न बन गयी थी। यह आवश्यक था कि एमिथिस्टको, वह जहाँ पड़ा हुआ था वहीं छोड़कर नानकिंगसे न हटा जाय। इसीलिए श्री स्टीवेंसन तथा उनके साथ काम करनेवाले लोग नानकिंगसे हटनेकी बात ही नहीं करते थे।

जापान समर्थक राष्ट्रपति श्री वाङ् चिङ् वीके प्रासादमें स्थित अमेरिकी दूतावासका क्लब सभी कूटनीतिज्ञोंके लिए खोल दिया गया था। इसीकी शीतल छायामें कूटनीतिक मंडलोंके सदस्य प्रतिदिन एकत्र होकर

दूतावासके दरवाजेके सामने रखे गये एकमात्र टैंकके संदिग्ध संरक्षणमें अपनी संभावित विपत्तियोंपर विचार-विमर्श करते थे। अपने भय और घबड़ाहटको छिपानेके लिए महिलाएँ तो प्रायः ब्रिज खेलने लगती थीं, किन्तु पुरुष समुदाय विभिन्न समुदायोंमें बँटकर आपानक या क्रीड़ासर के निकट हमेशा यही विचार-विमर्श करते रहते थे कि यहाँ टिके रहनेकी अपेक्षा यहाँसे बिदा हो जाना क्या अधिक सम्मानजनक न होगा? शंघाईमें कोई जहाज नहीं आ रहा था। ऐसा सुना जाता था कि तीन सिनमें अभी भी जहाज आ रहे हैं किन्तु वहाँ पहुँच पाना असंभव था। इसके अतिरिक्त कम्युनिस्ट अधिकारियोंने चीनके उस पुराने नियमको फिरसे लागू कर दिया था जिसके अनुसार चीनसे जानेके पहले प्रत्येक विदेशीको इस बातकी गारंटी देनी पड़ती थी कि उसके यहाँ किसी भी चीनी दूकानदार या व्यापारीका किसी प्रकारका हिसाब बाकी नहीं है। इसके लिए उसे दो चीनी व्यापारियोंको बुलाना पड़ता था जो उसके नाम निकलनेवाले किसी भी हिसाबकी अदायगीकी जिम्मेदारी लेते थे। चूँकि हमें 'भूतपूर्व कूटनीतिज्ञों'की श्रेणीमें रख दिया गया था, जिन्हें किसी प्रकारका विशेषाधिकार प्राप्त नहीं था, इसलिए यह स्पष्ट कर दिया गया कि यदि हम चीनसे जाना चाहते हैं तो हमें भी उक्त प्रकारकी गारंटी देनी होगी। अन्तरराष्ट्रीय विधानके हमारे विशेषज्ञ डच राजदूत बैरन वान आर्सेनने अन्तरराष्ट्रीय व्यवहारमें इस प्रकारका कोई दूसरा उदाहरण दिखलानेकी माँग की और यह घोषित किया कि कम्युनिस्टोंका ऐसी किसी गारंटीके लिए दावा करना बिलकुल अनियमित है, किन्तु नियमित हो या अनियमित वे इसपर जोर देते रहे। मैंने स्थितिके साफ होनेतक नानकिंगमें ठहरनेका ही निश्चयकर लिया इसलिए कम्युनिस्टोंके इस निर्णयका मुझपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। फिर भी मैं इस सम्बन्धमें प्रतिनिधिमण्डलोंकी ओरसे किये गये किसीभी प्रतिवाद में शामिल होनेके लिए तैयार था। इसके बाद एक दूसरी कठिनाई उत्पन्न हुई। कम्युनिस्टोंने अभीतक अपनी कोई सरकार होने का दावा नहीं किया

था। उनके पास न तो कोई वैदेशिक कार्यालय था न कोई मन्त्रिमण्डल जिसके पास हम अपना कोई प्रतिवाद करते। अधिकृत क्षेत्र जनमुक्ति सेना के अधीन थे और सभी विदेशियों के प्रति, जिनमें कूटनीतिज्ञ भी शामिल थे, विदेशी कर्मचारी समिति के प्रधान श्री हुवाङ् हुवाई व्यवहार करते थे। बादमें जब श्री हुवाई शंघाई स्थित वैदेशिक कार्यालयके सरकारी प्रतिनिधि बन गये तो मेरा उनसे अच्छा परिचय हो गया, किन्तु इस समय उनसे कोई मिल न पाता था। मैं उनके साथ अपने सचीव डाक्टर वीरेन्द्रकुमारके माध्यमसे ही व्यवहार करता था। श्री वीरेन्द्रकुमार चीनी भाषा धारा प्रवाह बोल लेते थे, इसलिए उनसे उस समय मुझे बड़ी सहायता मिलती थी।

जून के अन्ततक कूटनीतिक मण्डलोंका धैर्य बिलकुल टूट गया। उस वर्ष नानकिंगमें असह्य गर्मी पड़ रही थी और शंघाई या किसी अन्य ठंढे स्थानमें जानेका उपाय न था। इन परिस्थितियोंमें हमलोगोंमेंसे कुछने थोड़े समयके लिए शंघाई जानेकी अनुमति प्राप्त करनेके उद्देश्यसे विदेशी कर्मचारी समितिसे सम्पर्क स्थापित करनेका निश्चय किया। अनुमतिपत्र तो हमें कोई खास परेशानी बिना ही मिल गये, किन्तु हमें चेतावनी दे दी गयी कि चुंगी अधिकारी हमारे बण्डल और सामान खोलनेपर जोर देंगे। मुझे व्यक्तिगत रूपसे यह विश्वास दिला दिया गया था कि नानकिंग और शंघाई दोनों जगहके पुलिस कर्मचारियोंको यह आदेश दे दिया गया है कि वे हमारे सामानको बिना हस्तक्षेपके ही जाने दें। यही हुआ भी। हमारे नामोंको चीनमें दर्ज कर लेनेमें जो देर लगी थी उसे छोड़कर हमें और किसी प्रकारकी असुविधा नहीं हुई, किन्तु 'साम्राज्यवादी शक्तियों'के प्रतिनिधियोंके साथ रुक्षता और कड़ाईसे व्यवहार किया गया।

पहली जुलाईको श्री माओ त्से-तुंगने अपना वह प्रसिद्ध भाषण किया जिसमें उन्होंने दृढ़तापूर्वक घोषणा की थी कि नवचीन अपनेको सोवियत यूनियनके साथ बाँध रहा है। उसने रूसके पक्षमें रहनेका निश्चय किया है। जिस समय भाषण रेडियोपर सुना जा रहा था हमलोग उपनिवेश

राष्ट्रीय दिवसके उपलक्ष्यमें कनाडियन दूतावासमें भोजन कर रहे थे। इस भोजमें केवल राष्ट्रमण्डलीय राजदूत और उनकी पत्नियाँ तथा डाक्टर लीटन स्टुअर्ट अतिथि रूपमें शामिल थे। डाक्टर स्टुअर्टपर इस भाषणका जो प्रभाव हुआ उसे कोई भी देख सकता था। उस भले आदमीको निराशाके विरुद्ध यह आशा थी कि कम्युनिस्ट लोग, जिनमेंसे अनेक येन चिङ् विश्वविद्यालयमें उनके छात्र रह चुके हैं, मध्यम मार्गका ही ही अनुसरण करेंगे किन्तु श्रीमाओके भाषणने उनकी इस आशापर पानी फेर दिया। उन्होंने मुझे बताया कि वे जल्दसे जल्द चीन छोड़नेका निश्चय कर चुके हैं और इस उद्देश्यसे उन्होंने अपने निजी विमानकी मरम्मतकी अनुमति भी मांग ली है। कुछ दिनों बाद वे इतमीनानसे चीनसे विदा हो गये। चीनियोंको इस बातका श्रेय मिलना चाहिये कि उन्होंने अपने वृद्ध आचार्यको चीनसे सम्मानपूर्वक विदा होनेकी सारी सुविधाएँ प्रदान कीं। विदा होते समय उन्हें किसी प्रकार तंग या परेशान नहीं किया गया।

अमेरिकी राजदूतकी विदाईसे कूटनीतिक बस्तीपर गहरी निराशा छा गयी। यह स्पष्ट हो गया कि वर्तमान स्थिति चलनेवाली नहीं है। फ्रेंच राजदूतने चीनसे रवाना होनेके लिए हिन्दचीनसे एक जहाज मँगानेका निश्चय किया किन्तु चीनसे रवाना होनेके लिए आवश्यक प्रबंध कर लेना आसान काम न था। अमेरिकी सरकार भी शंघाई स्थित अमेरिकी बस्तीके लोगों तथा अमेरिकी कूटनीतिक कर्मचारियोंकी वापसीके लिए एक जहाज भेज रही थी। जहाँतक मुझे खयाल है इस जहाज़का नाम गार्डन कैसिल था। किन्तु ब्रिटेनने, जिसपर बाकी हम सब लोग चीनसे हटनेके लिए निर्भर कर रहे थे, अभीतक, कोई कदम नहीं उठाया। इससे लोगोंको बड़ी चिन्ता हो रही थी। यह बिलकुल स्पष्ट था कि हांगकांगमें ब्रिटिश जहाजोंकी पर्याप्त व्यवस्था होनेके कारण ब्रिटेन एक क्षणमें बिना किसी हो-हल्लाके हमलोगोंकी निकासीकी व्यवस्था कर सकता था, किन्तु शायद वह एमिथिस्टके मामलेमें कुछ होनेकी प्रतीक्षा

कर रहा था।

एक दिन रातमें वह बात हो ही गयी जिसकी ब्रिटेन प्रतीक्षा कर रहा था। ब्रिटिश युद्ध पोत एमिथिस्ट धुआँ उड़ाता और कम्युनिस्ट तोपोंका बहादुरीसे सामना करता हुआ खुले समुद्रमें निकल आया। शाही नौसेनाकी सर्वोत्तम परम्पराओंके अनुरूप यह एक बड़ी करामात ही थी। एमिथिस्टके उद्धारकी पूरी कहानी अभी सामने नहीं आयी है, किन्तु मुझे विश्वास है कि पूरी तरहसे प्रकाशित होनेपर यह एक उच्च-कोटिकी साहसिकता, दिलेरी और शौर्यकी कहानी होगी। एमिथिस्ट बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। उसपर किसीको जानेकी अनुमति न थी। ऐसी स्थितिमें उसकी मरम्मत होनेकी संभावना बहुत दूर थी। कम्युनिस्ट इस मामलेमें बहुत सावधान थे और वे इसकी बराबर निगरानी कर रहे थे। इसके अतिरिक्त यदि सन्नाटी रातमें नदीमें आने-जानेवाले बड़े-बड़े चीनी पोतोंके बीचमें अपना रूप बदलकर एमिथिस्ट किसी प्रकारसे चल भी पड़ा तो भी नानकिंगसे लेकर समुद्रतक यांग्त्सीकी लम्बाई इतनी ज्यादा है कि बिना किसीकी निगाहमें आये एक जहाजका समुद्रमें निकल आना बड़ा दुष्कर कार्य है। किन्तु एमिथिस्ट निकल ही आया और ब्रिटेनमें इसपर ऐसी खुशी मनायी गयी मानो ट्राफलगारकी नयी लड़ाईमें विजय हुई हो।

ब्रिटिश दूतावासने पुनः मुक्तिकी साँस ली और सर राल्फ स्टीवेंसन समय-समयपर हमलोगोंकी वापसीकी समस्यापर विचार-विमर्श करने लगे। वे बहुत जल्दी नहीं चले जाना चाहता थे जिससे दूसरोंको ऐसा न मालूम हो कि वे अपना पद छोड़कर भाग खड़े हुए हैं। वे यह भी नहीं चाहते थे कि एक बार स्थितिके अनिश्चित कालतकके लिए अस्थिर बन जानेपर नानकिंगमें ही ठहरा रहा जाय। साधारणतः हमलोग पीकिंगमें जो कुछ हो रहा था उसके प्रति जागरूक थे। कम्युनिस्ट नेताओंने वहाँके सभी दलोंका एक सम्मेलन बुलाया। वे एक ऐसे सामान्य कार्यक्रमपर विचार-विमर्श कर रहे थे जिसके आधारपर चीनकी

नयी सरकारकी घोषणा होनेवाली थी। पता चला था कि कोमिंतांग क्रान्तिकारियोंके नेता जेनरल ली ची-शेन, लोकतान्त्रिक लीगके नेता श्री चाङ्‌ लान तथा रेडिकल नेता श्री हुवाङ्‌ वेन्‌ पुईके अतिरिक्त मैडम सुनयात सेन तथा कुओ मो-जो जैसे निर्दलीय व्यक्ति, इतिहासकार और लेखक संयुक्त मंत्रिमण्डल के सिद्धान्तोंको स्थिर करने और राजनीतिक कारखाईके लिए कार्यक्रम बनानेमें कम्युनिस्टोंसे सहयोग कर रहे थे। मुझे पूरा निश्चय था कि आधिकारिक रूपसे सरकारकी घोषणा हो जानेके बाद कूटनीतिक प्रतिनिधि उस सरकारको बिना मान्यता दिये नहीं रह सकते। मैं बराबर इसी दृष्टिकोणपर जोर देता रहा और कहता रहा कि एक ऐसी सरकार बन जानेपर हमलोगोंके पास केवल यही अधिकार रह जाता है कि हमलोग चीनस चले जायँ। इटालियन राजदूत, श्री एम० फिनालितयाने, जिनके परिवारपर इस परिस्थितिका प्रभाव पड़ने लगा था, मेरे दृष्टिकोणका समर्थन किया। दूसरे कूटनीतिज्ञ बेलजियन राजदूत श्री ली घेटने भी, जिनके मास्कोके पूर्व अनुभव और तटस्थ तथा दार्शनिक दृष्टिकोणकी सभी सराहना करते थे, सरकारकी घोषणा होते ही संयुक्त रूपसे चीनसे हट जानेका समर्थन किया। श्री ली घेट अच्छे विद्वान्‌ थे। उस समय वे अविवाहित थे, इसलिए उनके पास अध्ययनके लिए बहुत समय था। विविध विषयोंके अध्ययनके साथ वे, मैं नहीं कह सकता कितनी गंभीरतासे, चीनी व्याकरणका भी अध्ययन कर रहे थे।

जैसा कि हम सभी लोगोंका का अनुमान था, जनवादी चीनी गणतन्त्रकी केन्द्रीय सरकारकी घोषणा १ अक्तूबर, १९४९ को तीन आन-मेन स्क्वायर, (स्वर्गीय शान्तिके द्वार) से की गयी। श्री माओ त्से-तुंग नयी सरकारके अध्यक्ष और मैडम सुनयात सेन, श्री चांङ्‌ लान तथा जेनरल ली ची-शेन्‌ उपाध्यक्ष घोषित किये गये। चीन संबंधी हमारे ज्ञानकी यह स्थिति थी कि चीनी साम्यवादके मान्य विशेषज्ञ भी यह नहीं जानते थे कि श्री काओ कांग कम्युनिस्ट हैं या लोकतान्त्रिक नेता। नानकिंग स्थित कूटनीतिज्ञोंमें, जिनमें खुफिया विभागमें एक लंबे अरसेसे व्यापक

पैमानेपर काम करनेवाले कर्मचारी भी शामिल थे, किसीने भी श्री काओ कांगका नामतक भी न सुना था। जहाँतक श्री लिउ शाओ-चीका संबंध था हममेंसे केवल वे लोग जो चीनी साम्यवादकी सैद्धान्तिक रचनाओंको देखते रहनेका प्रयत्न करते थे, यह जानते थे कि वे एक प्रमुख व्यक्ति हैं। श्री चाओ एन-लाई प्रधान और परराष्ट्र मंत्री बनाये गये। जनवादी गणतन्त्रकी घोषणाके बाद पहला काम उन्होंने यह किया कि विदेशी प्रतिनिधियोंको पीकिंग बुलाकर उन्हें कूटनीतिक संबंध स्थापित करनेके लिए निमन्त्रण दिया। विभिन्न नामोंसे दिये गये ये निमन्त्रणपत्र नानकिंग स्थित विभिन्न प्रतिनिधियोंको दिये जानेके लिए विदेशी कर्मचारी समितिके अध्यक्ष श्री हुवाङ् हुवाईके पास भेज दिये गये। दूसरे दिन श्री हुवाईने उन कूटनीतिक मण्डलोंके प्रधानोंको अपने कार्यालयमें बुलवाया जिनके वाणिज्यदूत पीकिंगमें नहीं रहते थे। अधिकांश प्रधानोंने वहाँ जाना स्वीकार कर लिया, किंतु मैंने उन्हें यह लिख भेजा कि यदि श्री चाओ एन-लाईने ऐसा कोई निमन्त्रण-पत्र भेजा है तो उसे मेरे वासस्थानपर भी भेजा जा सकता था। मैं श्री हुवाङ्के कहनेपर व्यक्तिगत रूपसे समितिके सामने उपस्थित होनेमें असमर्थ हूँ। वैदेशिक कर्मचारी समितिने मेरे उत्तरका अच्छा स्वागत किया और यह सुझाव दिया कि मैं निमन्त्रण लेनेके लिए अपने किसी सचिवको भी भेज सकता हूँ। मैंने अपने तीसरे सचिव डाक्टर कुमारको भेज दिया और निमन्त्रण पत्र उन्हें दे दिया गया। मैंने 'जेनरल चाओ एन-लाई, पीकिंग'के पतेसे अपना एक अन्तरिम उत्तर भेज दिया जिसमें मैंने उक्त निमन्त्रणको दिल्ली भेजनेका वादा किया था। मेरा उत्तर उसी दिन पीकिंग प्रेषित करनेके लिए श्री हुवाङ्के पास भेज दिया गया। प्रधान मन्त्री श्री नेहरूका उत्तर दो दिनोंमें ही प्राप्त हो गया। उनका उत्तर बड़ा ही मैत्रीपूर्ण था। उसमें इस बातका संकेत किया गया था कि भारत सरकार चीनकी सरकारको शीघ्र ही मान्यता देगी और दोनों देशोंमें कूटनीतिक प्रतिनिधियोंका आदान-प्रदान होगा।

इस प्रकार चीनसे वापस जानेका प्रश्न तात्कालिक बन गया। दिल्लीकी यह इच्छा थी कि मैं नानकिंगमें बना रहूँ, किंतु मैंने उसे यह बताया कि यद्यपि मैं नानकिंगमें रहनेके लिए तैयार हूँ, तथापि जब तक नयी सरकारको आधिकारिक मान्यता नहीं प्राप्त हो जाती, नानकिंगमें मेरी कोई आधिकारिक स्थिति न होगी और न मैं कोई काम ही कर सकूँगा। मान्यता प्रदान करनेमें कुछ समय लगना आवश्यक होगा, क्योंकि अभी भी न केवल कैन्टनपर, बल्कि दक्षिण-पूर्वके विशाल क्षेत्रोंपर भी, जिनमें शेचु-आन्, युन्नान और सिकांग भी शामिल हैं, कोमिंतांगका अधिकार बना हुआ है और चीनकी मुख्य भूमिपर दो या तीन महीनेके अन्दर गृह-युद्ध समाप्त हो जानेकी कोई संभावना नहीं है। मेरे यह बतानेपर प्रधान मन्त्री श्रीनेहरूने मुझे अन्य कूटनीतिज्ञोंके साथ वापस आ जानेकी अनुमति दे दी।

वापसीका सारा प्रबन्ध ब्रिटेनके हाथमें था। ब्रिटेनने दो नावोंकी व्यवस्थाकी जिनमेंसे एक बटर फील्ड और स्वायरकी थी और दूसरी जार्डिन मैथेसन्स की। ब्रिटेन उन सभी कूटनीतिक कर्मचारियोंके लिए व्यवस्था करनेको तैयार था जो उसकी सेवा लेनेको प्रस्तुत हों। ब्रिटिश जहाजोंके अतिरिक्त फ्रांस और अमेरिकाने भी चीनस्थित फ्रांसीसियों और अमेरिकियों तथा अपने मित्रोंको ले जानेके लिए नावोंकी व्यवस्था-की थी। अधिकांश यूरोपीय तथा एशियाई प्रतिनिधियोंने ब्रिटिश जहाजोंसे ही जाना अधिक पसन्द किया।

एक बड़ा प्रश्न, जिससे सभी लोग परेशान थे किन्तु जिसके बारेमें बहुत कम बोला जाता था यह था कि चुंगी अधिकारी हम लोगोंके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। श्री ए० के० सेनने, जो शंघाईमें महावाणिज्य दूतका कार्य कर रहे थे, वहाँके परराष्ट्र विभागसे अच्छा मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। उन्होंने मुझे इस बातका आश्वासन दे दिया कि जहाँतक हम लोगोंके सरोसामानका सम्बन्ध है कोई कठिनाई न पैदा होगी और उसे बिना किसी जाँच पड़तालके ले जानेकी अनुमति मिल

जायगी। उनका विश्वास था कि बर्मी कूटनीतिक दलके प्रति भी यही सौजन्य दिखाया जायगा। वस्तुतः हुआ भी यही किन्तु यूरोपीय कूटनीतिज्ञोंके प्रति चुंगी अधिकारियोंने दूसरे ही प्रकारका व्यवहार किया। ब्रिटिश और आस्ट्रेलियन राजदूतोंका सामान केवल अधिकार जतानेके लिए रस्मी तौरपर ही खोला गया। दूसरे कूटनीतिज्ञोंमें अनेकके बण्डलों की बड़ी सतर्कतासे तलाशी ली गयी। चुंगी अधिकारी हर किसीके सामानोंकी जाँच करते समय इस बातपर जोर देते जाते थे कि वे 'भूतपूर्व कूटनीतिज्ञों' का कोई कूटनीतिक विशेषाधिकार नहीं मानते।

जो भी हो, हम जिस प्रकार चीनसे बाहर निकले उसे सम्मानजनक नहीं कहा जा सकता। अधिकांश कूटनीतिज्ञोंको इस बातका खेद हुआ कि वे नाहक वहाँ टिके रहे। उन्हें पहले ही चला आना चाहिये था। उन्हें आशा थी कि कम्युनिस्ट इस बातकी सराहना करेंगे कि कूटनीतिक प्रतिनिधि-मण्डल चीनकी मुख्य भूमिपर कोमिंतांग सरकारके पीछे-पीछे नहीं घूमता फिरा। कम्युनिस्ट अधिकारी उन लोगोंके नानकिंगमें ही बने रहनेको अपने प्रति एक प्रकारकी व्यावहारिक सहानुभूतिका प्रदर्शन समझेंगे, किन्तु कुछ हफ्तोंमें ही उनका यह भ्रम दूर हो गया। चीनी कम्युनिस्ट पश्चिमसे किसी प्रकारके पृष्ठपोषणकी अपेक्षा नहीं कर रहे थे। अधिकांश कूटनीतिक प्रतिनिधि अधिक खिन्न तथा अनुभवी व्यक्तियोंके रूपमें ही ब्रिटिश जहाजोंपर सवार हुए। इस प्रकार साम्राज्यवादी आधिपत्यके अन्तिम अवशेषोंसे भी चीनकी मुख्यभूमि मुक्त हो गयी।

पाँचवाँ परिच्छेद

भारतमें अस्थायी प्रत्यागमन

हमलोग कुछ दिनोंबाद हांगकांग पहुँचे। हांगकांगके गवर्नर सर अलेक्जेण्डर ग्रैन्थम औपनिवेशिक विभागके एक उच्च और पुराने अधिकारी थे। इसके पहले मैं उनसे लागोसमें मिल चुका था। वहाँ वे मुख्य सचिवके पदपर काम कर रहे थे। एक प्रशासकके रूपमें उनकी योग्यता और राजनीतिक समझबूझ अतुलनीय थी। हांगकांगके लिए यह बड़े सौभाग्यकी बात थी कि उसके प्रशासनकी बागडोर उनके हाथमें थी। चीनकी मुख्यभूमिसे एक बहुत ही पतलीसी जलप्रणालीसे कटा हुआ यह छोटासा द्वीप कोमिंतांग तथा कम्युनिस्ट दोनों पक्षके शरणार्थियोंका आश्रयस्थल बन गया था। इसकी आबादी हमेशासे मुख्यतः चीनियोंकी रही है। इसका अर्थिक जीवन चीनकी मुख्य भूमिके साथ व्यापारपर निर्भर करता था। कोमिंतांग आधिपत्यके दिनोंमें विदेशी बस्तियोंके समाप्त हो जानेपर विरोधपक्षके लिए हांगकांग चला आना हमेशा सुविधाजनक रहा है। जेनरल ली ची-शेनके अधीन कोमिंतांगकी क्रान्तिकारी समितिने हांगकांगको ही अपना प्रधान कार्यालय बनाया था। कम्युनिस्टोंने भी बाहरी संसारसे सम्पर्क स्थापित करनेके लिए यहाँ एक कार्यालय रखा था जिसका संचालन उस समय चो मू के नामसे प्रसिद्ध श्री चिआओ कान-हुआ और उनकी योग्य पत्नी करती थीं।

जब सुचाऊ युद्धमें कम्युनिस्टोंकी विजयसे यह स्पष्ट हो गया कि अब कोमिंतांगकी सत्ता टूट चुकी है और दक्षिणपर कब्जा कर लेना जनवादी मुक्तिसेनाके लिए केवल समयका प्रश्न है। चीनी धनी और करोड़पती व्यापारी आदि, जिन्होंने यह अनुभव किया कि नवचीनमें उनका

जीवन सुखी नहीं हो सकता, शीघ्रतासे हांगकांग पहुँच गये। इस प्रकार जिन प्रमुख व्यक्तियोंने हांगकांगमें आश्रय ग्रहण किया उनमें कुख्यात तू येह-शेन, यूइल जे, सुनयातसेनके पुत्र तथा नानकिंग स्थित अन्तिम कोमिंतांग प्रधान मन्त्री सुन फो, शेंसीके युद्धनेता येन सी-शान, जिसने अन्त तक कोमिंतांगसे अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षाकी थी और दूसरे अनेक कम प्रसिद्ध अधिकारी शामिल थे। येनसी-शानके बारेमें यह कहा जाता था कि उसने अपने निष्कासनकी सम्भावना बहुत पहले ही जान ली थी और अपने लिए हांगकांगमें एक आलीशान महल और अपनी पाँच रखेलियोंके लिए पाँच बंगले बनवा लिये थे। वस्तुतः हमारे हांगकांग पहुँचनेके पहले कुछ महीनोंमें ही इसकी आबादी दुगुनीसे भी ज्यादा बढ़ गयी थी। यह अकल्पनीय रूपमें जनीकीर्ण हो चुका था। यद्यपि प्रशासनको कम्युनिस्टोंके इरादोंसे कुछ घबराहट हो रही थी और वे अच्छी तरह जानते थे कि द्वीप किसी बड़े हमलेके विरुद्ध अपनी प्रतिरक्षा नहीं कर सकता, फिर भी लोगोंका सामान्य जीवन शान्तिपूर्ण ढंगसे चल रहा था। वातावरणमें तनावका अनुभव सहज ही हो सकता था और यह स्वाभाविक भी था, किन्तु गवर्नर और उसके कर्मचारियोंको इस बातका पूरा विश्वास था कि हांगकांगमें कोई राजनीतिक संकट उपस्थित होनेकी सम्भावना नहीं है। हड़तालों और द्वीपकी चीनी जनतामें कोमिंतांग-कम्युनिस्ट संघर्षकी प्रतिक्रियाओंके रूपमें गम्भीर आन्तरिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती थीं, पर वे इनका सामना करनेके लिए तैयार थे।

हांगकांगमें कमसे कम तीन हजार भारतीय हैं जो बहुत पुराने समयसे यहाँ आ बसे हैं। समृद्धि तथा आर्थिक उन्नतिकी दृष्टिसे उन्होंने बहुत प्रगति करली है। रतनजी जैसे कुछ परिवार तो इतने पुराने हैं जितनी कि स्वयं यह बस्ती। नानकिंगकी सन्धि द्वारा ब्रिटेनने जब रस्मी तौरसे हांगकांगपर अधिकार किया, ये परिवार उसके पहलेसे यहाँ आबसे थे। भारतकी सभी व्यापारिक जातियों—गुजराती, पारसी और सिन्धियों-का यहाँ अच्छा-खासा प्रतिनिधित्व मिल सकता है। यहाँतक कि एक-दो

परिवार मलाबारसे भी आबसे हैं। सुदूरपूर्वमें सिंधी परिवार सबसे अधिक साहसिक लोगोंमें हैं। भारतीय व्यापारी मुख्यतः आयात और निर्यात व्यापारमें लगे हुए हैं। उन्होंने गत सौ वर्षोंसे बस्तीको समृद्धिशाली बनानेमें बड़ा योगदान किया है। रतनजीके परिवारने यहाँ एक क्षय चिकित्सालय तथा अन्य दातव्य संस्थाओंका निर्माण अपने दानसे किया है। मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि ये अनुभवी और दृढ़ विचार-वाले व्यापारी चीनकी मुख्य भूमिपर होनेवाले परिवर्तनोंसे बिलकुल घब-ड़ाते न थे। श्री रतनजीने तो स्टेनलेमें समुद्र तटपर एक सुन्दर बंगला बनवाना शुरू कर दिया था।

मैं भारत पहुँचनेसे पहले बर्माकी स्थिति देख लेनेके लिए उत्सुक था। उस समय बर्मामें गृहयुद्ध अपनी चरम सीमापर था। सभी लोग जानते थे कि केन्द्रीय सरकारका कानून रंगूनसे आगे नहीं चलने पाता। उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि सरकारसे लड़नेवाले करेन तथा अन्य अनेक वामपक्षीदल उसपर हावी होते जा रहे हैं। मुझे इस बातकी संभा-वना नजर आ रही थी कि चीनी कम्युनिस्ट दो-तीन महीनोंके अन्दर ही बर्माकी सीमापर पहुँच जायँगे। इसलिए मैं यह जान लेनेको उत्सुक था कि ऊ नू सरकारकी सत्ता कायम रहनेकी कोई संभावना है या नहीं। रंगूनमें हमें बड़ा हार्दिक स्वागत मिला। बर्मास्थित राजदूत श्री रऊफ-की कृपासे हमें बर्माके प्रमुख व्यक्तियोंसे इस विषयपर विचार-विमर्श करनेका अवसर भी सुलभ हो गया। यद्यपि स्वयं रंगूनमें किसी आक-स्मिक आक्रमणका सामना करनेके लिए एहतियाती सैनिक कारवाइयों-का पर्याप्त प्रमाण मिल सकता था और सामान्य जनता भी खतरेकी संभावनासे त्रस्त थी, फिर भी सरकारके नेतागण बड़े आशावादी प्रतीत होते थे। श्री थाकिन नूने हालमें ही शान्तिकी अपनी एक-वर्षीय योजना कार्यान्वित की थी। वे देहातोंमें इसका समर्थन प्राप्त करनेके लिए बड़ी लगन और उत्साहसे काम कर रहे थे। सर्वसामान्य मत यह था कि कम्युनिस्टोंका खतरा नगण्य है, राजको असली खतरा करेनोंके विद्रोहसे

है। करेनोंके दावेसे राजकी प्रतिष्ठा गिर रही थी और यह स्पष्ट था कि देशको टुकड़े-टुकड़े करनेवाले फूटपरस्तोंकी पराजयको बर्मी सरकारने जो प्राथमिकता दी थी वह उचित ही थी। लोगोंकी साधारण धारणा यह थी कि सरकारकी शक्ति बढ़ती जा रही है। जो सेना संघटित एवं प्रशिक्षित की जा रही है, अब उसके प्रभावका अनुभव होने लगा है और कुछ महीनोंमें ही आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिसे स्थितिमें पर्याप्त सुधार हो जायगा।

रंगूनस्थित भारतीय राजदूत श्री रऊफ अनेक दृष्टियोंसे एक विशिष्ट व्यक्ति थे। वे बर्मामें पैदा हुए थे और रंगूनबारके नेता थे। भारतकी स्वतन्त्रताके पूर्व बर्माकी राजनीतिमें उन्होंने अपना कुछ स्थान बना लिया था। बर्माके वर्तमान मन्त्रियोंके वे निकट सहयोगी रह चुके थे और उनमेंसे अनेकको वे शुरूसे ही जानते थे। उनके भाई श्री रशीदने एक बर्मी महिलासे शादीकी है और अब वे बर्माकी राष्ट्रीयता प्राप्तकर लेनेके बाद बर्मी सरकारके एक मन्त्री हैं। स्वभावतः श्री रऊफ ऐसी स्थितिमें थे जिससे वे यह जान सकते कि देशमें क्या हो रहा है। इस प्रकार वे परिस्थितियोंके संबंधमें संतुलित और सही निष्कर्ष निकाल सकते थे। उनका अपना विचार यह था कि श्री ऊ नूकी शक्ति बराबर बढ़ती जा रही है। यदि कोई अप्रत्याशित घटना न हुई तो वे बराबर देशको आगे बढ़ाते जायँगे।

बर्मामें हमारे कुछ पुराने मित्र भी थे। इनमें शान प्रान्तके एक छोटे राजकुमार की पत्नी दा मिमि-खियांग थीं। ये अनेक विशिष्ट गुणोंसे समन्वित नवयुवती थीं। शान क्षेत्रकी शिक्षा-व्यवस्था इन्हींके अधिकारमें थी। युद्ध कालमें मिमि-खियांग भारत आयीं थीं। उस समय वे बीकानेर आकर हम लोगोंके साथ ठहरी थीं। उनका व्यक्तित्व और विचार गंभीर था। वे सभी प्रश्नोंपर निष्पक्ष एवं स्वतन्त्र निर्णय देनेकी योग्यता रखती थीं। बर्मास्थित भारतीय राजदूत और वहाँके नेताओंसे वार्ता करके मैं उस देशके सम्बन्धमें जिस निष्कर्षपर पहुँचा था मिमि-खियांगसे भी उसकी पुष्टि हो गयी। इस प्रकार बर्मामें हमारा कुछ समयके लिए ठहरना

बहुत उपयोगी हुआ। हम नवम्बरके आरम्भतक भारत पहुँच गये।

प्रधानमंत्री मुझे पुनः चीन भेजना चाहते थे। मुझे मालूम था कि वैदेशिक कार्यालयके कुछ स्थायी प्रधान अधिकारी इसके विरुद्ध थे। उनके विरोधका आधार यह था कि चूँकि मैं कोमिंतांग सरकारके समय चीनमें भारतका राजदूत रह चुका हूँ, इसलिए मुझे ही कम्युनिस्ट सरकार के समय भी राजदूत बनाकर भेजना कूटनीतिक प्रथाके विरुद्ध होगा। यह स्पष्ट था कि पीकिंग सरकार इस प्रकारके विचारको कोई महत्व नहीं देती थी, क्योंकि उसने नानकिंगस्थित हमारे रूसी सहकर्मी जेनरल एन० वी० रोशिनका पुनः चीनमें रूसी राजदूतके रूपमें स्वागत किया था। किन्तु जबतक भारत सरकारने पीकिंग सरकारको मान्यता देनेकी घोषणा और पीकिंगसे कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करनेका निश्चय नहीं कर लिया मुझे भारतमें रहकर पतीक्षा करनी पड़ी।

नये चीनको मान्यता प्रदान करनेकी आवश्यकताके सम्बन्धमें किसी प्रकारका मतभेद नहीं था किन्तु उसे मान्यता कब दी जाय, इस सम्बन्धमें नेताओंमें मतभेद अवश्य था। कांग्रेसके अपेक्षाकृत अधिक अपरिवर्तनवादी नेता, जिनमें उस समयके गवर्नर जेनरल श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तथा सरदार वल्लभभाई पटेल भी शामिल थे, चाहते थे कि हमलोग इस मामलेमें बहुत जल्दबाजी न करें। सिविल सर्विसका एक शक्तिशाली वर्ग, जिसमें मुझे सन्देह है कि वैदेशिक कार्यालयके कुछ उच्चाधिकारी भी शामिल थे, उनके इस दृष्टिकोणका समर्थन कर रहा था। मेरा दृष्टिकोण यह था कि जब चीनकी मुख्यभूमिपरसे कोमिंतांग सरकारका शासन समाप्त हो जाय उसी समय हमें नयी सरकारको मान्यता दे देनी चाहिये। मैंने अपने इस विचारको साफ-साफ व्यक्त भी कर दिया था। च्यांङ्-काई-शेककी भगोड़ी सरकार उस समय चुंकिंगमें स्थित थी। बहुतसे लोगोंका विश्वास था कि, जैसा कि जापानी युद्धके समय हुआ था, कोमिंतांग सरकार इस अगम्य क्षेत्रमें कायम रहनेमें समर्थ हो जायगी। उस समय इस सम्बन्धमें अमेरिकाका सिद्धान्त यह था कि यदि कोमिंतांग युन्नान, शेचुवान, सीकांग

तथा दूसरे बाहरी प्रान्तोंपर, जो सिंकियांग और रूसकी सीमातक फैले हुए थे और जिन क्षेत्रोंपर मुसलिम युद्धनेताओंका नियन्त्रण होनेकी बात कही जाती थी, नियन्त्रण कायम रख सका तो अमेरिकाकी सैनिक आवश्यकताओंकी पूर्ति हो जायगी। जापानविरोधी युद्धके समय इन प्रान्तोंके अन्तरवर्ती क्षेत्रोंमें बड़े-बड़े हवाई अड्डे बनाये गये थे। कुछ अमेरिकी सैनिक नेताओंने मुझसे कहा था कि हिन्दचीन और श्यामके सैनिक केन्द्रोंकी सहायतासे इस अन्तरवर्ती व्यवस्थाकी बखूबी रक्षाकी जा सकती है और इसे अमेरिकी 'प्रतिरक्षा-व्यवस्था'के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रके रूपमें परिवर्तित किया जा सकता है। यह योजना उतनी हास्यास्पद नहीं थी जितनी आज मालूम पड़ रही है। यदि अमेरिकी नीति सुनिश्चित और दृढ़ रही होती और जैसा कि जेनरल चेनाल्ट तथा कई अन्य लोगोंने चाहा था, अमेरिकी परराष्ट्र विभाग अप्रत्यक्ष ढंगसे भी हस्तक्षेप करनेको तैयार रहा होता तो कुछ समयके लिए कोमिंतांग सरकारको खड़ा रखा जा सकता था और कमसेकम बाहरी प्रान्तोंको शेष चीनसे अलग करके एक पृथक् राजके रूपमें संघटित किया जा सकता था। श्रीच्यांङ् तथा उनके मित्रगण इसी बातकी आशा लगाये हुए थे, किन्तु इस निर्णायक घड़ीमें अमेरिका कोई निश्चित नीति अपना न सका। अमेरिकामें उस समय इस बातपर विवाद छिड़ चुका था कि अमेरिकाकी चीन सम्बन्धी नीतिकी असफलताके लिए कौन उत्तरदायी है। इस विवादका उत्तर देनेके लिए परराष्ट्र विभागने जो प्रसिद्ध श्वेतपत्र प्रकाशित किया उसमें कोमिंतांगकी नीति और कार्योंका ऐसा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया जिसका चीन सम्बन्धी अमेरिकी नीतिपर बड़ा घातक प्रभाव पड़ा। इस आन्तरिक विवाद और कलहके फल स्वरूप राजनीतिक क्षेत्रमें दिग्भ्रान्ति व्याप्त हो गयी और इस निर्णायक घड़ीमें अमेरिका चीनके प्रति कोई नीति स्थिर न कर सका। यह बात काफी प्रसिद्ध हो चुकी थी कि अमेरिकी परराष्ट्र विभाग नवचीनको मान्यता देनेके प्रश्नपर ब्रिटिश सरकारसे विचार-विमर्श कर रहा है। यद्यपि उसने इस सम्बन्धमें कोई निर्णय नहीं

किया फिर भी यह सामान्य धारणा थी कि अमेरिका कमसे कम इस विचारके प्रतिकूल नहीं है कि दूसरे राष्ट्र चीनको मान्यता प्रदान करें और शायद वह स्वयं इसपर विचार करनेको तैयार है। नवचीनको मान्यता देनेका विचार कितना व्यापक हो गया था, इसका एक महत्त्वपूर्ण संकेत श्रीफास्टर डलेसकी रचना 'वार ऑर पीस' (युद्ध या शान्ति) में मिलता है, जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूपसे कहा है कि 'पीकिंग-चीनको मान्यता देना आवश्यक हो सकता है।'

इस समय (नवम्बर-दिसम्बर १९४९) चीनके कुछ गणतन्त्रीय नेताओंके, जिनका सम्बन्ध 'चीनी गोष्ठी'[१]से था, आन्दोलनका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा और यह स्पष्ट हो गया कि अमेरिकाकी सक्रिय सहायताके बिना चुंकिंग स्थित कोमितांग सरकार कायम नहीं रह सकती। अतः जब कोमितांग सरकार फारमोसा द्वीपमें चली गयी तो नेहरूजीने नवचीनको मान्यता प्रदान करनेका निश्चय किया। उस समय भी फारमोसा विधानतः जापानी साम्राज्यका अंग था, क्योंकि उसे मित्रराष्ट्रोंको हस्तांतरित करनेवाली सन्धिपर अभी हस्ताक्षर नहीं हुए थे। ब्रिटेनने भी नेहरूजीके विचारको स्वीकार किया और यह तय किया गया कि भारत सरकार द्वारा चीनकी नयी सरकारको दी जानेवाली मान्यताका संदेश वर्षान्त तक पीकिंग प्रेषित कर दिया जाय। कुछ कारणोंसे बर्मा इस बातके लिए उत्सुक था कि रूसी गुटके बाहर नवचीनको मान्यता प्रदान करनेवाला प्रथम राष्ट्र होनेका श्रेय उसे ही प्राप्त हो। इसीलिए बर्माने भारतसे कुछ दिन और प्रतीक्षा करनेका अनुरोध किया। समयपर बर्माने अपनी मान्यताकी घोषणा कर दी। उसके कुछ दिन बाद ही हमने भी घोषणा कर दी। इसके बाद ब्रिटेन, पाकिस्तान और हिन्देशियाने भी नवचीनको मान्यता प्रदना कर दी। इस प्रकार जनवरी १९५० के प्रथम सप्ताह तक पीकिंग सरकारको एशियाके प्रमुख राष्ट्रोंकी मान्यता प्राप्त हो गयी।

---

१. एक राजनीतिक समूह जो अमेरिकाको चीनके पक्षमें लानेके लिए प्रयत्नशील था।

पीकिंगकी प्रतिक्रिया अप्रत्याशित थी। मान्यता प्रदान किये जानेके बाद उसने सबसे पहले यह सुझाव दिया कि कूटनीतिक प्रतिनिधियोंके आदान-प्रदानपर ब्योरेवार विचार करनेके लिए विभिन्न राष्ट्र अपने दूतोंको पीकिंग भेजें। नानकिंगस्थित मेरे प्रथम सचिव श्री ए० के० सेन अभी वहीं मौजूद थे, इसलिए उन्हें ही प्रभारी राजदूतके रूपमें पीकिंग जाकर इस विषयपर विचार-विमर्श करनेका आदेश दिया गया। हमलोगोंने तथा अन्य राष्ट्रोंने, जिनमें ब्रिटेन भी शामिल था, यह सोच रखा था कि चीनकी नयी सरकारको मान्यता दिये जानेके बाद कूटनीतिक सम्बन्ध स्वयं ही स्थापित हो जायँगे और पुराने दूतावास बिना किसी विचार-विमर्श या तर्क-वितर्कके अपना कार्य स्वतः आरम्भ कर देंगे। चीनियोंका दृष्टिकोण ऐसा नहीं था। उनका कहना था कि कूटनीतिक सम्बन्धोंको विभिन्न राष्ट्रोंके साथ पृथक्-पृथक् वार्ता द्वारा तय करना होगा। नवचीनको मान्यता प्रदान करनेवाले राष्ट्रोंने अपने प्रतिनिधियोंको पीकिंग भेजना शीघ्रतामें ही स्वीकार किया। इसपर आज विचार करनेसे यह स्पष्ट हो जायगा कि यदि नवचीनने मान्यता प्रदान करनेवाले राष्ट्रोंसे अपने प्रतिनिधियोंको भेजनेके लिए कहा होता अथवा, ऐसी परिस्थितियोंमें जैसा प्रायः किया जाता है, यदि उसने तटस्थ राजधानियोंमें जहाँ दोनों पक्षोंका प्रतिनिधित्व होता है, वार्ता चलानेका प्रस्ताव किया होता तो यह अधिक लाभदायक और सुविधाजनक होता। भारत सरकारने श्रीसेनको इसी आधारपर प्रभारी राजदूत नामजद कर दिया था कि मान्यता प्रदान करनेसे कूटनीतिक सम्बन्ध पुनः स्थापित हो जाते हैं। पीकिंगने इसे स्वीकार करनेसे इनकार कर दिया। इसपर हमने भी तबतक वार्ता करनेसे इनकार कर दिया जबतक कि श्रीसेनको पीकिंग सरकार हमारे प्रभारी राजदूतकी मान्यता न दे दे। श्रीसेनको यह आदेश दिया गया कि वे चीनी सरकारके प्रतिनिधियोंके सामने यह प्रश्न साफ-साफ रख दें कि वे उन्हें हमारा प्रभारी राजदूत मानते हैं या नहीं? यदि उनका उत्तर नहींमें होता है तो वे वार्तामें शामिल न हों। इसपर चीनियोंने समझौता कर लिया

और वार्ताके उद्देश्यसे श्रीसेनको प्रभारी राजदूत मान लिया। इस आरम्भिक आदान-प्रदानके बाद वार्ता आसान हो गयी, किन्तु औपचारिक घोषणामें कुछ समय लगा, क्योंकि श्री माओ-त्से-तुंग और श्रीचाओ एन-लाई दोनों चीनी-रूसी सन्धिपर विचार-विमर्श करनेके लिए मास्को गये हुए थे। कूटनीतिक सम्बन्धोंकी स्थापनाकी घोषणा होते ही श्रीसेनने वास्तविक प्रभारी राजदूतका पद सम्भाल लिया। चीनी सरकारने इसके बाद शीघ्र ही उक्त पदपर मेरी नियुक्तिके प्रति भी अपनी स्वीकृति भेज दी।

मैं भारतमें करीब पाँच महीने रहा। इस बीच मुझे अस्थायी रूपसे सार्वजनिक सेवा-आयोगका सदस्य बना दिया गया था। आयोगमें मैं मुख्यतः परराष्ट्र विभागका प्रतिनिधित्व करता था। आयोग दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, कलकत्ता, मद्रास, नागपुर और बम्बईमें उम्मीदवारोंसे साक्षात्कार करता था। मैं वर्षोंतक अपने देशकी नयी पीढ़ीके सम्पर्कसे बाहर रहा। आयोगके कार्यके सिलसिलेमें मैंने प्रायः चार महीनेतक भारतव्यापी दौरा किया। इस दौरेमें मुझे विश्वविद्यालयकी शिक्षाके स्तर और नयी पीढ़ीकी बौद्धिक क्षमताओंको समझनेका अनुपम अवसर मिला और बड़ा ही रोचक अनुभव हुआ। जो चीज मुझे सबसे ज्यादा खटकी वह यह थी कि देशके नौजवानोंके पास कोई अखिल भारतीय विचार नहीं है। इसका मुख्य कारण १९२१ में हुए 'मांटेग्यू-चेम्स फोर्ड सुधारों'के फलस्वरूप भारतीय विश्वविद्यालयोंका होनेवाला प्रान्तीयीकरण है। दूसरी खटकनेवाली बात यह है कि प्रशासकीय अथवा वैदेशिक सेवाओंके लिए उम्मीदवार होनेवाले अधिकांश युवकोंको यूरोपीय इतिहासका तो अच्छा ज्ञान है, किन्तु वे एशियाई देशोंकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमिसे अधिकाधिक अनभिज्ञ हैं। इस विषयमें उनकी जो थोड़ी-बहुत जानकारी भी है वह ब्रिटिश दृष्टिकोणसे ही है। इसमें न तो छात्रोंका ही दोष है न विश्वविद्यालयोंका ही, क्योंकि अभी एशियाई देशोंके आधुनिक इतिहासपर एशियाई दृष्टिकोणसे लिखी गयी पुस्तकोंका सर्वथा अभाव है। यही खटकनेवाली स्थिति स्वयं भारतीय इतिहासके संबंधमें

भी है, इसीलिए अन्तरिम सरकारकी स्थापनाके कुछ महीनों बाद मुझसे भारतीयोंके लिए एक ऐसा भारतीय इतिहास लिखनेको कहा गया था जो भारतीयोंके उद्देश्यसे लिखा गया हो और जिसमें भारतीय इतिहासकी समूची पृष्ठभूमिपर नयी दृष्टिसे विचार करनेका प्रयत्न किया गया हो। नेहरूजीकी 'डिसकवरी आफ इण्डिया' (भारतकी खोज) एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसमें कुछ हदतक इस प्रकारका प्रयत्न किया गया है। यह ग्रन्थ यद्यपि एक इतिहास ग्रन्थ है फिर भी इसमें साहित्यिकता अधिक है। मैंने यह कार्य करनेका प्रयत्न किया और परिणामस्वरूप 'सर्वे आफ इण्डियन हिस्ट्री' (भारतीय इतिहासका सर्वेक्षण) अगस्त, १९४७ में प्रकाशित हुई। इसके बाद सार्वजनिक सेवा आयोगके अध्यक्ष श्री आर० एन० बनर्जीने मुझे एशियाइयोंके ही दृष्टिकोणसे आधुनिक एशियाई इतिहासका सर्वेक्षण प्रस्तुत करनेका सुझाव दिया। मैं स्वयं बहुत दिनोंसे एशियाके साथ यूरोपीय संबंधोंका इतिहास लिखनेका विचार कर रहा था। श्री बनर्जीका सुझाव मेरी योजनासे मेल खा गया। आगे चलकर चीनमें मुझे काफी समय मिला और चीनके अनुपम राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा पीकिंग विश्वविद्यालयसे लाभ उठानेकी सुविधा प्राप्त हुई। मैं इस अवसर और सुविधाका उपयोगकर अपना वचन पूरा करनेमें समर्थ हो सका। १९५३ में मेरी पुस्तक 'एशिया ऐण्ड वेस्टर्न डामिनेन्स' (एशिया और पश्चिमी राष्ट्रोंका प्रभुत्व) प्रकाशित हो गयी।

जिस समय मेरी नियुक्तिके संबंधमें पीकिंगसे स्वीकृति प्राप्त होनेकी प्रतीक्षा की जा रही थी सहसा भारत-पाक संबंधोंमें एक अभूतपूर्व संकट उत्पन्न हो गया। इस बार संकटका केन्द्र पंजाब और बंगाल नहीं थे। कुछ साधारण-सी घटनाओंको लेकर पूर्वी पाकिस्तानकी सरकार और बहुसंख्यक मुसलिम जनताकी प्रवृत्ति सहसा अमैत्रीपूर्ण हो गयी। इसके फलस्वरूप बंगालसे हिन्दुओंकी भारी भगदड़ शुरू हो गयी। पूर्वी पाकिस्तानसे भागनेवाले ये हिन्दू अपने साथ बलात् धर्म-परिवर्तन, लूट आदिकी दर्दनाक कहानियाँ ले आये थे। इसमें सन्देह नहीं कि इन कहानियोंमें

अतिरंजना भी बहुत थी। पश्चिमी बंगालमें भी इसकी भीषण प्रतिक्रिया हुई। कुछ ही दिनों बाद पश्चिमी बंगालसे भी मुसलमान आतंकग्रस्त होकर पाकिस्तान भागने लगे। फिर १९४७ का दृश्य उपस्थित हो गया। यद्यपि इस बारके साम्प्रदायिक उपद्रवमें १९४७ के समान निरीह जनता-की सामूहिक हत्या नहीं की गयी फिर भी इस बारका संकट इस मानीमें पहलेसे अधिक गम्भीर था कि दोनों पक्षके नेता युद्धकी बात करने लगे थे। जब संकट अपनी चरमसीमापर पहुँच गया तो मुझसे पूछा गया कि क्या मैं इस समय उच्चायुक्तके रूपमें पाकिस्तान जाकर परिस्थितिका सामना करनेको तैयार हूँ। मैंने इस प्रश्नको एक चुनौतीके रूपमें स्वीकार किया और बिना किसी हिचकिचाहटके पाकिस्तान जाना स्वीकार कर लिया। किन्तु इस संबंधमें कोई अन्तिम व्यवस्था होनेके पहले ही पीकिंगमें राजदूतके रूपमें मेरी नियुक्तिके संबंधमें चीनकी स्वीकृति आ गयी। इसके साथ एक दो दिनोंमें ही भारत और पाकिस्तानके प्रधान मन्त्रियोंके बीच प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित होनेके फलस्वरूप दोनों देशोंके संबंधमें भी सहसा सुधार होने लगा। इसलिए मेरे पीकिंग जानेका पहला निश्चय ही कायम रहा।

अप्रैलके अन्तमें मैं पीकिंग रवाना हो गया। हांगकांगमेंके पत्र मेरी नियुक्तिपर विचार करते हुए बड़ी उलझन पड़ गये थे। हांगकांगमें दो दिन रुककर हम बटरफील्ड और स्वायरके जहाज 'पोयांग'से तीनसिन चल पड़े।

पोयांग तटवर्ती यातायातके लिए प्रयुक्त होनेवाला एक छोटासा जहाज था। इसका वजन ३ हजार टनसे अधिक न रहा होगा। इसपर ४० टनसे अधिक माल नहीं लादा जाता था। हल्कीसी हवा चलनेका सन्देह होनेपर भी यह डगमगाने लगता था। तीनसिनका आधा रास्ता पारकर चुकनेपर हमें राष्ट्रवादियोंकी एक गनबोट दिखाई पड़ी किन्तु उसने हमारे साथ कोई छेड़खानी नहीं की और अपने रास्ते चली गयी। गनबोटसे भी हमें उतना डर नहीं लगा जितना कि कम्पनीकी उस व्यापक एहतियाती काररवाईसे लग रहा था जो उसने जलदस्युओंके आक्रमण की संभावनाके विरुद्ध कर रखी थी। जहाजके सभी मुख्य स्थानों-

पर बन्दूकोंसे लैस सशस्त्र पहरेदार नियुक्त थे जो दिनरात जहाजकी निगरानी करते रहते थे। उनके कन्धोंपर ए. पी. जी. (ऐण्टी-पाइरेट गार्डस् अर्थात् जलदस्युविरोधी प्रहरी) के बिल्ले लगे हुए थे। जहाजके पिछले भागमें चीनी यात्री थे। हम लोगोंको इनसे अलग करनेवाली पटरियोंपर लोहेकी डरावनी नोकदार छड़ें लगी हुई थीं। इन यात्रियोंकी गतिविधिपर बराबर कड़ी नजर रखी जाती थी। इस सारी व्यवस्थासे हमारी यात्राको एक खतरनाक साहसिक अभियानका रूप प्राप्त हो गया था। मैंने एक अधिकारीसे पूछा कि ये सारी एहतियाती कारवाइयाँ क्यों की गयी हैं। उसने मुझे बताया कि जलदस्युओंके आक्रमणका खतरा वास्तविक है। जब किसी जहाजमें चीनी यात्री जाते रहते हैं तो इस बातका कोई निश्चय नहीं है कि उनमेंसे कुछ छिपे हुए रूपमें जलदस्यु न हों और वे किसी भी समय जहाजके चालकोंको विवश करके जहाजको अपने वशमें न कर लें। उसने मुझे हालमें हुई कुछ ऐसी दुर्घटनाओंका उदाहरण भी दिया जिनमेंसे एकका सम्बन्ध एक काफी बड़े जहाजसे था। पोयांग पर कई चीनी यात्री थे। दस्युओंके सम्बन्धमें इन कहानियोंको सुननेके बाद मैं अक्सर छड़-दीवारीके पास खड़ा हो जाया करता था और यह जाननेके लिए कि उनमें कोई दस्यु तो छिपा नहीं है उनके चेहरोंके अध्ययनका प्रयत्न करता था।

जब मेरा जहाज ताकूबार (ताकूका बन्दरगाह) में प्रवेश कर रहा था उस समय जिन भावों और विचारोंसे मैं उद्वेलित होरहा था वे मुझे आज भी अच्छी तरह याद हैं। मैं समझ रहा था कि मैं एक अजनबी और नये संसारमें प्रवेश कर रहा हूँ। मुझे यह भी मालूम था कि पश्चिमी देशों अथवा कोमिंतांग चीनका मेरा जो पुराना अनुभव है उससे नयी परिस्थितिमें अब कोई बड़ी सहायता न मिलेगी। साम्यवाद सम्बन्धी मेरा ज्ञान पुस्तकोंतक ही सीमित था। वस्तुतः रूसी और पूर्वीय रूसी गुटके राष्ट्रोंके नानकिंगस्थित कूटनीतिज्ञोंको छोड़कर मैं अन्य किसी कम्युनिस्टको नहीं जानता था। मेरा सारा प्रशिक्षण पश्चिमके उदारता-

वादी लोकतान्त्रिक विचारधारामें हुआ था, अतएव यद्यपि मैं कुछ हदतक मार्क्सके आर्थिक सिद्धान्तोंसे परिचित था फिर भी किसी ऐसी राजनीतिक प्रणालीके प्रति मेरी कोई सहानुभूति न थी जिसमें वैयक्तिक स्वातन्त्र्यको प्रमुख स्थान न दिया गया हो। इन सारी बातोंके बावजूद मुझे चीनी जनताके प्रति गहरी सहानुभूति थी। मैं उसे एक ऐसे संघटित और शक्तिशाली राष्ट्रके रूपमें देखना चाहता था जो उन राष्ट्रोंके विरुद्ध उठ खड़े होनेमें समर्थ हो जिन्होंने उसपर सदियोंसे अत्याचार किये हैं और उसे दबाये रखा है। मैं चीनी जनताकी इस इच्छा और भावनाका आदर करता था कि उसके देशमें पश्चिमके प्रभुत्वके कारण जो हीन भावना पैदा हो गयी है उसे समाप्त कर दिया जाय और नवजागृत एशियाके महान् संदेशकी घोषणाकी जाय। इन विषयोंपर भारत और चीनके दृष्टिकोण समान थे। उनका मतभेद राजनीतिक ढाँचे, सामाजिक जीवन सम्बन्धी उनकी धारणाओं और सम्भवतः उससे भी अधिक संसारके प्रति उनके दृष्टिकोणपर था। भारतने स्पष्ट रूपसे यह स्थिति स्वीकारकी थी कि संसारको भेड़ों और बकरियों जैसे दो समूहोंमें नहीं बाँटा जा सकता। संसारको निष्ठावान और काफिर इन दो शिविरोंमें बाँटनेका विचार मूलतः गलत है। इसके विपरीत श्री माओ-त्से-तुंगने सार्वजनिक रूपसे अपने इस विश्वासकी घोषणाकर दी थी कि संसारमें केवल दो शिविर ही हो सकते हैं और जो लोग निष्ठावानोंके शिविरमें नहीं हैं वे सब काफिर हैं। जैसा कि मैं समझता था, उन्हें यह बतला देना कि संसारमें तटस्थ स्थिति भी सम्भव है, मेरा एकमात्र ध्येय—मिशन था।

मैं अपने आगामी कार्यभारके प्रति बड़ा उत्सुक था। मुझमें निराशा की कोई भावना न थी। मैं यह जानता था कि मेरा नया जीवन सरल न होगा। मैं यह भी समझता था कि ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिनपर भारत और चीनका मतभेद हो सकता है, किन्तु मुझे इस बातका विश्वास था कि अपेक्षित अवसर मिलनेपर मैं इन दोनों राष्ट्रोंके बीच सम्बन्धका एक ऐसा आधार प्रस्तुत कर सकूँगा जिससे दोनोंको ही लाभ होगा।

छठा परिच्छेद

कम्युनिस्ट पीकिंगमें पदार्पण

मैं १३ मई १९५० को तीनसिन पहुँचा। हांगकांगसे शुरू होनेवाली हमारी यात्रा इतनी लम्बी मालूम होती थी कि मानो कभी समाप्त ही न होगी; यद्यपि इसमें केवल सात दिन लगे। जहाजका कप्तान होम्स, जो एक स्काट्समैन था शंघाई और तीनसिनके कम्युनिस्टोंके बारेमें बहुत-सी कहानियाँ सुनाता था। कुल मिलाकर उसका विचार यह था कि नयी सरकार बड़ी कार्यकुशल है और कुछ ठोस काम करना चाहती है। उसने मुझे यह सूचना भी दी कि तीनसिनमें अमेरिकी अच्छा व्यापार कर रहे हैं। कुछ दिन हुए दो अमेरिकी जहाज तीनसिनकी सूती मिलोंके लिए कपास ले आये थे और पूरा माल लादकर वापस लौटे थे। मैं इस तथ्यका उल्लेख यह दिखानेके लिए कर रहा हूँ कि अमेरिकी जनतामें चीनके प्रति जिस नासमझ और उन्मादग्रस्त दृष्टिकोणका धीरे-धीरे विकास हो रहा है वह अभीतक उस स्थितिमें नहीं पहुँच पाया था जब कि वह स्वतन्त्र उद्योग और व्यवसायमें भी हस्तक्षेप करने लगता।

हमारे जहाजने तीसरे पहर ढाई बजेके करीब बंदरगाहमें लंगर डाल दिया। चीनमें हमारा पुनः प्रवेश अभी कुछ मास पहिले हुई हमारी बिदाई से बिलकुल भिन्न था। बिदाईके समय हमें किसी प्रकारका सम्मान और सत्कार नहीं मिला था। सरकारकी तरफसे कोई भी हमें विदा करने नहीं आया था। उस समय हमलोग 'भूतपूर्व राजदूत' थे जो चीनसे इसलिए असम्मानपूर्वक हट रहे थे कि हमें वहाँ कोई चाहता न था। हमें हर चीज, यहाँतक कि चीनसे बाहर जानेका अनुमति-पत्र भी सरकारकी कृपाके रूपमें प्राप्त करना पड़ा था। इस बार स्थिति इससे बिलकुल विपरीत

और भिन्न थी। नगर प्रशासनकी ओरसे नगरके उपाध्यक्ष (वाइस मेयर) तथा वैदेशिक कार्यालयकी ओरसे तीनसिनस्थित कूटनीतिक शिष्टाचार विभागके प्रधान भारतीय प्रभारी राजदूत श्री सेनके साथ मेरा स्वागत करनेके लिए स्वयं जहाजपर उपस्थित हुए। वाइस मेयरने तो मेरे स्वागतमें एक छोटा-सा भाषण भी कर डाला ! उस दिन हमलोग ऐस्टोरिया हाउस होटलमें ठहरे।

शंघाईकी भाँति तीनसिन भी एक वैदेशिक नगर रहा है। यह ब्रिटिश, फ्रेंच तथा अन्य यूरोपीय अधिकृत क्षेत्रोंमें बँटा हुआ था। नगरके मकानोंका रंग-ढंग विदेशी है। सड़कोंपर घूमनेसे ऐसा मालूम होता है कि हम किसी यूरोपीय नगरमें घूम रहे हैं। मुझे तीनसिन शंघाईसे अच्छा मालूम हुआ भले ही यह अपनी शान-शौकत, तड़क-भड़क, अभ्र-चुंबी अट्टालिकाओं, विशालकाय मदिरालयोंसे सुसज्ज गोष्ठी गृहों (क्लबों) तथा अन्य आधुनिक विशेषताओंमें पूर्वके पेरिस शंघाईका मुकाबला न कर सकता हो। तीनसिन मुझे शंघाईकी अपेक्षा अधिक प्रशस्त और सारवान मालूम पड़ा। उसमें शंघाई जैसी कृत्रिमता भी न थी। युद्धके बाद जापानी, जर्मन और इटालियन व्यापारके निष्कासनके फलस्वरूप नगरके आर्थिक जीवनपर ब्रिटेनके तीन दैत्याकार औद्योगिक प्रतिष्ठानोंका एकछत्र प्रभुत्व स्थापित हो गया था। इनके नाम थे बटरफील्ड और स्वायर, जार्डिन मैथेसन्स तथा कैलान माइनिंग ऐडमिनिस्ट्रेशन। कैलान माइनिंग ऐडमिनिस्ट्रेशन केवल नामके लिए एक चीनी ब्रिटिश निगम था किन्तु वस्तुतः यह एक ब्रिटिश प्रतिष्ठान ही था। कम्युनिस्टोंके आनेके साथ ही विदेशी व्यापारियोंकी स्थिति अत्यधिक संकटापन्न हो गयी। उदाहरणके लिए बटरफील्ड ऐण्ड स्वायर प्रतिष्ठानकी तीनसीन टग ऐण्ड लाइटर कम्पनीका सारा कारबार ही ठप पड़ गया क्योंकि तीनसिन नदीको चीनकी अन्तर्देशीय जलप्रणाली घोषित कर दिया गया था। फिर भी कम्पनीको अपने समस्त चीनी कर्मचारियोंको वेतन देना पड़ता था। पता चला था कि पूर्वमें सबसे बड़ी पूँजीसे चलनेवाले उद्योगोंमें प्रमुख स्थान

रखनेवाले दी कैलान माइन्स ऐडमिनिस्ट्रेशन प्रतिष्ठान दीवाला निकलनेकी स्थितिमें पहुँच गया यद्यपि वह प्रतिदिन १४ हजार टन कोयलेका उत्पादन कर रहा था। दूसरे वैदेशिक उद्योगोंकी भी स्थिति इनसे अच्छी नहीं थी।

दूसरे दिन हम पीकिंग चल पड़े। हमारी पार्टीके लिए एक स्पेशल गाड़ी सुरक्षित करा ली गयी थी। यात्रामें मेरे साथ कूटनीतिक शिष्टाचार विभागका एक अंग्रेजी बोलने वाला अधिकारी चल रहा था। वह कुछ मिनटोंके अन्तरपर गरम ताजी चायके प्याले हमारे सामने बढ़ाता जाता था। इस यात्रा के संबंधमें एक मजेदार बात यह है कि रेलगाड़ीमें हमारे लिए नियुक्त सेवक सबकी सब महिलाएँ ही थीं। मुझे बताया गया कि इंजन चालकोंका काम भी, जिसे प्रायः मर्दोंका ही काम समझा जाता है, अब बराबर महिलाएँ करने लगी हैं। कूटनीतिक शिष्टाचार अधिकारी श्री मा मू-मिङ्ने मुझे बताया कि मंचूरियासे एक ऐसी एक्सप्रेस गाड़ी पीकिंग आयी थी जिसकी सभी कर्मचारी महिलाएँ थीं। बादमें पता लगानेपर श्री मिङ्की बात सच निकली। इससे मालूम हुआ कि नव-चीनमें निश्चय ही महिलाओंको अपनी न्यायोचित और स्वाभाविक प्रतिष्ठा प्राप्त हो गयी है।

गाड़ी समयसे ठीक साढ़े छ बजे पीकिंग पहुँच गयी। मुझसे एक मिनटके लिए गाड़ीमें बैठे रहनेका अनुरोध किया गया जिससे सरकारी अधिकारी हमारे स्वागतमें उपस्थित हो सकें। एक मिनट बाद वैदेशिक विभागके प्रधान कार्यालयके प्रधान श्रीवांङ पिङ्-नान, कूटनीतिक शिष्टाचार-विभागके प्रधान श्री वाङ् जो-रू, पीकिंगके उपमेयर श्री वू हान तथा अन्य गण्य-मान्य व्यक्ति मेरी गाड़ीमें आ गये। उन्होंने चीनीमें संक्षिप्तमें भाषण करके मेरा स्वागत किया। मेरे लिए भाषणका अनुवाद कर दिया गया था। मैंने स्वभावतः अंग्रेजीमें ही स्वागतका उत्तर दिया। समादरकी भावनाओंके आदान-प्रदानके बाद मुझे बाहर ले जाया गया। मेरे स्वागतमें उपस्थित विभिन्न कूटनीतिकमण्डलोंके प्रति-निधियोंसे मेरी मुलाकात करायी गयी। इस अवसरपर सभी कूटनीतिक-

मण्डलोंका, जिनमें रूसी कूटनीतिक प्रतिनिधि मण्डल भी शामिल था, प्रतिनिधित्व उनके उच्चाधिकारियोंने किया था। रूसी राजदूत जेनरल रोशिनने तो अपने परामर्शदाताके मार्फत स्वागतका एक विशेष सन्देश भी भेजा था। स्टेशनसे मुझे वैगन-लिट होटल पहुँचाया गया।

वैगन-लिट पूर्वके सर्वाधिक विख्यात होटलोंमें है। चीन सम्बन्धी साहित्यमें इसका उल्लेख प्रायः बड़ी चमक-दमक और रोमांसके साथ किया जाता है। काहिरा स्थित शेपर्ड होटलके समान इसका भी कूट-नीतिज्ञों तथा अन्तरराष्ट्रीय-महत्त्वके अन्य व्यक्तियोंके साथ बराबर संबंध रहा है। ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, जापान, रूस तथा जर्मनीके बड़े-बड़े दूतावासोंसे घिरे हुए जातिवादके मक्का लीगेशन क्वार्टर[1] (दूतक्षेत्र)के मध्यमें स्थित ग्रैण्ड होटल डेस वैगन-लिट एक समय शाही नगरमें यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा स्थापित प्रभुत्वका प्रतीक था। दूतक्षेत्र एक प्रकारका ऐसा अन्तःस्थ क्षेत्र था जो भूतपूर्व चीनी सरकारका कोई अधिकार नहीं मानता था। एक दुर्गके समान इसकी रक्षा यूरोपीय राष्ट्रोंकी पुलिस और सेना करती थी। उन राष्ट्रोंके कूटनीतिकमण्डलों और दूतावासोंसे संलग्न बैरकें बनी हुई थीं जिनमें विदेशी सेनाएँ रहती थीं। बाक्सर कूट-नीतिक संधिकी शर्तोंके अनुसार यूरोपीय राष्ट्रोंने इस क्षेत्रसे चीनियोंको निकाल बाहर कर देनेतकका अधिकार अपने लिए सुरक्षित कर रखा था।

अपनी सामान्य रूपरेखा, इमारतोंकी वास्तुकला और वातावरण तथा परिवेशमें दूतक्षेत्र ऐसा लगता है मानो चीनमें यूरोपका कोई टुकड़ा लाकर रख दिया गया हो। कूटनीतिक आवास, जिनकी पदवी कोमिंतांग शासनमें आगे चलकर बढ़ाकर दूतावासोंकी कर दीगयी थी, अपने विस्तार और साज-सज्जामें अद्भुत लगते हैं। ब्रिटिश दूतावास बहुतही विशालक्षेत्रमें फैला हुआ है। यह क्षेत्र ऊँची दीवालसे घिरा हुआ है।

१. वह क्षेत्र जहाँ चीनमें कम्युनिस्ट सरकार स्थापित होनेके पूर्व वैदेशिक राजदूत रहा करते थे।

इसके बीचमें एक विशाल चीनी भवन बना हुआ है। दूतावासकी इमारत ब्रिटेनके एक ग्रामीण निवासके नमूनेपर बनी हुई है। इसका यह स्वरूप निस्संदेह "हीथेन चीनियों"[1]पर ब्रिटेनके प्रभुत्वका प्रभाव डालनेके लिए रखा गया है। अन्य यूरोपीय राष्ट्रों तथा जापानने भी इस संबंधमें ब्रिटेन-का ही अनुकरण किया है। बड़े राष्ट्र अपनी महत्ता स्थापित करनेमें एक दूसरेकी प्रतिस्पर्धा करते थे और बेल्जियम तथा हालैण्ड जैसे छोटे राष्ट्र अपने साधनोंकी सीमामें उनके द्वारा निर्धारित प्रतिमानोंके अनुसार रहनेकी चेष्टा करते थे।

ग्रैण्ड होटल डेस वैगन-लिट उक्त भावनाको व्यक्त करनेवाला एक छोटा नमूना था। कोमितांग कालके करीब-करीब समाप्त होनेके समय ही जब मैं सितम्बर १९४८ में पीकिंग गया था तो अभी भी उसमें उसके अतीत गौरवकी एक धुंधली-सी छाया मिल रही थी। बार (मदिरालय) में बराबर भीड़ लगी रहती थी। विश्रामगृह अमेरिकी पुरुषों तथा महिलाओं और छिटफुट सभी प्रकारके यूरोपियनोंके आनन्दकोलाहलसे परिपूर्ण एवं प्रसन्न लगते थे। उस समय पीकिंगका वातावरण यूरोपके उस होटलके समान होगया था जिसमें अमेरिकी यात्री आते रहते हैं। इस होटलमें उस समय सबसे अच्छा व्यापार कलाकी अद्भुत वस्तुओंका होता था। इनमें अधिकांश नकली थीं। इन्हें विदेशी लोग बहुत बड़ी-बड़ी कीमतोंपर खरीद रहे थे। सारा सौदा उस समय डालरोंमें होता था। जिनके पास डालर प्रचुर मात्रामें नहीं होता उन्हें कोई पूछनेवाला न था।

अब स्थिति बिलकुल बदल चुकी थी। मेरे पीकिंग पहुँचनेके एक दो सप्ताह पूर्व ही होटलको उसके अंग्रेज मालिकोंसे ले लिया गया था। उसे जनवादी सरकार अपने काममें ला रही थी। कलाकी अद्भुत वस्तुओंकी दूकानोंको खाली कर देनेकी नोटिस दे दी गयी थी।

1. चीनियोंके प्रति अंग्रेजों द्वारा प्रयुक्त घृणासूचक शब्द—असभ्य, जंगली।

विश्राम-गृहोंका आनन्द-कोलाहल शान्त पड़ चुका था। होटल न केवल विदेशी कूटनीतिक प्रतिनिधिमण्डलोंके ऐसे सदस्योंसे जो अपनी आवास व्यवस्थाकी प्रतीक्षामें वहाँ रह रहे थे, भरा हुआ था बल्कि होटलमें रूसी प्रविधिज्ञ भी बड़ी संख्यामें टिके हुए थे। इन लोगोंने होटलके पूरे दो खण्डोंपर कब्जा कर रखा था। दो या तीन सप्ताहों बाद यह होटल होटल नहीं रह गया। इसे रूसी विशेषज्ञोंका आवास बना दिया गया।

दूतक्षेत्रको लीगेशन क्वार्टरके नामसे अब केवल विदेशी लोग ही पुकारते हैं। जापानियोंके अधिकारके समय इसके विशेषाधिकार बहुत कुछ समाप्त हो चुके थे। जापानी युद्धके बाद जब पीकिंगपर कोमिंतांगका अधिकार हुआ तो यूरोपीय राष्ट्रोंने चीनमें अपने राष्ट्रीय विशेषाधिकारोंका परित्याग कर दिया। इससे उनके लीगेशन क्वार्टर संबंधी विशेषाधिकार तथा सुविधाएं भी समाप्त हो गयीं। जनवादी सरकारकी विधिवत् स्थापना हो जानेपर उसने ब्रिटिश फ्रेंच तथा अमेरिकनोंको उन भूखण्डोंपरसे हटाना शुरू कर दिया जिनपर इन्होंने गैरकानूनी ढंगसे अधिकार कर लिया था और अपने बैरक बनवा रखे थे। इससे लीगेशन क्वार्टरकी विशिष्ट स्थितिका अन्तिम प्रतीक भी समाप्त हो गया।

मैंने आरम्भसे ही अपने आवासके लिए दूतक्षेत्रसे बाहर ही स्थान चुननेका निश्चय कर रखा था। मैं उस लीगेशन क्वार्टरसे सम्बद्ध नहीं होना चाहता था जो पूर्वमें यूरोपीय प्रभुत्वका इतना बड़ा प्रतीक बन चुका था। श्री सेनने वैदेशिक कार्यालयसे परामर्श करके मेरे लिए जो मकान चुन रखा था वह नगरकी दीवालके सम्मुख चेङ् मेन और हो पिङ् मेनके बीचकी मुख्य सड़कपर स्थित था। यह मकान एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित चीनीका था जिसने चीनी ढंगके अनेक प्रांगण, गृह तथा स्वागतकक्ष तो बनवा ही रखे थे अपनी सुविधाके लिए यह आधुनिक ढंगका मकान भी बनवाया था। इसमें आधुनिक सुख-सुविधाके सभी साधन मौजूद थे। सड़कसे दूरस्थित इस मकानके सामने एक सुन्दर उद्यान था जिसमें अनेक पुराने शोभाशाली वृक्ष लगे हुए थे। उद्यानसे लगे हुए

शिविराकार भवनकी दीवालोंपर 'अरुणालयके स्वप्न'के (एक प्रसिद्ध चीनी उपन्यास 'ड्रीम आव द रेड चेंबर') दृश्य अंकित थे। मकान नगरके वातावरणके अनुरूप था और उसमें एक आधुनिक इमारतकी सभी सुविधाएँ सुलभ थीं।

मेरे पीकिंग पहुँचनेके तीन दिन बाद प्रधानमन्त्री श्री चाओ एन-लाईने वाई चिया पू अर्थात् चीनी वैदेशिक कार्यालयके प्रधान आस्थानमण्डपमें मेरा स्वागत किया। सुदूर पूर्वकी राजनीतिमें रुचि होनेके कारण मैं श्रीचाओके नामसे परिचित तो था ही उनके राजनीतिक जीवनका भी उस समयसे ही अध्ययन करता रहा जब कि वे शंघाई विद्रोहके उपसेनापति थे। मालराक्सकी पुस्तक 'कण्डिशन ह्यूमेन'का (एक प्रसिद्ध फ्रेंच उपन्यास। इस उपन्यासके नामका अर्थ है 'मानवताकी स्थिति') विषय भी शंघाई-विद्रोह ही है। इसलिए मैं चाओसे मिलनेकी उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। आस्थानकक्षमें पहुँचनेके बाद श्री चाओ दाखिल हुए। स्टैण्डर्ड बन्द गलेका कोट और पाजामेमें सुगठित शरीर, सिरपर काले बालोंका गुच्छा, यौवनसुलभ कान्ति और उल्लाससे दीप्त फिर भी पूर्णतः संयमित और सन्तुलित मुखमण्डल—श्री चाओका ऐसा ही आकर्षक व्यक्तित्व है। उनकी कोटकी जेबसे फाउण्टेन अनिवार्य रूपसे झाँक रही थी। उन्होंने प्रशान्त गरिमाके साथ कमरेमें प्रवेश किया और मुझे बड़ी हार्दिकतासे सम्बोधन किया। इसके बाद हम वार्ता करने बैठ गये। हमारी वार्ता बहुत देरतक चलती रही।

जब मैंने यह विचार किया कि श्री चाओ एन-लाईपर कितना गम्भीर उत्तरदायित्व है और उन्हें चीनके प्रधान एवं परराष्ट्रमन्त्री, सर्वोच्च सैनिक परिषदके उपाध्यक्ष तथा चीनी कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय कार्यसमितिके सदस्यके रूपमें सम्भवतः संसारका सबसे कठिन कार्य करना पड़ रहा है, तो मुझे उनकी मुखाकृतिकी स्वाभाविक निश्चल शान्ति और स्वच्छता बड़ी ही असाधारण-सी प्रतीत हुई। श्री नेहरूसे उनका व्यक्तित्व कई मानोंमें मिलता-जुलतासा है, किन्तु नेहरूजी सामान्यतः परीशानसे दिखाई

देते हैं उनकी यह परीशानी केवल उसी समय दूर होतीसी लगती है जब वे किसी संगसाथमें मुस्कराते या हँसते होते हैं। इसके विपरीत श्री चाओ एन-लाईकी मुस्कुराहट तो बहुत हलकीसी होती है किन्तु उनके चेहरेपर निरन्तर अभेद्यता और स्थिरताका भाव बना रहता है। उनसे मिलनेके समय सबसे पहले मेरा ध्यान उनके हाथोंपर गया। उन हाथोंका बहुत सावधानीसे सार-संभार किया गया था। उनकी उँगलियाँ भी, यदि चीनियोंकी भाषामें कहें तो, प्याजकी कोमल डंठलियोंसी बहुत ही प्यारी और भली लग रही थीं। इन उँगलियोंके सहारे वे वार्ताके सिलसिलेमें बड़े ही प्रभावकारी संकेत किया करते थे।

हमलोग ठीक डेढ़ घण्टेतक बातें करते रहे। उन्होंने मुझसे जो प्रश्न किये वे बड़े ही पतेके और जानकारी प्राप्त करने वाले थे। इन प्रश्नोंका सम्बन्ध मुख्यतः औद्योगिक उत्पादन, भूस्वामित्व तथा खेती और किसानों-की स्थिति आदिकी समस्याओंसे था। भारतके सम्बन्धमें उनकी जानकारी अस्पष्टसी मालूम होती थी। उनके सारे प्रश्नोंका सम्बन्ध भारत और चीनकी समान समस्याओंसे था। मैंने यह अनुभव किया कि वे दोनों देशोंकी समस्याओंकी समानता और अन्तरको समझनेके लिए बराबर तुलना करते जा रहे हैं। वे घूमफिरकर बार-बार इस्पात और वैद्युतिक शक्तिके उत्पादनकी समस्यापर आ जाते थे। बातचीतके सिलसिलेमें उन्होंने मुझसे कहा कि इस्पात और बिजलीकी शक्तिका उत्पादन बढ़ाना एशियाई जनताके लिए बहुत आवश्यक है।

इस लम्बी भेंटके बाद हमारी वार्ता टोस्ट और जलपानसे समाप्त हुई। मैं श्री चाओके पाससे यह विचार लेकर लौटा था कि मैं जिस व्यक्तिसे बातें कर रहा था वह कोरा सिद्धान्तवादी नहीं है। वह एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ भी है जिसके साथ विचार-विमर्श और व्यवहार करना सम्भव है। यह पूर्णतः स्पष्ट हो गया कि श्री चाओ राजनीतिसे परे और उसकी पृष्ठभूमिमें आनेवाली वास्तविकताओंके प्रति पूर्ण जागरूक हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वे एक मँजेमँजाये प्रशिक्षित सिद्धान्तवादी और पक्के कम्युनिस्ट

हैं, फिर भी उनके पैर धरतीपर मजबूतीसे जमे हुए हैं।

दूसरे दिन कूटनीतिक शिष्टाचार विभागके प्रधान मेरे होटलमें आये। उन्होंने मुझे यह सूचित किया कि नवचीनके अध्यक्ष श्री माओ त्से-तुंगने मेरे परिचयपत्रके समर्पणके लिए २० तारीखको शामका ५ बजेका समय निर्धारित किया है। यह जानकर मुझे कुछ राहत मिली, क्योंकि मैंने सुन रखा था कि रूमानियन और चेक राजदूतोंको अपने परिचयपत्र रातको ग्यारह बजे समर्पित करने पड़े थे, क्योंकि माओ त्से-तुंगको ऐसे कामोंके लिए दूसरा समय ही नहीं मिलता। नव चीनके सम्बन्धमें एक विलक्षण बात मैंने यह देखी कि नयी सरकार मुलाकातोंके लिए प्रायः काफी रात गये ही समय निश्चित करती है। शायद इसका कारण यह था कि सरकारी अधिकारियोंका दिनका समय निरन्तर सम्मेलनों और विचार-विमर्शमें ही बीत जाता था। श्री चाओ एन-लाईसे मेरी तीन जरूरी मुलाकातें दस बजे रातके बाद हुई हैं और एक बहुत ही आवश्यक वार्ता तो आधी रातको हुई है।

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि श्री माओ त्से-तुङ्ग जैसे व्यक्तिसे, जिसने एशियामें ऐसी उग्रता और तेजीसे इतिहासकी गतिको ही बदल दिया, वार्ता करनेके विचारसे मैं कुछ कम उतावला और उत्सुक नहीं हुआ। क्या यह व्यक्ति कोई नया चंगेज है, कोई ऐसा सम्राट् है जो देशका नकशा बदलनेका विचार कर रहा है या नवजागृत जनताका चुना हुआ नेता है जो उन सब लोगोंको, जिन्होंने चीनी क्रान्तिको बेच दिया था और उन पश्चिमी राष्ट्रोंको जिन्होंने एशियाई राष्ट्रोंको गुलाम बना रखा था, चीनसे बाहर खदेड़कर समुद्रमें फिरसे वहाँ चले जानेके लिए ढकेल रहा है जहाँसे वे आये थे? पहाड़ी चोटियों और गुफाओंमें पलनेवाला यह हराटा-मराठा, तपातपाया योद्धा भारतकी ३५ करोड़ जनताको मुक्त करनेवाले महात्मा गांधी और नेहरूकी तुलनामें और स्वयं अपने पुराने शत्रु च्याङ् काई-शेककी तुलनामें कैसा लगता है? मैंने पढ़ा था कि श्री माओ चीनके शास्त्रीय और प्राचीन साहित्यके गम्भीर

अध्येता रहे हैं। यह स्पष्ट था कि वे एक मौलिक विचारक हैं। 'न्यू डेमाक्रेसी' या 'आन ए कोएलिशन गवर्नमेण्ट' आदि उनकी प्रकाशित रचनाओंसे पता चलता है कि उनमें समस्याओंपर विचार करने और उनका विश्लेषण करनेकी कैसी क्षमता है।

परिचयपत्रका समर्पण सामान्य समारोहके साथ अध्यक्षके सरकारी निवासमें सम्पन्न हुआ। यह निवास मांचू सम्राटोंके अपेक्षाकृत छोटे महलोंमें है। यह दक्षिणी झीलके तट पर स्थित है। कहा जाता है कि इसे सम्राट् चीन लुङ्ने अपनी तुर्की प्रियतमा (उपपत्नी)के लिए, जो 'सौरभमयी अन्तःपुरिका'[1]के नामसे प्रसिद्ध है, बनवाया था। इस राज-प्रासादमें प्रवेश एक तोरणद्वारसे होता है। किसी समय इस द्वारके पास एक मीनार बनी हुई थी जहाँसे वह सौरभमयी अन्तःपुरिका अपने सम्बन्धियोंको दर्शन देनेका अनुग्रह करती थी। देवपुत्र (सम्राट् चीन लुङ्) के अन्तःपुरमें प्रचलित शिष्टाचारके अनुसार इसे एक बहुत बड़ा अनुग्रह माना जाता था। श्री माओ त्से-तुंग इस महलमें नहीं रहते थे। वे अपनी पत्नीके साथ, जो एक बहुत ही सुन्दर महिला हैं और प्रसिद्ध सिनेमा अभिनेत्री रह चुकी हैं, ग्रीष्मावासयोग्य पहाड़ियोंमें स्थित शाही शिकारगाहमें रहा करते थे। परिचयपत्र समर्पणका समारोह बहुत ही संक्षिप्त और प्रभावकारी था। मैंने इस अवसरपर अपने भाषणमें इस बातपर जोर दिया कि भारत और चीनकी दृढ़ मैत्रीकी नीतिसे शांतिका पक्ष मजबूत होगा। श्री माओ त्से-तुंगने अपने भाषणमें भारत और चीनकी समान परम्पराओंकी चर्चा करते हुए बताया कि दोनों देशोंको अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिए समान रूपसे संघर्ष करना पड़ा है।

समारोह समाप्त होनेके बाद श्री माओ त्से-तुंग मुझे एक छोटेसे स्वागतकक्षमें ले गये। वहाँ हमने भारत और चीनके सम्बन्धमें आधे

१. जनश्रुति है कि इस स्त्रीके शरीरसे मधुर सुगन्ध निकलती रहती थी।

घण्टेसे भी अधिक समयतक बातें कीं। इस समय हमलोगोंके अतिरिक्त वहाँ श्री चाओ एन-लाई और एक दुभाषिया उपस्थित था। श्री माओने वार्ता शुरू करते हुए कहा कि चीनियोंका यह प्राचीन विश्वास है कि जो इस जन्ममें सदाचारपूर्वक अच्छा जीवन व्यतीत करता है उसे पुनः भारतमें जन्म लेनेका सौभाग्य प्राप्त होता है। हमने सामान्यतः एशियाके सम्बन्धमें और एशियाई महाद्वीपसे यूरोपियनोंके हटनेके बारेमें बातचीत की। श्री माओने इस बातपर एकाधिक बार जोर दिया कि जबतक एशियामें यूरोपीय आर्थिक सत्ताकी जड़ जमी हुई है हमारी स्वतन्त्रता पूर्ण नहीं कही जा सकती। मैंने इसके उत्तरमें उन्हें बताया कि यूरोपीय आर्थिक सत्ताको हटानेका सही तरीका यह है कि हम अपने निजी साधनोंका विकास करें। भारतने इसी नीतिपर चलनेका निश्चय किया है। उन्होंने बर्माकी स्थितिके सम्बन्धमें जिज्ञासा प्रकट की। जब मैंने उन्हें बताया कि बर्मी सरकार अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेके लिए उतना ही कृतसंकल्प है जितना हम तो वे इसमें बडी दिलचस्पी लेते प्रतीत हुए। उन्होंने बौद्ध दर्शन और धर्मके प्रति भी पर्याप्त रुचि दिखलायी और मुझसे पूछा कि भारतपर इसका कैसा प्रभाव है? ब्रिटेनके साथ हमारे सम्बन्धोंमें भी उनकी दिलचस्पी थी। हम लोगोंकी बातचीत अत्यन्त हार्दिक थी। हमने पुनः दोनों देशोंकी मैत्रीके उपलक्ष्यमें कई बार प्रीतिपेय ग्रहण किये।

श्री माओ त्से-तुंगकी लंबाई औसतसे कुछ अधिक है। दक्षिणी चीनियों-की तुलनामें उन्हें लंबा ही कहा जायगा। उनके शरीरका संघटन कुछ स्थूल है। कंधे चौड़े हैं। गला छोटा किन्तु मोटा है। चेहरेसे प्रसाद, प्रसन्नता और उदारता टपकती है। नेत्रोंमें स्निग्धता है। ललाट प्रशस्त और उन्नत है। गंजेपनके बढ़नेके कारण उसका प्रभाव और बढ़ गया है। सिरपर बालोंका गुच्छा इस प्रकारसे विन्यस्त है कि उनका चेहरा और भड़कीला लगता है। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली है किन्तु डराने-धमकानेवाला नहीं है। उनमें लोगोंको अपना बना लेनेका

नैसर्गिक गुण है। उनकी मुखाकृति या आँखोंमें कहीं भी क्रूरता अथवा रुक्षताका लेश भी नहीं है। उन्हें देखकर मुझपर एक ऐसे दार्शनिक मस्तिष्कवाले व्यक्तित्वका प्रभाव पड़ा जिसके विचारोंमें कुछ स्वप्नप्रियता अवश्य है किन्तु जिसे अपने स्वप्नोंको मूर्त्तरूप देनेका दृढ़ विश्वास है। पिताके छोटेसे फार्मसे अपने बचपनका जीवन आरम्भ करके आज दुनियाको चकाचौंध कर देनेवाली महत्ता अर्जित करलेनेवाले माओको बड़ा लम्बा रास्ता पार करना पड़ा है और बड़े-बड़े संघर्ष करने पड़े हैं। चिङ् कान-शानकी पहाड़ियोंमें च्याङ्के दण्ड-विधायक सैनिक अभियानोंका प्रतिरोध करते हुए, एक नये मसीहाकी तरह अपने अनुयायियोंको अपने प्रतिश्रुत प्रदेशमें ले जानेके लिए पहाड़ों, रेगिस्तानों और अनेकानेक बीहड़ क्षेत्रोंके बीच एक ऐसे संकीर्ण और दुर्गम रास्तेसे, जिसका इतिहासमें कहीं जोड़ नहीं मिल सकता, उनका नेतृत्व करते हुए, येनानकी गुफाओंमें दिन काटते हुए, अपनेको समूल नष्ट कर देनेके लिए कृतसंकल्प कोमिंतांगके विरुद्ध संघर्ष करते हुए, जापानियोंके विरुद्ध छापेमारोंका संघटन करते हुए और अन्तमें चीनकी पुनर्विजयके उस महायुद्धकी योजना कार्यान्वित करते हुए जिसने मंचूरियाकी सीमासे लेकर भारत तथा हिन्द-चीनकी सीमातकके विशाल भूभागपर, जिसपर कांग्सीके बाद कोई भी चीनी शासक नियन्त्रण करनेमें समर्थ न हो सका, उन्हें एक छत्र अधिकार प्रदान कर दिया, श्री माओ त्से-तुंगको अपने महान् साहसिक और शौर्यपूर्ण जीवनमें अनेक दुस्तर कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा होगा और न जाने कैसी-कैसी विपत्तियोंको झेलना पड़ा होगा किन्तु फिर भी उनके चेहरेपर किसी प्रकारकी कटुता, तिक्तता, निष्ठुरता या विषादकी छाया तक नहीं मिलती।

श्रीमाओ त्से-तुंग कोमल स्वरमें धीरे-धीरे शान्तिपूर्वक बोलते हैं। इतिहासमें उनकी विशेष रुचि है। हमारी वार्तामें इसका कई प्रकारसे परिचय मिला। उदाहरणके लिए उन्होंने मुगलोंसे मंगोलोंका क्या सम्बन्ध था यह जाननेकी इच्छा प्रकट की। एक इतिहासज्ञ विचारकके रूपमें वे

यूरोपीय साम्राज्यवाद द्वारा एशियाके प्रति किये गये अन्यायोंका बड़ी गम्भीरतासे अनुभव करते थे। उनका विचार यह मालूम होता था कि यूरोपने एशियाका जीवन असन्तुलित कर दिया था। एशियाई जीवनमें पुनः सन्तुलन स्थापित करना ही इस पीढ़ीके उद्धारकोंका कार्य है।

एक ऐसे व्यक्तिकी दृष्टिसे जिसकी अवस्था साठके करीब हो रही हो और जिसे इतनी मुसीबतें झेलनी पड़ी हों, श्रीमाओको बहुत स्वस्थ और उत्साही कहा जायगा। जिस कृषक जातिमें उन्होंने जन्म लिया है वह सम्भवतः संसारकी सर्वाधिक परिश्रमी और कष्ट सहिष्णु जाति है। श्रीमाओ चीन जैसे महान् राष्ट्रके प्रधानके रूपमें अपनी असंख्य परीशानियोंके बावजूद और चीनमें सम्भवतः सबसे अधिक परिश्रम करनेवाले व्यक्ति होते हुए भी इन सारी चिन्ताओं और कठोर श्रमको सहज ही स्वीकार कर लेनेमें समर्थ प्रतीत होते हैं।

माओकी तुलना च्याङ्काई शेकसे करना अनुचित होगा। च्याङ्का व्यक्तित्व निस्सन्देह शक्तिशाली है। वे दृढ़ संकल्प और चरित्रवाले व्यक्ति हैं फिर भी वे बड़े स्वकेन्द्रित हैं। उनके व्यक्तित्वमें एक प्रकारकी कठोरता और निर्दयताका आभास मिलता है। सिआनमें अपनेको नजरबन्द कर रखनेके अपराधमें च्याङ्ने जेनरल यांगके परिवारकी, जिसमें छोटे-छोटे बच्चे भी शामिल हैं, तीन पीढ़ियोंका उन्मूलन कर डाला। इससे उनके क्रूर प्रतिहिंसामूलक व्यक्तित्वका पता चलता है। च्याङ्के बारेमें किसीने भी यह नहीं कहा है कि वे कोई सांस्कृतिक व्यक्ति हैं। माओकी तुलना नेहरूसे करना अधिक उपयुक्त होगा। दोनों ही बड़े व्यावहारिक और कार्यको महत्त्व देनेवाले व्यक्ति हैं किन्तु दोनोंमें स्वप्नदर्शी आदर्शोन्मुख प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। मानवतावादके व्यापक अर्थोंमें दोनोंको मानवतावादी कहा जा सकता है किन्तु नेहरूके विचारोंका मूल पाश्चात्य उदारतावादमें है जिसका प्रभाव उनके समाजवादी विचारधारापर भी पड़ता है। इसके विपरीत श्री माओ त्से-तुंग अधिकांशतः स्वयं शिक्षित व्यक्ति हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र और इतिहासका अध्ययन मार्क्स और लेनिनके दृष्टि-

कोणसे किया है। अतएव कदाचित् उनके लिए व्यक्ति स्वातन्त्र्यके उदारतावादी सिद्धान्तका कोई उपयोग नहीं है। फिर भी चीनके पुराने साहित्यके गहन अध्ययनसे अनुप्राणित और आरम्भमें बौद्धदर्शन और धर्ममें दीक्षित होनेके कारण माओके सम्बन्धमें यह जोड़ देना अधिक उचित होगा कि उनके मानसिक अवस्थानमें मार्क्सवादके शुष्क सिद्धान्तोंके अतिरिक्त दूसरे तत्त्व भी मौजूद हैं।

मेरे आगामी कुछ दिन चीनके प्रमुख व्यक्तियोंसे मिलने और बातें करनेमें लग गये। मैं बारी-बारीसे सर्वश्री चू तेह, लिउ शाओ-ची, ली चीशेन, चाङ् लान (ये सभी चीनके उपाध्यक्ष हैं), हुआङ् वेन पाई, कुओमोजो, शेन येन-पिङ् तथा अन्य मन्त्रियोंसे मिला। इन सभी व्यक्तियोंका राजनीतिक तथा अन्य दृष्टियोंसे अलग-अलग महत्त्व है, किन्तु इनके बारेमें चीनके बाहर लोग बहुत कम जानते हैं। इसलिए यहाँ इनका संक्षिप्त वर्णन दे देना रोचक होगा। उपाध्यक्षोंमें श्री चू तेहका स्थान सबसे ऊपर है। चीनकी लाल सेनाके सर्वोच्च सेनापति श्री चू तेहको श्री माओ त्से-तुंगके साथ जनवादी मुक्तिसेनाके निर्माण करने तथा उसे वर्तमान दक्षताकी स्थितिमें लानेका श्रेय प्राप्त है। कोमिंतांग सेनाओंके विरुद्ध बड़े-बड़े अभियानोंकी योजना बनाने, उन्हें संघटित करने और अन्तमें कोमिंतांग सेनाका मूलोच्छेद करनेका श्रेय भी इन्हें ही प्राप्त है। इनका जन्म शेचुआनके एक किसान परिवारमें (जो वहाँके १३ किसान-परिवारोंमेंसे एक था) हुआ था। इन्होंने बादमें सैनिक शिक्षा ली और १९०९ में नयी सेनाके अफसर नियुक्त हुए। १९५० में प्रकाशित हुए एक लेखमें श्री चू तेहने अपनी माताके निधनपर शोक प्रकट करते हुए अपने आरम्भिक दिनोंकी मुसीबतोंका वर्णन किया है और बताया है कि उन्हें शिक्षा देनेमें उनके माता-पिताको कैसी-कैसी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी थीं। ऐसा लगता है कि वे बचपनसे ही क्रान्तिकारी रहे हैं। यह एक असन्दिग्ध तथ्य है कि श्री चू तेह तथा उनकी सेनाने राजतन्त्रके पुनः स्थापित करनेके युवान शिह काईके प्रयत्नका डट-

कर विरोध किया था। पहली क्रान्तिके असफल हो जानेके बाद जब देश युद्धनेताओंकी मुट्ठीमें आ गया, चू तेह उच्च सैनिक शिक्षाके लिए यूरोप चले गये। यूरोप जानेपर वे कम्युनिस्ट हो गये। जिस समय कम्युनिस्टोंके सहयोगसे च्याङ् काई-शेकके नेतृत्वमें उत्तरी अभियानका संघटन हुआ वे उसकी एक इकाईके सेनापति बनाये गये। १९२८ में पहलीबार उन्होंने चीनी इतिहासके रंगमंचपर प्रमुखतासे पदार्पण किया। इसी वर्ष उन्होंने श्री चाऊ एन-लाईके सहयोगसे नानचाङमें विद्रोह किया और इस प्रकार जनवादी मुक्तिसेनाकी नींव रखी। उन्होंने किस प्रकारसे अपनी सैनिक टुकड़ियोंको चिङ् कान-शान पहाड़ियोंमें केन्द्रित श्री माओ-त्से-तुंगकी छापामार टुकड़ियोंसे मिलाया और फिर इन दोनोंने मिलकर कैसे जनवादी मुक्तिसेनाका संघटन तथा एकके बाद एक होनेवाले च्याङ्-के विध्वंसक अभियानोंका सामना किया, यह सुप्रसिद्ध है। वे लाल सेनाके अप्रतिम नायक, इसका पुनः संघटन करनेवाली बड़ी प्रतिभा और उसकी शक्ति तथा शौर्यके प्रतीक हैं।

देखनेमें श्री चू तेह ठिंगने कद और गठीले बदनके हैं। जिन लाखों चीनी किसानोंको उन्होंने सैनिक वर्दी पहना दी है, कोई भी ऐसी चीज नहीं है जिससे वे उनसे भिन्न मालूम पड़ें। वे स्वभावसे ही नम्र और प्रश्रयशील हैं। मुझे याद है कि एक बार मेरे घरपर आयोजित एक उद्यानगोष्ठीमें शामिल होनेके बाद वे हमसे हाथ मिलाकर चुपकेसे अकेले ही बाहर चले गये और एक शिविराकार भवनमें अपने कुछ मित्रोंके साथ बियर पीते हुए मौजसे गप-शप करते रहे। उन्हें इस बातकी कोई चिन्ता नहीं थी कि लोग उनके प्रति किसी विशेष प्रकारका सम्मान प्रदर्शित करें या कोई विशेष ध्यान दें। जब मैं उनसे मिलने गया तो जिस चीजने सबसे पहले मेरा ध्यान आकर्षित किया वह उनकी हद दरजेकी सरलता और उनका बातचीतका बिलकुल स्वाभाविक ढंग था। चू तेह निस्सन्देह एक शक्तिशाली सेनाके संयुक्त-निर्माता और एक महान् क्रान्तिकारी नेता हैं, किन्तु एक कम्युनिस्ट विचारकके रूपमें मैं उनकी

कल्पना नहीं कर सकता। उनकी वर्तमान पत्नी, जिनसे मेरी मुलाकात सैनिक दिवसपर आयोजित एक भोजके अवसरपर हुई थी, एक नवयुवती महिला हैं। उनकी अवस्था ३५ से अधिक न होगी। उनका जीवन बड़ा ही साहसिक और रोमांससे परिपूर्ण रहा है। उन्होंने गृहदासीके रूपमें अपना जीवन शुरू किया था। सहसा एक दिन दासताकी दुःखी-दीन अवस्थासे भागकर वे जनवादी मुक्तिसेनामें जा मिलीं। अपने इस नये सैनिक जीवनमें उन्होंने गोलियोंसे तेजीके साथ निशाने लगानेकी ऐसी दक्षता प्राप्त करली कि इस रूपमें उनका नाम चीनकी लोक-कथाओं तकमें आ गया। उनका व्यक्तित्व विशिष्ट क्रान्तिकारी महिलाका व्यक्तित्व है। वे नारी-सुलभ सुकुमारताका झूठा प्रदर्शन नहीं करतीं।

श्री लिड शाओ-ची उस समय कम्युनिस्टपार्टीमें श्री माओ त्से-तुंगके बाद सबसे बड़े सिद्धान्त समीक्षक और विचारक माने जाते थे। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने ही भूमिसुधार और समाजीकरणके उस सामान्य कार्यक्रमकी योजना तैयारकी थी जिससे चीनका आर्थिक विकास चरितार्थ हो रहा है। सरकारके व्यावहारिक कार्य-संचालनकी अपेक्षा उनकी रुचि आन्दोलनके सैद्धान्तिक पक्षमें ही अधिक रही है। वे मुख्यतः भूमिसुधारपर ही बातचीत करते थे। मैंने उनमें आत्मगोपन और सैद्धान्तिक कट्टरताकी प्रवृत्ति विशेष रूपसे पायी। उस समय लोगोंकी यह आम धारणा थी कि वे श्री माओ त्से-तुंगके मनोनीत उत्तराधिकारी हैं। मेरे लिए उनके सम्बन्धमें कोई निश्चित राय कायम करना कठिन था, क्योंकि यद्यपि पीकिंगमें रहते हुए मुझे उनसे मिलनेका कई बार अवसर मिला फिर भी मैं कभी उनके दिल और दिमागके साथ सम्पर्क स्थापित न कर सका।

श्री ली ची-शेन तथा श्री चाङ् लानके बारेमें बहुत कम कहा जा सकता है। श्री ली कोमिंतांग क्रान्तिकारियोंके नेता हैं। किसी समय वे च्याङ्के सैनिक कार्यालयके प्रधान थे। युद्धके बाद वे उनसे अलग हो गये। च्याङ्से उनके अलग होनेके कारण साम्यवादियोंको सहायता अवश्य

मिली, किन्तु आज चीनके एक उपाध्यक्ष होनेके अतिरिक्त उनका कोई खास महत्त्व नजर नहीं आता। उनकी पत्नीका व्यक्तित्व बड़ा ही लुभावना है। उनपर कम्युनिस्टोंके रहन-सहन और चाल-ढालका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। वे अब भी शानदार रेशमी कपड़ों और बहुमूल्य आभूषणोंसे सज्जित रहा करती हैं। मेरी पत्नीकी उनसे अच्छी खासी दोस्ती हो गयी, क्योंकि वे भी पुराने खयालकी महिला हैं। इसलिए दोनोंको बातचीतके लिए समान रुचिका विषय मिल जाता था। लोकतान्त्रिक दलके नेता श्री चाङ्‌ लानके व्यक्तित्वका महत्त्व भी वर्तमानकी एक जीवन्त शक्तिहोने-की अपेक्षा ऐतिहासिक दृष्टिसे ही अधिक रह गया है। कोमिंतांगके समयमें चीनके बुद्धिजीवियोंपर लोकतान्त्रिक दलका अच्छा प्रभाव था। दल च्याङ्का कट्टरशत्रु था और उनकी प्रतिष्ठा गिरानेमें कुछ भी उठा न रखता था। वस्तुतः च्याङ्के नेतृत्वसे बुद्धिजीवी वर्गको विरत करना ही लोकतान्त्रिक दलका मुख्य कार्य था। श्री चाङ्‌ लान इस समय चीनके समादरणीय वृद्ध पुरुष हैं। उनकी अवस्था ७५ से ऊपर हो चली है। लम्बा कद, सुगठित शरीर, सुन्दर दाढ़ी और निरन्तर लहराते हुए ढीले-ढाले रेशमी वस्त्रोंसे विभूषित उनका व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली लगता है। वे बड़े ही प्रज्ञावान, विचक्षण और मेधावी पुरुष हैं। राज-नीतिमें आनेके पहले वे अध्यापक रह चुके हैं।

जिन उपप्रधान मन्त्रियोंसे मैं मिला था उनमेंसे तीन व्यक्ति विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं—श्री कुओमोजो, श्री हुवाङ्‌ बेन-पाई तथा श्री शेन यिङ्‌-पिङ्‌। श्री पिङ साहित्यिक क्षेत्रमें मो-तानके नामसे प्रसिद्ध हैं। श्री कुओमोजो एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें चीनका अनासक्त 'लोकतान्त्रिक व्यक्ति' कहा जाता है। वे निश्चय ही कम्युनिस्ट नहीं हैं किन्तु उनका लोकतन्त्र इस प्रकारका है जिसके सारे गुण साम्यवादमें ही मिल सकते हैं। एक प्रमुख पुरातत्त्ववेत्ता, इतिहासकार, कवि और लेखकके रूपमें उन्होंने आधुनिक चीनकी साहित्यिक पुनर्जागृतिमें बड़ा योगदान किया है। उनकी बौद्धिक उपलब्धियाँ बड़े महत्त्वकी हैं। पुरातत्त्वके क्षेत्रमें उनका प्रमुख अवदान

शाङ् कालके अस्थि लेखोंकी[1] व्याख्या था जिससे चीनका प्रामाणिक इतिहास एक हजार वर्ष पीछे चला गया। वे पुनः संघटित चीनी सांस्कृतिक अकादमीके अध्यक्ष हैं। वे नवचीनके सर्व-प्रमुख बुद्धिजीवी हैं। श्री कुओ-मोजो सभी सांस्कृतिक समारोहोंके लिए श्री माओ त्से-तुंगके राजदूत और शान्तिपरिषदमें चीनके प्रधान प्रतिनिधि हैं। सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विषयों पर वे जो विचार व्यक्त करते थे उनमें मुझे कोई साम्यवादी दुराग्रह नहीं दिखाई पड़ा। वे ताङ् युगकी महान् साहित्यिक कृतियोंकी सराहना करते थे। एकबार मुझसे बातचीतके सिलसिलेमें उन्होंने प्राचीन भारतीय रंगमंचके साथ चीनी नाटकके सम्बन्धपर गहरी अन्तर्दृष्टिसे विचार-विमर्श किया। वे सरकारके बहुत बड़े समर्थक हैं। उपप्रधान मन्त्रीके रूपमें चीनका सांस्कृतिक विभाग उनके हाथमें था। विदेशी सांस्कृतिक प्रतिनिधि-मण्डलोंके चीन आनेपर सामान्यतः वे ही सरकारके प्रमुख प्रवक्ता होते थे।

लघु उद्योग विभागके अध्यक्ष दूसरे उपप्रधानमन्त्री श्री हुआङ् वेन-पाईका व्यक्तित्व दूसरे ढंगका है। वे एक ऐसे छोटेसे दलके प्रधान हैं जिसका गृहयुद्धमें कम्युनिस्टोंके साथ बड़ा निकट सम्बन्ध रहा है। कुछ महीने बाद येनान जानेपर मुझे उनके द्वारा लिखा गया एक पत्र दिखाया गया, जो वहाँ सुरक्षित रखा गया है। इस पत्रका आशय इस प्रकार है—'यह सम्भव है कि मैं चीनकी मुक्ति देखनेके लिए जीवित न रह सकूँ किन्तु जब वह दिन आये, तो इसे याद रखा जाय कि मैं हुआङ् वेन-पाई, तीन बार येनान आया था।' श्री हुआङ् अनेक दृष्टियोंसे सुसंस्कृत पुराने ढंगके देशभक्त चीनी अधिकारी हैं। उन्हें चीन और उसकी प्राचीन सभ्यताका बड़ा अभिमान है। वे निष्ठावान् बौद्ध और शाकाहारी हैं। वे अपने इन विचारोंके प्रतिपादनमें पुराने साहित्यसे उद्धरण देनेके लिए बराबर प्रस्तुत रहते हैं। इस मामलेमें उनकी स्मृति-

१. शाङ् काल (२००० ई० पू०) में अस्थियोंपर लिखे गये आभिचारिक लेख।

शक्ति असाधारण है। एक दिन मुझे 'द वेस्टर्न चैम्बर' के नामसे अंग्रेजीमें अनूदित एक प्रसिद्ध चीनी नाटकका एक अंश अस्पष्ट मालूम पड़ा। मैं इसे समझनेके लिए जब उनके पास पहुँचा तो इस अस्पष्ट अंशका संकेत करते ही उन्होंने सारेके सारे गद्यांशका उद्धरण दे दिया और बहुत देरतक उक्त कृतिकी महत्ताकी विवेचना करते रहे। मैंने उनसे नम्रतापूर्वक पूछा कि ऐसे प्रतिक्रियावादी और सामन्तवादी साहित्यके सम्बन्धमें उनका क्या दृष्टिकोण है। उत्तरमें उन्होंने कहा—'जो विपुल साहित्य हमें विरासतके रूपमें प्राप्त हुआ है यह साहित्य उसका एक अंग है। हम एक नये समाज का निर्माण कर रहे हैं किन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि हम अपनी प्राचीन सभ्यताकी उपलब्धियोंकी उपेक्षा करते हैं या उन्हें ग्रहण नहीं करते।' ठिगना कद, चौड़े कन्धे और आँखोंमें एक अनोखी चमक—ऐसा व्यक्तित्व था उपप्रधानमन्त्री श्री हुआंगका। मुझे उनका स्थान नवचीनके सर्वाधिक सहानुभूतिपूर्ण व्यक्तियोंमें प्रतीत होता था।

श्री शेन यिङ्-पिङ्, जो अपने उपनाम मो-तानसे ही अधिक प्रसिद्ध हैं, चीनके सांस्कृतिक विभागके मन्त्री हैं। वे उच्चकोटिके उपन्यासकार हैं। उनकी रचना तीन भागोंमें प्रकाशित हो चुकी है। इसमें उन्होंने चीनके मध्यवर्गीय आन्दोलनके आरम्भ, विघटन और अवसानका बड़ा ही व्यापक चित्र अंकित किया है। उनके व्यक्तित्वमें सुकुमार कल्पना और सौन्दर्यभावनाकी कुछ ऐसी प्रतिष्ठा हुई है कि वह दूसरोंसे बिलकुल निराला लगता है। वे हमेशा सुन्दर और सुरुचिपूर्ण वेशभूषामें ही दिखाई देते हैं—यहाँतक कि नवचीनकी खाकी राष्ट्रीय पोशाकमें भी उनकी यह रुचि परिलक्षित होती रहती है। वे बड़े ही योग्य और समझ-बूझके आदमी हैं। उन्हें देखकर ऐसा अनुभव होता था कि मानसिक दृष्टिसे वे अपने बाह्य परिवेशके साथ अच्छी तरहसे सामंजस्य स्थापित नहीं कर सके हैं। जिन अन्य रोचक व्यक्तियोंका उल्लेख किया जा सकता है उनमें न्यायमन्त्रिणी मैडम शिह् लिआङ्, जन-स्वास्थ्यमन्त्रिणी मैडम ली तेह-चुआन तथा प्रधान विचारपति श्री शेन चुन-जू प्रमुख हैं। अपना वर्तमान

पद सम्हालनेके पूर्व मैडम शिह् लिआङ् चीनकी एक प्रमुख महिला वकील थीं। यद्यपि राजनीतिमें वे आमूलपरिवर्तन-वादिनी और सरकारकी एक सदस्या हैं फिर भी स्पष्टतः वे लिपस्टिक, प्रसाधन और साज-सज्जा सम्बन्धी कम्युनिस्ट आदेशका पालन करती हुई नजर नहीं आतीं। जब भी मुझे उनसे मिलनेका अवसर मिला मैंने उन्हें बड़ी सुरुचिपूर्ण वेशभूषामें पाया। च्याङ् काई-शेकने एक बार जिन सात 'पुरुष वकीलों' को गिरफ्तार किया था उनमें कोमितांग सरकारका स्पष्ट शब्दोंमें विरोध करनेके कारण वे भी शामिल थीं। उनके पति, जो अंग्रेजी बहुत अच्छी बोल लेते हैं, वैदेशिक कार्यालयमें किसी पदपर काम करते हैं। चीनमें उनकी कोई खास प्रतिष्ठा नहीं है।

मैडम लीका व्यक्तित्व दूसरे ढंगका है। वे 'ईसाई जेनरल' फेङ् यू-शाङ्की, जिनकी अमेरिकासे लौटते समय कृष्ण सागरमें जहाजपर ही दुःखद मृत्यु हो गयी थी, विधवा पत्नी हैं। वे सादगी, सरलता और कार्यकुशलताकी प्रतिमूर्ति हैं। उन्हें शान-शौकत और तड़क-भड़क पसन्द नहीं है। उनमें कार्य करनेकी बड़ी क्षमता और शक्ति है।

प्रसिद्ध विचारपति शेन चुन-जू देखनेमें कुछ अजीबसे लगते हैं। मुश्किलसे पाँच फुटका कद, लम्बा-सा सिर और ठुड्ढीके दोनों ओर फहरती हुई दाढ़ी—उनका यह कदाकार व्यक्तित्व देखनेवालेमें वितृष्णा उत्पन्न कर देता है किन्तु कुछ मिनटोंकी बातचीतसे ही यह पता चल जाता है कि इस विचित्र खोपड़ीमें अद्भुत दिमागी शक्ति और इन चमकती हुई आँखोंमें गहरे निरीक्षणकी क्षमता भरी हुई है।

ये ही वे कुछ लोग हैं जिनसे मैं नये चीनमें पहली बार मिला था। इनसे मिलकर मैंने यह अनुभव किया कि केन्द्रीय जनवादी सरकारका संचालन ऐसे स्त्री-पुरुष कर रहे हैं जो ईमानदार और कार्यकुशल हैं, जिन्हें अपने उत्तरदायित्व तथा अपने विचारोंका पूर्ण ज्ञान है और जो राजकी सेवामें अपनी सारी शक्ति लगानेको तैयार हैं। इन सबमें एक प्रकारकी गतिशीलता है, आगे बढ़नेका संकल्प है। सम्भवतः सभी नयी

सरकारोंकी यही विशेषता होती है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि नयी चीनकी सरकार युवकोंकी सरकार नहीं है। इसका संचालन करनेवाले ऐसे तपे-तपाये लोग हैं, जिनके पास वर्षोंका दीर्घ अनुभव है, जो जीवनकी अनेक परीक्षाओंमें उत्तीर्ण हो चुके हैं। इनमेंसे किसी भी प्रमुख व्यक्तिकी अवस्था पचाससे कम नहीं है।

सातवाँ परिच्छेद

सरकारी स्वागत

मेरे परिचयपत्र समर्पित करनेके एक सप्ताह बाद मुझे श्रीमाओ त्से-तुंग-का एक निमन्त्रण मेरे सम्मानमें आयोजित एक दावतमें शामिल होनेके लिए मिला। निमन्त्रण पाकर मुझे इस बातका आश्चर्य हुआ कि उसमें मेरी पत्नीका नाम नहीं था। ऐसा लगता है कि नये चीनमें सरकारी आयोजनोंमें सामान्यतः पत्नियाँ, यदि वे स्वयं किसी सरकारी पदपर कार्य न करती हों, शामिल नहीं होतीं। दावत ६ बजे होनेवाली थी। दावतों तथा अन्य मामलोंमें नये चीनने पश्चिमी प्रथाओंका अनुकरण करना छोड़ दिया था। यह एक सरकारी दावत थी फिर भी इसमें शामिल होनेके लिए कोई विशेष परिधान निर्धारित नहीं किया गया था। झीलके किनारे जिस प्रासादमें मैंने अपना परिचयपत्र समर्पित किया था कूटनीतिक शिष्टाचार विभागके अधिकारी मुझे दावतके लिए वहीं ले गये। झीलको खालीकर दिया गया था। वह सूखी पड़ी थी। झील-की मिट्टीको जनवादी मुक्तिसेनाकी टुकड़ियाँ लारियोंपर लादकर, उसका खादके रूपमें उपयोग करनेके लिए नगरके बाहर पड़नेवाले खेतोंमें ले जारही थीं। मेरे साथीने मुझे बताया कि वे लोग नहरें खोलकर और झीलके पानीको ताजा और स्वच्छ रखकर झीलकी शोभा बढ़ानेका प्रयत्न कर रहे हैं। हमारी दाहिनी ओर 'समुद्री बारादरी'के नामसे प्रसिद्ध वह कृत्रिम द्वीप है जहाँ सुधारक सम्राट् कांग सूको धीरे-धीरे मर जानेके लिए कैद कर दिया गया था। इस द्वीपपर बनी इमारतकी पीली खपरैलें डूबते हुए सूरजकी किरणोंमें तप्त स्वर्णकी तरह चमक रही थीं किन्तु उसे अपार्थिव सौन्दर्य प्रदान करनेवाली उसकी जलपर पड़नेवाली वह छाया आज-

मौजूद नहीं थी क्योंकि झील सूख चुकी थी।

मेरे पहुँचनेपर समारोह निर्देशकने मेरा स्वागत किया और मुझे एक आस्थानकक्षमें ले गया। वहाँ सभी उपाध्यक्ष, प्रधानमन्त्री श्री जेनरल चू तेह तथा उच्च उपपरराष्ट्रमन्त्री श्री चाङ्‌ह्वान-फू मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। स्वयं श्री माओ त्से-तुंग, जिन्होंने मुझे निमन्त्रित किया था, अनुपस्थित थे। मुझे बताया गया कि उनकी तबियत ठीक नहीं है इसलिए वे किसी दावत और सायंकालीन आयोजनोंमें शामिल नहीं हो रहे हैं। श्री चू तेहने ही आतिथेयके रूपमें मेरा स्वागत किया।

कुछ समयतक हमलोग साधारण विषयोंपर बातचीत करते रहे। मुझसे भारतकी औद्योगिक स्थिति एवं सामाजिक परिवर्तनोंके सम्बन्धमें न जाने कितने प्रश्न पूछे गये। अधिकांश प्रश्न श्री चाओ एन-लाई तथा श्री ली शाओ-चिहने पूछे। श्री चू तेह भी बीचबीचमें एकाध शब्द बोल दिया करते थे। दावत स्वयं एक बड़ा मनोरंजक आयोजन था। भोजन तो चीनी ही परसा गया था किन्तु भोजन परसने और सजानेका ढंग रूसी था। टेबुलपर तरह-तरहके सुस्वादु व्यंजन लदे हुए थे। हमलोगोंने भारत और चीनकी मैत्री, अपने कूटनीतिक कार्यकी सफलता आदिके उपलक्ष्यमें चीनी चावलसे बनी मदिराके प्रीति-पेय ग्रहण करते हुए वार्ता शुरू की। सारी हार्दिकता और सुहावनी वार्ताके बावजूद कृत्रिम संयमका वातावरण बना रहा। मैं ऐसा अनुभव कर रहा था कि मेरे आतिथेयोंके मनमें इस बातका बराबर अनिश्चय बना रहा कि मेरे प्रति हार्दिकता प्रदर्शनमें उन्हें कहाँतक आगे बढ़ना चाहिये।

कुछ दिनों बाद वैदेशिक कार्यालयमें पीकिंगस्थित सभी कूटनीतिज्ञोंके औपचारिक स्वागतका आयोजन हुआ। आजतक मैं जितने आयोजनोंमें शामिल हुआ हूँ उनमेंसे यह सबसे अधिक विलक्षण आयोजन था। पहली विलक्षण बात मैंने यह देखी कि डेनिश मन्त्रीको छोड़कर जो पूरी टीपटापमें थे, सबकी पोशाकें बिलकुल अनौपचारिक थीं। चीनी अतिथि, जिनमें अधिकांशतः वैदेशिक कार्यालयके अधिकारी और चीनसे बाहर

वैदेशिक सेवामें भेजे जानेवाले लोग थे, स्त्री और पुरुषों दोनोंके लिए निर्धारित सरकारी राष्ट्रीय पोशाक ढीलीढाली बन्द गलेकी कोट और पाजामा पहने थे। इस पोशाकमें भी कुछ उच्चतर अधिकारी अपने व्यक्तित्वकी विशिष्टताके कारण पहचाने जा सकते थे किन्तु कुल मिलाकर सारा वातावरण भोंड़ेपनका ही था। इस पहली दावतमें ही मुझे पता चल गया कि इस प्रकारके आयोजनोंमें कम्युनिस्टोंकी कोई दिलचस्पी नहीं है और वे एक अप्रिय कर्तव्यके रूपमें ही इसका निर्वाह कर रहे हैं। इसमें न तो कोई बातचीत ही हुई, न किसी प्रकारकी मैत्रीका ही वातावरण रहा। दावत समाप्त हो जानेके बाद हमें एक हालमें ले जाया गया। यहाँ हमें दो प्रचारवादी फिल्में दिखायी गयीं।

इस सरकारी स्वागतके बाद हमलोगोंके लिए एक विशेष मैत्रीपूर्ण दावतका निमन्त्रण आया। इससे मुझे कुछ आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता हुई। केवल एक सप्ताह बाद ही श्री चाओ एन-लाई और उनकी पत्नीने हमें निमन्त्रित किया। जिस प्रकारके वैयक्तिकताशून्य व्यवहारका मैं पहले दावतमें अनुभव कर चुका था उसीकी सम्भावनाके लिए मैंने अपनेको सख्त बना लिया था किन्तु इस बारकी स्थिति बिलकुल भिन्न थी। इस बारकी दावतमें चीनी अधिकारियोंकी पत्नियाँ भी बहुत ही उपयुक्त वेशभूषामें शामिल थीं। सबकी सब नये बने हुए लम्बे रेशमी गाउन पहने हुए थीं। मैडम चाओ तो, जिनसे हमारा बादमें परिचय हुआ और जिनके हम प्रशंसक बन गये, सहृदयता और शालीनताकी प्रतिमूर्ति थीं। दावतके पहलेकी वार्ता बड़ी ही आनन्ददायक और मैत्रीपूर्ण रही। वातावरणकी हार्दिकता और आत्मीयताकी भावनाको हमने बड़ा पसन्द किया।

दावत चीनी ढंगकी थी। मुझे इस बातसे प्रसन्नता हुई कि भोजन विभिन्न तश्तरियोंमें परसा गया है, टेबुलके बीचमें खाद्य-सामग्रियोंकी राशि नहीं लगादी गयी है जिसमेंसे भोजन करनेवाले अपने इच्छानुसार वस्तु उन्हीं चापस्टिकोंसे काटकर ले लेते हैं जिनसे वे खा चुके होते हैं।

छोटे-छोटे पैमानोंमें चेकियांगकी स्वादिष्ट मदिरा दी गयी थी। प्रीतिपेय ग्रहण करनेके साथ-साथ उपयुक्त भाषण भी होते जाते थे। भोजन समाप्त होनेके बाद हमलोग बारादरीमें बैठ गये और साधारण विषयोंपर बातचीत करने लगे। श्री चाओ एन-लाईने मुझे अपने उन दिनोंके संस्मरण सुनाये जब वे युद्धके समय श्री माओ त्से-तुङ्गके दूतके रूपमें चुंकिंगमें रह रहे थे। उन्होंने इसी प्रसंगमें यह भी बताया कि नेहरूजी उस समय चुंकिंग आये थे किन्तु वे उनसे न मिल सके। इसका उन्हें बड़ा दुःख था। एकाएक वार्तामें च्यांग काई-शेकका प्रसंग आ गया। मैंने उनसे कहा कि मेरे विचारसे च्यांग देशभक्त अवश्य थे किन्तु उनके विचार मध्यकालीन थे और सभी विषयोंपर वे इसी संकीर्ण दृष्टिकोणसे विचार करते थे। श्री चाओ उन्हें बुर्जुआ ढंगकी जागरूक देशभक्तिका श्रेय भी देनेको तैयार न थे। उन्होंने कहा कि च्यांगका दृष्टिकोण शाही था। चीनमें उनकी तभीतक आसक्ति थी जबतक वे और चीन एक दूसरेके पर्याय थे।

मैंने श्रीचाओसे सिआनकी उस प्रसिद्ध घटनाके सम्बन्धमें पूछा जब युवक मार्शलने च्यांग काई-शेकको गिरफ्तार कर लिया था। उस समय श्रीचाओ एन-लाईके हस्तक्षेपसे ही च्यांग कैदसे छूट सके थे। इतना सभी लोग जानते हैं। मैं इस घटनाका विवरण चाओसे सुनना चाहता था। उन्होंने इस सम्बन्धमें खुले तौरसे बातचीत की। उन्होंने कहा कि १९३६ की उन परिस्थितियोंमें उनकी पार्टीका यह विश्वास था कि राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे च्यांग काई-शेकका नेतृत्व आवश्यक है। च्यांगके अतिरिक्त उस समय कोई ऐसा दूसरा व्यक्ति न था जो जापानके विरुद्ध राष्ट्रीय संघटन कायम कर सकता। कोमितांगके दूसरे नेता, खासकर श्री हो यिन-चिङ् तथा उनके मित्र जापानसे समझौता करना चाहते थे। हमारा दृढ़ विश्वास था कि जापानका राष्ट्रीय स्तरपर संयुक्त रूपसे विरोध करना चीनकी मुक्तिकी दिशामें पहला कदम है। इस प्रकारके संयुक्त विरोधका संघटन उस समय केवल च्यांगके नेतृत्वमें ही किया जा सकता

था। उस समय उन्हें गोलीसे उड़ा देनेका प्रस्ताव, जिसकी युवक मार्शल धमकी दे रहे थे, बड़ा ही विनाशकारी होता। श्री चाओने सिआनकी घटनाके सम्बन्धमें जो कुछ कहा उसका मुख्य आशय यही था।

महत्त्वके जिस दूसरे विषयकी चर्चा मैंने श्री चाओसे छेड़ी थी उसका सम्बन्ध शंघाईमें १९२७ में हुए उस ऐतिहासिक विद्रोहसे था जिसमें श्री चाओने विद्रोहियोंका नेतृत्व उपसेनापतिके रूपमें किया था। मैंने उनसे पूछा कि जब क्रान्तिकारियोंने शंघाईपर कब्जा कर लिया था तो फिर उन्होंने अपना निर्दलन क्यों स्वीकार कर लिया। श्री चाओने उत्तर दिया कि "हमने जनताकी क्रान्ति-भावनाको अच्छी तरह समझा नहीं था। हमारा नेतृवर्ग अनुभवहीन था। हमें न तो अपनी सफलताका लाभ उठाना ही मालूम था और न हम पीछे हटनेकी कला ही जानते थे। शंघाईके मजदूर और आसपासके देहाती इलाकोंके किसान पूरी तरह तैयार थे किन्तु हम उनमें सहयोग स्थापित करनेकी कोई योजना ही तैयार न कर सके थे। इसीलिए च्यांग हमें कुचल डालनेमें सफल हो गये।"

यह दावत बड़ी ही सफल रही। इसमें हमलोगोंके बीच पहली बार सामाजिक सम्पर्क स्थापित हो सका।

आठवाँ परिच्छेद

पीकिंगका जीवन (१)

पीकिंगमें कूटनीतिक जीवन असाधारण प्रकारसे संघटित हुआ था। कूटनीतिक क्षेत्रमें रूसी गुटके कूटनीतिज्ञों और पश्चिमी राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंके दो बड़े वर्ग तो थे ही जो अब बिल्कुल सामान्य हो चले हैं। इनके अतिरिक्त कूटनीतिज्ञोंकी और तीन श्रेणियाँ थीं—एक उन गैरकम्युनिस्ट राष्ट्रोंकी जिन्होंने चीनकी नयी सरकारको मान्यता दे दी थी और उसके साथ कूटनीतिक सम्बन्ध भी पूर्णतः स्थापित कर लिया था; दूसरी उन राष्ट्रोंकी जिन्होंने मान्यता तो दे दी थी किन्तु अभी कूटनीतिक प्रतिनिधित्वके लिए वार्ता कर रहे थे और तीसरी उन राष्ट्रोंकी जिन्होंने मान्यता नहीं दी थी किन्तु जिनके वैदेशिक कार्यसंचालनके लिए कुछ अधिकारी पीकिंगमें रहते थे। पहली श्रेणीके अन्तर्गत भारत, बर्मा, पाकिस्तान, हिन्देशिया, डेनमार्क, स्वीडन, स्विट्जरलैण्ड और फिनलैण्ड आते हैं। ब्रिटेन, हालैण्ड और नारवे ऐसे राष्ट्र हैं जिन्होंने मान्यता तो दे दी थी किन्तु दौत्य सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए वार्ता कर रहे थे। बेल्जियन, फ्रेंच और इटालियन प्रतिनिधियोंको मान्यता नहीं प्राप्त थी और न उनकी कोई कूटनीतिक मर्यादा ही थी। इस श्रेणीविभाजनके अतिरिक्त एक दूसरी जटिलता भी थी। पीकिंगमें ऐसे अनेक प्रतिनिधिमण्डल थे जिन्हें गैरकम्युनिस्ट संसार मान्यता नहीं प्रदान करता था। पीकिंगमें उत्तरी कोरिया और बाहरी मंगोलियाके नियमित राजदूत रहा करते थे। इनके कर्मचारियोंकी संख्या असाधारण रूपसे बड़ी थी। वीएतमिन्ह और पूर्वी जर्मनीके स्थायी प्रतिनिधिमण्डल भी रहते थे जिनके प्रधानोंको राजदूतोंका पद प्राप्त था। ऐसी स्थितिमें कूटनीतिक प्रतिनिधियोंकी

बहुविध मर्यादाओं तथा प्रतिनिधिमण्डलोंकी मान्यता तथा अमान्यतासे उत्पन्न होनेवाली अव्यवस्थाकी सहज ही कल्पनाकी जा सकती है। ब्रिटेन जैसे राष्ट्रोंके वार्ता करनेवाले प्रतिनिधियोंको कूटनीतिक प्रतिनिधिमण्डलके सदस्यों जैसी मान्यता नहीं प्राप्त थी क्योंकि उनका सम्बन्ध सरकारसे न होकर केवल वैदेशिक कार्यालयसे था, जिसका उद्देश्य एक विशेष प्रकारकी वार्ता चलाना मात्र था। परराष्ट्रमन्त्री तथा उक्त वार्तासे सम्बद्ध अधिकारियोंको छोड़कर अन्य कोई भी चीनी अधिकारी उनसे ऐसा व्यवहार करता था जैसे वह उन्हें जानता ही न हो। इसलिए किसी एक ही दावत या आयोजनमें इन प्रतिनिधियोंकी उपस्थितिसे बड़ी उलझन पैदा हो जाती थी। जिन राष्ट्रोंने चीनको मान्यता नहीं प्रदानकी थी, उनके प्रतिनिधि तो इन आयोजनोंमें शामिल ही नहीं हो सकते थे। कोरियाई, मंगोलियन और विएतमिन्ह राजदूत सभी चीनी दावतोंमें उपस्थित रहा करते थे किन्तु हम उन्हें सार्वजनिक रूपसे मान्यता नहीं प्रदान करते थे और वे भी हमारी उपेक्षा करते थे। मैं धीरे-धीरे मंगोलियन तथा विएतमिन्ह प्रतिनिधियोंसे व्यक्तिगत आधारपर सम्बन्ध स्थापित करनेमें समर्थ हो सका। भारत जैसे राष्ट्रकी स्थिति तो विशेष रूपसे कठिन थी क्योंकि उसे हर किसीसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना था। इसलिए मुझे अपने जीवनको अनेक हिस्सोंमें बाँटकर रखनेकी व्यवस्था करनी पड़ी जिससे किसीको कोई उलझन न हो और शिकायत करनेका कोई आधार न मिले।

एशियाई राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंने अपना एक छोटा-सा घेरा बना रखा था इसलिए हमलोग सामाजिक क्षेत्रमें संतुलन कायम रख पाते थे। बर्मी राजदूत श्री मिण्ट थीनमें, जिन्हें लोग माण्टी कहा करते थे, एक प्रकारका विलक्षण व्यक्तिगत आकर्षण था। उनकी पत्नी बहुत पढ़ी-लिखी, योग्य तथा सभी क्षेत्रोंमें लोकप्रिय थीं। माण्टीमें चीजोंके उज्ज्वल पक्षको देखनेका विशेष गुण था। कूटनीतिज्ञके रूपमें वे बड़े विलक्षण तथा दूरदर्शी थे। हिन्देशियाका प्रतिनिधित्व उसके प्रभारी राजदूत श्री इजाक मेहदी करते थे।

वे स्वातन्त्र्य संग्रामके छापामार रह चुके थे। राजनीतिक विचारोंमें वे आमूल परिवर्तनवादी थे। वे यूरोपकी प्रायः सभी भाषाएँ बोल लेते थे। हम लोग एक साथ काम करते थे। मैंने अनुभव किया कि श्री मेहदी दुनियाकी गतिविधिसे अवगत थे। जिन यूरोपीय राष्ट्रोंका चीनसे पूरा दौत्य सम्बन्ध स्थापित हो चुका था उनके प्रतिनिधि शुरूसे ही कूट-नीतिज्ञोंका जीवन बिता चुके थे। उनमें सबसे प्रभावशाली स्विस मन्त्री श्रीक्लीमेण्ट रेजोनिको थे। वे अपने देशकी तटस्थताकी नीतिको बड़ी ही सावधानी और सचाईसे कार्यान्वित करते थे। वे अन्य कूटनीतिज्ञोंकी सुख-सुविधाका विशेष ध्यान रखते थे। उन्हें इस बातकी चिन्ता रहती थी कि चीनमें जिन प्रतिनिधिमण्डलों और विदेशियोंको कूटनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं है उनके प्रति उचित व्यवहार हो या कमसे कम उन्हें चीनसे बाहर चले जानेकी सुविधाएँ प्राप्त हों।

पीकिंगमें रूसी गुटके राष्ट्रोंके प्रतिनिधि सर्वाधिक प्रमुख थे। रूसी राजदूत श्री एन० वी० रोशिन नानकिंगमें मेरे साथ काम कर चुके थे। वे सैनिक जेनरल और चुंकिंगमें सैनिक परामर्शदाता रह चुके थे। इसीलिए चीनी राजनीतिका ज्ञान उन्हें निकटसे प्राप्त था। उनसे सभी लोगोंको बड़ी सहायता मिलती थी। वे अपनी मर्यादाकी सीमाओंके अन्दर सार्वजनिक विषयोंपर मुक्त ढंगसे विचार-विनिमय करते थे और कूटनीतिकमण्डलोंमें एक वयोवृद्ध नेताके रूपमें समादृत होनेके कारण हमेशा दूसरे कूटनीतिज्ञोंको परामर्श देनेके लिए तैयार रहते थे। पीकिंगनिवासके दो वर्षोंमें मैंने उन्हें हमेशा एक सहानुभूतिपूर्ण सहायकके रूपमें पाया। पोलिश राजदूत श्रीबर्गिन भी बहुत ही प्रसन्न स्वभावके और मैत्रीपूर्ण भावना रखनेवाले कूटनीतिज्ञ थे। वे युद्धके समय बराबर अन्तर्हित रूपसे संघर्ष करते रहे। वे प्रायः मुझे जर्मन अधिकृत वारसाके अपने अनुभवोंको कहानियाँ कहकर आनन्दित करते रहते थे। 'नवलोकतान्त्रिक' राष्ट्रोंके राजदूतोंमें चेक कूटनीतिक मण्डलके प्रधान श्रीवेसीकोफका व्यक्तित्व सबसे अधिक रोचक था। वे एक अच्छे

उपन्यासकार और लेखक थे। वे कई वर्ष अमेरिकामें रह चुके थे। मैं यह नहीं कह सकता कि वे कम्युनिस्ट थे या नहीं, पर उनकी पत्नी किसी भी हालतमें कम्युनिस्ट नहीं मालूम पड़ती थीं। वे बालकोंके लिए कहानियाँ लिखती थीं। वे वियनाकी एक आकर्षक महिला थीं। उनके व्यवहारसे जीवनके प्रति उनके दृष्टिकोणको आसानीसे समझा जा सकता था। श्रीवेसीकोफमें चेक बुद्धिजीवियोंके समान ही यूरोपीय भावनाकी प्रधानता थी और वे सभी बातोंपर कभी-कभी इसी भावनासे विचार करते थे। रूसीगुटके अन्य राजदूतोंकी भांति उनका यह विचार नहीं था कि गैरकम्युनिस्ट देशोंकी सारी चीजें गलत हैं। उनसे सामान्य ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रश्नोंपर विचार-विमर्श करनेमें आनन्द आता था।

मेरे पीकिंग पहुँचनेपर ब्रिटेनकी ओरसे वार्ता करने वाले प्रतिनिधि श्री जॉन (जो बादमें सर जॉन हो गये) हचिसन थे। नानकिंगमें श्री हचिसन सर राल्फ स्टीवेन्सनके अधीन वाणिज्यमंत्री थे। वे बड़े ही योग्य व्यक्ति थे, किन्तु राजनीतिज्ञ होनेका दावा नहीं करते थे। बादमें उनके स्थानपर सर लिओ लैम्ब आये। वे बिलकुल भिन्न प्रकारके कूटनीतिज्ञ थे। लिओ लैम्ब सही अर्थोंमें चीनके एक पुराने मँजेमँजाये आदमी थे। उन्होंने चीनके किसी दूरस्थ नगरमें एक उपवाणिज्य दूतके रूपमें कार्य शुरू किया था। तबसे वे बराबर चीनमें ही काम करते रहे। उन्होंने 'अपवारित नगर' में सम्राट् पू यीका विवाह और मांचूके रईसों और दरबारियोंको देवपुत्रके सामने (जो उस समय महलमें ही अपने शासनका कार्य कर रहे थे) झुक-झुककर सलाम करते हुए देखा था। वे अपने समयके अधिकांश युद्धनेताओंको जानते थे और कोमिंतांगका उत्थान और पतन दोनों देख चुके थे। यहाँतक कि वे जापानियों द्वारा गिरफ्तार भी हो चुके थे। वे चीनी भाषा बहुत अच्छी तरह बोल लेते थे। चीनकी संस्कृतिमें उनकी गहरी दिलचस्पी थी, किन्तु उनकी सहानुभूति चीनके पुराने रईसों और आरामसे जीवन बितानेवाले उनके उस वर्गके साथ थी जिसने चीनके सामाजिक जीवनको एक बहुत बड़ा वैशिष्ट्य प्रदान

कर रखा था। वे पक्के रूढ़िवादी और अपरिवर्तनवादी थे। चीनमें होनेवाले नये परिवर्तनोंके प्रति उनको कोई खास सहानुभूति न थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें पुराने चीनी साम्राज्यके लुप्त हो जानेका खेद है। वे किसी भी रूपमें चीनी राष्ट्रीयताके विरोधी न थे, किन्तु ऐसा लगता था कि उनके लिए अपनेको चीनकी बदली हुई परिस्थितियोंके अनुरूप बना लेना कठिन हो रहा है। उनके तथा उनकी पत्नीके साथ हमारे बड़े अच्छे सम्बन्ध थे। मैंने उनके अद्वितीय ज्ञान और अनुभव-काबड़ा लाभ उठाया। पीकिंगमें हमेशासे तरंगी लोग अपेक्षासे अधिक रहे हैं। पहले वैदेशिक दूतावासोंके विशेषाधिकारके समय ऐसे लोगोंकी संख्या और विचित्रता पीकिंगका एक प्रकारका आकर्षण रहा है। जापानी अधिकारके समय इनमेंसे बहुतसे लोग अपने-अपने देशोंको वापस चले गये। कम्युनिस्टोंके सत्ता ग्रहण करनेके बाद इनके लिए वातावरण कुछ प्रतिकूल हो गया फिर भी कुछ लोग राजनीतिक परि-वर्तनोंसे जरा भी विचलित हुए बिना अपनी पुरानी मौजी जिन्दगी बसर करते जा रहे थे। मैंने पीकिंगमें या अन्यत्र जिन ऐसे मौजी लोगोंको देखा है उनमें सबसे अधिक रोचक व्यक्तित्व कवि, संगीतज्ञ, पुस्तिका लेखक तथा बहुत बड़े मुद्रक श्री विनसेंज हण्डहासेनका था। उन्होंने एक तरहसे दुनियाको छोड़ दिया था वे नगरके परकोटेके बाहर अपने लिए एक कृत्रिम द्वीप-सा बनाकर उसीमें रहते थे। वे प्रूशियाके बैरन थे। प्रथम महायुद्धके पूर्व वे बर्लिनमें वकालत करते थे। इसी पेशेके सिलसिलेमें किसी एक बड़े जर्मन फर्मका कोई कानूनी मामला सुलझानेके लिए चीन आये। उन्होंने अपने मुवक्किलोंके लिए क्या किया यह तो मैं नहीं जानता, किन्तु यह स्पष्ट है कि उनपर पीकिंगका जादू चल गया और उन्होंने यूरोप न लौटनेके अपने इरादेकी घोषणा कर दी। उन्होंने अपने लिए एक दलदल भूमि खरीद ली और उसके बीचमें एक कृत्रिम द्वीपपर मकान बनाकर रहने लगे। उन्होंने इस भूमिके चारों ओर सघन पॉपलर वृक्ष लगा रखे थे जिससे उनका स्थान बाहरसे

बिलकुल दिखाई न देता था। इसी स्थानपर वे अपने असामियों, नौकरों-चाकरों और आश्रितजनोंसे घिरे हुए एक सामन्ती बैरनके रूपमें हमेशाके लिए बस गये। इस स्थानकी विशेषता यह थी कि जमीनपर से तो बाहरी संसार बिलकुल दिखाई न पड़ता था, किन्तु बीचमें बने छोटे-से मकानके छज्जेपरसे जाड़ोंमें बर्फसे चमकती हुई या बसन्तमें गिरगिटकी तरह रंग बदलती हुई पश्चिमी पहाड़ियाँ दिखाई देती थीं।

इसी द्वीपपर उन्होंने चीनके सर्वोत्तम मुद्रणयन्त्रालयकी स्थापनाकी जिसकी मेट्रिसें खास तौरसे जर्मनीसे बन कर आयी थीं। उन्होंने अपना जीवन चीनी साहित्यके प्रचारमें लगा दिया। 'द वेस्टर्न चैम्बर' और चीनकी अन्य महान् साहित्यिक कृतियोंका उन्होंने जर्मन भाषामें पद्यबद्ध अनुवाद किया है। ऐसा कहा जाता है कि उनका अनुवाद बहुत उच्च कोटिका हुआ है। उन्होंने इन कृतियोंको चीनी ढंगकी जिल्दोंमें सुन्दर ग्लेज कागजपर छापा है। उनके सामने जब कभी भी ईसाई प्रचार दल (मिशनरी) के कार्योंके सम्बन्धमें कोई भी चर्चा होती थी तो वे बिलकुल पागल-से हो जाते थे। मिशनरियोंका नाम सुनते ही वे क्रोधसे उठकर खड़े हो जाते थे और कड़े शब्दोंमें उनकी निन्दा करते हुए बतलाने लगते थे कि इन मिशनरियोंने दुनियापर कैसी-कैसी मुसीबतें ढायी हैं।

कोमिंतांगने अपने आखिरी दिनोंमें उनके इस स्वप्नद्वीपको बरबाद कर दिया। १९४८ में पीकिंगके घेरेके समय कोमिंतांग जेनरलने द्वीपके चारो ओर लगे शानदार वृक्षोंको काट गिराया और उनका द्वीप वीरान हो गया। उसके दोनों ओर कोमिंतांग सैनिकोंने डेरा डाल दिया। उस समय श्री हण्डहासेनकी अवस्था ७३ वर्षकी थी। उन्हें जबरदस्ती नगर ले जाया गया जिससे वे उस द्वीपमें पड़े-पड़े भूखों न मर जाये। पीकिंगपर कम्युनिस्टोंका अधिकार हो जाने पर उन्हें द्वीप लौट जानेकी अनुमति मिल गयी, किन्तु तब तक उनका सब कुछ नष्ट हो चुका था। कोमिंतांग सैनिकोंने उनका प्रेस लूट लिया था और उसका नाम-निशान तक शेष न था। इसके अलावा उनपर

एक नये प्रकारकी विपत्ति भी आ गयी थी। कम्युनिस्टोंके अधिकारके बाद उनके द्वीपके असामी अपनी जमीनके मालिक बन बैठे, इसलिए उस बेचारे वृद्धपुरुषके पास एक टूटे-फूटे घरके अलावा और कुछ न रह गया।

उसी वीरान द्वीपमें उन्होंने एकाकी जीवन शुरू कर दिया किन्तु इससे उनका दिल टूटा नहीं। उनमें अभी भी अथक उल्लास और शक्ति भरी हुई थी। उनका व्यक्तित्त्व बड़ा ही प्रभावशाली था। ६ फुट लम्बा कद, पचहत्तर वर्षकी अवस्था होते हुए भी प्रुशियन सैनिक जैसी चाल-ढाल, शरीरकी बिल्कुल सीधी मुद्रा, सिंह जैसा सिर और चेहरेपर दुष्प्रधर्ष निर्भीकताका भाव—अपने ऐसे निराले व्यक्तित्त्वसे श्री हण्डहासेन दुनियाको और उसके झूठे विभवको ललकारतेसे नजर आते थे। उन्होंने केवल अपना भोजन बनानेके लिए रोज कुछ समय तक ही काम करनेवाला एक रसोइया रख छोड़ा था। उन्होंने अपनी आवश्यकताएँ न्यूनातिन्यून कर ली थीं और अपनी इस स्थितिसे वे पूर्णतः सन्तुष्ट थे। एक दिन तीसरे पहर जब मैं उनसे मिलने गया तो उन्होंने कहा कि गत दो महीनेसे उनसे कोई मिलने नहीं आया। उनका मकान, जो बिलकुल टूटी-फूटी हालतमें हो गया था और जिसमें बराबर यह भय लगा रहता था कि कहीं सीढ़ी ढह न पड़े या छत टूट कर न गिर पड़े, पुस्तकोंसे भरा हुआ था जिनपर युगोंकी गर्द जमा हो गयी थी। जर्मन, रूसी, फ्रेंच, अंग्रेजी और चीनी भाषाकी हजारों पुस्तकें भरी पड़ी थीं। मैंने वहाँ वोलतेयरकी रचनाओंके प्रथम संस्करणकी पूरी सेट और जर्मनीका समूचा प्राचीन श्रेष्ठ साहित्य रखा देखा। इनमेंसे कुछकी जिल्दबंदी सर्वोत्तम ढंगकी हुई थी। उनके इस विशाल संग्रहमें यूरोपीय राष्ट्रों तथा चीनी भाषाके काव्य, नाटक और दर्शनको पूर्ण प्रतिनिधित्व प्राप्त था। वस्तुतः पुस्तकोंकी भीड़के मारे उस घरमें चलना-फिरना तक मुश्किल था।

उनसे बातें करना मुझे बराबर प्रेरणाप्रद और शक्तिदायक मालूम होता

था क्योंकि अपने चारों ओर फैली हुई तमाम गन्दगी और अस्वास्थ्यकर परिस्थितियोंके बावजूद मुझे श्री हण्डहासेनमें एक ऐसे योगीकी छाया-सी मिलती थी जो यद्यपि अभी भी दुराग्रह और अन्धविश्वाससे संघर्षकर रहा है किन्तु फिर भी जिसका मस्तिष्क पूर्णतः शान्त और तटस्थ है। वे अपने लिए मकानके अन्दर ही स्वयं शराब चुआ लिया करते थे। वे चीनियों जैसा ही लंबा गाउन पहनते थे और उन्हीं जैसा भोजन भी करते थे। संसारमें जो कुछ भी हो रहा था उससे उनका कोई मतलब न था और वे निश्चिन्त भावसे अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

पीकिंग राष्ट्रीय विश्वविद्यालयमें अंग्रेजीके प्राध्यापक, कवि और आलोचक मेरे मित्र श्री विलियम एम्पसनका व्यक्तित्व भी कुछ कम रोचक न था। श्री एम्पसन अपनी पत्नी हेटाके साथ, जो एक प्रसिद्ध मूर्तिकार थीं, विश्वविद्यालयके पास ही एक चीनी मकानमें रहते थे। वे निस्सन्देह उस समय पीकिंगमें रहनेवाले अंग्रेजोंमें सर्वाधिक विशिष्ट व्यक्ति थे किन्तु इस बातको भूलकर अंग्रेज लोग उनके रहनेके ढंगको बिलकुल पसन्द न करते थे। श्री एम्पसन अंग्रेज कूटनीतिज्ञोंकी शहरी आदतोंको भी स्वीकार नहीं कर सकते थे। इसलिए भी अंग्रेज लोग उन्हें पसन्द नहीं करते थे। श्री एम्पसनने एक अजीब किस्मकी दाढ़ी रख छोड़ी थी। वे बहुत ही साधारण और सन्दिग्ध चरित्रवाले चीनियोंसे हेलमेल रखते थे। उनके बच्चे चीनी मकानोंके पीछे पड़नेवाले आंगनोंमें बिना किसी रोक-टोकके खेला करते थे। उनका मकान पीकिंगके एक ऐसे क्षेत्रमें स्थित था जिसे कोई खास साफ-सुथरा नहीं कहा जा सकता और वह भी श्री हण्डहासेनके मकानसे भी ज्यादा गन्दी हालतमें पड़ा रहता था। इसी मकानमें एजरा पाउण्डके पिसन कैण्टोज, पाठ्यपुस्तकें, जासूसी उपन्यास और एम्पसनकी लिखी रचना 'स्ट्रक्चर ऑव दी काम्प्लेक्स वर्ल्ड'के प्रूफ, बच्चोंके खिलौनों, चीनी नव वर्षसे सम्बद्ध चित्रालेखनों तथा हेटाकी अर्धनिर्मित मूर्तियोंके साथ गड्डमड्ड हालतमें इधर-उधर बिखरे पड़े रहते थे। एम्पसन आरवेलके घनिष्ठ मित्रोंमेंसे थे। ऐसे अनेक विषय थे जिनमें हमलोगोंकी समान रुचि

थी। मेरे कुछ सहकर्मी इसपर अटकलबाजियाँ किया करते थे कि आखिर मुझमें और एम्पसनमें ऐसी कौन-सी समानता है जिससे हमलोगोंकी मैत्री सम्भव हुई है। इसपर किसीने उन लोगोंको यह बता दिया कि एक कविके रूपमें अपनी भाषामें मेरा भी कुछ स्थान है। मुझे मालूम हुआ कि इस उत्तरसे सन्देह करनेवाले मेरे उन सहयोगियोंको सन्तोष हो गया।

उस समय पीकिंगमें प्राचीन राजघरानेकी मांचू भद्र महिला सुप्रसिद्ध मैडम डानका भी ऐसा व्यक्तित्व था जिसका उल्लेख करना आवश्यक है। क्रान्तिके पहले वे और उनकी बहिन सुविख्यात राजकुमारी डर्लिंग शाही दरबारमें अपने सौन्दर्यके लिए बहुत प्रसिद्ध थीं। यहाँतक कहा जाता है कि सम्राट् काङ्-सूने मैडम डानसे शादीका प्रस्ताव भी किया था। वे प्राचीन बुद्ध सू सीकी विधवा सम्राज्ञीकी परिचारिका थीं। शाही शासन समाप्त हो जानेके बाद वे युवान शिह-काईकी समारोहनिर्देशिका बनीं। कोमिंतांग द्वारा राजधानीके नानकिंग लाये जानेतक वे इस पदपर बनी रहीं। इसके बाद उन्होंने कलाकी प्राचीन वस्तुओंकी एक दूकान खोल दी, क्योंकि उनकी रुचि बड़ी कोमल और कलात्मक थी। वे पुराने मांचू राजघरानों तथा भद्र परिवारोंसे ऐसी वस्तुएँ प्राप्त कर सकती थीं। वे अंग्रेजी, फ्रेंच और जापानी भाषाएँ बहुत अच्छी तरह बोल लेती थीं। इसके अतिरिक्त उन्हें मांचूके एक पुराने रईस घरानेकी प्रमुख सदस्या होनेका गौरव भी प्राप्त था, इसलिए उस समय पीकिंगस्थित विदेशियोंकी बड़ी बस्तीमें वे लोकप्रिय थीं। ऐसा कहा जाता है कि पीकिंग आनेवाले विदेशी यात्रियोंके हाथ कौतूहलवर्द्धक वस्तुएँ बेचकर उन्होंने बहुत धन कमा लिया था। पीकिंगपर जापानियोंका अधिकार होनेके बाद उनके ये सुखके दिन समाप्त हो गये। मालूम नहीं उन्होंने अपना यह कठिन समय कैसे गुजारा। उन्होंने बताया था कि जापानी लोग उनकी सारी अच्छी चीजें उठा ले गये और अब उन्हें गरीबीके दिन काटने पड़ रहे हैं।

पीकिंगपर कम्युनिटोंका कब्जा हो जानेपर तो एक मांचू राज-

कुमारीके लिए करनेको जैसे कुछ रह ही न गया। फिर वे सत्तर पार कर चुकी थीं और उनकी अवस्था बहुत ही दीन-हीन हो गयी थी। कम्युनिस्ट उनके दैनिक जीवनमें कोई हस्तक्षेप नहीं करते थे। वे कूटनीतिक मण्डलकी महिलाओंको फ्रेंच पढ़ाकर किसी प्रकार जीविकोपार्जन कर लेती थीं किन्तु अपनी उस दैन्यावस्थामें भी उनका मस्तक बराबर ऊँचा रहता था। कूटनीतिज्ञोंकी जिस किसी भी दावतमें वे शामिल होती थीं, अपने चित्ताकर्षक ढंगसे सजाये हुए केशों और पुराने जमानेके शानदार रेशमी वस्त्रोंमें गत वैभव और ऐश्वर्यकी प्रतिमूर्ति-सी लगती थीं। उन्होंने गहरे हरे रंगके जो रत्न पहन रखे थे, शायद वे असली नहीं थे, किन्तु उसपर ध्यान कौन देता था? सत्तर वर्षकी उम्रमें भी उनका सौन्दर्य आश्चर्यजनक था। वे बिलकुल सीधी बैठती और चलती थीं। चेहरेपर झुर्रियोंका नाम न था और वेष-भूषा ऐसी थी मानो वे अभी भी किसी सम्राज्ञीके पार्षदका कार्य सम्पन्न कर रही हों। उनके पति 'जेनरल' डान, जो कैंटनके बिलकुल साधारणसे आदमी लगते थे, उनके पीछे-पीछे बराबर आज्ञाकारीकी भाँति चला करते थे।

मैडम डान न केवल उच्च अभिजात कुलके समस्त आकर्षणों और शोभासे समन्वित एक सुन्दर महिला थीं, बल्कि वे बड़ी साहसी भी थीं। सभी लोग जानते थे कि वे बहुत ही गरीबीकी हालतमें हैं, किन्तु निमन्त्रित होकर जहाँ भी जाती थीं, एक राजकुमारीके रूपमें ही जाती थीं। वे प्रसन्न और विनोदी स्वभावकी थीं। इस अवस्थामें भी वे हाथोंमें तलवार लेकर नाचने और दूसरे तरहके हुनर दिखलानेको तैयार रहती थीं। इन सारी विशेषताओंके बावजूद उनमें एक निरीह दुर्बलता भी थी। उन्होंने अपने बारेमें अनेक कहानियाँ गढ़ ली थीं। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी माँके एक अमेरिकी महिला होनेकी कहानी भी रच डाली थी। यह सभी जानते थे कि उनकी माँ वास्तवमें विशुद्ध मांचू रक्तकी थीं। अनेक पुस्तकोंमें सम्राज्ञीके साथ उनके चित्र प्रकाशित हो चुके हैं, फिर भी विदेशियोंको प्रभावित करनेके लिए वेअपनी माँको अमेरिकी बतलाती

थीं। शाही दरबारके सम्बन्धमें उन्होंने जो कहानियाँ प्रचारित कर रखी थीं उनका तो कोई अन्त ही न था। मुझे सन्देह है कि इस प्रवृत्तिका कारण उनकी वृद्धावस्था ही थी।

मेरे परिवारसे मैडम डानका बहुत प्रेम हो गया था। हमलोगोंके लिए वे एक बीते जमानेकी याद थीं। उनसे बातचीत करके हम पुराने चीनके बारेमें अनेक बातें जान पाते थे। मेरी पुत्री उनके पास फ्रेंच सीखनेके बहाने बैठा करती थी। इससे उन्हें कुछ पैसे तो ही मिल ही जाते थे एक काम भी मिल जाता था जिसकी सूचना वे कम्युनिस्ट अधिकारियोंको दे सकती थीं, क्योंकि चीनमें यह समझा जाता था कि हर आदमी किसी न किसी काममें लगा हुआ है और यदि कोई बेकार है तो उसे ऐसा काम मिल जानेकी सम्भावना थी जो उसकी रुचिके अनुकूल न हो। ऐसे कार्यको न स्वीकार करनेपर उसका नाम प्रतिक्रियावादीके रूपमें दर्ज हो जाता था।

पीकिंगमें जिस चीजने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वह वहाँ होनेवाला असाधारण निर्माणकार्य था। कम्युनिस्ट अपने निर्माणकार्यके सिलसिलेमें प्राचीन पीकिंगके सौन्दर्यमें हस्तक्षेप नहीं करते थे। वे 'अपवारित नगर', 'स्वर्गमन्दिर', 'कनफ्यूशियस मन्दिर' जैसी पुरानी इमारतोंकी मरम्मत और अतीतमें उनकी जो उपेक्षा हुई थी उसे दूर करते थे। थोड़े समयमें ही उन्होंने पी हाई अर्थात् नगरके केन्द्रमें अवस्थित कृत्रिम झीलोंकी सुन्दर श्रृंखलामें एकत्र सारी गन्दगी दूर कर डाली। इन झीलोंके किनारे-किनारे सुन्दर उद्यान लगा दिये गये। यहाँतक कि पहाड़ीके शिखरपर स्थित श्वेत पगोडाका भी जीर्णोद्धार करके उसे रंगछुहकर दुरुस्त कर दिया गया। कम्युनिस्टोंका मुख्य निर्माणकार्य उस क्षेत्रमें हो रहा था जहाँ जापानियोंने पहले एक नया नगर बसानेका विचार किया था। इस क्षेत्रको एक शिक्षणसंस्थाप्रधान क्षेत्रका रूप दे दिया गया जिसमें पीकिंगकी सभी शिक्षण संस्थाएँ समाविष्ट हो गयीं। पा मान चानके निकट एक औद्योगिक बस्तीका भी निर्माण किया गया। वस्तुतः नगरके

परकोटेके बाहर ग्रीष्म प्रासादतक विस्तृत नये पीकिंगको कम्युनिस्ट एक ऐसा आदर्श नगर बनाना चाहते थे जो साम्यवादी युगके निर्माणात्मक-कार्योंका प्रतीक हो। इस क्षेत्रमें जनविश्वविद्यालयों और श्रमिकोंके लिए नये ढंगके आवासोंका निर्माण किया जा रहा था।

ग्रीष्म प्रासादको श्रमिकोंके स्वर्गका रूप दे दिया गया। ग्रीष्म प्रासादके अन्तर्गत पहले चीएन लुनका शानदार महल और क्रीड़ोद्यान थे। यूरोपीय राष्ट्रोंकी बर्बरताके क्षणोंमें यह जलाकर वीरान कर दिया गया था। बादमें विधवा सम्राज्ञीने इसका पुनर्निर्माण कराया। अपने इस पुनर्निर्मित रूपमें 'ग्रीष्म प्रासाद' पहाड़ियों और झरनोंके अनिर्वचनीय सौन्दर्यसे मण्डित पृष्ठभूमिमें उद्यानों और शिविराकार भवनोंकी एक मनोरम श्रृंखला बन गया था। प्रासादके ठीक सामने एक सुन्दर झील है। कहा जाता है कि इस झीलका भी कृत्रिम ढंगसे निर्माण कराया गया था। इस भूतपूर्व शाही विश्रामस्थलमें न जाने कितने शिविराकार भवन, पगोडा, छायामय वीथिकाएँ और कमल सरोवर बने हुए हैं। राजधानीके नानकिंग चले जानेके बाद 'अपवारित नगर' के समान ही ग्रीष्म प्रासाद भी उपेक्षित अवस्थामें पड़ा रहा। इसके भवनोंको मामूली किरायेपर विदेशियोंको दे दिया जाता था जो इनका उपयोग बंगलोंके रूपमें करते थे। ये विदेशी सप्ताहांतकी छुट्टियाँ या गर्मियाँ यहीं बिताया करते थे। नयी कम्युनिस्ट सरकारने इस स्थानको बातकी बातमें श्रमिकोंके विश्रामस्थलका रूप दे दिया। झीलके एक किनारे स्नान करनेके लिए सुन्दर घाट बना दिये गये। हर शनिवार और रविवारको यहाँ छात्रों और ट्रेड यूनियनिस्टोंकी भीड़ लग जाती है। इन्हें पीकिंगसे स्पेशल लारियोंमें लाया जाता है। जनवादी मुक्तिसेनाके हजारों आदमी और मजदूर संघटित जत्थोंके रूपमें इन बगीचोंमें सैरसपाटेके लिए आते हैं। उन्हें सर्वत्र समूहबद्ध रूपमें खेलते और गाते हुए देखा जा सकता है। हम इस बातकी केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि 'प्राचीन बुद्ध'ने इस सम्बन्धमें क्या सोचा होगा।

नयी सरकारका जो दूसरा काम मुझे बहुत पसन्द आया वह यह था कि उसने 'स्वर्ग मन्दिर'के जो अपनी सुन्दरतामें अनुपम है, संरक्षणकी ओर, ध्यान दिया था। कोमिंतांगके शासनकालमें १९४८ में, जब मैंने इस मन्दिरको देखा था, इसकी दुर्दशा अवर्णनीय थी और इसे देखकर निष्ठुरसे निष्ठुर व्यक्तिका दिल भी टूट जाता। उत्तर-पूर्वसे आनेवाले शरणार्थी छात्रोंने इसपर कब्जा कर रखा था और इसे दुर्गन्ध और गन्दगी-का घर बना डाला था। बादमें मैंने सुना कि जेनरल फूत्सी-यीने एक हवाई अड्डा बनानेके लिए मन्दिरके चारों ओरके अनेक पुराने और शोभाशाली वृक्षोंको काट डाला। कम्युनिस्टोंने मन्दिरकी पूरी सफाई करायी, कटे हुए वृक्षोंके स्थानपर नये वृक्ष लगाये और मन्दिरको पुनः उसका पुराना सौन्दर्य प्रदान कर दिया।

ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्त्वकी इमारतोंको छोड़कर दूसरी इमारतोंकी तोड़-फोड़में कम्युनिस्ट उतना हिचकते न थे। उन्होंने तथाकथित कृषि मन्दिरको क्रीड़ाङ्गण (स्टेडियम) का रूप दे दिया और कन्फ्यूशियसके मन्दिरमें एक पुलिस स्कूलकी स्थापना कर दी। शायद यह उचित भी था। महान् लामा मन्दिरको उन्होंने नहीं छुआ। इसका कारण शायद मंगो-लियन और तिब्बती बौद्धोंकी धार्मिक भावनाओंकी रक्षा करना ही था। 'अपवारित नगर'से सम्बद्ध इसके केन्द्रीय भागको एक महान् आकर्षण केन्द्रमें परिवर्तित कर दिया गया और पीकिंगकी जनताके विनोदके लिए एक बार पुनः विस्टेरिया और पिओनी उद्यानोंकी वीथियाँ फूलोंसे खिल उठीं। 'अपवारित नगर'में स्थित 'पितृ मन्दिर'[1] मजदूरोंका प्रासाद बन गया। इसमें खुले मैदानमें विस्तृत थियेटर तथा खेल-कूद और मनोरंजन-की सारी सुविधाएँ प्रस्तुत कर दी गयीं। सामान्यतः यह स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि नयी सरकार श्रमिक वर्गकी उन्नति और कल्याणके लिए उत्सुक है।

पीकिंगमें अपना राजनीतिक कार्य शुरू करनेपर जिस पहली चीजपर

१. जहाँ चीनी सम्राट् अपने पितरोंकी पूजा करते थे।

मेरा ध्यान गया वह यह थी कि श्रीचाऊ एन-लाई तथा उनके कुछ निकट सहकर्मियोंको, जिनमें खासकर श्री चेन चिया-काङ्का उल्लेख किया जा सकता है, छोड़कर चीनमें भारतके बारेमें किसीको कुछ भी न मालूम था। भारतकी राजनीतिक स्थिति तथा ऐतिहासिक विकासके सम्बन्धमें चीनी जनताकी केवल कुछ स्पष्ट धारणाएँ थीं। बौद्ध परम्पराकी विरासतके कारण चीनकी अधिकांश जनताकी भारतमें एक प्रकारकी रहस्यात्मक और कल्पनाशील रुचि थी, किन्तु किसीको आधुनिक भारतकी कोई जानकारी न थी। इसका कारण न केवल चीनियोंकी आत्म-केन्द्रिता थी, जिसके लिए वे बहुत बदनाम हैं, बल्कि अतीतमें हुई उनकी वह शिक्षा-दीक्षा भी थी जिसपर मुख्यतः अमेरिकनों और कुछ हदतक पश्चिमी राष्ट्रोंके ईसाई प्रचारक दलोंका नियन्त्रण रहता आया था। हम भारतीयोंकी तरह ही चीनियोंका ज्ञान भी पूर्वके अपने पड़ोसी राष्ट्रोंकी अपेक्षा पश्चिमी राष्ट्रोंके सम्बन्धमें अधिक था। इसके अतिरिक्त नयी सरकारके नेता छापामार युद्धमें व्यस्त थे और अधिकांशतः अगम क्षेत्रोंमें रहते थे। उन्हें भारतके सम्बन्धमें जो कुछ भी जानकारी प्राप्त होती थी कम्युनिस्ट सूत्रोंसे ही मिलती थी, किन्तु शीघ्र ही चीनियोंमें भारतके प्रति जिज्ञासा बढ़ने लगी। भारतके सम्बन्धमें उनके दो प्रकारके विचार थे। स्वभावतः वे यह समझते थे कि भारत उनके प्रति मैत्रीपूर्ण है, किन्तु कम्युनिस्टोंके रूपमें वे केवल यही सोच सकते थे कि भारत एक पूँजीवादी राष्ट्र है। कम्युनिस्ट पाठ्य-पुस्तकोंके सभी सूत्रोंसे केवल एक ही बात स्पष्ट होती थी कि भारत निश्चय ही एक प्रतिक्रियावादी राष्ट्र होगा और उसका सम्बन्ध विरोधी शिविरसे ही होगा। चीनी जनता भारतके सम्बन्धमें अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करना चाहती है। इसका पहला संकेत मुझे उस समय मिला जब वैदेशिक कार्यालयके अधिकारियोंने मुझे भारतपर बोलनेके लिए आमन्त्रित किया। यह उनका एक विशेष अनुग्रह था। मैंने इस अवसरका लाभ उठाकर उन्हें यह जोर देकर बतलाया कि भारतीय स्वातन्त्र्य संग्रामका पूरा स्वरूप

साम्राज्यवाद विरोधी रहा है। सारे एशियाकी जनताकी मुसीबतें और कठिनाइयाँ एक ही प्रकारकी हैं, इसलिए यूरोपके प्रति उनके दृष्टिकोणमें भी एक प्रकारकी समानता है और उन सबके सामने जनताका जीवन-स्तर उठानेकी समान समस्याएँ उपस्थित हैं। बादमें उपमन्त्री श्री चाङ् हान-फूने मुझे बताया कि मेरे भाषणका बड़ा ही अच्छा प्रभाव पड़ा। कुछ समय बाद ही मुझे पुनः अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्क संस्थामें औपचारिक भाषण करना पड़ा। इस 'भाषणके लिए मैंने 'भारतीय क्रान्तिकी प्रेरक शक्तियाँ' विषय चुना।

नवाँ परिच्छेद

कोरिया

पीकिंग आनेपर मैंने यही सोच रखा था कि यहाँ एक क्रान्तिके विकासको देखना और चीन तथा भारतके बीच एक दूसरेके प्रति विशेष जानकारी और समझ पैदा करना ही मेरा विशेष कार्य होगा और इससे अधिक मुझे और कुछ न करना होगा। दूसरोंकी तरह मैं भी यही सोचता था कि कम्युनिस्ट चीनसे हार्दिक और निकट सम्बन्ध स्थापित होनेका कोई प्रश्न ही नहीं है, किन्तु मुझे इस बातकी पूरी आशा थी कि गलतफहमी, प्रतिस्पर्धा इत्यादिके कारणोंको दूर कर मैं दोनों देशोंके बीच सहकार और सहयोगका क्षेत्र बना सकूँगा। जिस एक मात्र क्षेत्रमें हमारे स्वार्थ टकराते थे वह तिब्बत था। मैं यह जानता था कि प्रत्येक चीनी सरकार, जिसमें कोमिंतांग भी शामिल है, तिब्बतपर अपने एकान्त अधिकारका दावा करती आ रही है। इसलिए पीकिंग रवाना होनेके पहले ही मैं इस निष्कर्षपर पहुँच गया था कि तिब्बतको एक ऐसे क्षेत्रके रूपमें देखनेकी ब्रिटिश नीति का, जिसमें हमारे विशिष्ट राजनितिक स्वार्थ निहित हों, अब समर्थन नहीं किया जा सकता। भारतसे अंग्रेजोंके चले जानेके बाद भारतकी स्वतन्त्र सरकारसे भी यह आशा की जा सकती थी कि वह भी तिब्बतके संबंधमें ब्रिटिश नीतिका ही अनुसरण करेगी, इसलिए स्थितिको स्पष्ट कर देना और आवश्यक हो गया। प्रधान मंत्री श्री नेहरूने भी तिब्बतसम्बन्धी हमारे दृष्टिकोणका सामान्यतः समर्थन ही किया था, इसलिए कोई ऐसी बात नहीं रह गयी थी जिससे चीनमें मेरा कार्य ज्यादा कठिन, उत्तेजक या परेशानी पैदा करने वाला होता। मुझे यह अनुभव करनेका पूरा आधार प्राप्त हो गया था कि मुझे एक बहुत ही

उपयुक्त स्थानसे चीनकी इस महान् क्रान्तिका निरीक्षण करने और उच्चतम महत्त्वके एक ऐतिहासिक नाटकको ऐसे स्त्री-पुरुषों द्वारा, जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूपसे जानता हूँ, अपनी आँखोंके सामने अभिनीत होते देखनेका एक अनुपम अवसर सुलभ हुआ है।

मेरी इन मधुर कल्पनाओंको उस समय एक गहरा धक्का लगा जब जून १९५०के अन्तिम सप्ताहमें एक दिन चीनी समाचारपत्रोंमें इस आशयके समाचार प्रकाशित हुए कि दक्षिण कोरियाइयोंने सीमा पार कर ली है और इसके फलस्वरूप उत्तरी तथा दक्षिणी कोरियामें युद्ध छिड़ गया है। दूसरे दिन बेतारके तारसे राष्ट्रपति ट्रूमनके उस ऐतिहासिक निश्चय की घोषणा हुई जिसमें कहा गया था कि दक्षिणी कोरियाकी, जो उत्तरी कोरियाकी भाँति ही अपनेको आक्रमणका शिकार बतलाता है, सहायताके लिए अमेरिकी सेना भेजी जायगी और ताइवान (फारमोसा) को सातवें अमेरिकी नौ-सैनिक बेड़ेके संरक्षणमें ले लिया जायगा। इसके बाद घटनाएँ बड़ी तेजीसे आगे बढ़ने लगीं। सुरक्षा परिषदने घोषणा कर दी कि उत्तरी कोरियाई आक्रामक हैं और अमेरिकाको हर प्रकारकी आवश्यक काररवाई करनेका अधिकार दे दिया। उक्त घोषणा रूसकी अनुपस्थितिमें की गयी थी। इसपर मिस्रने मतदान नहीं किया था और भारत भी इस सम्बन्धमें कोई निश्चय नहीं कर सका था। इस घोषणासे कोरियाई युद्ध अन्तरराष्ट्रीय आधारपर छिड़ गया।

मैंने शुरू से ही कोरियामें संयुक्त राष्ट्रसंघकी अपेक्षा श्री ट्रूमनकी ताइवान संबंधी काररवाईको कहीं अधिक महत्त्व दिया था, क्योंकि मुझे यह प्रतीत होता था कि अमेरिका चीनके उस गृहयुद्धमें प्रत्यक्षतः इच्छा या अनिच्छापूर्वक कूद पड़ा है जो कोमितांग सेनाओंके चीनकी मुख्य भूमिसे भाग जानेका कारण व्यवहारतः समाप्त हो चुका था। कोरियामें संयुक्तराष्ट्रसंघके हस्तक्षेपकी चीनमें कोई खास प्रतिक्रिया नहीं हुई। वस्तुतः कोरियाई युद्धके पिछले तीन महीनोंमें मुश्किलसे कोई सैनिक काररवाई हुई होगी, किन्तु ताइवानमें हुए हस्तक्षेपको सीधी धमकी समझा

गया, यद्यपि इस मामलेमें भी चीनियोंने बड़े धैर्य और संयमसे काम लिया। कोरियाई युद्ध शुरू होनेके बाद कई दिनों तक पीकिंगके वातावरणमें ऐसी कोई बात न दिखाई पड़ी जिससे किसीके दिलमें कोई असाधारण घटना होनेकी धारणा बनती। जिस समय अमेरिका और सामान्यतः सभी पश्चिमी राष्ट्र इस प्रकारका व्यवहार करते थे मानो आकाश ही फट पड़ा हो, पीकिंगमें पूर्ण शान्ति बनी हुई थी। यह एक विलक्षण और अस्वाभाविक स्थिति थी।

पहली जुलाईको चीनकी कम्युनिस्ट पार्टीकी २९ वीं वर्षगाँठ मनायी जा रही थी। हमेशाकी तरह इसमें भी कम्युनिस्ट पार्टीका उत्साह देखते ही बनता था। झंडोंके फहराने तथा समारोहकी हर प्रकारकी साजसज्जा पूर्ववत् थी। उसी दिन भारतने पीकिंगमें वह पहला प्रस्ताव किया जिसके द्वारा हमें शान्ति-निर्माताओंके कठिन मार्गका अनुभव करना पड़ा और अन्तमें युद्धबन्दियोंके संरक्षण तथा उनसे स्पष्टीकरण माँगनेकी व्यवस्था करनेके लिए कोरिया जाना पड़ा। मैंने वैदेशिक कार्यालयमें जाकर उप-वैदेशिक मंत्री श्री चाङ् हान-फूसे एक लम्बी वार्ता की। मैंने उन्हें यह समझानेका प्रयत्न किया कि कोरियाई युद्धको सीमित रखा जाय और आजमाइशी तौरपर यह सुझाव दिया जाय कि इस प्रश्नको सुरक्षा परिषद्को सुपुर्दकर हल किया जा सकता है यदि परिषद्में चीनको भी उसका वैधानिक स्थान प्राप्त हो जाय और इसके फलस्वरूप रूस परिषद्का बहिष्कार करना छोड़कर अपने रिक्त स्थानपर पुनः वापस आ जाय। मैंने उनसे इस बातका जिक्र नहीं किया कि प्रधानमन्त्री श्री नेहरूने इस सम्बन्धमें श्री बेविनसे बातचीत कर ली है। श्री चाङ् हान-फूने मेरे इस सुझावका बड़े सहानुभूतिपूर्वक स्वागत किया और इस सम्बन्धमें अपनी सरकारकी प्रतिक्रियासे मुझे शीघ्र ही अवगत करानेका वचन भी दिया।

इसी बीच उक्त परिस्थितिमें एक छोटेसे प्रहसनका भी प्रसंग आ गया। मैकआर्थरके बहादुरीके कारनामों तथा कोरियाके तटवर्ती नगरों-

पर दुनियाके दो सबसे बड़े नौ-शक्तिसम्पन्न राष्ट्रोंके जहाजों द्वारा लगातार बमवर्षा और हवाई शक्तिके प्रदर्शनके बावजूद उत्तर कोरियाई सेनाएँ दृढ़तासे आगे बढ़ती जा रही थीं, इसलिए कोरियामें लड़नेके लिए चाङ् काई-शेक २५००० सैनिक भेजनेका प्रस्ताव कर बैठे, किन्तु उनका प्रस्ताव नम्रतापूर्वक इस आधारपर अस्वीकृत कर दिया गया कि स्वयं फारमोसाकी प्रतिरक्षाके लिए इन सैनिकोंकी जरूरत पड़ सकती है।

१० जुलाईको चीनी सरकारने सरकारी तौरपर मेरे सुझावका उत्तर दे दिया। उसने अपने उत्तरमें भारत द्वारा अपनायी गयी नीतिकी सराहना की और हमारे प्रस्तावके साथ सहमति प्रकट की। इस उत्तरपर मेरी पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि शायद समस्याके बहुत गम्भीर रूप धारण कर लेनेके पहले ही एक रास्ता निकल आया है। किन्तु दूसरी बार विचार करते ही मुझे यह समझमें आ गया कि पीकिंगको सुरक्षा-परिषद्में स्थान दिलानेके प्रस्तावका, चाहे वह कितना ही वैध, उचित और तर्कसंगत क्यों न हो, अमेरिका जरूर विरोध करेगा, क्योंकि इसके स्वीकार कर लेनेसे उसकी प्रतिष्ठाको बहुत गहरी ठेस लगेगी। यह भी स्पष्ट था कि अमेरिकाके निश्चित विरोधके सामने श्री बेविन कुछ कर न सकेंगे। फिर भी एक मौका था, इसलिए चीनी प्रतिक्रियासे अवगत होते ही श्री नेहरूने इस आशयका प्रस्ताव रस्मीतौरपर स्टालिन और एचेसनके सामने उपस्थित कर दिया।

स्टालिनने श्री नेहरूके प्रस्तावका तत्काल उत्तर दे दिया। उन्होंने इस प्रस्तावको इस शर्त्तपर स्वीकार किया था कि पीकिंगकी सरकारको सुरक्षा परिषद्में निश्चित रूपसे स्थान मिले। रूसको इससे कोई नतीजा निकलनेकी आशा न थी। यह इसी बातसे स्पष्ट हो गया कि 'तास' ने एचेसन द्वारा उत्तर दिये जानेके पूर्व ही सारा पत्राचार प्रकाशित कर दिया। श्री एचेसनने इस प्रस्तावको यह कहकर ठुकरा दिया कि पीकिंगकी सुरक्षापरिषद्की सदस्यताके प्रश्नका कोरियाके प्रश्नसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

कोरियाई युद्धसे सम्बन्ध रखनेवाली कूटनीतिक कारखाइयोंके सम्बन्धमें अभी विस्तारसे कुछ लिखना असम्भव है, क्योंकि वे अभी भी राजकीय रहस्योंके क्षेत्रमें पड़ी हुई हैं। इतिहासके इस महत्त्वपूर्ण अध्यायसे सम्बन्ध रखनेवाले तारों, संवादों एवं संज्ञप्तियोंके प्रकाशित होनेमें काफी समय लगेगा।

जुलाईके मध्यतक कोरियाई युद्धके सम्बन्धमें चीनी दृष्टिकोणमें एक परिवर्तन दिखाई देने लगा। चीनमें जनताको यह बतलानेका एक सुनियोजित आन्दोलन छिड़ गया कि अमेरिका एशियामें हस्तक्षेप कर रहा है। कोरिया स्थित आक्रामक अमेरिकी सेनाके विरुद्ध व्यंगचित्रों, दीवालों पर लगे पोस्टरों, तस्वीरों और समाचारपत्रोंमें प्रकाशित होनेवाले लेखोंमें जोरदार प्रचार शुरू हो गया। एशियामेंकी जानेवाली अपनी कारखाईके लिए अमेरिका अन्तरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करनेका जो प्रयत्न कर रहा था उसकी भी बड़ी ही कड़ी और व्यंगपूर्ण भाषामें टीका-टिप्पणी होने लगी। अमेरिकी प्रयत्नके उत्तरमें श्री रोमुलो और श्री विपुल संग्रामने अपनी सशस्त्र सेनाओंकी सेवा अर्पित करनेकी जिस रूपमें घोषणा की उसमें तो चीनियोंको परिहासका अच्छा खासा मसाला मिल गया। ब्रिगेडियर रोमुलोने कहा था कि वे अमेरिकाकी सहायताके लिए नियमित सैनिक टुकड़ियोंको तो भेजनेमें असमर्थ हैं, इसका उन्हें खेद है, किन्तु अमेरिकी सैनिकोंको मिलनेवाले वेतनपर रंगरूटोंकी भरतीकी अनुमति देनेको तैयार हैं। चूँकि श्री विपुल संग्राम एक मार्शल हैं इसलिए वे एक कदम और आगे बढ़ गये। उन्होंने ५००० श्यामी सैनिक देनेका प्रस्ताव कर दिया। श्याम और फिलीपाइनके इस प्रकारके सक्रिय सहयोगके आधारपर अमेरिका यह दावा करने लगा कि एशियाके स्वतन्त्र राष्ट्र उसके पीछे हैं, चाहे भारत, पाकिस्तान, बर्मा और हिन्देशियामें से किसीने भी उसका कोई समर्थन न किया हो।

इन महीनोंमें चीनियोंने जिस संयम और आत्मसंवरणका परिचय दिया उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। यह सच है कि अमेरिकाके खिलाफ

उनके द्वारा किये गये प्रचारका स्वर कटु था, किन्तु उन्होंने संकीर्ण राष्ट्रभावनाको उत्तेजित करनेका कोई प्रयत्न नहीं किया। समय-समयपर इसकी बराबर चर्चा की जाती रही कि ताइवान और तिब्बतकी मुक्तिकी तात्कालिक आवश्यकता है। तिब्बतकी मुक्तिकी चर्चासे मुझे स्वभावतः चिन्ता होती थी। २२ वीं अगस्तको श्री चाऊ एन-लाईने मुझे सामान्य विचार-विमर्शके लिए आमन्त्रित किया। मैंने इस अवसरका लाभ उठाकर उन्हें जोर देकर यह बतलानेका प्रयत्न किया कि ताइवानके सम्बन्धमें संयम और आत्मसंवरण दिखलाना बहुत आवश्यक है। यह इसलिए और भी आवश्यक है कि सारी दुनिया इस सम्बन्धमें चीनके पक्षका समर्थन करनेकी ओर उन्मुख है। मुझे यह मालूम था कि तिब्बत-के प्रति हमारे दृष्टिकोणके सम्बन्धमें चीनियोंके मनमें अनिश्चयकी भावना थी। तिब्बतके सम्बन्धमें मैंने यह आशा प्रकट की कि चीन शान्तिपूर्ण नीतिसे काम लेगा। श्री चाऊ एन-लाईने कहा कि तिब्बतको मुक्त करना एक पावन कर्त्तव्य है, किन्तु उनकी सरकार इस उद्देश्यको सैनिक काररवाईसे नहीं, बल्कि वार्तासे सिद्ध करना चाहती है। उन्होंने यह भी कहा कि मैंने सुना है कि नेपाल सरकार तिब्बतियोंकी सहायताके लिए सेना भेजनेका विचार कर रही है। उन्होंने इस समाचारकी सत्यताके प्रति भी जिज्ञासा प्रकट की। हिमालयकी सीमाकी स्थितिके सम्बन्धमें चीनियोंकी जानकारीकी यह दशा थी।

इस समय मेरा मुख्य कार्य भारत सरकारपर इस बातके लिए दबाव डालना था कि वह ताइवान सम्बन्धी स्थितिको स्पष्ट करनेका प्रयत्न करे, क्योंकि मुझे इस बातकी आशंका थी कि इस द्वीपको मुक्त करनेकी उतावलीमें चीन किसी भी समय कोई गलत कदम उठा सकता है। इससे चीनका अमेरिकासे प्रत्यक्ष संघर्ष हो जायगा। पोलैण्डके राजदूतसे हुई वार्तासे मुझे इस बातका संकेत मिल गया था कि चीन आक्रमण करनेकी तैयारीमें सक्रिय रूपसे व्यस्त है। मैंने यह भी सुना था कि प्रसिद्ध सेनापति श्री चेन यी अपना प्रधान कार्यालय अमॉयमें ले जा

चुके हैं। वहाँ वे विमान सेनाका संघटन कर रहे हैं। उन्होंने अपनी सारी शक्ति फूकिन तटपर केन्द्रित कर दी है। मैं यह अनुभव कर रहा था कि यदि चीनियोंने जल्दबाजीमें आक्रमणका प्रयत्न कर दिया तो अमेरिकासे बड़ा संघर्ष हुए बिना न रहेगा, इसलिए सबसे बड़ी बात यह प्रतीत हो रही थी कि ताइवान सम्बन्धी अमेरिकी काररवाइयोंके प्रति चीनियोंके मनमें जो आशंकाएँ उत्पन्न हो रही थी उन्हें शान्त किया जाय। प्रधान-मंत्री श्री नेहरू सीधे और ह्वाइटहालकी मार्फत इस सम्बन्धमें जो दबाव डाल सके उससे अभीप्सित प्रभावकी सिद्धि हो गयी। अगस्तके अन्तिम सप्ताहमें अमेरिकी सरकारने ताइवानके सम्बन्धमें पाँच वक्तव्य प्रकाशित किये। अन्तिम वक्तव्यमें उसने व्यवहारतः यह स्पष्ट कर दिया कि यदि कोरियाकी समस्या हल हो जाय तो अमेरिका ताइवानपरसे अपना संरक्षण हटा लेगा। इसके बाद श्री एचेसनने एक दूसरा वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने साफ शब्दोंमें यह घोषणा कर दी कि चीनकी मुख्य भूमिके विरुद्ध आक्रमण करनेका अमेरिकाका कोई इरादा नहीं है। इससे स्थितिका तनाव कुछ घट गया।

दूसरी सितम्बरको श्री चाऊ एन-लाई निजी तौरपर मेरे यहाँ भोजन करने आये। वे अपने साथ अपनी पत्नीको भी लाये थे। यह एक विशेष सौजन्यका कार्य था, क्योंकि मैडम चाऊका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता और वे प्रायः दावतोंमें नहीं जातीं। मैंने अपने मित्र बर्मी राजदूत श्री मिण्ट थीनको भी, जिनके साथ मैं नानकिंगमें बहुत ही घनिष्ठ रूपमें कार्य कर चुका था, बुला भेजा था। दावत बड़े ही सुचारु और आनन्द-दायक ढंगसे सम्पन्न हो गयी। लोग श्री मिण्ट थीनकी मनोरंजक कहा-नियाँ सुन-सुनकर ठहाके लगाते रहे। मेरा ख्याल है कि श्री चाऊ एन-लाई कूटनीतिज्ञोंकी इस प्रकारकी दावतसे अभ्यस्त न थे। इस दावतमें उनका पूरा मनोरंजन हो गया, इसलिए वे बराबर अंग्रेजीमें कहते रहे कि यह एक बड़ी ही घरेलू दावत रही। दावतके समय हुई बातचीत चाहे बुद्धिमत्तापूर्ण न रही हो, किन्तु चुटीली और मनोरंजक अवश्य रही।

इसका श्रेय मुख्यतः बर्मी राजदूतकी शिष्ट परिहासकी अदम्यवृत्ति और श्री चाऊ एन-लाईके आत्मीयतापूर्ण विशालहृदयताको है।

दावतके बाद श्री चाऊ एन-लाई, बर्मी राजदूत और मैं अलग जाकर बैठ गया। इसके बाद हमारी वार्ता गम्भीर हो गयी। आतिथेय होनेके नाते मैं स्वयं पहले राजनीतिक विषयोंपर विचार-विमर्श शुरू नहीं करना चाहता था। इसलिए इसे पहले बर्मी राजदूतने ही शुरू किया। वार्ताका मुख्य विषय चीनका बाहरी संसारके साथ सम्बन्ध था। हम दोनोंने इस बातपर जोर दिया कि चीनकी वर्तमान नीतिने विश्वके तटस्थ जनमतसे उसे अलग कर दिया है। मैंने श्री चाऊ एन-लाईसे कहा कि आपका यह विचार हो सकता है कि संसारमें तटस्थ जनमत नामकी कोई चीज नहीं है, किन्तु मेरा विचार तो यह है कि संसारके राष्ट्रोंका न केवल एक तटस्थ जनमत बन रहा है, बल्कि भारत और बर्मा जैसे देशोंमें तो चीनके पक्षमें काफी अच्छी भावना है। यहाँतक कि इङ्गलैण्डमें भी ऐसे कई प्रभावशाली समूह हैं जो चीनका दृष्टिकोण समझनेके लिए उत्सुक हैं। जहाँतक गैर-कम्युनिस्ट संसारका प्रश्न है, चीनने वस्तुतः स्वयं अपने खिलाफ एक प्रकारका अवरोध उपस्थित कर रखा है। बर्मी राजदूतने सुझाव दिया कि चीनी सरकार दक्षिणएशियाई देशोंमें स्वयं सद्भावना मण्डल भेजकर स्थितिको समझ ले। इस सुझावका श्री चाऊ एन-लाईपर काफी प्रभाव पड़ा और उन्होंने इसे सिद्धान्ततः बड़े उत्साहसे स्वीकार कर लिया।

श्री मिण्ट थीनने सोचा कि उन्होंने एक हाथ बना लिया और हमने यह सोचा कि अब चीनमें अमेरिकाके खिलाफ चलनेवाले उग्र प्रचारमें संशोधन करनेके लिए दबाव डालनेका उपयुक्त समय आ गया। श्रीमिण्ट थीनके विचारका स्वरूप यह था कि सुरक्षा परिषद्ने ताइवानमें अमेरिकी आक्रमण और मंचूरियापर अमेरिका द्वारा की गयी वैमानिक कारखाईके खिलाफ चीन द्वारा उपस्थित प्रस्तावपर जो विचार करना स्वीकार कर लिया है वह चीनकी एक बड़ी विजय है और अब चीनका हित इस बातमें है कि वह अपने रुखको मुलायम करके अपने पक्षमें विश्वका

जनमत तैयार करे। श्री चाऊ एन-लाई स्वभावतः एक बड़े ही समझदार व्यक्ति हैं। उनकी बातचीतका ढंग भी बड़ा ही आकर्षक है जिससे लोगोंको उनसे बात करनेमें बड़ी रुचि होती है। इसलिए हमलोगोंकी वार्ता साढ़े ग्यारह बजे तक चलती रह गयी और इससे हम सबको सन्तोष हुआ।

अमेरिकी सैनिकोंके इंचनमें उतरनेसे कोरियाकी स्थिति बिलकुल बदल गयी। चीनके पश्चिमी शिविरमें इससे बड़ी खुशी मनायी गयी। चीनियोंको यद्यपि इस घटनासे बड़ी निराशा हुई फिर भी उन्होंने कोई कटुता व्यक्त न की। जब उत्तरी कोरियाकी सीमा तोड़कर अमेरिका और उसके मित्र राष्ट्रोंकी सेनाएँ आगे बढ़ने लगीं और विजयके नारे लगाने लगीं उस समय मेरा सारा विचार ताइवानपर ही केन्द्रित था, क्योंकि मैं यह अनुभव कर रहा था कि यदि कोरियामें अमेरिकाको अबाध सफलता मिल गयी तो वह च्यांगको चीनकी मुख्य भूमिपर आक्रमण करनेके लिए उभाड़ सकता है और इस प्रकार विश्व-युद्ध छिड़ सकता है। स्थिति बिलकुल अस्पष्ट थी। इस बातकी भी अफवाह थी कि पीकिंग क्षेत्रसे काफी बड़े पैमानेपर सेनाएँ उत्तरकी ओर भेजी जा रही हैं। ब्रिटिश सैनिक संलग्नाधिकारीने मुझे बताया कि उसे इस बातकी सूचना मिली है कि सैनिक गाड़ियाँ लगातार तीनसिनसे गुजर रही हैं। इसी अनिश्चित और अस्पष्ट स्थितिके समय २५ सितम्बरको कार्यकारी प्रधान सेनापति जेनरल नीह येन-जुंग, जो पीकिंगके सैनिक गवर्नर भी थे और जिन्होंने मेयरकी निरीह उपाधि स्वीकार कर ली थी, मेरे साथ भोजन करनेके लिए मेरे घरपर आ पहुँचे। गोल चेहरा और घुटे सिरके कारण जनरल नीह प्रूशियन अफसर मालूम होते थे, किन्तु बातचीतमें वे बड़ी खुली तबीयतके और मिलनसार थे। भोजनके बाद हमारी बातचीत कोरियाके सम्बन्धमें होने लगी। जेनरल नीहने मुझसे बड़े ही शान्त और अनुत्तेजित स्वरमें कहा कि चीनी जनता हाथपर हाथ धरे बैठी रहकर अमेरिकनोंको अपने देशकी सीमातक चले न आने देगी। इससे मुझे पहले पहल इस बातका संकेत मिला कि चीन युद्धमें हस्तक्षेप करनेको तैयार है।

मैं इस वक्तव्यसे कुछ आश्चर्यमें पड़ गया। मुझपर इसका प्रभाव इसलिए भी अधिक पड़ा कि इसे बहुत ही शान्त और स्थिर स्वरमें कहा गया था—मानो जेनरल नीह मुझे यह बता रहे हों कि वे दूसरे ही दिन गोली चलानेवाले हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे इस कार्यके परिणामको अच्छी तरह समझ रहे हैं ? उन्होंने उत्तर दिया कि हम यह जानते हैं कि हम क्या करने जा रहे हैं। किन्तु अमेरिकी आक्रमणको तो किसी भी कीमतपर रोकना ही है। अमेरिकी हमपर बम बरसा सकते हैं, वे हमारे कल-कारखानोंको नष्ट कर सकते हैं किन्तु वे हमें स्थल युद्धमें हरा नहीं सकते।

मैंने उन्हें यह बतलानेका प्रयत्न किया कि अमेरिकासे होनेवाला युद्ध कितना विध्वंसक होगा—अमेरिका किस प्रकारसे एक-एक करके मंचूरिया के सारे कल-कारखानोंको ध्वस्त कर देगा और चीनकी प्रगति कमसे कम ५० वर्ष पीछे ढकेल दी जायगी; चीनके तटवर्ती नगर किस प्रकार अमेरिकी बमबारीके शिकार होंगे और यहाँतक कि चीनका भीतरी प्रदेश भी बमोंका निशाना बननेसे न बच सकेगा। इसपर वे केवल हँस पड़े और बोले—हमलोगोंने सबका हिसाब लगा लिया है। अमेरिकी हमपर ऐटमबम भी गिरा सकते हैं। इससे क्या हुआ, वे कुछ लाख लोगोंको मौतके घाट उतार सकते हैं, यही न ? बिना बलिदानके किसी भी राष्ट्रकी स्वतन्त्रता कायम नहीं रखी जा सकती। इसके बाद उन्होंने मुझे परमाणु बमोंसे होनेवाली बरबादीके कुछ अनुमित आँकड़े दिये और कहा कि आखिरकार चीन खेतीपर निर्भर करता है। परमाणु बम खेतीका क्या बिगाड़ लेंगे ! यह ठीक है कि हमारा आर्थिक विकास पीछे ढकेल दिया जायगा। इसके लिए हमें कुछ कालतक इन्तजार करना पड़ सकता है।

इस बातचीतसे मैं बड़ा ही निराश हो गया। दूसरे दिन प्रातःकाल मुझे कुछ ऐसे समाचार मिले जिनसे मेरी निराशा कुछ और बढ़ गयी। जेनरल नीहके जानेके बाद मेरे प्रथम सचिव श्री ए० के० सेन कुछ समयके लिए कुछ विज्ञप्तियोंके मिलानमें मेरी सहायता करनेके उद्देश्यसे

रुक गये थे। वे करीब सवा ग्यारह बजे मुझसे बिदा हुए, किन्तु उन्हें मालूम हुआ कि पीकिंगमें कर्फ्यू जारी कर दिया गया है और सारा यातायात ठप है। एक सुरक्षा अधिकारीने उन्हें लिगेशन स्ट्रीट पहुँचा दिया, किन्तु वे पुनः होटल न जा सके। उन्होंने रास्तेमें सैनिक टुकड़ियों और ट्रकोंको रेलवे स्टेशनकी ओर जाते देखा। सम्भवतः यह मंचूरियाकी सीमापर भेजी जानेवाली सेनाका ही एक अंग था।

पहली अक्तूबरका समारोह शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो गया। आरम्भमें श्रीमाओ त्से-तुंगने अतिथियोंका स्वागत किया। इसी अवसरपर मैंने मैडम माओको प्रथम और अन्तिमबार देखा। वे अतिथियोंका स्वागत करनेवाली पंक्तिमें सबसे आगे खड़ी थीं। उनकी उम्र करीब ४० की रही होगी, पर चेहरे और शरीरसे वे युवती और सुन्दरी मालूम पड़ती थीं। पोशाक भी उन्होंने शानदार ढङ्गसे पहन रखी थी लेकिन उनकी पोशाक दूसरोंसे किसी प्रकार भिन्न न थी। उनके साथ श्रीचाऊ एन-लाई तथा उनकी पत्नी खड़ी थीं। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और मैडम सुन यात-सेन हालके भीतर थीं। उन्होंने हमारा वहीं स्वागत किया। स्वागत शान्तिपूर्ण ढङ्गसे किया गया, किसीने कोई भाषण नहीं किया। दूसरे दिन रेड स्क्वायरमें 'स्वर्गीय शान्तिके द्वार'के सामने एक शानदार सैनिक प्रदर्शन हुआ। वस्तुतः यह नये चीनकी सैनिक शक्तिका प्रदर्शन था। उत्सव बहुत लम्बा, आकर्षक और प्रभावशाली रहा। हम सभीको यह आशा थी कि इस अवसरपर किसी निश्चित नीतिकी घोषणा की जायगी, किन्तु इस सम्बन्धमें हमें निराशा ही होना पड़ा, यद्यपि यह निराशा अधिक दिन तक न रही।

दूसरी अक्तूबरको बारह बजे रातको जब कि मैं करीब डेढ़ घण्टे पूर्व सो चुका था, मेरे स्टीवर्डने मुझे सहसा जगाते हुए बताया कि वैदेशिक विभागके एशियाई मामलोंके निर्देशक श्रीचेन चिया-काङ् बैठकमें मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैंने जल्दीसे बाहर जानेवाली पोशाक पहन ली और नीचे उतर गया। मैं समझ नहीं पा रहा था कि आखिर किस कारणसे

इतना बड़ा अधिकारी आधी रातके समय मेरे घर आया है। श्रीचेन इतनी रातको मुझे कष्ट देनेके लिए बारबार क्षमा माँग रहे थे। उन्होंने कहा कि मामला इतना महत्त्वपूर्ण है कि उन्हें इस समय मेरे पास आना पड़ा। प्रधान मन्त्रीने तत्काल मुझे अपने निवास-स्थानपर बुलाया है। मैंने कहा कि मैं दस मिनटमें ही उनके साथ चलनेको तैयार हो जाऊँगा और ऊपर कपड़े बदलने चला गया। जब मेरी पत्नीने सुना कि मैं इस असाधारण समयमें एक वैदेशिक कार्यालयके अधिकारीके साथ बाहर जा रहा हूँ तो वे घबड़ाहटमें यह भी न जान सकीं कि वे जाग रही हैं और मुझे गिरफ्तार होते देख रही हैं या निद्रावस्थामें ही कोई दुस्स्वप्न देख रही हैं। मुझे यह समझानेमें कुछ समय लगा कि राजदूतोंका अपहरण किया जाना कोई साधारण बात नहीं और किसी भी हालतमें उन्हें इस आशंकासे अपनी नींदमें कोई खलल न डालना चाहिये कि चीनी लोग मुझे किसी प्रकारकी क्षति पहुँचा सकते हैं।

हमलोग १२ बजकर २० मिनटपर रवाना हुए। सड़कें करीब-करीब बिल्कुल सुनसान हो चुकी थीं और पीकिंगकी अक्तूबरकी हवा रातके सन्नाटेकी गम्भीरता और बढ़ा रही थी। यद्यपि मैं शुरूसे ही सोच रहा था कि इस आकस्मिक निमन्त्रणका कारण कोई कोरिया सम्बन्धी समस्या ही है, फिर भी मैं यह जाननेके लिए कि आखिर बात क्या है, अधैर्यसे व्याकुल हो रहा था। क्या श्री चाऊ एन-लाई कोई बिल्कुल नया प्रस्ताव श्री नेहरूजीके पास भेजना चाहते हैं, क्या मुझे वह यह बतलाना चाहते हैं कि लड़ाई छिड़ गयी—ये सारे प्रश्न मेरे दिमागमें चक्कर काट रहे थे, किन्तु मैंने प्रतीक्षा करना ही उचित समझा और श्री चेनसे कोई संकेत प्राप्त करनेकी कोशिश न की। हमलोग पिछले दिन हुए समारोहकी गरिमा और कारवाइयोंकी व्यवस्था एवं अनुशासनके सम्बन्धमें ही बातचीत करते रहे। साढ़े बारह बजे मैं प्रधान मन्त्री श्री चाऊ एन-लाईके सरकारी वासस्थानपर पहुँच गया।

यद्यपि मेरे ख्यालसे यह अत्यधिक गम्भीर स्थिति थी—बारह बजे

रातको संसारकी शान्तिपर प्रभाव डालनेवाले प्रश्नोंपर विचार करना था फिर भी श्रीचाऊ एन-लाई जरा भी परेशान या घबड़ाये हुएसे नजर नहीं आते थे। वे पूर्ववत् सौजन्यपूर्ण और आकर्षक ढंगसे मुझसे मिले। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे उन्हें कोई ख़ास जल्दी नहीं है। उन्होंने पूर्ववत् मेरे लिए चायका प्रबन्ध किया और दो मिनट साधारण शिष्टाचारकी बातों तथा इतनी रातको मुझे परेशान करनेके लिए क्षमा माँगने आदिमें लगाया। इसके बाद वे मुख्य बातपर आये। उन्होंने नेहरूजीको उनके शान्ति-प्रयत्नोंके लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि आज चीनको शान्तिकी जितनी जरूरत है उतनी किसी भी राष्ट्रको नहीं हो सकती, किन्तु कभी-कभी ऐसे अवसर आ जाते हैं जब शान्तिकी रक्षा आक्रमणका दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध करनेके संकल्पसे ही की जा सकती है। यदि अमेरिकाने ३८ वें अक्षांशको पार कर लिया तो चीनको बाध्य होकर कोरियाई युद्धमें शामिल होना होगा। यों मैं शान्तिपूर्ण समझौतेके लिए सर्वाधिक उत्सुक हूँ और इस सम्बन्धमें नेहरूजीके दृष्टिकोणको सामान्यतः स्वीकार करता हूँ। मैंने उनसे जब पूछा कि क्या उन्हें अमेरिकनोंके सीमा पार कर जानेका समाचार मिल चुका है, उन्होंने 'हाँ' में उत्तर देते हुए कहा कि अभी यह नहीं मालूम हुआ है कि अमेरिकनोंने किस स्थानपर सीमा पार की है। मेरे यह पूछनेपर कि क्या केवल दक्षिण कोरियाइयोंके ही सीमा पार कर लेनेपर चीन लड़ाईमें कूद पड़ेगा, उन्होंने जोरदार शब्दोंमें कहा कि दक्षिण कोरियाइयोंकी हमें चिन्ता नहीं है, किन्तु उत्तरी कोरियामें घुसनेपर अमेरिकाको चीनी प्रतिरोधका सामना करना पड़ेगा।

मैं डेढ़ बजे रातको घर वापस आ गया। मेरे प्रथम सचिव और साइफर असिस्टेण्ट[१] मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। श्री चाऊ एन-लाईसे हुई वार्ताका सारांश और परिस्थितिके सम्बन्धमें मेरे विचार तार द्वारा उसी रात नयी दिल्ली प्रेषित कर दिये गये। मैं अब निश्चित रूपसे जान

१. संकेताक्षरोंको पढ़नेवाला सहायक अधिकारी।

गया था कि, जैसा कि श्री चाऊ एन-लाईने बताया था, अमेरिकी ३८ वें अक्षांशको पार कर चुके हैं और मंचूरियामें जमी चीनी सेनाएँ भी यालू नदी पार करके उत्तरी कोरियाके क्षेत्रमें प्रवेश कर गयी हैं। दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने ब्रिटिश दूत श्री हचिसनसे सम्पर्क स्थापित किया और उन्हें संक्षेपमें इस परिस्थितिसे अवगत कराया। बादमें मेरी मुलाकात बर्मी राजदूतसे हुई। उन्हें भी मैं बराबर परिस्थितियोंसे अवगत रखता था। उन्होंने भी इस नयी स्थितिकी सूचना तत्काल थाकिन नूके पास भेजना स्वीकार कर लिया।

अगले दो दिनोंमें कोई बहुत खास बात नहीं हुई। इसकी कोई निश्चित सूचना नहीं मिली कि अमेरिकनोंने ३८ अक्षांशकी रेखा पार कर ली है, किन्तु संयुक्त राष्ट्रसंघ ऐतिहासिक उदासीनताके साथ इस प्रस्तावपर विचार कर रहा था कि मैकआर्थरको ३८ अक्षांशको पार करके कोरियाकी एकता स्थापित करनेका अधिकार दे दिया जाय। ८वीं अक्तूबरको आठ बजे रातको मैंने रेडियोपर सुना कि राष्ट्रसंघने इस बातकी जानकारी रखते हुए भी कि कोरियाई युद्धमें चीन हस्तक्षेप करेगा, इस प्रस्तावको रस्मी तौरपर पास कर दिया। चीनी हस्तक्षेपकी बात अमेरिकी परराष्ट्र विभागको बतायी जा चुकी थी।

इस संबंधमें मैंने अपनी डायरीमें ये चन्द पंक्तियाँ अंकित कर ली थीं—'आखिर अमेरिकाने जानबूझकर लड़ाई मोल ले ही ली। ब्रिटेनको भी आज्ञाकारीके रूपमें इसी नीतिका अनुसरण करना पड़ा। सचमुच यह एक बहुत ही दुःखद निश्चय है, क्योंकि अमेरिका और ब्रिटेन दोनोंको यह अच्छी तरह मालूम है कि कोरियाई समस्याको सैनिक कारवाईसे निबटानेके किसी भी प्रयत्नका चीन डटकर प्रतिरोध करेगा और यालूकी सीमापर इस समय केन्द्रित सेना निश्चित रूपसे युद्धमें शामिल हो जायगी। शायद अमेरिका या कमसे कम कुछ अमेरिकी लोग यही चाहते हैं। सम्भवतः वे यह अनुभव करते हैं कि चीनसे लड़ लेनेका यह एक अच्छा मौका है। जो भी हो मैकआर्थरका स्वप्न सच हो गया है। मैं केवल यही

सोच सकता हूँ कि उनका यह स्वप्न कहीं एक भयानक दुःस्वप्न न साबित हो······मुझे इस बातकी भी आशंका है कि सम्भवतः अमेरिका यह अनुभव नहीं कर रहा है कि वह न केवल चीनमें, बल्कि सारे एशियामें, हिन्दचीन, मलाया और, कुछ कम पैमानेपर ही सही, फिलीपाइनमें भी एक सशक्त क्रान्तिके खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है। उसने कोरियाकी एकता और पुनर्वासके लिए जो आयोग नियुक्त किया है और जिसमें फिलीपाइन, श्याम और तुर्की भी सदस्य रूपमें शामिल हैं, वह चीनके पराजित हो जाने तक कोई भी काम करमें समर्थ न होगा।'

९ तारीखकी शामको प्रधान मन्त्री श्री नेहरूने मेरे पास श्री अरनेस्ट बेविनका एक संवाद भेजा जिसे मुझे व्यक्तिगत रूपसे श्री चाऊ एन-लाईको देना था। इस संवादका स्वर मैत्रीपूर्ण था। इसमें चीनको कुछ अस्पष्ट आश्वासन दिये गये थे और साथ ही यह वचन दिया गया था कि कोरियाई आयोग चीनके दृष्टिकोणपर अत्यन्त सावधानीसे विचार करेगा। इस बातपर विचार करते हुए कि आयोगमें फिलीपाइन और श्याम जैसे देश भी जब सदस्य रूपमें शामिल हैं, मुझे यह वचन जलेपर नमक छिड़कने-सा मालूम हुआ। बेविनका यह प्रयत्न बहुत देरसे हुआ, क्योंकि चीनी सेना कोरियामें पहुँच चुकी थी। संयुक्त राष्ट्रसंघके प्रस्तावके विरुद्ध भी चीनकी बड़ी ही उग्र प्रतिक्रिया हुई। वैदेशिक कार्यालयके एक प्रवक्ताने इसे गैरकानूनी घोषित किया।

अक्तूबरके मध्यतक चीनी हस्तक्षेपका कोई प्रमाण नहीं मिला। अमेरिकाने उत्तरी कोरियाकी राजधानी प्योंगयांगपर कब्जा कर लिया था और पूरे प्रदेशपर कब्जा कर लेनेकी तैयारी हो रही थी। कहीं भी कोई चीनी सैनिक दिखलायी नहीं पड़ा था। भारत और अमेरिका दोनों ही जगह व्यक्तिगत मेरे विरुद्ध बड़ी कड़ी टीका-टिप्पणी हो रही थी। अमेरिकी पत्रोंने, यहाँ तक कि 'न्यूयार्क हेरल्ड' और 'ट्रिब्यून' जैसे अत्यन्त संतुलित विचार रखनेवाले पत्रोंने भी यह कहना शुरू कर दिया कि मुझे बेवकूफ बनाया गया है और नेहरूजी भी मेरे चक्करमें पड़ गये हैं। भारतमें भी

कुछ अमेरिकापक्षीय पत्रोंने अमेरिकी पत्रोंकी आलोचनाको दुहराया और मुझे वापस बुला लेनेकी माँगतक भी की जाने लगी। मैकआर्थरको अपने अभियानमें पूर्ण विजय प्राप्तकर लेनेकी उम्मीद हो गयी थी। उन्होंने सैनिकोंको आश्वासन दे दिया था कि बड़े दिन तक उन्हें घर जानेकी छुट्टी मिल जायगी। मुझे यह मालूम था कि चीनियोंने हस्तक्षेप कर दिया है किन्तु उनके लड़नेका कोई प्रमाण न मिलनेके कारण मेरी इस जानकारीका कोई महत्त्व न था। भारतीय वैदेशिक कार्यालयके उच्च अधिकारियोंमें भी इस सम्बन्धमें सन्देहकी भावना पैदा हो गयी। केवल प्रधानमन्त्री श्रीनेहरू इस आन्दोलनसे अविचलित बने रहे।

इसी समय तिब्बतपर चीनी आक्रमणकी अफवाह उड़ने लगी। इससे मेरी परेशानी और बढ़ गयी। वैदेशिक कार्यालय जाकर पूछताछ करनेसे कोई परिणाम न निकला। वाई चिया-पूके (वैदेशिक कार्यालय) अधिकारी मिलते तो बड़ी नम्रतासे थे, किन्तु चुप्पी साधे हुए थे। परिस्थितियाँ निश्चित रूपसे उसी दिशाकी ओर बढ़ रही थीं। अधिकारियोंसे जो एकमात्र सूचना मैं प्राप्त कर सका वह यह थी कि खास तिब्बतकी सीमापर स्थित पश्चिमी सिकांग प्रान्तमें हो रहे उपद्रवको शान्त करनेकी कुछ कारखाईकी जा रही है। भारतमें मुख्यतः अमेरिकी और हांगकांगस्थित संबाददाताओं द्वारा प्रेषित समाचारोंके फलस्वरूप जनमत उत्तेजित हो उठा था। २५ अक्तूबरको चीनमें पीकिंग रेडियोने घोषित किया कि तिब्बतको मुक्त करनेका अभियान शुरू हो गया है। इस घोषणाने जलती आगमें घीका काम किया। चीनकी इस कारखाईसे भारत सरकार परेशान हो गयी। मुझे इसका तीव्र विरोध करनेका आदेश प्राप्त हुआ। चीनने भी इस विरोधका वैसा ही कड़ा उत्तर दिया। चीनके उत्तरमें भारतपर आक्षेप किया गया था कि वह साम्राज्य-वादियोंसे प्रभावित है। यह भी कहा गया था कि चीनने अभी कोई सैनिक कारखाई नहीं की है, किन्तु वह शान्तिपूर्ण तरीकोंसे तिब्बतको मुक्त करनेके लिए कृतसंकल्प है। हमने इसका जो जवाब दिया उसकी

शब्दावली भी यद्यपि उतनी ही कड़ी थी, किन्तु उसमें तिब्बतपर चीनकी प्रभुसत्ताको मान्यता दी गयी थी और यह कहा गया था कि हम उसके मामलोंमें कोई दखल देना नहीं चाहते। हमने अपने उत्तरमें इस बातपर पुनः जोर दिया कि हमारी यह इच्छा है कि तिब्बतकी समस्या शान्तिपूर्ण ढङ्गसे ही हल की जाय, बलप्रयोगसे नहीं। इस प्रकार चीन और भारत दोनोंने अपने दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिये और मसलेको जहाँका तहाँ छोड़ दिया गया।

मैं उम्मीद करता था कि चीनी पत्रोंमें इस प्रश्नको लेकर भारतके खिलाफ जहरीला प्रचार किया जायगा, किन्तु कुछ कारणोंसे चीनियोंने इस सम्बन्धमें हुए पत्राचारको प्रकाशित करनेके अतिरिक्त सारे मसलेपर मुलायमियतसे ही विचार किया। पत्रोंमें इस विवादकी शायद ही कभी कोई चर्चा हो जाती थी। भारतमें इस विवादका स्वरूप उतना आसान न था। भारतीय समाचारपत्र अमेरिकी संवाददाताओंके सनसनीखेज समाचारों और हांगकांगसे ताइपेहके एजेण्टों द्वारा प्रचारित लोमहर्षक कहानियोंसे उकसाये जाकर चीनी आक्रमणकी बात करते ही रहे। यहाँतक कि उपप्रधान मंत्री सरदार पटेलतक एक अमैत्रीपूर्ण भाषण करनेके लिए विवश-से हो गये। परराष्ट्र मंत्रालयमें भी इस दृष्टिकोणको कुछ समर्थन प्राप्त हो रहा था कि तिब्बतको बचानेके लिए भारतको बड़े उत्साह और शक्तिसे कार्य करना चाहिये। इसी बीच इक्वेडरने, जो उस समय सुरक्षा-परिषद्का सदस्य था, तिब्बतके प्रश्नको राष्ट्रसंघमें लानेकी धमकी दी। भारतीय जनताकी मनोवृत्ति और स्थायी अधिकारियोंके दृष्टिकोणको जानते हुए मैं इस आशंकासे घबड़ा उठा कि कहीं भारत सरकार जल्द-बाजीमें कोई गलत कदम न उठा ले। भारत सरकारके साथ ही मेरी अपनी प्रतिष्ठा भी संकटमें पड़ गयी थी। मुझपर यह आक्षेप किया जा रहा था कि मैंने प्रधानमन्त्रीको कोरियामें चीनी हस्तक्षेपके सम्बन्धमें बहका दिया है। किन्तु नेहरूजी इतनी जल्दी विचलित होनेवाले न थे। वे शान्त बने रहे, उन्होंने जनताकी भावनाको धीरे-धीरे शान्त हो जानेके

लिए छोड़ दिया। इसी बीच कोरियामें बड़े पैमानेपर चीनी हस्तक्षेप शुरू हो जानेसे सारी स्थिति ही बदल गयी।

नवम्बरके आरम्भमें एक दिन अपने घरसे मोटरपर जाते हुए मैंने सर्वत्र दीवालोंपर लाल अक्षरोंमें एक घोषणा चिपकाई हुई देखी। सड़कोंपर आने-जानेवाले सभी लोग, जिनमें वर्दीधारी सैनिक भी शामिल थे, उसे बड़ी उत्सुकतासे पढ़ रहे थे। घर लौटनेपर मैंने यह जाननेके लिए कि उस घोषणामें क्या लिखा हुआ है एक नौकरको भेजा। इसमें सरकारके संयुक्त मन्त्रिमण्डलमें शामिल सभी दलोंकी ओरसे जनताके नाम जोरदार अपील की गयी थी कि वह कोरियाको मदद करे, अमेरिकाका प्रतिरोध करे और पितृभूमिकी प्रतिरक्षाके लिए तैयार रहे। आगामी कुछ दिनोंमें अमेरिकाविरोधी जन-आन्दोलन चरमसीमापर पहुँच गया। सर्वत्र दीवालें अमेरिकनोंके व्यंग्यचित्रोंसे भर गयीं। यह कटुता और क्रोधका भीषण प्रदर्शन था। अमेरिकनोंके खिलाफ जनभावनाको उभाड़नेके लिए जानबूझकर प्रयत्न किया जा रहा था। चीनके प्रति अमेरिकी दृष्टिकोणके सौ वर्षके इतिहासको इस प्रकारसे अंकित किया गया कि मानो अमेरिकाने ही जापानको मंचूरियापर आक्रमण करनेके लिए निमन्त्रित किया था। यह बात यद्यपि कल्पनाप्रसूत थी, किन्तु इसका बहुत व्यापक और गहरा प्रभाव पड़ा। स्वयंसेवक सेनाका कोरियामें शान्ति और चीनी क्रान्तिकी रक्षाके लिए लड़नेवाले वीरोंके रूपमें सार्वजनिक स्वागत किया जाता था।

चीनके हस्तक्षेपसे अमेरिकी योजनाएँ उलट गयीं और युद्धलोलुप मैकआर्थर बदनाम हो गये। यह हस्तक्षेप बड़े समयसे हुआ। इसने मेरी प्रतिष्ठाको पुनः स्थापित कर दिया। केवल प्रधान मंत्री श्री नेहरूने ही मेरा साथ दिया था और यह विश्वास किया था कि चीनी धोखा नहीं दे रहे हैं। तिब्बतका प्रश्न भी अपने आप हल हो गया, क्योंकि चीनियोंने अपने पहले सैनिक प्रदर्शनके बाद अपनी सेनाको सीमापर ही रोक रखा और वार्ता द्वारा समस्याके समाधानके लिए तिब्बती प्रतिनिधि-

मण्डलके आगे आनेकी प्रतीक्षा की। इस प्रकार वातावरणके साफ हो जानेपर मैं कोरियाके मामलेमें कुछ और सक्रिय रुचि लेनेकी स्थितिमें हो गया।

पीकिंगस्थित भारतीय कूटनीतिकमण्डलके कार्यके महत्त्वको समझते हुए सरकारने मेरी सहायताके लिए एक अनुभवी अफसर श्री टी० एन० कौलको भेज दिया। वे नवम्बरके मध्यतक पीकिंग पहुँच गये। वे अनेक मानोंमें विशेष योग्यतासम्पन्न व्यक्ति थे। थोड़े समयका ही अनुभव रखनेवाले आई० सी० एस० अफसर होते हुए भी मास्को और वाशिंगटनमें रह चुकनेके कारण वे 'भारतीय नागरिक सेवा विभाग' (इण्डियन सिविल सर्विस) के परम्परागत अपरिवर्तनवादी दुराग्रहोंसे मुक्त हो चुके थे और उन्होंने एक ऐसे प्रगतिशील मस्तिष्कका विकास कर लिया था जो संसारकी नयी ताकतोंको समझ सकता था। वे रूसी भाषा धाराप्रवाह बोल लेते थे। उन्होंने वाशिंगटनस्थित हमारे दूतावासमें दो वर्षतक प्रथम सचिवका काम किया था, इसलिए उन्हें अमेरिकनोंकी मानसिक गतिविधिकी अच्छी समझ हो गयी थी। कूटनीतिक वार्ताओंका उन्हें अच्छा अनुभव था। वे मैत्रीपूर्ण, दृढ़ और विचक्षण ढंगसे वार्ता चला सकते थे। सभी स्तरोंपर विभिन्न समूहोंसे सम्पर्क स्थापित करनेकी उनकी एक विशेष प्रवृत्ति थी। मुझे उनको पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि उनकी सहायतासे मैं वाई चिया पू और रूसी गुटके साथ गैररस्मीतौरपर सम्पर्क स्थापित करनेमें समर्थ हो सका।

इसी समय कोरियाकी स्थिति बिगड़ती जा रही थी। ब्रिटिश सरकार बड़ी परेशान थी। श्री बेविनने श्री हचिसनके पास एक संदेश भेजा था जिसे श्री चाऊ एन-लाई अथवा उनके न मिलनेपर जिस सर्वोच्च अधि-अधिकारीके पास पहुँचा जा सके उसे देना था। यह एक विचित्र प्रकार का सन्देश था। इसमें संयुक्त राष्ट्रसंघके कोरियासम्बन्धी उद्देश्योंकी व्याख्याकी गयी थी और ब्रिटेनकी ओरसे आश्वासन दिया गया था कि चीनकी सीमाओंका उल्लंघन नहीं होने दिया जायगा। इसके

अतिरिक्त लेक सक्सेसमें चीनी प्रतिनिधियोंके साथ विचार-विमर्श करनेका एक अस्पष्ट-सा सुझाव भी दिया गया था। प्रधानमंत्री श्री नेहरूने मुझे तार देकर ब्रिटेनके उक्त सन्देशका पूर्ण समर्थन करनेका निर्देश दिया था। इस मामलेपर श्री हचिसनसे विचार करनेके समय मैंने उनसे यह स्पष्ट कर दिया कि जिस प्रस्तावमें पूरी समस्यापर प्रत्यक्ष वार्ता करनेकी बात न होगी उसे, सन्देह है, चीनी स्वीकार न करेंगे और मेरे विचारसे ब्रिटेन द्वारा चीनको उसकी सीमाओंका उल्लंघन न किये जानेका आश्वासन दिये जानेमें पृष्ठपोषणकी गंध आती है। चीनका यह दावा है कि वह अपनी सीमाओंकी रक्षा करनेमें स्वयं पूरी तरह समर्थ है। अतएव मेरा विश्वास है कि वह ब्रिटेनके इस प्रस्तावको अपमानजनक समझेगा, क्योंकि उसे इससे यह अनुभव होगा कि ब्रिटेन उसको फिलीपाइन और श्याम जैसे देशोंकी श्रेणीमें रखा रहा है। दो दिन बाद मैं श्री चाङ् हान-फूसे मिला और उनसे एक घण्टेतक बातें कीं। मैंने उनके सामने बेविनके प्रस्तावका जबर्दस्त समर्थन किया और कहा कि यह एक ऐसा प्रस्ताव है जिससे बातचीतका रास्ता खुलता है। चीनको इसका लाभ उठाना चाहिये। इससे दो स्पष्ट लाभ होंगे। एक तो यह कि समस्यापर विचार-विमर्श हो सकेगा, दूसरे कोरियामें चीनके स्वार्थको मान्यता प्राप्त हो सकेगी। मैंने अपने तर्क बड़े दृढ़तापूर्वक उपस्थित किये, किन्तु मैं समझता हूँ कि उनका उतना प्रभाव न पड़ा होगा, क्योंकि मैं स्वयं उनसे उतना प्रभावित न था।

श्री चाङ् हान-फू बेविनके प्रस्तावसे मुख्यतः इसलिए बहुत प्रभावित नहीं हुए कि उसमें ताईवानका कोई उल्लेख नहीं था। चीनियोंके लिए ताइवानके खिलाफ होनेवाली अमेरिकी काररवाई कोरियाकी स्थितिसे कम महत्त्वकी न थी, यद्यपि पश्चिमी राष्ट्र ताइवानके खिलाफ अमेरिकी काररवाईकी समस्याको उलझनपूर्ण और असुविधाजनक समझकर उसकी उपेक्षा कर रहे थे। कोरियामें एक तटस्थ क्षेत्र बनानेका जो विचित्र प्रस्ताव ब्रिटेनने रखा था उसे चीनने स्वभावतः अप्रासंगिक कहकर ठुकरा

दिया, क्योंकि इसका अर्थ यह होता था कि शेष कोरिया सिंगमन रीके अधिकारमें चला जाय।

चीनकी समस्याके प्रति ब्रिटेनके दृष्टिकोणमें एक आरंभिक बाधा थी। ब्रिटेन चीनके साथ समानताके आधारपर व्यवहार न कर सका। वह कोरियामें चीनी स्वार्थोंकी गारंटी देने और इस बातके लिए तैयार था कि कोरियाके एकीकरणके लिए बनी तथाकथित संयुक्त राष्ट्रीयसंघीय समिति चीनके वैध अधिकारोंपर ध्यान दे। इसी प्रकार वह अन्य बातोंके लिए भी तैयार था, किन्तु वह इस विचारको स्वीकार नहीं करता था कि सुदूरपूर्वकी समस्याके समाधानमें कमसे कम चीनकी भी उतनी आवाज होनी चाहिये जितनी ब्रिटेन और अमेरिकाकी है। सभी ब्रिटिश प्रस्तावोंका इससे अधिक और कोई अर्थ न था कि चीनको ब्रिटेनके आश्वासनपर कोरियासे हट जाना चाहिये और संयुक्त-राष्ट्रसंघकी कार-रवाईकी आड़में अमेरिकाको कोरियाका एकीकरण करने देना चाहिये।

चीनके साथ हमारे सम्बन्धमें तिब्बतके विवादके फलस्वरूप जो खिंचाव और रुक्षता आ गयी थी वह इस समयतक बिलकुल दूर हो गयी थी। धीरे-धीरे हमलोगोंके सम्बन्ध सुधरने लगे। वाई चिया-पूने हमारे प्रथम सचिव श्री सेनके महावाणिज्य दूतके रूपमें शंघाई जानेके अवसरपर दावत दी। इस दावतमें पुनः भारत-चीन मैत्रीके उपलक्ष्यमें प्रीतिपेय ग्रहण किये गये। श्री कौलके प्रति भी चीनियोंका व्यवहार बहुत ही मैत्रीपूर्ण था। श्री सेनमें अनेक गुण थे। कूटनीतिज्ञ होनेके अति-रिक्त वे असाधारण रूपसे कोमल तन्त्रवाद्य सरोदके भी अन्यन्त निपुण वादक थे। उनके शंघाई जानेके एक दिन पूर्व मैंने उन्हें अपने घरमें निजी तौरपर सरोद वादनका एक कार्यक्रम प्रस्तुत करनेके लिए राजी कर लिया। वाई चिया-पूने इस कार्यक्रममें शामिल होनेके लिए सरकारी चीनी अधिकारियोंका चुनाव किया। अतिथियोंकी सूचीमें नवचीनके सांस्कृतिक जीवनको पूर्ण प्रतिनिधित्व दिया गया था। अतिथियोंमें संस्कृति मंत्री श्री शेन यिङ्-पिङ्, श्री चाङ् हान-फू तथा उनकी पत्नीके अतिरिक्त

श्री वाङ् पिङ्-नान, केन्द्रीय संगीत अकादमीके संचालक श्री वाङ् जो-जू, श्री मा त्से-चुङ्, गीत लेखक श्री लुए ची, प्रसिद्ध आलापकारी गायिका मैडम कुआन, नाटककार और लेखक श्री हुङ् त्सीन और मेरे पुराने मित्र चित्रकार श्री सू पी-मङ् और उनकी पत्नी शामिल थीं। समागत चीनी अतिथियोंमेंसे आधेसे अधिक गैरकम्युनिस्ट थे। मैंने इस अवसरपर भारतीय शास्त्रीय नृत्य सम्बन्धी कुछ फिल्में दिखायीं और उसके बाद श्री सेनने सरोद वादनका कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सारा कार्यक्रम बड़े ही आनन्द और हार्दिकताके वातावरणमें सम्पन्न हुआ। यह देखकर मुझे आश्चर्य हुए बिना न रह सका कि जब सारा संसार कोरियाकी स्थितिसे आतंकित-सा दिखाई पड़ रहा है, पीकिंगमें ऐसी शान्ति का राज्य है।

दूसरे दिन प्रातःकाल (१ दिसम्बर) ट्रूमनने घोषित किया कि वे कोरियामें परमाणुबमका प्रयोग करनेका विचार कर रहे हैं, किन्तु इस धमकीसे चीनी जनता जरा भी विचलित न हुई। आगामी सप्ताहोंमें पीकिंग नगरकी चारों ओरकी दीवालोंके आसपास निर्माण कार्य जोरोंसे बढ़ गया। ऐसा मालूम होता था कि भूगर्भस्थ कक्षोंका निर्माण करके हर प्रकारके बमोंसे बचावकी व्यापक तैयारी की जा रही है। अमेरिकी आक्रमणविरोधी प्रचार भी और तेज कर दिया गया। उत्पादन बढ़ाने, राष्ट्रीय ऐक्य और दृढ़ताको और शक्तिशाली बनाने तथा राष्ट्रविरोधी कारंरवाइयोंके प्रति और कड़े प्रतिबन्ध लगानेके लिए, अमेरिकी प्रतिरोधके लिए कोरियाको सहायता दो का नारा लगाया गया। अमेरिकी प्रति-रोधका अभियान दिन पर दिन शक्तिशाली होने लगा। यह सोचे बिना कोई नहीं रह सकता कि ट्रूमनकी धमकी चीनी क्रान्तिके नेताओंके लिए बड़ी उपयोगी साबित हुई, क्योंकि इससे वे अपने कार्यकलापकी त्वरा कायम रखनेमें समर्थ हो सके।

इसी समय मुझे पीकिंगस्थित यूरोपियनों तथा अमेरिकनोंके रुखमें एक परिवर्तन दिखाई देने लगा। लड़ाईके आरम्भिक दिनोंमें इन लोगोंके

मनमें दबे हुए रूपमें सन्तोषकी एक बड़ी भावना यह थी कि अब चीनको अच्छा सबक सिखाया जा रहा है। अपनी असंख्य दावतों और 'काकटेल पार्टियों' में ये लोग पुराने चीनके गायब हो जानेका रोना रोया करते थे और बराबर यह उम्मीद लगाये हुए थे कि जिस दिन अमेरिका आमादा हो जायगा, अमेरिकी गोलियोंकी एक बौछारमें चीनी सेनाएँ भूँसीकी तरह उड़ जायँगी। पुराने विचारके सैनिक परामर्शदाताओंने कोरियामें अमेरिकाका पासा पलट जानेके पहले मुझे गंभीरतापूर्वक इस बातका विश्वास दिलाया था कि चीनी सेना अमेरिकनोंके मुकाबले नहीं खड़ी हो सकती, क्योंकि उसका प्रशिक्षण बहुत ही अपर्याप्त है। अतएव अमेरिकाकी पराजयसे उन्हें गहरा धक्का लगा। जब ट्रूमनने यह घोषणाकी कि वे परमाणुबम गिरानेका विचार कर रहे हैं तो इससे उनमेंसे अधिकांश लोग फिर खिल उठे। इसी वातावरणमें पश्चिमने सेण्ट एण्ड्रूज दिवस चिर-अभ्यस्त आनन्दोल्लाससे मनानेका निश्चय किया। उनमें अभी भी यही भावना बनी हुई थी कि वे एक यूरोपियन बस्तीमें ही रह रहे हैं। श्री हचिसनके दबाव डालनेसे मैं भी कुछ मिनटोंके लिए इस समारोहमें चला गया था, किन्तु वहाँका औपनिवेशिक वातावरण देखकर मुझे बड़ी निराशा हुई और मैं जल्दी ही लौट आया।

अमेरिकाकी भारी हारका समाचार पाकर मैं बहुत परेशान हो गया। मुझे इस बातकी आशंका हुई कि यद्यपि अमेरिकाको परमाणुबम गिरानेसे रोका जा सकता है फिर भी दारुण निराशासे बौखलाकर वह मंचूरियापर हमला कर सकता है और इस प्रकार लड़ाई बढ़ सकती है। मैं चीनकी दिनपर दिन बढ़ती हुई वैमानिक शक्तिसे परिचित था। इसके अलावा चीनको यह विश्वास था कि मंचूरियापर हमला होनेपर रूस भी युद्धमें शामिल हो जायगा। अतएव प्रधानमंत्री श्री नेहरूसे अधिकार प्राप्त करके मैंने चीनी अधिकारियोंसे पुनः (८ दिसम्बरको) मुलाकात की और उनसे अनुरोध किया कि वे इस बातकी घोषणा कर दें कि उनकी सेना ३८ अक्षांशको पार न करेगी और वे दक्षिणी कोरियामें प्रवेश न करेंगे। मैंने

इसके लिए यह तर्क उपस्थित किया कि इस प्रकार की घोषणासे चीनके पक्षमें विश्वका तटस्थ जनमत तैयार होगा और इससे चीनका कोई नुकसान भी न होगा, क्योंकि जबतक अमेरिका भी इसी तरहकी बात माननेको तैयार न होगा चीन भी अपनी घोषणासे बाध्य न होगा। मैंने श्री चाङ् हान-फूके सामने यह सिद्ध करनेका बहुत प्रयत्न किया कि सैनिक काररवाईसे कोरियाई समस्याको पूर्णतः हल कर लेनेका विचार मूर्खतापूर्ण है, क्योंकि अमेरिकाको चाहे पीछे ढकेल भले ही दिया जाय, किन्तु जबतक उसकी नौ-सैनिक और वैमानिक शक्ति बढ़ी-चढ़ी है, वह तटवर्ती क्षेत्रके अनेक चुने हुए स्थानोंपर पैर जमाये रह सकता है। इसलिए समस्याका निबटारा वार्तासे ही होगा और चूँकि चीन अब तक अपनी सैनिक शक्ति काफी दिखा चुका है, अतः यह अनुचित न होगा कि वह वार्ताका प्रस्ताव करे।

तेरह अरब-एशियाई राष्ट्रोंकी अपीलसे मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि चीनको एक रास्ता मिल जायगा। मेरे सुझावपर श्री कौलने श्री चेन चिया-काङ्से मुलाकात की। श्री चेनकी प्रतिक्रिया बड़ी रोचक हुई। उन्होंने श्री कौलसे पूछा कि कोरियामें लड़नेवाला फिलीपाइन अरब-एशियाई राष्ट्रोंमें क्यों शामिल हो गया है? सचमुच यह एक विचित्र बात थी। किन्तु मुझे यह उस समय और भी विचित्र मालूम पड़ी जब मैंने रेडियोपर रोमुलोको कोरियापर हुए 'चीनी आक्रमण' की निन्दा करते हुए सुना। उस समय मुझे यह सन्देह हुआ कि रोमुलो सम्भवतः अमेरिकाकी किसी नयी काररवाईके लिए जमीन तैयार कर रहे हैं। ऐसी स्थितिमें अरब-एशियाई राष्ट्र समूह उन्हें अपने साथ रखकर स्वयं अपनी स्थिति कमजोर कर रहे हैं।

११ दिसम्बर को श्री चाऊ एन-लाईने मुझे बुला भेजा। हमलोगोंकी करीब एक घंटेतक बातचीत हुई। उनकी वार्ताका मुख्य स्वर यह था कि आखिर अमेरिका क्या चाहता है? वह हमलोगोंकी तरह शान्ति चाहता है या आक्रमण जारी रखना चाहता है? एटली-ट्रूमन विज्ञप्तिसे यह स्पष्ट

हो जाता है कि अमेरिका शान्ति नहीं, युद्ध चाहता है। मैंने उनके प्रश्नों-के उत्तरमें कहा कि विज्ञप्तियोंके आधारपर सरकारी नीतिके सम्बन्धमें कोई निश्चय नहीं किया जा सकता, किन्तु मेरा यह निश्चितमत है कि कमसे कम ब्रिटेन शान्ति चाहता है। यदि चीन ३८ अक्षांशके सम्बन्धमें अपनी घोषणा कर दे तो इससे ब्रिटेन तथा उन सभी लोगोंको, जो अमेरिकाको संयत करना चाहते हैं, मदद मिलेगी। श्री चाऊ एन-लाईने कहा कि, 'जहाँतक ३८ अक्षांशका सम्बन्ध है, केवल हमलोग ही, चीन और भारत, उसे कायम रखना चाहते हैं, किन्तु मैकआर्थरने तो उसे ध्वस्त कर डाला है और अब उसका अस्तित्व भी मिट गया है।' इस मुलाकातसे मैं पूर्ण निराश हो गया, क्योंकि अब मुझे यह स्पष्ट हो गया कि चीनी सेना ३८ अक्षांशपर नहीं रुकेगी और अमेरिकाके मित्रराष्ट्रोंको अमेरिका द्वारा प्रस्तावित किसी भी काररवाईके पीछे चलनेके लिए बाध्य होना होगा।

जब मुझे अमेरिकासे यह समाचार मिला कि श्री ट्रूमनने अमेरिकामें संकटकालीन स्थितिकी घोषणा कर दी है, मेरी निराशाकी भावना और बढ़ गयी। अमेरिकामें उन दिनों सेनाके संसज्जन, संघटन और सैनिक तैयारी आदिकी ही बातें हो रही थीं। शायद यह सब कोरियामें हुई पराजयके प्रभावको व्यर्थ करनेके लिए ही किया जा रहा था। स्वभावतः इससे शांतिके पक्षको कोई सहायता न मिली। इस सारे शोर-गुलका चीनपर भी कोई प्रभाव न पड़ा। ऐसा लगता था कि वे अपने कार्योंकी अमेरिकनोंपर होनेवाली प्रतिक्रियाका आनन्द ले रहे हैं। इस सम्बन्धमें मैंने अपनी डायरीमें निम्नोक्त पंक्तियाँ अंकित कर लीं :—

'विचित्र बात तो यह है कि रूस या चीन किसीने भी इन आतंक-जनक कार्योंके प्रति सार्वजनिक रूपसे कोई ध्यान नहीं दिया है। वे इस प्रकारसे अपना कार्य करते जा रहे हैं जैसे कोई असाधारण बात हुई ही न हो। उनमें किसी प्रकारकी प्रतिक्रियाका जो नितान्त अभाव है वह, यदि वे भी अमेरिकाके जवाबमें गरजते और धमकियाँ देते होते, उससे भी अधिक भयकारक है। कम्युनिस्ट संसारकी गोपनीयता एक प्रकारकी

रहस्यात्मक भावनाकी सृष्टि करती है। यहाँ पीकिंगमें ऐसी अस्वाभाविक शान्ति है जो अमेरिकाके सारे गर्जन-तर्जनसे भी अधिक भयावनी है... वाशिंगटनमें घोषणाकी गयी है कि विमानोंका उत्पादन साढ़े चारगुना बढ़ा दिया जायगा और इस वर्ष प्रतिरक्षापर १७ हजार मिलियन डालर (सत्रह अरब डालर) व्यय किया जायगा। निस्सन्देह इससे साधारण अमेरिकीको वह सन्तोष हो जायगा कि कम्युनिस्टोंके खतरेको समाप्त करनेके लिए वह सब कुछ किया जा रहा है जो रुपयेसे किया जा सकता है किन्तु मुश्किल तो यह है कि हमें यही नहीं मालूम हो पाता कि इन सारी बातोंसे कम्युनिस्ट भी डरते हैं या नहीं। इतना तो तय है कि इससे चीन बिलकुल नहीं डरता। विमानोंकी संख्या और बमोंकी वजनमें वृद्धि होनेका चीनियोंपर कोई प्रभाव नहीं होता। इसका कारण शायद यही है कि वे जानते हैं कि उनके यहाँ बम वर्षासे ध्वस्त हो सकनेवाले उद्योग और कल-कारखाने बहुत थोड़ेसे हैं। वे यह भी जानते हैं कि चीनका जनबल इतना विशाल है कि अमेरिका सौ वर्ष तक बम बनाता रहे तो भी इसे नष्ट करनेके लिए वे बम पर्याप्त न होंगे।'

अरब एशियाई राष्ट्र समूह संयुक्त राष्ट्रसंघमें अथक रूपसे सक्रिय था। उसने दो प्रस्ताव उपस्थित किये। पहले प्रस्तावसे उसने कोरियामें युद्ध विरामके लिए वार्ता चलानेके उद्देश्यसे एक समिति बनानेकी माँग की और दूसरेसे सुदूरपूर्वी समस्याओंके शान्तिपूर्ण समाधानके लिए एक सम्मेलन बुलानेका सुझाव दिया। जिस रूपमें युद्धविरामका प्रस्ताव उपस्थित किया गया था वह अमेरिकाको बिलकुल स्वीकार न था। चीनको तो वह अमेरिकासे भी अधिक नापसन्द था। फिर भी पीकिंग सरकारने इसका जो उत्तर दिया वह जैसा होना चाहिये था उससे कहीं आगे बढ़ा हुआ था। श्री चाऊ एन-लाईने प्रस्तावित समितिसे न केवल किसी प्रकारकारका विचार-विमर्श करनेसे ही इनकार कर दिया बल्कि यह भी दृढ़ता और स्पष्टतापूर्वक बता दिया कि चीन संयुक्त राष्ट्रसंघके

चीनसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी भी प्रस्तावको तबतक वैध नहीं मान सकता जबतक वह भी उस प्रस्तावके बनानेमें शामिल न हुआ हो। इस प्रकार अपना स्पष्ट विचार देनेके बाद उन्होंने ताइवानसे अमेरिकाके हटने, संयुक्त राष्ट्रसंघमें चीनके शामिल किये जाने तथा कोरियासे सभी वैदेशिक सेनाओंके हटाये जाने आदिके सम्बन्धमें अपनी शर्तोंका उल्लेख किया। जहाँतक सुदूरपूर्वी सम्मेलन सम्बन्धी दूसरे प्रस्तावका सम्बन्ध था जब मैं क्रिस्मसमें एक दिन श्री चाङ् हान-फूसे मिलने गया तो उन्होंने मुझसे कहा कि चीन सबसे पहले इस बातपर जोर देता है कि ताइवान सम्बन्धी उसके दावेको सिद्धान्ततः स्वीकार कर लिया जाय और संयुक्त राष्ट्रसंघमें उसे स्थान प्राप्त हो। इसके बाद ही वह किसी बातपर विचार कर सकता है।

सर्वश्री राव, लेस्टर पियर्सन तथा साधारण सभाके ईरानी अध्यक्ष श्री इंतजाम—इन तीन व्यक्तियोंके आयोगने कुछ नये प्रस्ताव उपस्थित किये। ये प्रस्ताव मूल प्रस्तावोंसे कोई विशेष भिन्न न थे। इनमें नयी बात केवल यह थी कि सिद्धान्ततः इस बातको स्वीकार कर लिया गया था कि सभी विदेशी सेनाओंको हट जाना चाहिये। ये प्रस्ताव चीनी सरकार-को दिये जानेके लिए मेरे पास भेज दिये गये। मेरी कठिनाई, जिसे नेहरूजी तो पूरी तरह समझते थे किन्तु श्री राव न्यूयार्कमें रहते हुए भी नहीं समझ पाये थे, यह थी कि इन प्रस्तावोंके मिलनेपर जो पहला प्रश्न चीनी अधिकारी मुझसे करते उसका मेरे पास कोई उत्तर ही न था। वह प्रश्न यह था कि इन प्रस्तावोंको क्या अमेरिकी सरकारने स्वीकार कर लिया है। असलमें बात यह थी कि चीनियोंका मन-मुँह लेनेके लिए अमेरिका श्री राव तथा अन्य लोगोंको प्रस्ताव उपस्थित करनेके लिए तो प्रोत्साहित करता था किन्तु वह बराबर अपनेको वचनबद्ध करनेसे इनकार कर देता था। श्री रावने मेरे पास तारसे जो प्रस्ताव भेजे थे उनमें न तो ताइवानका कोई उल्लेख था और न कोरि-याई समस्याके समाधानके सम्बन्धमें ही कोई प्रस्ताव था यद्यपि इसके

लिए पाकिस्तान, फिलिपाइन तथा श्यामके नेतृत्वमें बना आयोग अब भी बना हुआ था। ये प्रस्ताव उस प्रतिवेदनमें शामिल किये जानेवाले थे जिसे समिति संयुक्त राष्ट्रसंघके सामने उपस्थित करनेवाली थी। इसलिए मैंने चीनी अधिकारियोंसे यह आग्रह नहीं किया कि वे किसी प्रकारसे वचनबद्ध हों, मैंने केवल उनकी प्रतिक्रिया जाननेकी इच्छा प्रकट की। श्री चाङ्‌ हान-फूका प्रश्न बिल्कुल सरल था। उन्होंने पूछा कि क्या इन प्रस्तावोंमें भारत सरकारका अपना दृष्टिकोण भी प्रस्तुत हुआ है। मुझे उनके इस प्रश्नको यह कहकर टालना पड़ा कि भारत सरकार चीनी प्रतिक्रियापर विचार किये बिना इन प्रस्तावोंपर अपना दृष्टिकोण देना नहीं चाहती। इस प्रकार यह प्रकरण समाप्त हो गया।

परिस्थितियाँ बड़ी तेजीसे आगे बढ़ रही थीं। एक दिन बाद मैंने रेडियोपर सुना कि अमेरिकी परराष्ट्र विभागने सभी मित्रराष्ट्रोंसे कहा है कि चीनको आक्रामक घोषित करना आवश्यक है। बताया गया कि मित्र राष्ट्रोंके नाम प्रेषित अमेरिकी पत्रमें यह भी कहा गया है कि चीनकी आर्थिक नाकेबन्दी होनी चाहिये और जिन राष्ट्रोंका चीनसे कूटनीतिक सम्बन्ध है उन्हें अपने कूटनीतिक प्रतिनिधियोंको वापस बुला लेना चाहिये। इन प्रस्तावोंकी चीनपर जो प्रतिक्रिया हुई वह क्रोधकी अपेक्षा मनोविनोदके ही रूपमें हुई। चीनको अमेरिका और उसके मित्रों द्वारा आक्रामक कहे जानेसे कोई परेशानी न होती थी। जहाँतक नाकेबन्दीका सम्बन्ध था अमेरिकाने तो उसकी नाकेबन्दी कर ही रखी थी। चीनको इस बातसे सन्तोष था कि सार्वजनिक रूपसे उद्‌घोषित नाकेबन्दीसे उन्हें उत्पादन बढ़ाने और "नाकेबन्दीके अनुरूप आर्थिक प्रणाली" विकसित करनेके लिए अपेक्षित उत्साह प्राप्त होगा। कम्युनिस्ट इसके पूर्व येनानमें ऐसा कर चुके थे। जहाँतक कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद करनेका प्रश्न था चीन यह अच्छी तरह जानता था कि इस मामलेमें कोई भी एशियाई देश अमेरिकाका नेतृत्व नहीं स्वीकार करेगा। इसलिए चीन इन प्रस्तावोंको भी अमेरिकाके उन्मादरोगका एक दूसरा प्रमाण ही

मानता था।

सौभाग्यवश उस समय लन्दनमें राष्ट्रमण्डलीय प्रधान मन्त्रियोंका सम्मेलन हो रहा था। सम्मेलनमें अमेरिकी प्रस्तावोंपर सहानुभूतिपूर्वक विचार होनेकी सम्भावना नहीं थी। १२ जनवरी १९५१ को मुझे लन्दनसे प्रधानमन्त्री श्री नेहरूका एक तार प्राप्त हुआ जिसमें कोरियापर एक नये सम्मेलनका सुझाव दिया गया था और कहा गया था कि इसके लिए असैनिकीकृत क्षेत्रों आदिकी कोई भी पुरानी शर्तका सुझाव रखनेकी जरूरत नहीं है। जिस समय तार मेरे पास पहुँचा संयोगवश हमलोग श्री कौलके घरपर चीनी वैदेशिक कार्यालयकी नीतिनिर्धारिणी समितिके उपाध्यक्ष श्री चिआओ कान-हुआ तथा एशियाई विषयोंके निर्देशक श्री चेन चिआ-काङ्के साथ भोजन कर रहे थे। इस प्रस्तावपर उनलोगोंकी प्रतिक्रिया अनुकूल दिखाई पड़ी और मुझे लगा कि हमलोग इस रास्तेसे कुछ आगे बढ़ सकते हैं। दुर्भाग्यवश रातमें जो आशा जग उठी थी उसपर पानी फिर गया। रेडियोने घोषित कर दिया कि राष्ट्रमण्डलके मूल प्रस्तावमें इस आशयका संशोधन कर दिया गया है कि वार्ता आरम्भ होनेके पहले युद्धविराम आवश्यक है। इसमें सन्देह नहीं कि यह संशोधन अमेरिकी दबावसे ही किया गया था। उसी दिन शामको संस्कृतिमन्त्री श्री शेन यिङ्-पिङ् द्वारा दी गयी एक निजी दावतमें श्री चाङ्_हान-फूसे मेरी मुलाकात हो गयी। उन्होंने मुझसे कहा कि मूल प्रस्तावसे ही वार्ताका आधार प्रस्तुत हो सकता था किन्तु वार्ताके पहले युद्धविरामपर जोर देनेसे दुर्लंघ्य कठिनाई उत्पन्न हो गयी है। मैंने श्री चाङ्_हान-फूको जोरदार ढंगसे इस बातकी सलाह दी कि वे इस आधारपर प्रस्तावोंको ठुकरा न दें बल्कि इनमें जो कुछ उपयुक्त हो उसे स्वीकार कर लें और जो कुछ अनुपयुक्त हो उसमें हेरफेर करनेकी माँग करें या दूसरी बातोंके सम्बन्धमें नया प्रस्ताव उपस्थित करें।

१५ तारीखको मैं श्री चाङ्_हान-फूसे सरकारी तौरपर मिला और उन्हें प्रधानमन्त्री श्री नेहरूके उस तारके सारांशसे अवगत कराया जिसमें

राष्ट्रमण्डलीय प्रधानमन्त्रियोंका दृष्टिकोण प्रेषित किया गया था। मैंने इन प्रस्तावोंका विश्लेषण करके पुराने प्रस्तावोंसे इनमें जो भिन्नता थी उसे वर्गीकृत रूपमें लिख रखा था। मेरा उद्देश्य यह दिखलाना था कि ये प्रस्ताव पुराने सभी प्रस्तावोंसे अधिक सन्तोषजनक हैं। मेरा अन्तिम मत यह था कि यदि वे मेरी व्याख्यासे सन्तुष्ट नहीं हैं तो राजनीतिक समिति को इसकी व्याख्या करनेके लिए क्यों नहीं कहते अथवा वे यही मानकर क्यों नहीं चलते कि उनकी ही व्याख्या सही है और इसे अपर पक्षपर छोड़ दें कि वह या तो उनकी व्याख्याको ठुकरा दे या फिर मामलेको और साफ करे।

मैं प्रस्तावकी स्वतः अपनी व्याख्या करके, जिसका मुझे किसीने अधिकार नहीं दिया था, एक बहुत बड़ा खतरा उठा रहा था। मैंने सीधे और श्री कौलकी मार्फत वाई चिया-पूके पास गैरसरकारी स्मृतिपत्रों और लेखोंका ताँता लगा रखा था क्योंकि मैं यह तो चाहता ही था कि कि इन प्रस्तावोंको स्वयं इनकी विशेषताओंके आधारपर स्वीकार किया जाय, इसके अलावा मैं यह भी अनुभव करता था कि इस समय नेहरूजीकी प्रतिष्ठा इस बातपर निर्भर कर रही है कि ये प्रस्ताव कमसे कम संशोधित रूपमें ही सही स्वीकृत हो जायँ। अतएव मैंने नेहरूजीके विचारोंकी, बिना उनसे कोई स्पष्ट आदेश प्राप्त किये ही, अपनी पूरी योग्यतासे व्याख्या करते हुए चीनी अधिकारियोंसे यह कहनेमें संकोच नहीं किया कि जो स्पष्टीकरण मैं दे रहा हूँ वह प्रधानमन्त्री श्री नेहरूके विचारोंके अनुरूप है। प्रश्नकी गम्भीरता और तात्कालिक महत्ताको देखते हुए और श्री नेहरूसे आदेश प्राप्त करनेमें कठिनाई होनेके कारण, क्योंकि उस समय नेहरूजी ब्रिटेनमें वहाँके प्रधानमन्त्रीके सरकारी विश्राम निवासमें साप्ताहिक अवकाशका समय बिता रहे थे, मेरे सामने कोई दूसरा रास्ता ही न था।

१६ जनवरीको मुझे परिस्थितिका नेहरूजी द्वारा किया हुआ ब्योरेवार आकलन प्राप्त हुआ। मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि जो विश्ले-

षण मैंने अपनी जिम्मेदारीपर चीनियोंके सामने प्रस्तुत किया था, अनेक स्थानोंपर उसके एक-एक शब्द इस आकलनसे मिल जाते थे। मुझे ऐसा लगा कि मेरे सिरपरसे एक बड़ा भार हट गया। मैंने अनुभव किया कि अब मेरे हाथ काफी मजबूत हो गये हैं। मैंने नेहरूजीके आकलनके प्रासंगिक अंशोंको श्री चेनको पढ़कर सुना देनेके लिए श्री कौलको तत्काल उनके पास भेज दिया। एशियाई मामलोंके निर्देशक श्री चेनके साथ श्री कौलके व्यक्तिगत सम्बन्ध बहुत ही अच्छे थे। श्री कौलने उनसे एक घण्टे तक बातचीत की और वे इस दृढ़ विश्वासके साथ वहाँसे वापस आये कि इन प्रस्तावोंको अब ठुकराया न जायगा। मुझे इतनेसे ही सन्तोष न हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल ही मैंने श्री कौलकी मार्फत गैरसरकारी तौरसे श्री चेन चिआ-काङ्के पास प्रधानमन्त्री श्री नेहरूके तारके मुख्यांश प्रेषित कर दिये। मैं जानता था कि इस समय मन्त्रि-मण्डलकी बैठकें हो रही हैं, अतः मैं यह चाहता था कि इस सम्बन्धमें श्री चाऊ एन-लाई तथा उनके सहकर्मियों द्वारा कोई अन्तिम निश्चय किये जानेके पहले ही बैठकके समय नेहरूजीके तारका मुख्याशय श्री चाऊ एन-लाईके पास पहुँच जाय। शामको ७ बजे मुझे यह सूचना मिली कि श्री चाऊ एन-लाई आज ही रातको ९ बजे मुझसे भेंट करेंगे। इस अवसरपर मैंने जैसे औत्सुक्यका अनुभव किया, मुझे याद नहीं आता कि मेरे सारे जीवनमें ऐसा कोई दूसरा अवसर भी आया है। मैं जानता था कि भविष्यकी प्रगति मुख्यतः चीनी उत्तरके स्वरूपपर ही निर्भर है। यदि चीनने प्रस्तावको ठुकरा दिया तो इससे निस्सन्देह अमेरिका उसके खिलाफ विश्वका जनमत संघटित कर लेगा। इसके विपरीत यदि चीनने वार्ता द्वारा समस्याके समाधानके सिद्धान्तको स्वीकार कर लिया और इन प्रस्तावोंके स्थानपर अपने दूसरे प्रस्ताव उपस्थित किये तो इससे चीनके विरुद्ध संसारको संघटित करनेके लिए अमेरिका जो प्रयत्न कर रहा है उसकी धार कुण्ठित हो जायगी और शान्तिको बल मिलेगा। प्रधानमन्त्री नेहरूजीने इसी उद्देश्यसे कार्य किया

था और इन प्रस्तावोंके प्रति राष्ट्रमण्डलीय देशोंका समर्थन प्राप्त किया था। उनके लिए इन प्रस्तावोंके ठुकराये जानेका अर्थ पराजय होता।

मैं ठीक नौ बजे श्री कौलके साथ वाई चिया-पू पहुँच गया। मैंने इस अवसरके महत्त्वका अनुभव करके ही श्री कौलको भी साथ ले लिया था। अभी श्री चाऊ एन-लाई कार्यालय नहीं पहुँचे थे। उनके स्थानपर श्री चेन चिआ-काङ् ने हमारा स्वागत किया। यद्यपि हम उनसे यह जाननेके लिए कि क्या निश्चय किया गया है, बिलकुल उतावले हो रहे थे फिर भी कूटनीतिक शिष्टाचारकी भावना हममें इतनी अधिक थी कि हमारे औत्सुक्यपर उसका नियन्त्रण बना रहा और हमलोगोंकी बातचीत भारत और चीनको पृथक् करनेवाली हिमालयकी पर्वत-श्रेणियोंकी विशालता और महानताकी ओर मुड़ गयी। सवा नौ बजे श्री चाऊ एन-लाई अपने दुभाषिये और श्री चेइओ कान-हुआके साथ कमरेमें दाखिल हुए। पहले क्षणसे ही यह स्पष्ट हो गया कि प्रस्तावको ठुकरानेका तो अब कोई प्रश्न ही नहीं है। हमलोगोंमें एक घण्टे तक बातचीत होती रही। बातचीतके सिलसिलेमें श्री चाऊ एन-लाईने नेहरूजीकी बड़ी सराहना और मेरी भी अच्छी खासी तारीफ की। उन्होंने यह भी बताया कि मेरे अनेकानेक स्मृतिपत्रों और लेखोंको उन्होंने बड़ी सावधानी और ध्यानसे पढ़ा है।

यद्यपि चीनने प्रस्तावोंको संशोधन और शर्तोंके साथ स्वीकार कर लिया था और जो बातें उसे स्वीकार न थीं उनके लिए अपनी ओरसे दूसरे प्रस्ताव भी उपस्थित किये थे फिर भी अमेरिकाने चीनी उत्तरपर विचार करनेके लिए समय देनेके पहले ही घोषितकर दिया कि चीनी उत्तर प्रस्तावोंकी "अवज्ञासूचक अस्वीकृति" है और तत्काल चीनको 'आक्रमक' घोषित करनेका प्रस्ताव ला दिया, इस विचित्र कारवाईका कारण बादमें उस समय मालूम हुआ जब राजदूत श्रीग्रोसने सिनेटमें साफ-साफ इस बातको स्वीकार किया कि अमेरिकाने मूल प्रस्तावोंको इसीलिए स्वीकार किया था कि उसे मालूम था कि चीन इन्हें ठुकरा

देगा। चीन द्वारा प्रस्तावोंके न ठुकराये जानेसे अमेरिकाकी सारी योजना ही उलट गयी। उसे चीनी उत्तरको 'अस्वीकृति'की संज्ञा देकर काम चलाना पड़ा। नेहरूजीने सेण्टलारेण्ट द्वारा उठाये गये कुछ प्रश्नोंके कुछ और स्पष्टीकरणके लिए मुझे तार दिया। मैंने यह स्पष्टीकरण भेज भी दिया। सेण्टलारेण्टने कहा था कि उन्हें यह स्पष्टीकरण सोमवारके तीसरे पहरके पहले ही मिल जाना चाहिये इसलिए समयकी कमीके कारण मैंने चीनका उत्तर साधारण प्रणालीसे संकेताक्षरोंमें न भेजकर सामान्य लिपिमें ही सीधे लेक सक्सेस श्री रावके पास इस अनुरोधके साथ भेजनेका निश्चय कर लिया कि वे इसे श्री लेस्टर पियर्सनको दे देंगे।

मैंने चीनी उत्तरके प्रेषणकी जो व्यवस्थाकी थी वह पूर्णतः सफल हुई। जिस तारसे चीनी सरकारके स्पष्टीकरण और व्याख्याएँ प्रेषित की गयी थीं वह अमेरिकी प्रस्तावपर मत लिये जानेके ठीक पहले ही पहुँच गया और जब श्री रावने मेरा सन्देश पढ़कर सुनाया तो इससे एक सनसनी फैल गयी। अमेरिकी प्रतिनिधि इससे इतने चकरा गये कि वे इसके उत्तरमें सिवा यह कहनेके और कुछ सोच ही न सके कि चूँकि ये स्पष्टीकरण और व्याख्याएँ संयुक्त राष्ट्रसंघको न दी जाकर भारतको दी गयी हैं, अतः इनपर कोई ध्यान न देना चाहिये और समितिको अपना कार्य इस प्रकारसे करते रहना चाहिये जैसे कुछ हुआ ही न हो। समितिको चीनके उत्तरपर ध्यान न देकर अमेरिकी प्रस्तावपर मत देना चाहिये। इस प्रकारका कार्य केवल दिग्भ्रान्तिका ही परिणाम हो सकता था। श्री रावने स्पष्टीकरण और व्याख्याओंका अध्ययन करनेके लिए प्रतिनिधिमण्डलोंको समय देनेके उद्देश्यसे ४८ घंटेके लिए समितिकी बैठक स्थगित करनेका प्रस्ताव किया। अमेरिकी प्रतिनिधियोंने इसका उग्र विरोध किया किन्तु तेइसके विरुद्ध सत्ताइस मतोंसे यह स्वीकृत हो गया। मैं यह जानता था कि यह विजय केवल क्षणिक है। अमेरिका अपने चाबुकका बड़ी बेरहमीसे उपयोग करेगा और चीनको आक्रामक घोषित करनेके लिए लैटिन अमेरिका तथा यूरोपके राष्ट्रोंको एक पंक्तिमें

लाकर खड़ा कर देगा। फिर भी स्पष्टीकरणकी कारवाईसे अमेरिकी प्रस्तावकी डंक टूट गयी। जिन लोगोंने अमेरिकी प्रस्तावके पक्षमें मत भी दिये वे भी यह जानते थे कि वे इससे केवल अमेरिकाकी लाज बचा रहे हैं। यह उस समय स्पष्ट हो गया जब अमेरिका चीनके विरुद्ध और कारवाइयाँ करनेका प्रस्ताव ले आया। इस प्रस्तावको इतना नरम और लचीला बना दिया गया कि व्यावहारिक दृष्टिसे यह व्यर्थ-सा हो गया। यहाँतक कि चीनको आक्रामक घोषित करनेवाले प्रस्तावमें भी उसके पास किये जानेके समय एक पुछिल्ला लगा दिया गया कि चीनके खिलाफ तटावरोध आदिकी किसी भी प्रकारकी कारवाई तबतक न की जायगी जबतक शान्तिके सभी साधनोंका पूरी तरह उपयोग न कर लिया जाय और वे निष्फल साबित न हो जाँय। संयुक्त राष्ट्रसंघने चीनी सरकारसे सम्पर्क बनाये रखकर शान्तिके लिए प्रयत्न करनेके उद्देश्यसे तीन व्यक्तियोंकी एक समिति भी नियुक्त की थी किन्तु चीनने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था कि जबतक उसे आक्रामक घोषित करनेवाला 'अवैधानिक' प्रस्ताव कायम है संयुक्त राष्ट्रसंघके साथ उसकी कोई राजनीतिक वार्ता नहीं हो सकती।

इस प्रकार कोरियाई समस्याके समाधानके लिए किया जानेवाला पहला बड़ा प्रयास समाप्त हो गया। इसका शायद अभी समय नहीं आया था। चीनके विरुद्ध बढ़ती हुई शत्रुतापूर्ण जनभावनाके कारण अमेरिकी सरकार उस समय शान्तिके लिए कोई प्रस्ताव माननेमें असमर्थ थी। कोरियामें अमेरिकाकी अकस्मात् जो सैनिक पराजय हुई थी उसकी कटु भावनापर अभी अमेरिका विजय नहीं पा सका था। उसकी दृष्टिमें उस समय युद्ध-विराम स्वीकार कर लेनेसे लोगोंके मनमें यह धारणा होती कि सैनिक पराजयके दबावसे ही अमेरिका अमान्य शर्तें मानने जा रहा है। कोरियाकी समस्यापर पुनः विचार करनेके लिए अभी एक वर्षका समय और चाहिये था।

दसवाँ परिच्छेद

पीकिंगका जीवन (२)

२६ जनवरी, १९५१ को हमने भारतीय गणतन्त्रका प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया। मैंने इस अवसरपर पीकिंग होटलमें दावतका आयोजन किया था। इस दावतमें श्री माओ त्से-तुंग स्वयं शामिल हुए और उन्होंने ही मुख्य प्रीतिपेय भी प्रस्तुत किये। इससे सभीको आश्चर्य हुआ। कई सप्ताहसे विदेशी समाचारपत्र श्री माओकी बीमारी और श्री लिउ शाओ-चिह द्वारा उनके अपदस्थ किये जानेके समाचार प्रकाशित कर रहे थे। इस प्रकारकी और कई झूठी अफवाहें विदेशी अखबारोंमें छप रही थीं। हांगकांगके समाचारपत्र, ताइपेहकी प्रेरणासे इस प्रकारके झूठे प्रचारमें सबसे आगे थे। उन्होंने अधिकांश पश्चिमी कूटनीतिज्ञोंको यह विश्वास दिला दिया था कि श्री माओ त्से-तुंगके सम्बन्धमें कुछ न कुछ गड़बड़ी अवश्य हुई है। इसलिए जब श्री माओ किसी पार्टीमें शामिल होते थे तो इससे उनलोगोंमें एक प्रकारकी सनसनी दौड़ जाती थी। मेरे आयोजनमें तो और विशेष बात होनेवाली थी। श्री माओ त्से-तुंगने एक छोटा-सा भाषण करते हुए भारतके उपलक्ष्यमें प्रीतिपेय उपस्थित किया। उन्होंने इन शब्दोंसे अपना भाषण आरम्भ किया—'यह एक महान् दिवस है। भारतके लोग बहुत ही अच्छे लोग हैं। भारत और चीनकी जनतामें हजारों वर्षोंसे मैत्री चली आ रही है।" इस प्रकार छोटे-छोटे वाक्योंमें श्री माओ त्से-तुंगने जो उद्गार प्रकट किये उनमें सत्यता, मौलिकता और सरलता भरी हुई थी। जिसने भी उनका यह भाषण सुना उसपर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। दावतके समय हुई बातचीतमें श्री माओ त्से-तुंगने भारतके साथ अच्छे सम्बन्धोंके विकासमें बड़ी रुचि दिखलाई। वे नेहरू-

जीके सम्बन्धमें बड़ी हार्दिकतासे बातें करते थे। उन्होंने यह आशा प्रकट की कि नेहरूजी शीघ्र ही चीनमें पदार्पण करेंगे और उनसे मिलनेका उन्हें अवसर मिलेगा। उन्होंने छात्रों और प्राध्यापकोंके आदान-प्रदान, एक दूसरेकी भाषाके सीखनेकी व्यवस्था और भारतकी साधारण जनताके जीवनका चित्रण उपस्थित करनेवाली किसी भारतीय फिल्मको देखनेकी इच्छा प्रकट की। अपने साथियोंमें श्री माओकी जो गम्भीर मानवीय रुचि है वार्तासे मुझे उसका अच्छा परिचय मिला।

इन महीनोंमें मैं अपनी पत्नीकी बीमारीके कारण बराबर परेशान रहा। उनका दुर्बल शरीर पीकिंगकी कड़ाकेकी सर्दी बर्दाश्त करनेमें असमर्थ था। वे चार महीनेसे ऐसी सख्त बीमार थीं कि उनके बचनेकी आशा न थी। फ्रेंच अस्पतालके डाक्टर कर्नल बर्ट्रैण्डके प्रयत्नोंसे ही किसी प्रकार उनकी जान बचायी जा सकी। कर्नल बर्ट्रैण्डने साफ-साफ कह दिया था कि दूसरे जाड़ोंमें उन्हें चीनमें नहीं रहना चाहिए अन्यथा जाड़ा उनके लिए घातक साबित हो सकता है। इस प्रकार नवम्बर, दिसम्बर और जनवरीके महीनोंमें, जिस समय मुझे बहुत ही नाजुक वार्ताओंमें भाग लेनेका गम्भीर उत्तरदायित्व वहन करना पड़ रहा था, मेरे मस्तिष्कपर पत्नीकी बीमारीका यह भारी बोझ भी बराबर बना रहा किन्तु पीकिंगकी सुन्दर वसन्त ऋतुके आगमनके साथ ही मेरी पत्नीके स्वास्थ्यमें आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगा और अप्रैलके मध्यतक वे पूर्णतः स्वस्थ हो गयीं। डाक्टर बर्ट्रैण्ड फ्रांस वापस चले गये थे। रूसी राजदूत जेनरल रोशिनके सुझावपर मैंने अपनी पत्नीको पीकिंगस्थित रूसी विशेषज्ञोंकी चिकित्सामें रख दिया। चीनी सरकारने पीकिंगके अस्पतालोंके पुनःसंघटनके लिए रूसके प्रसिद्ध डाक्टरोंकी सेवाएँ ली थीं। इन डाक्टरोंमें विभिन्न रोगोंके विशेषज्ञ शामिल थे। इन्होंने मेरी पत्नीकी चिकित्सामें विशेष रूपसे दिलचस्पी ली थी। इसके लिए मैं इनके प्रति बहुत आभारी हूँ।

फरवरी (१९५१) के आरम्भमें मुझे यी कुआन-ताओ नामक एक

विचित्र संघटनकी गतिविधिके सम्बन्धमें कुछ सूचनाएँ प्राप्त हुईं। इसके विरुद्ध व्यापक सरकारी कारवाईकी अफवाह फैली हुई थी। कहा जाता था कि यह संघटन अन्ध-विश्वासको प्रोत्साहन देकर प्रतिक्रियाको बल प्रदान करता है और अफवाह फैलाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यी कुआन-ताओका संघटन पहलेपहल मांचुओंके पतनके तत्काल बाद १९१३ में आरम्भ हुआ था। इसके संस्थापकका नाम लू चुङ् यी था। उसने अपनेको बुद्धका अवतार घोषित करते हुए इस संघटनका आरम्भ एक धार्मिक संघटनके रूपमें किया था। १९२३ में उसकी मृत्युके बाद उसका स्थान उसकी बहिनने ग्रहण किया और इस संघटनको छोटीसी एक धार्मिक उपासना संस्थाका रूप दे दिया। इस संस्थाके अन्तर्गत बहुतसे स्थानीय पुरोहित थे जो उसके लिए धन एकत्र करते थे और उसके नामपर ताबीज बेचते थे। इस संस्थाके अनुयायी मुख्यतः रिक्शावाले कुली, फेरीवाले, खोमचेवाले आदि होते थे। उसके उत्तराधिकारी चाङ् कुआन-पीके, जिसने पूजनीय साधुकी उपाधि ग्रहणकर ली थी, तत्त्वावधानमें इस संघटनने एक प्रकारके गुप्त समाजका रूप ग्रहण कर लिया और इसकी शाखाएँ चीनके विभिन्न भागोंमें फैल गयीं। चाङ् कुआन-पीने चीनके विभिन्न स्थानोंमें आश्रम स्थापित कर लिये और धीरे-धीरे वह चीनकी आन्तरिक राजनीतिमें एक प्रभावशाली व्यक्ति बन बैठा। इसमें सन्देह नहीं कि जापानियोंने उसका उपयोग अपने एक एजेण्टके रूपमें किया था। जापानी युद्धके बाद कोमिंतांगके लिए भी यी कुआन-ताओ उपयोगी सिद्ध हुआ। १९४७ में चेङ् तूमें पूजनीय साधुकी मृत्यु हो गयी। उसके स्थानपर उसकी पत्नी सुन् सू-चेन इस सम्प्रदायकी परमाधिष्ठात्रीके रूपमें प्रतिष्ठित हो गयी।

इस सम्प्रदायका सार्वजनिक संघटन कुछ-कुछ निम्नलिखित प्रकारका था—चीनके सभी प्रमुख नगरोंमें इसके उपासनागृह थे। इन उपासनागृहोंकी अनेक शाखाएँ भी खुली हुई थीं। इसके अतिरिक्त विभिन्न परिवारोंमें इसकी पीठिकाएँ स्थापित थीं। इन शाखाओं-पीठिकाओंमेंसे

प्रत्येकका निर्देशक, उपनिर्देशक, पुरोहित और दीक्षागुरु (सान त्साई) होता था। 'पलानचेटों'से ईश्वरी आदेश प्राप्त होते थे जिन्हें दीक्षित लोग ग्रहण किये करते थे। दीक्षितोंको एक गम्भीर धार्मिक शपथ लेनी पड़ती थी और गुरु-दक्षिणा देनी पड़ती थी। दक्षिणा देनेके बाद दीक्षित व्यक्तिको चुयेह, कुआन और यिन नामक तीन निधियाँ प्रदानकी जाती थीं। चुयेहके अन्तर्गत पाँच प्रकारके यन्त्र-मन्त्र दिये जाते थे जिनसे दीक्षित व्यक्तिको दीर्घ आयुष्य, शारीरिक शक्ति-सौख्य आदिकी प्राप्ति होती थी। पुरोहित द्वारा दिव्य आत्माके आवाहन किये जानेको कुआन कहते थे। इससे दीक्षित व्यक्तिमें विशेष गुण पैदा हो जाते थे और वह परमात्माका प्रियपात्र बन जाता था। पूजाविधिको युवान कहते थे। ये सारे विधि-विधान बिलकुल रहस्यमय और गुप्त थे।

इस विचित्र सम्प्रदायके पुरोहितगण धार्मिक अनुष्ठानोंको रहस्यात्मक बना देने की महत्ता अच्छी तरह समझते थे, इसीलिए इन्होंने इन रहस्यात्मक विधि-विधानोंसे भोली-भाली जनताके एक वर्गपर बहुत बड़ा अधिकार प्राप्त कर लिया था। कोमिंतांग अधिकारियोंने इन पुरोहितोंको अपने प्रचारका उपयोगी साधन समझा था। जनतामें अत्यन्त भ्रामक अफवाहोंको फैलानेमें इन पुरोहितने कोमिंतांग के दलालोंका काम किया। मैं कई महीनोंसे जनतामें इनके द्वारा फैलाई गयी विलक्षण भविष्यवाणियों तथा नौकर-चाकरोंमें दैवी साक्षात्कार सम्बन्धी उत्तेजना आदिकी अनेक कहानियाँ सुन रहा था। एक दिन मेरे एक मित्रने मुझे बताया कि सेण्ट्रल पार्कमें गत कई दिनोंसे सरकारी अधिकारियोंके तत्त्वावधानमें एक अद्भुत प्रकारका प्रदर्शन चल रहा है जिसे देखनेके लिए भीड़ एकत्र रहती है। मैंने अपने तीसरे सचिव डाक्टर वीरेन्द्रकुमारको, जो चीनी भाषा धाराप्रवाह बोल लेते थे, उसे देखनेके लिए भेज दिया। उन्होंने शामको उस प्रदर्शनका विवरण देते हुए बताया कि वहाँ यी कुआन-ताओकी परमाधिष्ठात्री तथा उच्च पुरोहित जनताके सामने अपनी धूर्तविद्याकी पोल खोल रहे हैं और उनके गुप्त धार्मिक अनुष्ठानोंका सार्वजनिक ढंगसे

प्रदर्शन भी हो रहा है। इस प्रकारसे जनताको यह बतलाया जा रहा है कि उन्होंने किस प्रकारकी धूर्तचिकित्सा और वागाडम्बरका जाल बिछा रखा है जिसमें भोली-भाली जनता फँसती रहती है।

केन्द्रीय जनवादी सरकारने यी कुआन-ताओको भंग करनेका निश्चय कर लिया था। उसने उसकी परमाधिष्ठात्री तथा उच्च पुरोहितोंको गिरफ्तार कर लिया और घोषित किया कि संघटनके जो सदस्य उसके द्वारा बाँटे गये ताबीजों और यन्त्रोंको लौटा देंगे उन्हें संघटन द्वारा ली गयी दक्षिणाकी रकम वापस कर दी जायगी। सरकारको यह मालूम था कि अन्धविश्वास जल्दी समाप्त नहीं होता, इसीलिए उसने इस सम्प्रदाय द्वारा की जानेवाली झाड़फूँक, जोग-टोटका और तरह-तरहके तिकड़मोंके भण्डाफोड़ करनेका निश्चय किया। परमाधिष्ठात्री और उच्च पुरोहितोंसे कहा गया कि वे सार्वजनिक रूपसे अपने अनुष्ठानोंका प्रदर्शन करें और जनताके सामने अपने तिकड़मोंका रहस्य खोल दें। इसके बाद उन्हें जनताके साथ किये गये विश्वासघातके लिए क्षमायाचना करनेके लिए बाध्य किया गया। यह आयोजन कई सप्ताहतक चलता रहा और यी कुआन-ताओ सार्वजनिक मनोरंजनका साधन बना रहा।

'पीले बैल'[1] जैसे पुराने समयके डाकूदलों और गिरोहों तथा गुप्त संस्थाओंके, जिनका सारे चीनमें जाल बिछा हुआ था, विरुद्ध नयी सरकारने कानूनी काररवाई तो की ही, मार्चके अन्ततक यह भी स्पष्ट होने लगा कि सरकार क्रान्तिविरोधियोंके विरुद्ध भी सार्वजनिक पैमानेपर काररवाई करने जा रही है। २६ मार्चको पीकिंगमें १९९ क्रांति विरोधी व्यक्तियों-को प्राण दण्ड दे दिया गया। इसके बाद मुझे विभिन्न सूत्रोंसे मालूम हुआ कि सारे देशमें ऐसी फौजी अदालतें कायम की गयी हैं जो कोमिंतांगके उन आदमियोंसे निबटेंगी जिन्हें च्यांग काई शेकके चीनकी मुख्य भूमिपर वापस आनेके समय विद्रोह करने तथा प्रतिरोध संघटित करनेके लिए चीनमें छोड़ दिया गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जनवादी सरकारने इस

१. एक गुप्त संघटनका नाम

छिपी हुई ताकतको नष्ट करनेके लिए जो कारगर कारर्वाइयाँ कीं उसके लिए उसके पास उचित कारण थे। यह बराबर कहा जाता था कि अमेरिकी गुप्तचर विभागके अधिकारियोंने (इनमें जेनरल विलोबीका नाम प्रायः लिया जाता था) ताइवानमें गये चीनियोंके सहयोगसे दक्षिणी चीनमें उतरनेकी योजनाएँ कार्यान्वित की हैं। अमेरिका और कोमिंतांग दोनोंको यह विश्वास था कि दक्षिणी चीन पीकिंगके विरुद्ध विद्रोह करनेको तैयार है। टोकियो और ताइपेहके बीच बड़ी दौड़-धूप मची रही और ताइवानसे चीनपर आक्रमण करनेकी घोषणाएँ भी होती रहीं। ऐसी स्थितिमें पीकिंगके अधिकारी खतरा उठानेको तैयार न थे। उन्होंने क्रांति-विरोधी और प्रतिक्रियावादी लोगोंको विघटितकर देनेके लिए जो व्यापक अभियान चलाया उससे ऐसा प्रतीत होता है कि साढ़े पाँच लाखसे भी अधिक ऐसे व्यक्तियोंके विरुद्ध सफल कारर्वाई की गयी जो या तो कोमिंतांगके सक्रिय एजेण्ट थे अथवा जिनपर ताइपेहके साथ सहानुभूति रखनेका सन्देह था।

क्रान्तिविरोधियोंके विघटनकी कारर्वाईको कुछ मानोंमें गृहयुद्धका ही एक अंग मात्र समझा जा सकता है। उससे मुझे उतनी परेशानी नहीं हुई जितनी मिशनरियों तथा विदेशी ईसाई पादरियों और महिलाओंके प्रति बरती जानेवाली सरकारी नीतिसे हुई। ईसाई मिशनरियोंने पूर्वीय देशोंमें जिस प्रकारका कार्य किया है उसका मैं सारे जीवन विरोधी रहा हूँ। मैंने मिशनरियोंको हमेशा आध्यात्मिक दृष्टिसे उद्धत, दूसरोंके विश्वास और धर्मके प्रति अवज्ञा और उपहासकी भावना रखनेवालों, अपने सामाजिक उद्देश्योंमें विध्वंसक तथा यूरोपकी श्रेष्ठताके सिद्धान्तके प्रचारकोंके रूपमें देखा है। मिशनरियोंके विरुद्ध चीनका अभियोग तो और भी स्पष्ट और निर्विवाद है, क्योंकि चीनमें ईसाई प्रचारक दलका कार्य विदेशोंके विशेषाधिकारके संरक्षणमें चलता रहा है। इन सारी बातोंके बावजूद सरकार यूरोपीय मिशनरियोंके प्रति जो नीति बरत रही थी उसे मैं समझ नहीं पाता था। जो ईसाई

प्रचारक चीनसे चले जाना चाहते थे उन्हें बाहर जानेके लिए अनुमति पत्र नहीं मिलते थे। उनका जीवन बिलकुल शोचनीय हो गया था। जनता उनके खिलाफ बिलकुल असाधारण ढंगके अभियोग लगाती थी। विभिन्न देशोंकी कैथोलिक महिला पादरियोंके विरुद्ध अपने अनाथालयोंमें बड़े पैमानेपर बच्चोंकी हत्या करनेके अभियोग लगाये जाते थे और इसलिए उनपर मुकदमे चलते थे। जिस ढंगसे ये मुकदमे चलाये जाते थे उसे भी शोभन नहीं कहा जा सकता। मुकदमेकी कार्यवाहियाँ बाकायदे प्रसारित की जाती थीं। इस सम्बन्धमें मैं कुछ अधिक तो नहीं कर सकता था, किन्तु मानवता और चीनके एक मित्रके रूपमें उसके सुनाममें रुचि रखनेके कारण मैंने इस मामलेपर श्री चाऊ एन-लाईसे एकाधिक बार विचार-विमर्श किया। इस काममें मुझे स्विस दूत क्लीमेण्टी रेजोनिकोकी बड़ी सहायता मिली थी। वे बड़े ही संवेदनशील और समझ-बूझवाले व्यक्ति थे। उत्साही कैथोलिक और अपरिवर्तनवादी होते हुए भी पश्चिमके प्रति पीकिंगका परिवर्तित दृष्टिकोण यदि उनको भाता नहीं था तो भी उसे समझनेके लिए उनमें पर्याप्त सहानुभूति थी। मिशनरियोंकी स्थितिमें कुछ सुधार लानेके लिए हमलोगोंने सम्मिलित प्रयत्न किया। मैंने इस प्रश्नपर श्री चाऊ एन-लाईसे बातें करते हुए बराबर इस बातपर जोर दिया कि यदि मिशनरियोंको बाहर जानेके लिए अनुमतिपत्र दे दिये जायँ तो इससे चीनका कोई नुकसान न होगा, किन्तु मुझे कभी भी इस प्रश्नपर संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। मुझे केवल नानकिंग स्थित पोपके प्रतिनिधि आर्क-बिशप श्री रिबरीके मामलेमें थोड़ी सफलता मिली। कम्युनिस्टोंका पीकिंगपर कब्जा होनेके बाद वे वहाँ पोपके प्रतिनिधिके रूपमें बने रहे। कम्युनिज्मके प्रति वैटिकन (पोपनगरी) का दृष्टिकोण सैद्धान्तिक आधारपर तथा पोलैण्ड और हंगरी जैसे देशोंमें, जिनकी परम्परासे पोपके प्रति भक्ति रही है, कैथोलिक चर्चके प्रति होनेवाले व्यवहारके कारण ऐसा शत्रुतापूर्ण रहा है कि उसमें समझौतेकी कोई गुञ्जाइश ही नहीं हो सकती थी। चीनके ईसाई समुदायमें

कैथोलिकोंका वर्ग सबसे महत्त्वपूर्ण था। आर्क बिशप श्री रिबरीका यह कार्य था कि वे चीनके कैथोलिक ईसाइयोंको अपने धर्मके प्रति निष्ठावान् रखें और उस समय एक राष्ट्रीय कैथोलिक चर्चकी स्थापनाके लिए जो प्रयत्न हो रहे थे, उनका प्रतिरोध करनेके लिए उन्हें सहायता और प्रोत्साहन दें। लीजन आफ मेरी (एक कैथोलिक संस्था) तथा अन्य संघटनोंके माध्यमसे वे इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए बड़ा परिश्रम कर रहे थे। इससे चीनके इस अभियोगको औचित्य मिल गया कि वे एक विदेशी राजके एजेण्ट हैं और चीनके मामलेमें दस्तन्दाजीकर रहे हैं। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उनसे पूछ-ताछ होने लगी। इस परिस्थितिमें मैंने सोचा कि इस मामलेमें श्री चाऊ एन-लाईसे वार्ता करना शायद उपयोगी साबित हो। मैंने श्री चाऊ एन-लाईसे बिलकुल व्यक्तिगत आधारपर यह अनुरोध किया कि उन्हें विध्वंसक कार्योंके अभियोगपर कैद न रखकर चीनसे बाहर भेज दिया जाय। मैंने उन्हें बताया कि आर्क बिशप नानकिंगमें मेरे सहकर्मी रहे हैं और मेरे मित्र हैं। उनके चरित्रके सम्बन्धमें मेरी ऊँची धारणा है। श्री चाऊ एन-लाईने मेरे अनुरोधका कोई उत्तर तो नहीं दिया किन्तु जब कुछ दिनों बाद आर्क बिशपको चीनसे बाहर भेज दिया गया तो मैंने सोचा कि शायद मैं अपने मित्रके लिए कुछ कर सका। इसके बाद बहुत जल्दी ही मुझे श्रीरेजोनिकोकी मार्फत पोपका एक धन्यवादका सन्देश भी प्राप्त हुआ।

श्रीरेजोनिको और मैंने मिलकर दो व्यक्तियोंकी अपनी एक गैर सरकारी समिति-सी बना ली। इसका कार्य इटली, फ्रान्स, बेलजियम जैसे देशोंके, जिनका पीकिंगमें प्रतिनिधित्व नहीं होता था, लोगोंकी सहायता, उनके लिए चीनसे बाहर जानेका अनुमतिपत्र प्राप्त करनेका प्रयत्न और यदि वे जेलमें बन्द हों तो उनकी स्थितिके सम्बन्धमें साधारण जानकारी प्राप्त करना था। मैं नहीं समझता कि हमें अपने इस कार्यमें कोई विशेष सफलता मिली, किन्तु हमलोग बराबर चीनी अधिकारियोंको अपना दृष्टिकोण समझाते रहे और कभी कोई

भी अवसर मिलने पर सहायता कार्यके लिए उसका उपयोग करते रहे।

इस समय पीकिंगका साधारण जीवनप्रवाह अप्रिय न था। कम्युनिस्ट लोग जिसे 'सांस्कृतिक जीवन' कहते हैं उसे सक्रिय रूपसे प्रोत्साहन दिया जा रहा था। अन्तरराष्ट्रीय क्लबका सायंकालीन वातावरण नियमित रूपसे संगीतमय बना रहता था। चीनी कलाकार समय-समयपर नृत्य-नाट्य और दूसरे प्रकारके सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहते थे। मुझे पीकिंगका गीतिनाट्य (ऑपेरा) सबसे अधिक पसन्द आया। कम्युनिस्टोंने गीतिनाट्योंके पुराने रूपविन्यासको तो कायम रखा है, किन्तु उनके विषय वस्तुमें परिवर्तन कर दिया है। इस समय 'तीन राज्य' और 'गंधिक और नर्तकी' (द आयलमैन ऐण्ड द डांसिंग गर्ल)[१] जैसी रचनाओंकी पुरानी कहानियाँ तथा रोमानी ढंगके नाटक लोकप्रिय नहीं रह गये हैं। अब सुप्रसिद्ध गीति-नाट्य 'सफेद बालोंवाली लड़की' जैसे नाटकोंको ही अधिक पसन्द किया जाता है जिनकी विषयवस्तु वर्ग संघर्षपर ही आधृत होती है। 'सफेद बालोंवाली लड़की' में एक अत्यन्त लोकप्रिय और प्राचीन कलारूपका उपयोग प्रचारके लिए किये जानेके अतिरिक्त और कोई खास बात नहीं है, किन्तु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि जिस रूपमें इसे प्रस्तुत किया गया है वह अत्यन्त प्रभावकारी और उच्च कलात्मक गुणोंसे समन्वित है। पीकिंगके नृत्य-नाट्योंकी प्राचीन कृत्रिमताओंको सरल कर दिया गया है, किन्तु उसकी शैलीकी प्राचीनता अक्षुण्ण रखी गयी है। 'सफेद बालोंवाली लड़की' में आधुनिक नाटकोंके मानसिक द्वन्द्व और प्रमुख पात्रोंके सुन्दर अभिनयका ऐसा सामंजस्य उपस्थित किया गया है जिससे दर्शकोंका ध्यान इसके अन्दर आयी राजनीतिक रुक्षताकी ओर नहीं जाता।

'पिओनी पुष्पागारकी कहानी'[२] शीर्षक नाटकमें सुप्रसिद्ध नारी-

---

१. एक चीनी नाटक।

२. द लीजेण्ड आव द पेओनी पैविलियन—एक पुराना चीनी नाटक।

चरित्र अभिनेता श्री मी लाङ्-फाङ्का अभिनय मुझे अत्यधिक रोचक लगा था। जिस समय पहली बार मैंने श्री मी लाङ्-फाङ्को एक लड़कीके रूपमें अभिनय करते देखा तो मैं बिलकुल अवाक् रह गया। उस समय श्री मी ५६ वर्षके थे। उनका अभिनय इतना प्रभावशाली और ऐसा वास्तविक था कि जबतक मुझे यह नहीं बतलाया गया कि अभिनेता एक पुरुष हैं और उनकी अवस्था ५५ के ऊपर है, मैं यही समझता था कि श्री मी लाङ्-फाङ् एक नवयुवती हैं। इस प्रसंगमें मुझे श्री एलेन टेरीकी याद आती है। उनकी अवस्था ६० से भी ऊपर थी। उन्होंने १९१७ में शेक्सपीयरके त्रिशती समारोहके अवसरपर पोर्शियाका अभिनय किया था, किन्तु उनका अभिनय सायास प्रतीत होता था। यह साफ मालूम पड़ता था कि कोई वृद्ध महिला एक अतीत वातावरणको अपने अभिनयमें उतार लानेके लिए जी-तोड़ प्रयत्न कर रही है। श्री मी लाङ्-फाङ्के अभिनयमें प्रभावसृष्टिके लिए ऐसा कोई आयास नजर नहीं आता था। उनका अभिनय बिलकुल स्वाभाविक था और ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें नवयुवतीसुलभ हृदय सहज ही प्राप्त है।

उक्त गीतिनाट्य मिङ् युगका एक कुन गीतिनाट्य[1] था। इसमें एक बहुत ही मामूली सी सरल कहानी है। एक नवयुवती अपनी सखीके साथ उद्यानमें टहलनेके लिए जाती है। वसन्तका आगमन हो चुका है। स्वभावतः उसकी कल्पना प्रेमकी ओर मुड़ जाती है। वासन्ती सुषमाकी अभ्यर्थनामें उद्यानमें कुछ नृत्य और संगीत होता है। अपने एकान्त कक्षमें लौटनेपर नायिका सो जाती है। स्वप्नमें उसकी भेंट अपने प्रियतमसे होती है। स्वप्नमें ही वे दोनों पहाड़ियों और घाटियोंमें घूमने निकल जाते हैं। इस आनन्द विहारके बाद जब नायिकाकी नींद खुलती है तो उसकी माँ उसे आलसी और निकम्मी बताते हुए खरी-खोटी सुनाती है। पूरी कहानीमें अभिनय, नृत्य और संगीतके लिए अनेक अवसर आते हैं और सभी अवसरोंपर श्री मी लाङ्-फाङ् उच्चकोटिके अभिनेताके रूपमें

१. एक प्रकारका क्षेत्रीय नाटक।

अपना सिक्का जमा देते हैं। इसके बाद मुझे कई नाटकोंमें उनका अभिनय देखनेका मौक मिला। श्रीमती पण्डितके नेतृत्वमें चीन गये सद्‌भावना मण्डलके सम्मानमें प्रस्तुत नाटकमें भी उन्होंने अभिनय किया था। मुझे बताया गया कि यह नाटक उन्होंने ही लिखा भी था। उनका अभिनय देखने में पहली बार मुझे जो आनन्द मिला था वही आनन्द मुझे हर बार प्राप्त हुआ।

पीकिंगके चीनी उपाहारगृह निरन्तर मौज-मस्तीके स्रोत बने रहते थे। हम उनकी खोजमें सारे पीकिंगका चक्कर बड़े उत्साहसे लगाते फिरते थे। क्रिस्टाइन कुङ् नामकी एक चीनी युवती, जो मेरी पुत्रीकी सहेली थी, इन अभियानोंमें हमलोगोंके साथ रहा करती थी। हमलोग प्रायः ऐसे उपाहारगृहोंका चुनाव करते थे जहाँ विशेष प्रकारके प्रान्तीय व्यंजन सुलभ हो सकें। इन असाधारण उपाहारगृहोंको खोजनेमें हमें जो परेशानी उठानी पड़ती थी, इनके व्यञ्जनोंको असाधारण स्वाद और विशेषताओंसे हमें उसका पूरा प्रतिफल मिल जाता था। इन उपाहारगृहोंमें बेल टावरके निकटस्थ मंगोलियन उपाहारगृह सम्भवतः सबसे प्रसिद्ध और दिलचस्प है। दुर्गन्धपूर्ण वातावरणसे घिरी हुई एक सँकरीसी सड़कके किनारे एक टूटी-फूटी झोपड़ीमें स्थित यह उपाहारगृह एक आश्चर्यजनक जगह है। इसके सामने पीहाई झीलका एक जलस्रोत पड़ता है। इसमें केवल तीन छोटे-छोटे कमरे हैं। उत्तरकी बर्फीली तेज हवा बराबर इसकी छतके खुले सूराखोंसे आती रहती है, किन्तु उपाहारगृह बहुत ही सावधानीसे साफ-सुथरा रखा जाता है। बीचके कमरेमें एक बड़ा-सा चूल्हा रखा हुआ है जिसपर ग्राहक अपने लिए मांस खुद पकाता है। उपाहारगृहके परिवेषक मंगोलियाका प्रसिद्ध भेड़का मांस काट-धोकर तैयार करते हैं और ग्राहकके सामने एक तश्तरीमें ले आते हैं। फिर इसे पकाकर तैयार करनेका काम ग्राहकका होता है। मैंने इसे मसाले और कुछ सब्जियाँ मिलाकर कछुएकी पीठके आकारकी एक छिछली कड़ाहीमें रख दिया। इस कड़ाहीके नीचे बराबर तेज आग जलती रहती है। चापस्टिकसे मांस-

को तबतक उलटते-पलटते रहना चाहिये जबतक वह पूरी तरह पक न जाय। एक प्यालेमें कुचले हुए अंडों और शक्करका शोरबा तैयार कर लिया जाता है। फिर इसी शोरबेमें पके हुए मांसको डाल दिया जाता है। फिर इस तैयार व्यंजनका आप चूल्हेके पास ही खड़े-खड़े स्वाद लीजिये। एक प्यालेके समाप्त होनेपर फिर दूसरे प्यालेके लिए मांस पकाना शुरू किया जाता है।

उक्त उपाहारगृहमें मुझे प्रसिद्ध न्यूजीलैण्डवासी श्री रेवे ऐलेका बहुत ही रोचक अनुभव प्राप्त हुआ। चीन-जापान युद्धके समय जिन औद्योगिक सहकारी समितियों (इण्डस्को) की हम चर्चा सुना करते थे श्री ऐले उनके प्राण थे। अब वे सानतान स्कूलका संचालन कर रहे हैं। इस स्कूल द्वारा वे चीनके गाँवोंमें वैज्ञानिक तरीकों और हुनरोंका प्रचार कर रहे हैं जिससे गाँवोंकी उत्पादन-प्रणालीमें परिवर्तन लाया जा सके। श्री ऐले भारी डील-डौलके देखनेमें सुन्दर आदमी हैं। स्वभावके विनोदी और भावनाओंमें उदार हैं। उनसे बातें करते हुए कोई यह सोच भी नहीं सकता कि वे चीनके अनजान देहाती क्षेत्रोंमें पन्द्रह वर्षोंसे रहकर जनताको शिक्षित बनानेका कार्य कर रहे हैं। वे एक नये ढंगके विलक्षण मिशनरी हैं। अब वे इस बातको बिलकुल नहीं छिपाते कि वे कम्युनिस्ट हैं। उन्होंने मुझे बताया कि सर राल्फ स्टीवेंसनने उनके और उनके कार्यके बारेमें जो अच्छी राय कायम की थी उसीके कारण वे कोमिंतांग सैनिकों द्वारा गोलीका निशाना बनाये जानेसे बच सके थे।

डाक्टर अटल द्वारा, जिनके नेतृत्वमें १९३७ में भारतीय चिकित्सक सेवादल चीन आया था, दी गयी एक दावतमें मेरी श्री रेवे ऐलेसे मुलाकात हुई थी। इस दावतमें मेरे अतिरिक्त आस्ट्रेलियाके संवाददाता श्री बर्चेट तथा एक शामी डाक्टर, जिनका चीनी नाम मा हाई-ताई है, शामिल हुए थे। श्री मा हाई-ताईने एक चीनी सिनेतारिकासे शादीकी है। श्री बर्चेट शान्तिके जबर्दस्त समर्थक थे। उनसे मिलकर ऐसा प्रतीत

होता था कि उनका इस बातमें दृढ़ विश्वास है कि वे शान्ति-कांग्रेसके नारोंको जोर-जोरसे चिल्लाकर संसारकी रक्षा कर रहे हैं। श्री मा हाई-ताई अमेरिकामें १९ वर्षतक रह चुके थे। गत बारह वर्षोंसे वे चीनी कम्युनिस्टोंके साथ काम कर रहे थे। वे येनानमें पहलेपहल आ बसनेवाले विदेशियोंमेंसे थे। तबसे वे बराबर चीनमें ही रह रहे थे। उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्रालयमें नौकरी भी कर ली थी। उनकी पत्नी, जो एक सिनेमा अभिनेत्री थीं, असाधारण सुन्दरी थीं। देखनेमें वे एक अभिजात महिला और किसी कान्वेण्ट स्कूलकी काउण्टेस सी लगती थीं। उनका वार्तालाप बड़ा ही रोचक और बुद्धिमत्तापूर्ण होता था। संसारकी गतिविधिके प्रति वे काफी जागरूक मालूम पड़ती थीं।

श्री रेवे ऐले और श्री मा हाई-ताई दोनों ही बड़े भोजनभट्ट थे। दोनों ही खानेमें जैसे एक दूसरेसे होड़ लेते हुए चूल्हेके पास खड़े हो गये और कमसे कम बारह तश्तरी मांस पकाकर उड़ा गये। मैं समझता हूँ कि इस प्रकार उन्होंने इस मंगोल उपाहार-गृहमें भी खानेका एक रेकर्ड कायम कर दिया। हमलोगोंकी बातचीत उस समय अमेरिकी प्रचारसे लेकर चीनी नामोंतक न जाने किन-किन विषयोंपर हुई। डाक्टर अटल, रेवे ऐले और मा हाई-ताई तीनों येनानमें रह चुके थे। इसलिए हमको उस तूफानी युगके अनेक संस्मरण सुननेको मिले जब कि श्री माओ त्से-तुंग और उनके साथी गुफाओंमें रहते और वहींसे सारे चीनमें छापेमार युद्धका संचालन करते थे।

चीनके आक्रामक घोषित कर दिये जानेके बाद कोरियाई शान्ति सम्बन्धी राजनीतिक काररवाई करीब-करीब ठप पड़ गयी थी किन्तु मैक आर्थरके पदच्युत कर दिये जानेके बाद फिर कुछ सरगरमी नजर आने लगी। ११ अप्रैलको सायंकाल ७ बजे मैंने बी० बी० सी० रेडियोपर सुना कि श्री ट्रूमनने सभी कमानोंपरसे मैक आर्थरका नियन्त्रण समाप्त कर दिया है। प्रशान्तस्थित मित्र सेना तथा संयुक्त राष्ट्रसंघकी सेनाओंके सर्वोच्च सेनापतिके पदसे अपदस्थ और महान्

मिकाडो[1] की पदवीसे वंचित होकर मैक आर्थरकी, जो यह सोचते थे कि वे किसी भी व्यक्ति को चुनौती देते हुए मनमाना करते जा सकते हैं, स्थिति उस पादरीके समान हो गयी जिसका चोंगा उसकी अनिच्छाके बावजूद किसी बड़े अधिकारीने उतरवा लिया हो। लोकतन्त्रमें ऐसी ही विलक्षण शक्ति होती है। विशाल वाहिनियोंकी कमान संभालनेवाला और एक समयमें एक विशाल साम्राज्यपर अपना सर्वोच्च नियन्त्रण स्थापित कर लेनेवाला सबसे शक्तिशाली सेनानी एक मामूलीसे आदेशसे अपदस्थ कर दिया जाता है और उसके सामने सिवा इसके दूसरा कोई चारा नहीं रह जाता कि वह घुटने टेक दे और बिदा हो जाय। सारे संसारने इस घटनाकी ओर प्रसन्नतामिश्रित आश्चर्यकी दृष्टिसे देखा किन्तु यह अजीबसी बात है कि चीनने इस मामलेमें कोई दिलचस्पी न दिखाई। चार दिनोंतक चीनी समाचारपत्रोंमें मैक आर्थरकी बर्खास्तगीके सम्बन्धमें कोई टीका-टिप्पणी नहीं की गयी। १५ वीं तारीखको एकाएक पत्रोंमें इस सम्बन्धमें लेखोंकी भरमार हो गयी। इन सभी लेखोंका एक ही अभिप्राय था—मैक आर्थरको इसलिए हटाया गया कि वे पराजित हो गये थे। कोरियामें अमेरिकाको जो मुँहकी खानी पड़ी है ट्रूमन उसका सारा दोष मैक आर्थरके मत्थे मढ़ना चाहते हैं। सावधानीसे विचार करनेके बाद मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा कि मैक आर्थरके पतनसे तत्काल शान्तिकी संभावनाएँ नहीं बढ़ेंगी। मैक आर्थरकी बरखास्तगीके फलस्वरूप अमेरिकामें उत्पन्न होनेवाली राजनीतिक स्थितिके कारण ट्रूमनके लिए शान्तिके सम्बन्धमें कुछ कहना कठिन हो जायगा क्योंकि मेरा अनुमान था कि रिपब्लिक पार्टीके लोग राष्ट्रपतिके इस कार्यको बहाना बनाकर अपना प्रचार करने और इससे पूरा-पूरा लाभ उठानेका कोई भी मौका हाथसे न जाने देंगे।

भारत सरकार मैकआर्थरकी बरखास्तगीसे उत्पन्न होनेवाली नयी स्थितिका लाभ उठानेके लिए मुझपर बराबर दबाव डाल रही थी किन्तु

१. जापानके सम्राट्की उपाधि।

मेरे विचारसे इससे स्थितिमें कोई खास अन्तर नहीं आया था क्योंकि ट्रूमनने केवल मैकआर्थरकी 'विपथगामिता' की, मनमाने ढंगसे अपने ही हाथ दिखाते जानेकी उनकी प्रवृत्तिकी ही निन्दा की थी। ताइवान तथा पीकिंग सरकारको मान्यता प्रदान करनेके सम्बन्धमें अमेरिकी नीतिमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। फिर भी मैं श्री चाङ् हान-फूसे मिला और कुछ मैत्रीपूर्ण रुख अख्तियार करनेके लिए उनपर दबाव डाला किन्तु मेरे अनुरोधका उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने मेरे प्रयत्नका कोई उत्तर नहीं दिया। अतः मुझे चुप हो जाना पड़ा।

इसी समय हम चीनसे लाल ज्वार और चावल लेनेकी बात चला रहे थे। इससे पश्चिमी राष्ट्रोंको कुछ आश्चर्य हुआ क्योंकि उनके यहाँ बराबर प्रचार किया जा रहा था कि चीनमें 'अकालकी स्थिति' उत्पन्न हो गयी है। हांगकांगसे चीनके विभिन्न क्षेत्रोंमें कम्युनिस्टोंके दमन और अत्याचारके कारण व्यापक खाद्याभावकी मनगढ़न्त कहानियाँ प्रचारित की जा रही थीं। इससे पश्चिमी राष्ट्रोंने चीन द्वारा भारतको गल्ला बेचे जानेकी बातपर कोई विशेष विश्वास नहीं किया। जब चीनसे गल्ला खरीदनेके समझौतेपर हस्ताक्षर हो गये और डेरिन बन्दरगाहमें जहाजोंपर गल्लेकी लदाई शुरू हो गयी तो पश्चिमी राष्ट्रोंने अपना स्वर बदल दिया। अमेरिकी पत्रोंने यह कहना शुरू कर दिया कि चीन द्वारा भारतके हाथ गल्ला बेचनेका समझौता एक राजनीतिक चाल है। भारतको प्रभावित करनेके लिए चीन अपनेको भोजनसे वंचित कर रहा है। ये सब तो प्रचारकी बातें हुईं। मुझे इस बातसे बड़ी प्रसन्नता हुई कि जिस समय भारतमें खाद्यान्नकी स्थिति बड़ी गम्भीर हो गयी थी और हमें अकालका सामना करना पड़ रहा था चीन हमें गल्ला देनेमें समर्थ हो सका।

जाड़ा बीत जानेके बाद मैंने वाई चिया-पूसे अनुरोध किया कि वह मुझे चीनके विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रोंमें जानेकी सुविधा प्रदान करे जिससे मैं भूमि-सुधार सम्बन्धी सरकारी नीतिके, जिसके बारेमें सर्वत्र बड़ी चर्चा हो

रही थी, परिणामोंका अध्ययन कर सकूँ। मेरा अनुरोध स्वीकार करनेमें चीनी सरकारको कोई कठिनाई न हुई। मेरी यात्राके लिए सर्वप्रथम जिन गाँवोंको चुना गया वे मार्कोपोलो पुलसे कुछ मील उत्तर पड़ते थे। हमारे साथ कूटनीतिक शिष्टाचार विभागका एक अधिकारी और किसान संघके दो सदस्य भी थे। चीन-जापान युद्धके प्रसिद्ध घटनास्थल मार्कोपोलो पुल तक पहुँचनेके पूर्व कोई बहुत खास बात नहीं दिखाई पड़ी। इमारतोंके बनाने और नहरोंकी मरम्मत आदिका कार्य हो रहा था। पुलके दोनों किनारोंपर कड़ा पहरा था। पुल पार करके हम एक ऊँचे-से टीलेपर पहुँचे। यह दिल्लीके टीलेसे मिलता-जुलता था और प्रतिरक्षाके लिए एक स्वाभाविक दुर्गका काम करता था। यहाँ हमने बड़े पैमानेपर सैनिक तैयारीका दृश्य देखा। पहाड़ीके पास ही हलके टैंक तथा अन्य सैनिक गाड़ियाँ लगी हुई थीं। इनका एक उद्देश्य लुटेरों और डाकुओंसे प्रदेशकी रक्षा करना तो था ही, दूसरा उद्देश्य उस खतरेके विरुद्ध एहतियाती काररवाई करना भी था जो शत्रुके विमानोंसे ऐसे व्यक्तियोंके उतरनेसे हो सकता था जो उत्तरसे शेष प्रदेशके सैनिक वार्ता-वहनके समस्त साधनोंको ध्वस्त कर सकते थे। सारे प्रदेशमें छोटे-छोटे कारखानोंका जाल-सा बिछा था। इससे पता चलता था कि इस क्षेत्रमें जबर्दस्त सैनिक तैयारी जारी है। हम निर्दिष्ट गाँवमें करीब सवा-बारह बजे पहुँचे। अब मुझे इस गाँवका नाम भूल गया है। कम्युनिस्ट चीनका यह पहला गाँव था जिसे मुझे देखनेका पहले-पहल अवसर मिला। इस गाँव और यहाँके अपने अनुभवोंका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना रोचक होगा। बादमें एक वर्षके अन्दर मैंने चीनके विभिन्न भागोंमें ऐसे और कई गाँव देखे।

गाँवमें पहुँचनेपर ग्राम-समितिके अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सदस्योंने हमारा स्वागत किया और हमें बड़े सौजन्यसे गाँवके स्कूलमें ले गये। ग्राम समितिका चुनाव गाँवके सभी बालिग लोग मिलकर करते हैं। यह जरूर है कि पुराने भूस्वामियोंको, जिन्हें अब भूस्वामित्वसे वंचित कर दिया

गया है, मतदानका अधिकार नहीं है। आरम्भमें समितिके सभी सदस्य या तो भूमिहीन मजदूर या गरीब किसान होते थे। गरीब किसानसे तात्पर्य उस किसानसे है जिसके पास एक एकड़से भी कम भूमि होती है और जो इस भूमिमें स्वयं अपने श्रमसे खेती करता है। एक स्थानपर बैठकर प्रथानुसार चाय पी लेनेके बाद ही मैंने अपने दुभाषिये डाक्टर कुमारके माध्यमसे प्रश्न पूछने शुरू कर दिये—ग्रामसमितिके अध्यक्षके पास पहले कितनी जमीन थी? इस समय कितनी है? उसके पास कितने मवेशी और खेतीके औजार हैं? जमीनसे वह कितना पैदा कर लेता है? वह सरकारको क्या देता है? खर्चा काटकर उसकी कुल आय कितनी होती है? इस आयको वह किस प्रकार खर्च करता है? उपाध्यक्ष बहुत ही समझदार युवक किसान था। उसने अध्यक्षके प्रवक्ताका काम किया। उसने मेरे सभी प्रश्नोंका पूरा-पूरा और साफ-साफ उत्तर दिया। उसने कोई लम्बे-चौड़े दावे नहीं किये। उत्पादनके जो आँकड़े उसने बताये उनमें भारतके सामान्य क्षेत्रोंके उत्पादनके आँकड़ोंसे कोई खास फरक न था। जिस चीजमें मेरी सबसे ज्यादा दिलचस्पी हुई वह ग्रामीण जनतामें उत्पन्न नयी चेतनाकी लहर थी। समितिके सदस्य यद्यपि गरीब या भूमिहीन किसान थे किन्तु देशमें जो कुछ किया गया था उसे वे अच्छी तरह समझते और उसकी सराहना करते थे। वे मुझसे स्वतन्त्र और स्वाधीन लोगोंकी तरह बातें कर रहे थे। वे मेरे द्वारा उठाये गये प्रश्नोंपर जिस प्रकारसे विचार-विमर्शकर रहे थे उससे पता चलता था कि वे इन प्रश्नोंके स्थानीय परिस्थितियोंपर पड़नेवाले प्रभावोंको अच्छी तरह समझते हैं। उदाहरणके लिए जब मैंने समितिके सदस्योंसे सहकारी कृषिकी सम्भावनाओंके सम्बन्धमें प्रश्न किया तो पहले तो वे कुछ उलझनमें पड़ गये किन्तु जब श्री कुमारने उन्हें मेरा अभिप्राय समझा दिया तो सब एक साथ ही बोल पड़े—हाँ, यह तो बिलकुल ठीक है। इसी विषयमें तो हमलोग भी बराबर विचार-विमर्श करते रहे हैं। हम मजदूरों और क्रयविक्रयके क्षेत्रमें सहकार स्थापित करनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

मैंने गाँवके स्कूलका भी घूमकर निरीक्षण किया। स्कूलमें आठ अध्यापक और ढाईसौ छात्र थे। यह एक प्राइमरी स्कूल था फिर भी इसमें काफी बड़ी उम्रके छात्र पढ़ रहे थे क्योंकि उन्हें जीवनमें स्कूल आनेका अवसर पहली बार मिला था। इसके बाद हमने खेतोंके ऐसे अनेक टुकड़ोंका निरीक्षण किया जिसपर उनका स्वामी अपने और अपने परिवारके परिश्रमसे खेती करता था। एक किसानने मुझे फसलोंके बोने-काटने आदिकी वहाँकी प्रचलित प्रणाली बतायी। मुझे खेतोंके निरीक्षण का पर्याप्त अनुभव है क्योंकि एक भारतीय देशी रियासतके प्रधानमन्त्रीका यह एक अनुपेक्षणीय कर्तव्य है। इसके अलावा मैं स्वयं खेतिहर परिवारमें ही पैदा हुआ हूँ। मुझे भारतमें खेतीकी इसी प्रकारकी परिस्थितियोंकी कुछ प्रत्यक्ष जानकारी भी है। इसलिए मैं उनकी समस्याओंके प्राविधिक पक्षपर भी विचार-विमर्श कर सका। जब उन्होंने इस विषयमें मेरी रुचि देखी तो अपनी अनेक बातें काफी विस्तारसे समझाया। उन्होंने मुझे बताया कि किस प्रकार वे अपनी छोटी-छोटी दिक्कतें दूर कर लेते हैं, कैसे किसान-संघसे उन्हें दूसरे गाँवोंका अनुभव प्राप्त होता रहता है आदि-आदि।

गाँवके सुदूर छोरपर बनी एक विशालकाय इमारतको देखकर उनके सम्बन्धमें प्रश्न करनेपर मुझे बताया गया कि यह एक मन्दिर है जिसे अब अनाथालय और वृद्ध लोगोंके आश्रयस्थलका रूप दे दिया गया है। यह गाँवकी सम्पत्ति है। इसकी देखभाल गाँवके ही लोग करते हैं। मन्दिरके आगे बढ़कर हमलोग सहकारी स्टोर पहुँचे। इसमें दैनिक उपभोगमें आनेवाली वस्तुओं और खादके कामके लिए सेमकी फलियोंके उपलोंका बड़ा अच्छा खासा स्टाक था। यहाँ जिस चीजने मेरा ध्यान सबसे अधिक आकृष्ट किया वह दीवालपर बहुत ही सुन्दर ढंगसे लटकाया गया 'देशभक्तिका प्रतिज्ञापत्र' थी जिसपर सहकारी समितिके सभी सदस्योंने हस्ताक्षर किये थे। इसमें अमेरिकी आक्रमणके विरुद्ध लड़ने, कोरियाकी सहायता और पितृभूमिकी रक्षा करनेके नारोंके अतिरिक्त उत्पादन बढ़ाने,

जन सम्पत्तिकी रक्षा करने तथा राजनीतिको और अच्छे ढंगसे समझने आदिकी प्रतिज्ञाएँ अंकित थीं। जनता द्वारा हस्ताक्षर किया गया यह ऐसा अनुबन्धपत्र था जिसे नयी सरकारने राष्ट्रीय एकता स्थापित करनेके लिए एक बहुत ही प्रभावकारी साधनके रूपमें प्रचलित किया था। बादमें मुझे अपनी यात्राओंसे मालूम हुआ कि यह प्रतिज्ञापत्र कैण्टनके सर्वोत्तम धानके खेतोंवाले गाँवोंसे लेकर गोबीके रेगिस्तानों तक—देशके एक छोरसे दूसरे छोर तक प्रचारित हो गया है।

इसके बाद मैं अपनेसे ही एक खेतिहर मजदूरके घरमें चला गया। इस घरमें केवल एक कोठरी थी। यह मिट्टीसे बना हुआ एक झोपड़ा था जिसे मकान मालिकने अभी हालमें ही अपने हाथोंसे तैयार किया था। मकान मालिक पहले एक भूमिहीन मजदूर था। जमीन मिलनेपर उसने अपने लिए यह मकान तैयार किया। मकान काफी साफ-सुथरा था और उसमें काफी जगह थी। कमरेके बीचोबीच शोभाके लिए एक सुन्दर-सा अलंकृत पात्र रखा हुआ था जो किसानकी सहज सांस्कृतिक चेतनाका प्रतीक था। जिस समय मैं कमरेमें दाखिल हुआ मकान मालिक वहाँ नहीं था। मेरे पहुँचते ही वह दौड़ा हुआ आया। उसके हाथ मिट्टीसे सने हुए थे क्योंकि वह खेतपर काम कर रहा था। उसने बड़े ही उत्साहसे मुझसे हाथ मिलाया। उत्साहमें उसे अपने हाथोंमें लगी मिट्टीका ध्यान नहीं रहा। उसने आतिथ्यमें मुझसे चाय स्वीकार करनेका आग्रह किया। गाँवके जिस दूसरे मकानमें मैं गया वह एक वृद्धा विधवाका था। वह जनवादी मुक्ति सेनाके एक सैनिककी माँ थी। इस मकानमें भी एक ही कमरा था। कमरेमें एक चीनी ढङ्गकी चारपाई (कांग) पड़ी हुई थी जिसपर चार बड़ी-बड़ी संदूकें रखी हुई थीं। उन संदूकोंके देखनेसे मुझे ऐसा मालूम होता था कि उनमेंसे कमसे कम दो उसे जमींदारके फाल्तू सामानोंके बँटवारेके समय मिली होंगी। इसके अतिरिक्त कमरेमें चीनी ढङ्गके अनेक अलंकृत पात्र, एक दीवाल घड़ी, उसके बहादुर बेटेकी एक फोटो और आँगनमें मुर्गियोंके दर्जनों बच्चे थे। वृद्धा महिलाने बड़े

ही शिष्टाचार और अनुकम्पापूर्वक एक डचेजके समान मेरा स्वागत किया। क्यों न हो? उसका बेटा बहादुर सैनिक था और शायद कोरियाके मोर्चेपर लड़ रहा था। उसने मुझसे अपने साथ फोटो खिंचानेका भी आग्रह किया।

गाँवका निरीक्षण करके मुझे मुख्य रूपसे यह अनुभव हुआ कि वहाँकी जनताकी रग-रगमें स्वतन्त्रता और आत्म-विश्वासकी महान् भावना भरी हुई है, उनमें अदम्यशक्तिका संचार हो गया है और वे कुछ ठोस कामकर डालनेके लिए बेचैन हैं। आर्थिक दृष्टिसे एक व्यक्तिके लिए तीन मो (एक एकड़का तीन-पाँचवाँ हिस्सा) जमीन कोई ज्यादा नहीं होती किन्तु भूमि-सुधारने किसानके हाथमें पड़ी हुई बेड़ियाँ काट दी हैं और वह मुक्त हो गया है। उसमें आत्म-सम्मान और गौरवकी नयी भावना जागृत हो गयी है। वस्तुतः यह एक महान् उपलब्धि है।

मईमें भारतसे एक गैरसरकारी सद्भावना-मण्डल चीन पहुँचा। चीन और भारतमें आगे होनेवाले ऐसे अनेक शिष्टमण्डलोंके आदान-प्रदानका इससे सूत्रपात होता है। यद्यपि यह सद्भावना-मण्डल गैरसरकारी था और इसके कुछ सदस्योंका सम्बन्ध देशके सर्वप्रमुख संघटनोंसे था फिर भी मैंने इसे सक्रिय रूपसे प्रोत्साहित किया। इसके कई सदस्योंको मैं वर्षोंसे बहुत अच्छी तरहसे जानता था इसलिए मैं ऐसा अनुभव करता था कि मैं इसके कार्योंमें अच्छी तरह योग दे सकता हूँ। मण्डलके नेता पण्डित सुन्दरलाल थे। उनमें सद्भावनाएँ और सत्प्रवृत्तियाँ भरी हुई थीं; उनका चरित्र भी ऊँचा है किन्तु वे थोड़ा उचितसे अधिक उत्साही हैं, जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। उनमें विवेचना बुद्धिकी थोड़ी कमी है। शिष्टमण्डलमें दिल्लीके स्कूल ऑव इकानामिक्सके संचालक डाक्टर वी० के० आर० वी० राव, प्रोफेसर मुहम्मद हबीब, उनके भाई, जामिया मिल्लियाके प्रधान प्रोफेसर मुजीब तथा अखिलभारतीय महिला सम्मेलनकी अध्यक्षा श्रीमती हन्ना सेन जैसे लोग भी शामिल थे। इनमेंसे किसीपर भी कम्युनिस्ट समर्थक होनेका आक्षेप नहीं किया जा

सकता। प्रोफेसर हबीब मेरे साथ ऑक्सफोर्डमें रह चुके थे। बादमें अलीगढ़में वे मेरे स्थानपर अध्यापक नियुक्त हुए। वहाँ वे आज भी इतिहास-विभागके प्रधान हैं। शिष्टमण्डलमें श्री मुल्कराज आनन्द और श्री करञ्जियाके कारण वामपक्षका भी अच्छा प्रतिनिधित्व हो गया था। श्री मुल्कराज आनन्दको मैं लन्दनमें उनके कालेजके दिनोंसे ही जानता रहा हूँ। ब्लिट्ज़के जानदार सम्पादक श्री करञ्जियाके निजी सामाजिक व्यवहारों और समस्याओंकी उनकी साधारण समझका उनके एक सनसनी फैलानेवाले साप्ताहिक पत्रके सम्पादकके सार्वजनिक रूपसे कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके चीन आनेके पहले उनसे मेरा केवल एक साधारण-सा परिचय था। ब्लिट्ज़ पढ़कर मेरे हृदयमें उनके पक्षमें कोई पूर्वाग्रह नहीं बन पाया था किन्तु पीकिंगमें मैं उन्हें और अच्छी तरह जान सका। बम्बईमें वे जिस पत्रकारीका इतनी सफलतासे संचालन कर रहे हैं उसके तरीकोंकी तो मैं सराहना नहीं कर सकता किन्तु एक व्यक्तिके रूपमें मैंने उन्हें पसन्द किया। वे राजनीतिकी कुछ मुख्य समस्याओंकी खूबियोंको अच्छी तरह समझनेकी योग्यता रखते हैं।

इस गैरसरकारी शिष्टमण्डलके चीन आगमनपर मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी इस सम्बन्धमें चीनी वैदेशिक कार्यालयको कुछ सन्देह था किन्तु जब उसके अधिकारियोंने मेरे सामने यह प्रसङ्ग रखा तो मैंने उन्हें इस बातका विश्वास दिला दिया कि मैं शिष्टमण्डलके सदस्योंके चुनावसे बहुत प्रसन्न हूँ और मुझे उनके सम्बन्धमें कोई अड़चन पैदा न होगी। मैं उनका स्वागत करनेके लिए व्यक्तिगत रूपसे हवाई अड्डेपर गया। जब वहाँ एकत्र चीनी नेताओंने विमानसे उतरते ही पण्डित सुन्दरलालको मुझसे इस प्रकारसे गले मिलते हुए देखा, जैसे बहुत दिनोंसे बिछुड़े हुए दो भाई मिल रहे हों, तो उन्हें काफी आश्चर्य हुआ। दूसरे ही दिन शिष्ट-मण्डलके प्रतिनिधि मेरे पास परामर्शके लिए आये और मुझसे चार घण्टे तक सभी प्रश्नोंपर खुले दिलसे विचार-विमर्श करते रहे। चीनी अधि-कारियोंने यह अनुभव किया कि भारत-सरकारका सम्बन्ध उसका विरोध

करनेवाले लोगोंसे भी उस ढंगका नहीं है जैसी कि वे कल्पना करते थे। इसके फलस्वरूप सारा कार्य सुचारु रूपमें सम्पन्न हो गया। शिष्टमण्डलके सम्मानमें दी गयी दावतमें दूतावासका पूर्ण प्रतिनिधित्व हुआ था। पण्डित सुन्दरलालने अपने भाषणोंमें मुख्यतः वे ही विचार प्रकट किये जिन्हें मैं सार्वजनिक रूपसे व्यक्त करता रहा हूँ यद्यपि उनका भाषण बहुत फैल गया था और उतना संयमित नहीं हो सका था। शिष्टमण्डलने चीनके विभिन्न भागोंकी यात्रा की। उसका सर्वत्र घनिष्ठ मैत्रीसे स्वागत हुआ।

मैं मई दिवसका समारोह देखनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। पीकिंगमें मई दिवस देखनेका मेरा यह पहला मौका था। मौसम बड़ा ही सुहावना था। ९॥ बजे कूटनीतिक मण्डलोंके सदस्योंने अपने लिए बनी गैलरीमें जाकर स्थान ग्रहण कर लिए। ठीक दस बजे श्री माओ त्से-तुंग छज्जेपर आ गये। तत्काल ही एक बहुत बड़ा जुलूस सामनेसे गुजरने लगा। जुलूसवाले सभी देशोंके सर्वहारा वर्गके नेताओंके विशाल चित्र, झण्डे और अमेरिकी काररवाईपर बने व्यंग्यचित्र लिये हुए थे। जुलूसमें हजारोंकी संख्यामें चमकीले लाल रेशमी झण्डों और पताकाओंका प्रदर्शन किया जा रहा था। जुलूसको सामनेसे, ऊपरसे और बगलसे आकर्षक, सुन्दर तथा दर्शनीय बनानेके लिए सभी सम्भव उपाय काममें लाये गये थे। उदाहरणके लिए जुलूसवालोंका एक समूह वर्गाकार रूपमें मार्च कर रहा था। इसमें सभी लाल रंगके झण्डे लिये हुए थे जिनमें पीले रंगके पाँच तारे बने हुए थे। ऊपरसे देखनेपर यह वर्गाकार समूह एक विशाल झण्डे-सा लग रहा था।

सात लाख नर-नारियों, लड़के-लड़कियोंका जुलूस छ घंटेतक गुजरता रहा। श्री माओ त्से-तुंग स्वर्गीय शान्ति के द्वार 'तीन आन मेन'के छज्जेपर प्रातःकाल दस बजेसे सायंकाल सवा तीन बजेतक बराबर खड़े रहे। वे इस बीच विश्रामके लिए एक बार भी न बैठे यद्यपि कूटनीतिक गैलरीमें हम सभी लोग थोड़ा विश्राम करनेके लिए समय-समयपर बैठ

जाया करते थे। दो महीनेसे हांगकांगके पत्र श्री माओकी बीमारीकी चर्चा और यह प्रचार कर रहे थे कि रूसने उन्हें अपदस्थ कर दिया है। यहाँ-तक कि पीकिंगस्थित अनेक कूटनीतिज्ञ भी यह विश्वास करने लगे थे कि श्री माओ सख्त बीमार हैं क्योंकि २६ जनवरीको भारतीय राष्ट्रीय दिवसपर आयोजित समारोहमें शामिल होनेके बादसे वे किसी भी सार्वजनिक आयोजनमें शामिल नहीं हुए थे। किन्तु इस समारोहमें वे हम लोगोंकी आँखोंके सामने छज्जेपर एक चट्टानकी तरह सवापाँच घंटेतक अडिग भावसे खड़े रहे। वे हर दो मिनट बाद जुलूसके अभिवादनमें हाथ हिलाते जाते थे। इसपर भी स्वीडनके राजदूत श्री हैम्मस्ट्रम कह रहे थे कि यह स्वयं श्री माओ नहीं हैं बल्कि उनके जैसा कोई दूसरा आदमी खड़ा किया गया है। अपनी बातको सिद्ध करनेके लिए उन्होंने हमें हिटलरकी अनेक कहानियाँ कह सुनायीं। डेनिश दूत श्री मोएर्चका भी यही विश्वास था। उनका भी कहना था कि माओ के रूपरंगके किसी दूसरे आदमीको यहाँ जबर्दस्ती खड़ा कर दिया गया है। समारोहमें इस रूपमें उपस्थित होनेके लिए उसे कोंच-कोंचकर तैयार किया गया होगा। इससे पता चलता है कि पश्चिमी राष्ट्र यही विश्वास करना चाहते थे कि माओका तिरोभाव हो चुका है।

जनवरीके अन्ततक मैंने कोरियाई स्थितिमें कोई गहरी दिलचस्पी न ली थी। मैं अनुभव करता था कि जबतक दोनों पक्षोंकी मनःस्थिति विशेष अनुकूल न हो जाय, चुप रहना ही सर्वोत्तम होगा। अतः इस सम्बन्धमें दिल्लीसे मुझे जो भी निर्देश और सुझाव प्राप्त होते थे उनका मैं कोई उत्साहवर्धक उत्तर नहीं देता था। प्रधान मन्त्री स्थितिको अच्छी तरह समझते थे इसलिए इस सम्बन्धमें उन्होंने भी मुझपर दबाव डालना छोड़ दिया। मईके आरम्भमें ही बी० एन० रावने न्यूयार्कसे तार दिया कि यदि सम्मेलनके विचारको पुनरुज्जीवित नहीं किया जाता तो ऐसी सम्भावना है कि 'छोटी परिषद्' चीनके विरुद्ध तटावरोध आदिकी कारस्वाई किये जानेकी सिफारिश करेगी। मुझे ऐसा लग रहा था कि संयुक्त राष्ट्र-

संघके तत्त्वावधानमें सम्मेलन किये जानेका विचार चीनको स्वीकार न होगा। अतः मैंने श्रीरावको इसी आशयका उत्तर भेजा किन्तु स्थितिपर पुनर्विचार करनेपर मैंने सोचा कि यदि श्रीराव संयुक्त राष्ट्रसंघके बाहर ब्रिटेन, रूस या भारत द्वारा भी कोई ऐसा सम्मेलन आयोजित किये जानेका प्रस्ताव ला सकें, जो केवल सुदूरपूर्वमें दिलचस्पी रखनेवाले राष्ट्रों-तक ही सीमित हो तो शायद शान्तिवार्ताके लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। हमारे इस विचारके अनुरूप तत्काल कुछ न हो सका और १६ वीं तारीखको चीनके विरुद्ध पोताधिरोधकी काररवाई करनेका अमेरिकी प्रस्ताव राजनीतिक समिति द्वारा पास कर दिया गया। हिन्देशियाई दूत श्रीइजाक मेहदीने इसपर अत्यधिक रोचक टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा कि पोताधिरोध की काररवाईसे चीनकी कोई विशेष क्षति न होगी, इससे क्षति हिन्देशियाकी होगी क्योंकि चीनी ग्राहकोंके अभावमें अमेरिका रबरका भाव गिरा सकेगा।

कोरियामें तत्काल युद्ध विरामकी सम्भावनाके प्रति यद्यपि मैं निराश ही था फिर भी मैंने रूसी गुटके अपने सहकर्मियोंके साथ बराबर निकट सम्पर्क बनाये रखा। इस सम्बन्धमें खासकर पोलिश राजदूत श्रीबर्गिन-से मेरा सम्पर्क और भी घनिष्ठ था। वे समस्याओंपर तर्कसंगत रूपमें विचार-विमर्श करनेके लिए बराबर प्रस्तुत रहते थे। इसी प्रकार श्री वीजिकोफसे भी मुझे सहायता मिलनेकी बड़ी आशा थी क्योंकि सुदूरपूर्वकी समस्त समस्याओंके प्रति उनका दृष्टिकोण मुझे बहुत ही रोचक लगता था। श्री बर्गिन उत्तरी कोरिया जा चुके थे। वहाँकी स्थितिके सम्बन्धमें उन्होंने मुझे जो कुछ बताया था उसपर सहसा विश्वास नहीं होता था। उनके अनुसार उत्तरी कोरियाके ८५ प्रतिशत मकान ध्वस्त कर दिये गये थे। प्योंगयांग नगर खंडहर हो गया था। जनता गुफाओं और माँदोंमें रह रही थी। किन्तु उसका मनोबल बहुत ऊँचा था। उसमें लड़नेकी भावना पहलेसे भी अधिक उग्र थी। कोरिया जाकर वहाँसे वापस आनेवाले दूसरे लोगोंने भी मुझसे यही बात कही थी। इसलिए मुझे यह विश्वास हो गया था कि

कोरियामें अमेरिकाको सैनिक सफलता मिलनेकी कोई सम्भावना नहीं है। चीनकी बढ़ी हुई वैज्ञानिक शक्ति को देखते हुए यह विश्वास और दृढ़ हो जाता था।

इस बीच मुझमें एक नयी रुचि पैदा हो गयी थी। ३० अप्रैलको पीकिंग स्थित विएतनाम कूटनीतिक मण्डलके प्रधान श्री होआंगने, जिन्हें राजदूतका पद प्राप्त था, मुझसे भेंट करनेका अनुरोध किया। विएतनामकी दोनों प्रतिद्वन्द्वी सरकारोंके प्रति भारत सरकारकी नीति कड़ी तटस्थताकी थी। हमने फ्रांस द्वारा पोषित और समर्थित बाओ दाई सरकार अथवा चीन द्वारा अन्नामकी एकमात्र सरकार मानी जानेवाली हो-ची मिन्ह सरकार दोनोंको स्वीकार करनेसे इनकार कर दिया था। इस सम्बन्धमें हमारी घोषित नीति यह थी कि हम उसी सरकारको विएतनामकी सरकारके रूपमें मान्यता प्रदान करेंगे जिसका कमसे कम राजके अधिकांश भूभागपर आधिपत्य हो। श्री बाओ दाई फ्रांस द्वारा मनोनीत शासक थे। फ्रांसकी संगीनोंके बलपर ही वह अपनी गद्दीपर बने हुए थे। इससे उन्हें स्वतन्त्र शासक मानना नितान्त असम्भव था। जहाँतक हो-ची मिन्हका सम्बन्ध था, उनकी सरकारने राज्यके बड़े भूभागोंपर अधिकार कर लिया था; किन्तु वह अभी भी विजयके लिए लड़ रही थी और समूचे राज्यपर अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर सकी थी। इसलिए यद्यपि भारतीय जनताकी सहानुभूति सामान्यतः वहाँके राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य आन्दोलनके प्रति थी फिर भी हम सावधानीसे कड़ी तटस्थताकी नीति बरत रहे थे। श्रीहोआंगके अनुरोधसे मुझे कोई उलझन नहीं हुई। मैं उनसे मिलनेको इच्छुक था, क्योंकि मैं हिन्द चीनमें एक नये लोकतान्त्रिक राजके विकासके साथ, जो असन्दिग्धरूपसे एशियाई राजनीतिका एक प्रमुख अंग बन गया था, किसी न किसी प्रकारका सम्पर्क स्थापित करना चाहता था।

श्रीहोआंग एक नौजवान आदमी थे। वे फ्रेंच धाराप्रवाह बोल लेते थे; किन्तु अंग्रेजी नहीं बोलते थे। उनके प्रथम सचिव बड़े ही

योग्य युवक थे। वे भारतके सम्बन्धमें अच्छी जानकारी रखते थे और बहुत अच्छी अंग्रेजी बोल लेते थे। श्री होआंग वर्षोंतक छापेमार योद्धा रह चुके थे। स्वातन्त्र्य अभियानका संचालन करनेवाले श्रीहो-ची मिन्ह तथा अन्य नेताओंसे उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। उन्होंने मुझसे वार्ता करते हुए अपना यह दृष्टिकोण स्पष्ट किया कि विएतमिन्हने आधार-भूत विजय प्राप्त कर ली है। उसकी विजय इस तथ्यसे सिद्ध हो जाती है कि गत ९ वर्षोंसे फ्रान्स आक्रमणात्मक काररवाई नहीं कर सका है। जहाँतक उनकी सरकारका सम्बन्ध है, उसे नगरोंपर कब्जा करने की जल्दी नहीं है। वह पहले अपनी स्थिति दृढ़ और अपने अधिकृत क्षेत्रको पूर्णतः संघटित कर लेना चाहती है। वह व्यवस्थित ढंगसे उपयुक्त प्रशासनाधिकारियोंके श्रेणियोंके निर्माण तथा एक नयी आर्थिक नीतिके कार्यान्वयमें संलग्न है। कम्बोडिया तथा लाओसके सम्बन्धमें प्रश्न करने पर उन्होंने मुझे बताया कि इन देशोंमें चल रहे प्रतिरोधा-त्मक आन्दोलनके साथ विएतमिन्हका सम्बन्ध अन्तरराष्ट्रीय आधारपर स्थापित है। श्री हो-ची मिन्हके नेतृत्वमें जो आन्दोलन चल रहा है वह खास विएतनाम अर्थात् अन्नाम, टोंकिन तथा प्राचीन साम्राज्यके अन्त-र्गत आनेवाले क्षेत्रों तक ही सीमित है।

कुछ दिनों बाद जब मैं स्वयं उनसे मिलने गया तो मैंने उनसे हिन्दचीनमें युद्ध विराम और वार्ता द्वारा समस्याके समाधानकी संभावना-के सम्बन्धमें प्रश्न किये। उन्होंने उत्तरमें कहा कि वार्ता किस बातपर की जाय ? फ्रांसको यहाँसे बिदा होना है। एकमात्र यही तो प्रश्न है। इस-पर हम हमेशा वार्ता करनेको तैयार हैं। फ्रांसके यह स्वीकार कर लेनेके बिना कि वह हमारे देशसे बिदा हो जायगा, युद्ध विराम करनेका एक-मात्र अर्थ फ्रांसकी थकीहारी सेनाओंको विश्राम देना होता है। श्रीहोआंगने यह भी कहा कि फ्रांसको अमेरिकापर बड़ा अविश्वास है। वह अमेरिकाकी सैनिक और आर्थिक सहायता स्वीकार करनेको तो तैयार है, किन्तु उसे इस बातसे नफरत है कि बाओ दाई सरकारके साथ अमेरिकी परामर्श-

दाता लगे रहें। बाओ दाई अमेरिकाका उपयोग फ्रांसके विरुद्ध कर रहे हैं।

जूनमें राजनीतिक वातावरण कुछ साफ होने लगा। सीनेटकी समितिके सामने साक्ष्य देते हुए श्री डीन एचेसनने यह स्पष्ट रूपसे घोषित कर दिया कि '३८ अक्षांशपर ऐसा युद्ध विराम करने को प्रस्तुत है जो विश्वसनीय हो' और सैनिक कारवाईसे कोरियाकी एकता स्थापित करनेका इरादा न तो अमेरिकाका ही है न संयुक्त राष्ट्रसंघका ही। उन्होंने यह भी कहा कि संयुक्त राष्ट्रसंघमें चीनके प्रवेशके प्रश्नपर विचार-विमर्श करनेके लिए भी वे तैयार हैं। मैंने तत्काल दिल्लीको इस आशयका तार भेजा कि मन्त्रिमण्डल वाशिंगटनसे सम्पर्क स्थापित करके सरकारी तौरसे इस बातका निश्चय कर ले कि अमेरिकी परराष्ट्र विभाग इस प्रश्नपर चीनसे बातचीत करना चाहता है या नहीं, किन्तु इसका कोई खास परिणाम नहीं निकला क्योंकि अमेरिका अभी इस सम्बन्धमें कोई औपचारिक प्रस्ताव लानेके लिए तैयार न था। कोरियाई युद्धकी वार्षिकीके अवसरपर २४ जूनको श्री याकोव मलिकने ३८ अक्षांशपर युद्धविराम करनेका अपना प्रसिद्ध प्रस्ताव उपस्थित किया जिससे सारा संसार चकित हो गया। अमेरिका, ब्रिटेन और चीन इस बातपर सहमत हो गये कि युद्धविराम पर विचार-विमर्श करनेका समय आ गया है। मैंने इस सम्बन्धमें दिल्लीको सतर्क रहने की सलाह दी, क्योंकि मेरे विचारसे रूसी प्रस्तावका एकमात्र उद्देश्य अमेरिकाको गलत रास्तेपर ले जाने अथवा जैसा कि श्री वीजिकोफने मुझसे कहा था संघर्ष को एक नये स्तरपर ले आनेका था। युद्ध विराम सन्धि होनेमें जो अठारह महीने लग गये इससे यह बात बिल्कुल प्रमाणित हो गयी।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

अन्तर्देशीय यात्रा

मैं पीकिंगमें एक वर्षसे भी अधिक समयसे रह रहा था, किन्तु मैंने अबतक पीकिंग, तीनसिन और शंघाईके बाहर चीनका कुछ भी न देखा था। वसन्तके आरम्भमें मैंने मंचूरिया जानेकी योजना बनायी थी किन्तु कोरियाकी स्थितिको ध्यानमें रखते हुए श्री नेहरूने मुझे अपने प्रधान कार्यालयमें ही बने रहनेकी सलाह दी, क्योंकि दिनपर दिन घटना-चक्र कौन-सा रूप ग्रहण करता जायगा इस सम्बन्धमें कोई कुछ कह नहीं सकता था। युद्धविराम वार्ता शुरू हो जानेपर परिस्थिति बहुत कुछ स्पष्ट हो गयी और मैं चीनके अन्तर्वर्ती क्षेत्रोंका दौरा करके वहाँकी चीजें स्वयं अपनी आखोंसे देखनेकी स्थितिमें हो गया। मैंने चीनी वैदेशिक कार्यालयसे उत्तर पश्चिमी क्षेत्रका दौरा करनेकी इच्छा प्रकट की। अनावश्यक विलंबके बिना ही मुझे उसकी अनुमति प्राप्त हो गयी। पहले मैंने सिआन और लानचाऊ जाकर वहाँसे गोबीका रेगिस्तान पार करते हुए सिंकियांगकी सीमापर स्थित तुङ्हुआनकी प्रसिद्ध गुफाओंकी यात्रा करनेकी योजना बनायी थी किन्तु मेरी पत्नीने यात्रामें येनानको भी शामिल कर लेनेका आग्रह किया। यह नगर हमारे रास्तेमें नहीं पड़ता था और वार्तावहनके समान्य साधनोंसे यहाँ पहुँच पाना भी असम्भव था। मैंने यह कोशिश की कि वे अपनी जिद छोड़ दें किन्तु उन्होंने अपनी यह इच्छा सीधे श्री चाऊ एन-लाईसे, जब वे हमारे यहाँ एक दावतमें आये थे, प्रकट कर दी। उन्होंने उनकी इस इच्छाको न केवल स्वीकार किया बल्कि इसका हार्दिक स्वागत किया। कुछ दिनों बाद ही हमें मालूम हुआ कि यात्राका सारा प्रबंध कर दिया गया है और हमारे

लिए एक विशेष विमानकी व्यवस्था कर दी गयी है।

यात्रामें मेरे साथ मेरी पत्नी, पुत्री और मेरे चीनी जानने वाले सचिव डाक्टर वीरेन्द्रकुमार थे। वैदेशिक कार्यालयने हमारे साथ हमारी सुविधाओंका ध्यान रखने तथा स्थानीय अधिकारियोंसे हमारा सम्पर्क स्थापित करनेके उद्देश्यसे श्री लाङ् शिन-कांङ् नामक अंग्रेजी जानने-वाले एक नौजवान अफसरको भेज दिया। हमने पीकिंगमें जबसे रहना शुरू किया था तभीसे श्री लाङ्से हमारी बड़ी मैत्री थी। यात्रामें उनका साथ पाकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। प्रसन्नताका एक विशेष कारण यह भी था कि वे मेरी पत्नीकी भोजनसंबंधी आवश्यकताओंसे भलीभाँति परि-चित थे और उसकी व्यवस्था कर देते थे। हमारे अनुरोध पर हमें एक फोटोग्राफर भी मिल गया था। हम लोग २१ अगस्तको रवाना हो गये और दोपहरके भोजनके पहले ही सिआन पहुँच गये। स्थानीय सरकारके प्रमुख अधिकारियोंने बड़े सौजन्यसे हमारा स्वागत किया। हमारे ठहरने-का प्रबंध जेनरल यांगके मकानमें किया गया था। जेनरल यांग ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने १९३६ में 'युवक मार्शल' चाङ्-ह्सू-लानके आदेशपर च्याङ् काई-शेकको गिरफ्तार करके कैद कर दिया था। इस दुःसाहसके लिए उन्हें बादमें अपनी जानसे तो हाथ धोना ही पड़ा उनके परिवारकी तीन पीढ़ीतकके लोगोंको मौतके घाट उतार दिया गया।

सिआन चीनके आरम्भिक इतिहासका संक्षिप्त संस्करण-सा लगता है। पहले इसका नाम चाङ् आन था। यह चीनके दो महान् राजवंशों हान और ताङ् की राजधानी रह चुका है। वस्तुतः मंगोलोंके आगमनके पूर्व यह चीनका सबसे प्रमुख नगर था। मंगोलोंने पीकिंग की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया। सिआनके चारों ओर अनेक महत्त्वके ऐतिहासिक स्थान हैं। यहीं चीनके प्रथम सम्राट् चिन शिह हुआन तीका मकबरा और लिन तुन शानके गन्धक स्रोत हैं। यहीं चीनकी सबसे सुन्दरी नारी याङ् कुई-फीका विलासचक्र निरन्तर चला करता था जिसके फलस्वरूप ताङ् वंशका ही पतन हो गया। इसी स्थानपर कम्युनिस्टोंके

विरुद्ध अभियानकी योजना बनाते हुए च्याङ् काई-शेक गिरफ्तार किये गये थे। यहीं पर इतिहासप्रसिद्ध यात्री ह्वेन सांगके, जो भारतसे अनेक ऐतिहासिक महत्त्वके अवशेष और ग्रन्थ चीन लाये थे, सम्मान में विशाल स्तम्भकी स्थापना हुई है। शिलालेखोंकी सबसे प्राचीन संस्था (अकादमी) भी सिआनमें ही स्थित है। इसके विशाल भवनमें शिला-खण्डोंपर उत्कीर्ण प्रमाणपत्रोंका अद्वितीय संग्रह है। इसमें संगृहीत सर्वाधिक रोचक शिलालेखोंमें सिआन-फू शिलापट्टका उल्लेख किया जा सकता है जिसमें सन् ६३५ में 'सच्चे पुनीत ग्रन्थोंको लिये हुए' ईसाई पुरोहित ओलोपिनके चीन आनेका वर्णन किया गया है।

स्थानीय अधिकारियोंके प्रबन्धसे अनेक सार्वजनिक संस्थाओंमें जानेके अतिरिक्त मैं उन्हें बिना बताये ही आसपासके अनेक गावोंमें भी यह जाननेके लिए गया कि उनमें भूमिसुधारों और क्रान्तिके फलस्वरूप क्या परिवर्तन आया है। कौतूहलवश मैं याङ् कुई-फीके पर्वतीय विहार-स्थल लिन तुन शान भी गया। अब यहाँ घूमने-फिरनेके लिए मजदूर आया करते हैं जिनकी सुविधाके लिए सिआनसे विशेष बसोंकी व्यवस्था कर दी गयी है। यात्रामें मेरे साथ एक ऐसा चीनी अफसर था जिसे कैदखानेमें च्याङ् पर पहरा देनेका भार सौंपा गया था। उसने मुझे बताया कि जब याङ्ने च्याङ्के स्थानको अपने सैनिकोंके साथ घेर लिया और पहरेदारोंको बेकाबू करके उसके शिविराकार भवनमें जबर्दस्ती घुस गया तो च्याङ्, जो उस समय अण्डरवीयर पहने हुए आराम कर रहा था, सहसा उठ बैठा और अपने एक भांजेके सहारेसे दीवालपर चढ गया। वहाँसे वह बाहर की ओर कूद पड़ा और पीछेके जंगलमें जा छिपा। उसने जहाँ छिपने की कोशिशकी थी हम लोग भी उसे खोजते-खोजते वहीं पहुँच गये। वहाँ जेनरल याङ्के आदमियोंने उसे देख लिया। उसे जीपमें बैठाकर सिआन लाया गया। यद्यपि उस समय कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी फिर भी जीपकी केवल ४५ मिनटकी यात्रामें च्यांङ्ने कई बार पानी माँगा। सिआनमें जेनरलिस्सिमोपर कड़ा

पहरा रखा जाता था। ऐसा प्रतीत होता था कि घटनाचक्रकी इस अप्रत्याशित गतिसे च्याङ् बिलकुल अभिभूत हो उठे थे। उन्होंने खाना खानेसे इनकार कर दिया था। उनको शायद इस बातकी आशंका थी कि कहीं उनके भोजनमें विष न दे दिया गया हो। उस अफसरने यह भी बताया कि जबतक श्री चाऊ एन-लाई येनानसे यहाँ नहीं आ गये च्याङ्-को इसका भी बराबर डर लगा रहता था कि कहीं गिरफ्तार करनेवाले लोग उन्हें गोलीसे न उड़ा दें। इस घटनाकी स्मृतिमें शिविराकार भवनकी दीवालोंपर किसीने चीनी भाषामें एक कविता लिख रखी है। मुक्त रूपमें अनुवाद करनेपर इस कविताका अर्थ निम्नलिखित होता है—

एक बड़ा-सा लकड़बग्घा था यहाँ पकड़ा गया
किन्तु वह तो भेड़िया निकला नहीं,
था महज एक स्यार !
बादमें हमने इसीसे दिया उसको छोड़।

लिन तुन शान एक ऐसी पहाड़ी है जिसपर चीनी इतिहासके तीन दुःखान्त नाटक अभिनीत हुए हैं। इसकी सबसे प्राचीन कहानीका सम्बन्ध चीनके एक ऐसे सम्राट्से है जिसे अपनी तुनुकमिजाज रानीको खुश करनेकी कोशिशमें अपनी गद्दीसे भी हाथ धोना पड़ा। लाख कोशिश करनेपर भी रानी कभी मुसकुराती ही न थी। रानीको हँसानेके लिए सम्राट्ने एक विलक्षण उपाय सोचा। उसने लिन तुन शानकी पहाड़ीपर खतरेकी रोशनियाँ जलवा दीं। राजधानीपर संकट उपस्थित होने के समय सामन्तोंको एकत्र कर लेनेके लिए उन्हें खतरेकी सूचना देनेके उद्देश्यसे पहाड़ीपर इस प्रकारकी रोशनी करनेकी परम्परा चली आ रही थी। इसे देखते ही सारे सामन्त दौड़े आये किन्तु उनके एकत्र होनेपर उनसे कह दिया गया कि खतरेकी कोई बात नहीं। रोशनियाँ गलतीसे जल गयी हैं। सामान्त लोग अपना-सा मुँह लेकर वापस चले गये। उन्हें इस प्रकार बेवकूफ बनता देखकर सम्राज्ञी हँस पड़ी। इससे सम्राट्को प्रसन्नता हुई किन्तु दुर्भाग्यसे कुछ महीनों बाद ही बर्बरोंने राजधानीपर

सचमुच आक्रमण कर दिया। पुनः पहाड़ीपर खतरेकी रोशनियाँ जलायी गयीं किन्तु सामन्तोंने इसे दूसरा मजाक समझा और सहायताके लिए नहीं दौड़े। फलतः राजधानीपर शत्रुओंका आसानीसे कब्जा हो गया। दूसरी घटनाका संबंध ताङ् राजवंशके पतनसे है। हुआन मिंग तांगवंशका सबसे योग्य शानदार सम्राट् था किन्तु दुर्भाग्यसे वह याङ् कुई-फीके हाथका खिलौना बन गया। इसी सुन्दरीने गंधक स्रोतोंके चारों ओर प्रासादों और भवनोंका निर्माण कराया। इस स्थानपर उसने जिस ढंगसे अपना विलासचक्र चलाना शुरू किया उससे विद्रोह फैल गया और सम्राट्को राजधानी छोड़नी पड़ी। एक विद्रोही सैनिक टुकड़ीने रानीको सम्राट्के सामने ही फाँसीपर लटका दिया। तीसरी और सबसे सनसनीखेज घटना जेनेरलिस्सिमो च्याङ् काई-शेककी गिरफ्तारी है।

सिआनके आसपास ह्वेनसांगसे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक स्थल थे, इसलिए मैंने सिआनमें पहले जितने समयतक रहनेका निश्चय किया था उससे कुछ और अधिक दिनोंतक रहना मुझे रोचक प्रतीत हुआ। सिआन-से ३० मील दूर ह्वेनसांगके सम्मानमें एक धर्म-प्रचार मन्दिरका निर्माण किया गया है। यह मुझे विशेष रूपसे आकर्षक प्रतीत हुआ, क्योंकि इसी मन्दिरसे संलग्न एक मठमें उस महान् यात्रीका मकबरा भी बना हुआ है। मन्दिरके प्रशस्त भवनोंमें अब एक स्कूल चल रहा है और अतिथि-भवनमें कम्युनिस्ट बालचर 'अग्रगामी युवकों'का सम्मेलन हुआ करता है। मन्दिरमें हालमें ही जलाये गये धूपकी कुछ राख देखकर मुझे इस बातकी प्रसन्नता हुई कि अभी भी लोगोंमें मन्दिरके प्रति श्रद्धा बची हुई है।

जिन गाँवोंमें हम लोग गये वहाँ हमें क्रान्तिकारी कार्योंका पर्याप्त प्रमाण मिला। गाँवके प्रत्येक व्यक्तिने 'राष्ट्रीय प्रतिज्ञा' ले ली थी और दीवालोंपर और जगहोंकी भाँति ही अमेरिकाका प्रतिरोध करने और कोरियाको सहायता देनेके नारे लिखे हुए थे। जनता भूमि-सुधारमें गहरी दिलचस्पी लेती थी। मैंने अपने दुभाषिएके माध्यमसे कुछ किसानों-से उनकी विशेष समस्याओंपर विचार-विमर्श भी किया। इन गाँवोंमें

नये लोकतन्त्रकी सम्पूर्ण साज-सज्जा वर्तमान थी। किसान-संघटन, अध्ययनकेन्द्र तथा महिला संघटन काम कर रहे थे। महिला-संघकी अध्यक्षा खूबसूरत छोटे पैरोंवाली पुराने जमानेकी महिला थीं। उन्होंने नये वैवाहिक विधियोंके प्रगतिशील स्वरूपपर मुझसे विस्तार-से विचार-विनिमय किया। मेरे यह पूछनेपर कि नये कानूनके अन्तर्गत कितने विवाहोंकी रजिस्ट्री हुई है, उन्होंने बताया कि केवल दो। तलाकोंकी संख्याके सम्बन्धमें बताया कि तलाक अभी केवल एक ही तक सीमित है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि वैवाहिक क्रांति अभी सुदूर देहातोंमें प्रवेश नहीं कर पायी है। यह जरूर है कि महिलासंघ काफी सक्रिय है। अध्यक्षाने मुझे यह बतलानेमें गर्वका अनुभव किया कि उनके संघकी सदस्याओंकी संख्या १२६ है, अर्थात् गाँवकी सभी वयस्क महिलाएँ संघकी सदस्या हैं। ये सदस्याएँ उत्पादन, कताई और बुनाई, अध्ययन तथा सांस्कृतिक कार्योंके लिए छ समूहोंमें बँटी हुई हैं।

सिआनमें हमारे निवासके अन्तिम दिन वहाँकी स्थानीय सरकारने हमें नगरके सांस्कृतिकमण्डल द्वारा प्रस्तुत विशिष्ट नाट्य एवं नृत्य कार्यक्रमके लिए निमन्त्रित किया। सांस्कृतिक मंत्री पुराने ढंगके विद्वान और लोकतन्त्रवादी थे। वे 'ताङ्' काव्यके बड़े प्रशंसक थे और जरा-सा उकसानेपर ही ली पो और तू फूकी कविताओंका उद्धरण देनेके लिए बराबर तैयार रहते थे। नाटकका कार्यक्रम शेन्सी नृत्य-नाट्यके दो दृश्योंसे आरम्भ हुआ। इस नाटककी कहानी 'तीन राज्योंकी कथा' के आधार-पर प्रस्तुत की गयी थी। नाटककी कथावस्तुमें एक विजयी सेनापतिकी मुख्यमन्त्रीके प्रति ईर्ष्याकी भावनाका प्रदर्शन किया गया है। उसकी ईर्ष्याका आधार यह है कि यदि उसके पास सामरिक निपुणता न हो तो राज्यका ध्वंस हो जाय और मुख्यमन्त्रीके लिए कोई स्थान ही न रहे। इसलिए वह इस बातका दावा करता है कि प्राशासनिक अधिकारियोंको पद और मर्यादाकी दृष्टिसे उससे छोटा समझा जाय। मुख्यमन्त्री और सेनापतिके विवादमें रानी मध्यस्थता करती है

और उद्धत सेनापतिको यह बताती है कि राजकाजका संचालन प्राशासनिक अधिकारियों द्वारा होनेमें ही बुद्धिमानी है। नाटकमें अभिनयकी शैली परम्परागत ही थी। अभिनेताओंकी साज-सज्जा, रूपविन्यास, चेहरे और प्रतीकात्मक अंगभंगियाँ पीकिंगके नृत्य-नाट्यके समान ही थीं। नाटकके बाद जिस संगीत और नृत्यका आयोजन हुआ उसमें कम्युनिस्ट राजनीतिका आग्रह बहुत ही तीव्र और स्पष्ट था। सर्वप्रथम मंगोलियन लड़कों और लड़कियोंके एक समूहने 'मंगोलियामें नवजीवन' विषय पर एक नृत्य प्रस्तुत किया। इस नृत्यमें यह दिखाया गया था कि नये शासनके अन्तर्गत मंगोलियाकी जनता कैसे सुख और स्वातन्त्र्यका अनुभव कर रही है। दूसरे नृत्यका विषय 'सिंकियांगमें नवप्रभात' था, इसे कजाक तथा उइघर बालक-बालिकाओंने प्रस्तुत किया था। नृत्य जिस गानके साथ आरम्भ हुआ उसकी पहली पंक्तिका यदि अनुवाद किया जाय तो उसका अर्थ कुछ इस प्रकारका होगा—'ओ सिंकियांग, हमारे सुन्दर सिंकियांग, तुम सामन्ती अत्याचार और दासताके गर्तमें डूबे हुए हो।' यह गान अन्धकार और विषादके वातावरणमें गाया जाता है। इतनेमें सहसा प्रकाशकी किरणें फूटने लगती हैं। यह प्रकाश जनवादी मुक्तिसेनाके सिंकियांग पहुँचनेका प्रतीक है। प्रकाशके साथ ही साथ उल्लासमय नृत्य और संगीत होने लगता है। निस्सन्देह यह एक राजनीतिक प्रचार था, किन्तु इस प्रचारको सुन्दरता और कलात्मकतासे प्रस्तुत किया गया था।

सिआनसे हम लोग विमान द्वारा येनान पहुँचे। यह वही प्रसिद्ध नगर है जिसकी गुफाओं में ११ वर्षतक माओ-त्से-तुंगका प्रधान कार्यालय कायम था। विमानपर सवार होनेके समय हमें बतलाया गया कि श्री माओके विशेष आदेशसे येनानके हवाई अड्डेकी मरम्मत की गयी है जिससे हमारा विमान वहाँ उतर सके। इसीलिए हमारे कार्यक्रमकी व्यवस्था करनेमें कुछ विलम्ब हुआ है। येनानका हवाई अड्डा कई वर्षोंसे काममें नहीं आ रहा था, इसीलिए वह मरम्मत

माँग रहा था। येनान सिआनसे करीब आठ मील दूर है। इन दोनों नगरोंके बीचका प्रदेश दुर्गम पहाड़ियों और दर्रोंसे भरा हुआ है। इसमें करीब-करीब किसी प्रकारकी आबादी नहीं है। इससे यह अच्छी तरह समझा जा सकता है कि दीर्घ अभियानके बाद श्री माओ-त्से तुंगने इसे अपना प्रधान कार्यालय क्यों बनाया था। सिआन नगर एक ऐसी नदीपर बसा हुआ है जो एक गिरिखातसे होकर बहती है। इसीलिए यहाँ गुफाओंके निर्माणकी प्राकृतिक सुविधा प्राप्त है। नदीके दोनों किनारोंपर करीब २० हजार गुफाएँ बनी हुई हैं जिनमें विश्वविद्यालय, अस्पताल, कम्युनिस्ट पार्टीके प्रधान कार्यालय तथा मुक्त क्षेत्रकी सरकारके पत्रोंके कार्यालय आदि कायम हैं। इस प्रदेशपर माओके अधिकारके समयसे इन सबका विकास हुआ था। आज यह नगर वीरान-सा लगता है, यद्यपि पीकिंग सरकार इसका महत्त्व बनाये रखनेके लिए हर तरहका प्रयत्न करती रहती है।

येनानमें कम्युनिस्टों द्वारा अपना प्रधान कार्यालय कायम किये जानेके पहलेसे ही यह नगर चीनके इतिहासमें अपना स्थान बना चुका था। चीनके महाकवि तू फूने, जो चीनी साहित्यमें ली पोके साथ परम-गौरवपूर्ण पदपर प्रतिष्ठित हैं, ताङ् सम्राट् हुआंङमिंङके कालमें तुर्की-विद्रोहके समय येनानमें ही शरण ली थी। कहा जाता है कि इसी स्थानमें उन्होंने अपनी कुछ सर्वोत्तम युद्ध-विरोधी कविताएँ लिखी थीं जिनका वैलेने अनुवाद किया है। येनानमें दस हजार बुद्धोंकी भी एक गुफा है। इस बौद्धगुफामें चट्टानोंपर शाक्य मुनिकी अनेक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। कम्युनिस्ट अधिकारके कालमें इसी गुफासे माओ त्से-तुंगका प्रसिद्ध 'लिबरेशन डेली' पत्र प्रकाशित होता था जिसके भोंड़े ढंगसे छपे हुए पन्नोंमें प्रकाशित लेखोंको यदि एक ओर टोकियोमें ध्यानसे पढ़ा जाता था तो नानकिंगमें भी उन्हें कुछ कम महत्व नहीं मिलता था। लन्दन और वाशिंगटनमें भी उन लेखोंको उसी प्रकार ध्यानपूर्वक पढ़ा जाता था, क्योंकि 'लिबरेशन डेली' माओ त्से-तुंग और जनवादी मुक्तिसेनाका मुखपत्र था।

हमलोग येनानमें दो दिनोंतक रहे। इस बीच हमने अनेक ऐतिहासिक महत्त्वके स्थलोंका निरीक्षण किया। हमने उन गुफाओंको देखा जिनमें श्रीमाओ त्से-तुंग और श्री चाऊ एन-लाई रहते थे। हमने उस इमारतको भी देखा जिसमें कम्युनिस्टोंका संयुक्त सरकार बनानेका निश्चय करने वाला ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ था। हमने उस खेतका भी निरीक्षण किया जहाँ श्रीमाओ अपने और अपने मित्रोंके उपयोगके लिए तम्बाकूकी खेती करते थे। हम यांङ् परिवारके उस बगीचेमें भी गये जहाँ चू तेहने, जो वृक्षारोपण और बगीचा लगानेमें बहुत ही प्रवीण हैं, सतालूके पेड़ लगा रखे थे। हमने उस सांस्कृतिक उपत्यकामें भी भ्रमण किया जहाँ लू सुन्-ललित कला महाविद्यालय अवस्थित है। इसके अतिरिक्त हमने जापानविरोधी युद्ध अकादमी, जहाँ श्रीपिआओने लड़ाईके लिए सैनिकोंको प्रशिक्षित किया था तथा उस अस्पतालका भी निरीक्षण किया जिसमें भारतीय चिकित्सक मण्डलने सेवाकार्य किया था। जब मुझे बताया गया कि सतालूके उक्त पेड़ोंको श्री चू तेहने अपने हाथसे लगाया है और जबसे इन पेड़ोंमें फल लगने शुरू हुए वे कभी यहाँ नहीं आये हैं तो मैंने उनके पास कुछ सतालू भेजे थे।

एक नगरके रूपमें इस समय येनानका कोई खास महत्त्व नहीं रह गया है किन्तु इसकी यात्रा करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि यहाँ बिना आये कोई भी व्यक्ति चीनमें जो कुछ हो रहा है उसे अच्छी तरह नहीं समझ सकता। येनान वह प्रयोगशाला है जहाँ नये चीनके आर्थिक और राजनीतिक प्रयोगोंका बड़े पैमानेपर परीक्षण होता है। येनानमें ही कम्युनिस्टोंने चीनके तटावरोध होनेकी स्थितिमें उत्पन्न परिस्थितिके अनुरूप विशिष्ट अर्थ-प्रणालीका विकास किया था जिससे चीनके खिलाफ अमेरिकाके तटावरोधकी काररवाईके विरुद्ध सतत संघर्ष करनेका उन्हें आत्म-विश्वास प्राप्त होता है। यहींके वीरान क्षेत्रोंमें नवचीनके नेताओं और कार्यकर्ताओंने आत्मसंयम तथा स्वावलम्बनकी कठिन साधना की थी। उन्होंने इस वीरान प्रदेशकी मिट्टीसे अधिकतम उत्पादन, बिलकुल

अनुन्नत स्थितिमें उद्योग-धन्धोंका विकास तथा मानवीय श्रमसे उस वस्तुकी उपलब्धि की थी जिसे सर्वदा यन्त्रोंकी सहायतासे प्राप्त किया जाता है। यही साधना वर्तमान चीनी सरकारके आधारभूत अनुभव, शक्ति और अनुशासनका मुख्य स्रोत बनी हुई है।

नगरके ठीक बाहर एक पहाड़ी गाँवमें जाकर मुझे सबसे अधिक रोचक अनुभव प्राप्त हुआ। इस क्षेत्रमें १९३५ में ही, माओ त्से-तुंग के यहाँ पहुँचनेके पहले ही, भूमि-सुधारकी क्रान्तिकारी योजना लागू हो गयी थी। इस क्षेत्रके आन्दोलनके नेता श्रीकाओ काङ थे जो इस समय उत्तर-पूर्व (मंचूरिया)की जन-सरकारके अध्यक्ष हैं। मैंने इस क्षेत्रमें, क्रान्तिका क्या स्वरूप रहा है, इसका अध्ययन करना उचित समझा। यह गाँव येनानसे बाहर जानेवाली सड़कसे ५०० फुटकी ऊँचाईपर अवस्थित है। यहाँकी जनता पहाड़ियोंमें बनी हुई गुफाओंमें रहती है। यहाँ हिमालयकी नीची पहाड़ियोंकी तरह ही पहाड़ोंमें जगह-जगह निकाले गये छोटे-छोटे टुकड़ोंमें खेती होती है। खेतीका मुख्य उत्पादन रूई, रेंड़ीका तेल, गेहूँ और ज्वार-बाजरा है। गाँवमें केवल ११ परिवार बसे हुए हैं। ग्राम-सभाका सभापति १९३८ में एक भटकते हुए भिक्षुकके रूपमें येनान पहुँचा था। उसे और उसकी पत्नीको अन्य परिवारोंकी तरह सात माओ अर्थात् सवा एकड़ भूमि दी गयी थी। यहीं उसने खेती की पारस्परिक सहायतामूलक प्रणालीका विकास किया। वह अपने पड़ोसी परिवारकी खेतीमें अपने और अपनी पत्नीके श्रमका योगदान देकर उसके बदलेमें उससे खेतीके औजार और मवेशी प्राप्त करता था। इस प्रकार वह खेतीमें उन्नति करता गया। जब १९४७ में येनानपर कोमिंतांगका पुनः कब्जा हो गया तो वह कम्युनिस्टोंके साथ ही वहाँसे चला गया और फिर १९४८ में वापस आया। उसे फिर उसकी जमीन वापस दे दी गयी, किन्तु इस बार उसको तथा उसके पड़ोसियोंको कोई औजार या मवेशी नहीं मिले। इस बार ग्यारह परिवारोंमें छ परिवार उसके नेतृत्वमें खेतीमें पारस्परिक सहायता

दलके रूपमें सम्मिलित हो गये। इनके हिस्से वयस्क मजदूरोंकी सम्मिलित शक्तिके आधारपर निर्धारित होते थे। सामूहिक श्रमशक्तिमें उसने अपने दो भतीजों और भतीजबहुओंको मिलाकर पाँच इकाईका योगदान दिया। ऐसा ही दूसरे परिवारोंने भी किया। इस प्रकार गाँवके सभी परिवार संयुक्त रूपसे खेती करते हैं और उसके उत्पादनको आपसमें बाँट लेते हैं। औजार, खाद आदि सम्मिलित रूपसे खरीदे जाते हैं और प्रत्येक परिवार अपनी अधिकृत भूमिके क्षेत्रफलके अनुसार उसमें योग देता है। मैंने न केवल ग्रामके सभापतिसे बल्कि पारस्परिक सहायता दलके कुछ दूसरे सदस्योंसे भी बातचीत की। इससे मुझे मालूम हुआ कि यह प्रणाली बहुत ही अच्छे ढंगसे कार्य कर रही है। इससे उत्पादन बढ़ता है, उपयुक्त औजार और खादकी व्यवस्था होती है तथा बिक्रीके भी और अच्छे साधन प्रस्तुत होते हैं। इस प्रणालीकी सफलताके लिए इस वृद्ध पुरुषको राष्ट्रका श्रमवीर चुना गया है।

खेतीमें पारस्परिक सहायता दलकी योजना एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण योजना है। इसे बिखरे हुए खेतोंकी समस्याके समाधान तथा खेतीके सामूहिकीकरणकी दिशामें होनेवाले प्रयत्नके रूपमें राष्ट्रीय स्तरपर प्रोत्साहन दिया जा रहा है। वस्तुतः यह एक छोटे पैमानेपर सामूहिकीकरणकी एक ऐसी योजना है जिसे स्वयं जनता अग्रसर करती है। सरकारको इसे जनतापर लादना नहीं पड़ता। खेतोंकी चकबन्दीकी जो जटिल प्रणाली भारतके विभिन्न भागोंमें अपनायी जा रही है उससे मुझे यह योजना अधिक प्रभावकारी प्रतीत हुई। इससे ग्रामीण जनताको नेतृत्व, पारस्परिक सहायता और सहकारिताकी आरम्भिक प्रणालीकी शिक्षा मिलती है। भारतमें इस प्रणालीको कार्यान्वित किये जानेमें एक कठिनाई यह पैदा होगी कि लोग मजदूरीके हिस्सेके विवादको अदालतोंमें ले जानेकी ओर प्रवृत्त होंगे। चीनमें इसकी अनुमति नहीं दी जाती। गाँवकी सभा ही श्रमसम्बन्धी विवादोंका निर्णय करती है।

हम लोग मजदूर परिवारके साथ उसकी गुफामें काफी समयतक रहे। मजदूर परिवारने सेमके शोरबे और चायसे हमारा स्वागत किया। हम उनके प्रति बड़ी मैत्रीकी भावना लेकर विदा हुए। गुफामें मिट्टीकी बनी हुई शय्या, सूखी सब्जियाँ रखनेके लिए बहुत-सी बड़ी-बड़ी चीनी झारियाँ, गल्ला रखनेके लिए काठका बखार और जाड़ोंके लिए एक स्टोव रखा हुआ था। इस गुफासे सटी हुई एक दूसरी गुफा थी। इन दोनों गुफाओंके बीचमें एक दरवाजा था। इस दूसरी गुफाका उपयोग रसोईघर आदिके रूपमें किया जाता था। गुफाएँ राष्ट्रीय वीरोंके चित्रोंसे सजी हुई थीं। प्रत्येक गुफामें राष्ट्रीय प्रतिज्ञापत्रकी, जिसमें उत्पादन बढ़ाने, राष्ट्रकी सम्पत्तिकी रक्षा करने, अमेरिकाका प्रतिरोध तथा कोरियाकी सहायता करने आदिकी प्रतिज्ञाएँ दी गयी थीं, एक-एक प्रति मौजूद थी। इसपर परिवारके सभी वयस्क सदस्योंने हस्ताक्षर किये थे। मजदूर तथा उसके समृद्धिशाली परिवारको आगामी वर्षके बजटपर विचार करते हुए देखकर तथा उत्पादनवृद्धिके प्रति उसकी आशाओंको देखते हुए इस बातपर विश्वास कर पाना असम्भव था कि केवल तेरह वर्ष पहले वह और उसकी पत्नी इधर-उधर मारे-मारे फिरनेवाले भिखारी थे।

येनानसे हम सिआन वापस आ गये और दूसरे दिन लान चाऊ रवाना हो गये। यद्यपि लानचाऊ प्राकृतिक सौन्दर्यके लिए चीनके सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे है, फिर भी हम वहाँ नहीं रुके, क्योंकि चीनी-रूसी विमान सप्ताहमें केवल एक ही बार उड़ते हैं। हम लान-चाऊसे ३५० मील दूर पश्चिम गोबी मरुभूमिमें स्थित शाद्वल चिआओ चुआनकी ओर बढ़ गये। लानचाऊके पश्चिमका प्रदेश करीब १०० मीलतक तुषाराच्छादित ऊँची पर्वतश्रेणियोंसे ढँका हुआ है। ये पर्वत-श्रेणियाँ मुख्य चीनकी प्राकृतिक सीमा बनाती हैं। मरुप्रदेश इन श्रेणियोंके, जिन्हें चीनमें सात श्रेणियोंवाली पर्वतमाला कहते हैं, उस पारसे शुरू होता है। विमानसे यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि मरुप्रदेश निरन्तर चीनकी मुख्य भूमिकी ओर अग्रसर होता जा रहा है। पर्वतमाला

और चिआओ चुआनके बीचका क्षेत्र बहुत हालतक अवश्य ही एक हरा-भरा उर्वर प्रदेश रहा होगा, क्योंकि अभी भी नदियोंके पेटे और बड़े-बड़े शाद्वलखण्ड वहाँ दिखायी देते हैं। फिर भी यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि मरुभूमिकी प्रगति भी अप्रतिरोध्य रही है।

चिआओ चुआन एक आयुक्त-सरकारका केन्द्र है। यह एक सुहावना और विस्तृत शाद्वल और सिंकियगांसे स्थापित वार्तावहनके साधनों और पूर्तिका प्रमुख केन्द्र है। लानचाऊ और आनसीके बीच, जो इस मरुप्रदेशका दूसरा बड़ा शाद्वल है, सम्बन्ध स्थापित करनेवाली ६५० मील लम्बी पक्की सड़क चिआओ चुआनसे ही होकर जाती है। यहाँसे आगे हमारी यात्रा शस्त्रास्त्रवाही यानों, जीपों और ट्रकोंसे होती रही। इनकी व्यवस्था स्थानीय अधिकारियोंने की थी। उन्होंने हमारे मार्ग-प्रदर्शन और सहायताके लिए जनवादी मुक्तिसेनाके ३० आदमी भी दिये थे। हमें अपने साथ बिस्तरे, कम्बल, रसद, रसोइये और नौकर सभी कुछ ले जाना पड़ा था।

कहा जाता था कि यह मरुप्रदेश डाकूदलोंसे भरा पड़ा है। डाकू-दल दुर्गम पहाड़ोंमें छिपे रहते हैं और वहाँसे मरुप्रदेशके यात्रियोंपर आक्रमण करते हैं। कहीं-कहीं पहाड़ बिलकुल सड़कके पास आ गये हैं। चीनी सरकारने हमारे दल की रक्षाके लिए विशेष एहतियाती काररवाईका आदेश दिया था। हमारा जत्था यदि कहीं एक मिनटके लिए भी रुकता था तो हमारे साथ चलनेवाले सैनिक कर्मचारी अपनी मशीनगनोंके साथ मोर्चेबन्दीके रूपमें खास-खास जगहोंपर जाकर खड़े हो जाते थे।

गोबीकी तुलनामें भारतीय मरुप्रदेश, जिसके मध्यमें मैं ९ वर्षतक रह चुका हूँ, बहुत ही मामूलीसी चीज है। भारतीय मरुप्रदेशकी रेत मुलायम होती है। उसमें काफी झाड़ियाँ और कहीं-कहीं कुछ हरियाली भी नजर आती है। पशु-पक्षी भी बहुतायतसे पाये जाते हैं। इसके विपरीत गोबीका मरुप्रदेश रेतीला नहीं है। यह सख्त और पपड़ी-

दार है। तीस-तीस चालीस-चालीस मीलतक जीवनका कोई चिह्न नहीं दिखाई देता। शायद ही कभी कोई चिड़िया या दूसरा जीवित प्राणी कहीं दिखाई दे जाय। इस मरुभूमिमें हरियालीका नामतक नहीं है। केवल काले रंगकी कड़ी मिट्टीका असीम प्रसार मिलता है जिसपर दिनमें ऊंटतक चलनेकी हिम्मत नहीं कर सकते। चिआओ चुआनसे चलनेके बाद हमारा पहला पड़ाव सौ मील पश्चिम यू मेन या जेड दरवाजेमें पड़ा। यहाँ अब एक ३० या ४० वर्ग मीलका शाद्वल बन गया है। किसी समय चीनकी प्रसिद्ध दीवाल यहाँतक बनी हुई थी। पश्चिमी दिशामें यह स्थान चीनकी दीवालका सबसे अन्तिम छोर था। जैसा कि जेड दरवाजेके नामसे पता चला है इस समय गोबी मरुभूमि यहीं समाप्त होती होगी किन्तु गत कुछ सौ वर्षोंमें ही मरुभूमि बहुत आगे बढ़ गयी है और यू मेन एक शाद्वल बन गया है।

सब जगहकी तरह यहाँ भी निर्माणका कार्य अबाध गतिसे जारी था किन्तु यहाँ मैंने एक विशेष बात यह देखी कि सैनिक टुकड़ियाँ बड़े पैमानेपर खेतीके काममें लगी हुई थीं। संभवतः इसका उद्देश्य इस क्षेत्रमें फैली हुई सेनाके लिए खाद्यान्नकी पूर्ति करना था। शामतक हम आनसी (अर्थात्-पश्चिमी शान्ति) पहुँच गये। आनसी सौ मील दूर रेगिस्तानमें बसा एक छोटा सा नगर है। यहाँ स्थानीय सरकारने सड़कपर 'मित्रत्रय'के नामसे एक छोटी सी अतिथिशाला बना रखी है। यह अतिथिशाला मिट्टीकी एक झोपड़ी मात्र है जिसमें कुछ कमरे बने हुए हैं किन्तु स्थानीय अधिकारियोंने इसमें दरी, गलीचे बिस्तरे आदिका ऐसा प्रबन्ध कर रखा है कि रात्रिमें विश्रामके लिए यह एक उपयुक्त स्थान बन गया है।

आनसीसे एक सड़क तुङ् हुआन गाँव जाती है। तुङ् हुआनसे गुफाएँ केवल दो मील रह जाती हैं। पहाड़ीकी बगलसे एक मामूली सा उबड़-खाबड़ रास्ता है। यात्रीको अन्तिम क्षणतक कहीं भी कोई प्रवेशद्वार नहीं मिलता और न आदमियोंकी बस्ती या और किसी

प्रकारके कार्यका चिह्न ही दिखाई देता है। पहाड़ीके पास पहुँचनेपर हमें प्रवेशद्वारके रूपमें एक दरार मिला। किसी समय यहाँसे कोई नदी निकली होगी क्योंकि यहाँ नदीके पेटेका चिह्न स्पष्ट रूपसे दिखाई दे रहा था। इस द्वारसे अन्दर जानेपर आपको एक ऐसा दृश्य मिलेगा जिसकी आपने यहाँ कल्पना भी न की होगी। आपके सामने एक छोटी सी उपत्यका दिखाई देगी जो चारों ओरसे पहाड़ियोंसे घिरी हुई है। यह उपत्यका प्रकृतिसे घिरे एक उद्यान-सी है। इस उपत्यकाके दोनों ओर दो दरारें हैं। जबतक आप उपत्यकाके बिलकुल पास न पहुँच जायँ, ये दरारें आपकी दृष्टिसे ओझल ही रहेंगी। एक दरारमेंसे नदीने घाटीमें प्रवेश किया था और दूसरीसे बाहर निकल कर वह मरुप्रदेशकी शुष्क बालुका राशिमें विलीन हो गयी थी। उपत्यकाका एक भाग हरा-भरा है। इसमें हालमें ही पोपलर वृक्ष लगाये गये हैं। इसमें छोटे-छोटे झरने प्रवाहित होते रहते हैं। पोपलर वृक्षोंकी आड़में वे प्रसिद्ध गुफाएँ अवस्थित हैं जिन्हें चौदह सौ वर्ष पूर्व बौद्ध भिक्षुओंने एकान्त निवास, निदिध्यासन और साधनाके लिए बनवाया था। ये गुफाएँ भित्तिचित्रोंसे समलंकृत हैं। इन चित्रोंकी अभिव्यक्तियोंकी कलात्मक उच्चताकी तुलना केवल अजन्ता, बाघ और सिगिरीकी गुफाओं-में बने चित्रोंसे ही की जा सकती है।

अधिकारियोंने हमारे रहनेकी व्यवस्था यहाँ हालमें बनी एक इमारतमें की थी। इस इमारतमें स्थानीय संग्रहालय स्थापित है। यह एक नये ढंगकी इमारत है। इसके साथ एक सुन्दर उद्यान भी लगा हुआ है। इमारतके ठीक सामने गुफाएँ हैं और इसके दोनों ओर तुङ्हुआन इन्स्टीट्यूटके अधिकारियोंने देखनेमें सुन्दर लगनेवाले तथा उपयोगी वृक्ष और सागसब्जियोंके बगीचे लगा रखे हैं। यहाँ सिकियांगमें पैदा होने वाले मीठे खरबूजकी खेतीमें भी बड़ी सफलता मिली है। ये खरबूज दुनियाके शायद सबसे मीठे खरबूज हैं। स्थानीय अधिकारियोंका तो यह दावा है कि यहाँके खरबूज अपने मूलस्थान सिकियाङ्के खरबूजोंसे

भी अधिक स्वादिष्ठ हैं। इसमें संदेह नहीं कि स्वादमें ये लखनऊके अच्छेसे अच्छे खरबूजोंके समान होते हैं। यद्यपि अभी पहली सितंबरका ही दिन था किन्तु मौसम बहुत ही सुहावना हो गया था। दिनमें काफी चमकती धूप होती थी और समान्य ठंढा रहता था। रातें बहुत ठंढ होती थीं। वायु बड़ी ही सुखावह थी। जैसा सभी मरुप्रदेशीय क्षेत्रोंमें होता है, रातें बड़ी स्वच्छ और सुन्दर मालूम होती थीं। तारांकित निर्मल आकाशकी छटा देखते ही बनती थी। इन्स्टीट्यूटके अधिकारियोंने मुझे पहले ही सावधान कर दिया कि तुङ्-हुआनमें बड़ी ही कड़ाकेकी सर्दी पड़ती है। तापमान सामान्य जीरो डिगरीसे कई अंश नीचे रहता है। ऐसी ही कड़ाकेकी सर्दी लगातार पाँच महीने तक पड़ती रहती है। ऐसी स्थितिमें यह कल्पना करना भी कठिन है कि बौद्ध भिक्षु जाड़ेके महीनोंमें यहाँ कैसे रहते और काम करते थे। यह निश्चित प्रतीत होता है कि वे वर्ष भर गुफाओंमें ही रहते थे।

तुङ्-हुआनकी खोज और सहसा इसका विश्वविख्यात हो जाना बीसवीं शताब्दीके पुरातत्त्व विज्ञान और खोजके क्षेत्रका एक रोमांस ही कहा जायगा। चीन तुङ्-हुआनको कभी भी नहीं भूला था यद्यपि इसकी गुफाएँ उपेक्षित-सी पड़ी थीं और जनता इस ओर ध्यान नहीं देती थी। उन्नीसवीं शताब्दीमें कुछ विदेशी यात्रियोंने भी इन गुफाओंको देखा था। काउण्ट जेकेनीके अभियान दलने १८६७ में ही इनकी यात्रा की थी। इस दलके सदस्य प्रोफेसर एल. दे लाक्जीने इनके भित्तिचित्रोंका बड़ा ही चमत्कारपूर्ण वर्णन भी प्रस्तुत किया है किन्तु सबसे पहले सर आरेल स्टीन ने ही यह घोषित किया कि तुङ्-हुआनकी गुफाओंमें विश्वका एक महान् पुस्तकालय बन्द पड़ा है। सर आरेल स्टीनकी इस घोषणाके पूर्व चीन अथवा संसारकी जनताको तुङ्-हुआनके अस्तित्वके सम्बन्धमें कुछ नहीं मालूम था।

स्टीनकी कल्पनाको प्रोफेसर लाक्जीके वर्णनसे ही प्रेरणा प्राप्त हुई थी। वे सिकियांगके अनेक ऐतिहासिक महत्त्वके स्थान तथा गोबी

मरुभूमिमें स्थित अनेक प्राचीन नगरोंके ध्वंसावशेषोंकी खोज तथा चीनके महान् यात्री ह्वेन सांगके पदचिन्होंका अनुसरण करते हुए अन्तमें तुङ्-हुआन पहुँच ही गये। उनके साथ भारतीय सहायकोंका एक दल भी था। इस दलका सचिव एक चीनी था। स्टीनने मरुभूमिमें ही जाहिद बेग नामक एक व्यक्तिसे एक गुफामें छिपे प्राचीन पाण्डुलिपियोंके एक ऐसे विशाल और महान् संग्रहके सम्बन्धमें अफवाहें सुन रखी थीं जिनका संयोगसे पता चल गया है। कहा जाता था कि ये पाण्डुलिपियाँ चीनी भाषामें नहीं हैं अतः पीकिंगके आदेशसे इन्हें फिर जहाँका तहाँ बन्द कर दिया गया है। स्टीन इन पाण्डुलिपियोंको प्राप्त करना चाहता था। पाण्डुलिपियोंका विशाल संग्रह वाङ्-ताओ-शिह नामक एक ताओवादी पुरोहितके हाथमें था। वह इनके महत्त्वसे बिलकुल अनभिज्ञ था। वह इन गुफाओंका स्वयं अभिभावक बन बैठा था। उसने अपने व्यक्तिगत प्रयत्नसे धन एकत्र कर एक गुफामें स्थित बुद्धकी विशाल प्रतिमाके लिए एक नौ मंजिलका मन्दिर बनवा रखा था। उसका सरल चित्त बुद्ध प्रतिमाकी विशालतासे आकृष्ट हो गया था। वह पाण्डुलिपियोंके संग्रहको किसीको देनेको तैयार न था। स्टीनने किस प्रकारसे समझा-बुझाकर, बातें बनाकर और बादमें कुछ रुपये देकर वांगके विचार बदल दिये इसका सबसे अच्छा वर्णन उसके इन शब्दोंमें ही प्राप्त हो सकता है—

'इस विलक्षण पुरोहितके व्यक्तित्वमें पवित्र धार्मिक भक्ति-भावना, निष्कपट सरलता एवं अनभिज्ञता, अपने उद्देश्यकी सिद्धिके प्रति अटूट लगन और बद्धमूल निष्ठाका ऐसा अद्भुत सम्मिश्रण हुआ था जिससे मुझे उन प्राचीन बौद्ध यात्रियोंका स्मरण हो आया जो विचार और स्वभावसे सरल और भोलेभाले होते हुए भी अन्धविश्वास और धार्मिक निष्ठामें इतने दृढ़ थे कि भीषणसे भीषण कठिनाइयाँ भी उन्हें भारतकी यात्रा करनेसे रोक न सकीं।

'भारतकी यात्रा करनेवाले इन चीनी यात्रियोंमें सबसे महान् ह्वेन

सांगकी स्मृतिके प्रति मेरा अनुराग सुप्रसिद्ध है। इसकी बदौलत चीनकी पण्डितमण्डली और साधारण जनता सभीके बीचमें मुझे कुछ सम्मान मिल सका है और सबने मेरी बातें सहानुभूतिपूर्वक सुनी हैं। सम्भवतः वाङ्_ताओ-शिहने भी इस सम्बन्धमें कुछ सुन रखा था। इसलिए बौद्ध मन्दिरोंके इन अवशिष्ट प्रतीकोंसे, जो मौलिक होते हुए भी समयकी गतिसे विकृत हो चुके हैं, घिरे हुए वातावरणमें मैंने वाङ्_ताओ-शिहके प्रति अपनी श्रद्धा-भावना निवेदित करना उचित समझा। मैंने उन्हें बताया कि मैं किस प्रकार भारतसे उस सन्त यात्रीके पद-चिन्होंका अनुसरण करता और दुर्गम पहाड़ों तथा मरु-प्रदेशोंके मध्यसे १०,००० ली (दूरी नापनेका मील जैसा चीनी माप) लम्बा रास्ता तय करता हुआ यहाँ पहुँचा हूँ और कैसे अपनी इस यात्राके दौरानमें मैंने उन अनेक मठों, मन्दिरों और पवित्र स्थानोंके वर्तमान ध्वंसावशेषोंकी खोज की है जिनकी उन्होंने भक्ति-भावनासे यात्रा की थी और यात्राके बाद जिनका वर्णन प्रस्तुत किया था। मैंने उन्हें प्रभावित करनेके लिए इसी प्रकारकी अन्य अनेक बातें कहीं।'

ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकारकी वार्ताका वाङ्पर कुछ प्रभाव पड़ा। उसने स्टीनके सचिवको पाण्डुलिपियोंके कुछ खरीतोंको अपने पटावासमें ले जानेकी अनुमति दे दी। इन खरीतोंके प्रथम बार परीक्षण करनेसे ही विदित हो गया कि 'इनमें बौद्ध विधि-विधान सम्बन्धी सूत्र संगृहीत हैं। इनके अन्तमें दिये हुए नाम तिथि आदिके निर्देशक वाक्योंसे यह उद्घोषित हो गया कि इन्हें भारतसे लाया गया है और इनका प्रस्तुत अनुवाद स्वयं ह्वेनसांगने किया है।' पाण्डुलिपियोंके सम्बन्धमें इस तथ्यके अवगत हो जानेपर स्टीनके लिए उपर्युक्त बौद्ध भिक्षुसे पुनः मिलना आवश्यक हो गया। उसने वाङ्को यह समझाया कि ह्वेन-सांगकी दिवंगत आत्माकी प्रेरणाका ही यह परिणाम है कि उनकी ऐसी अमूल्य कृतियोंका ऐसे अप्रत्याशित ढङ्गसे उद्घाटन हो सका है। वाङ्को इन पुस्तकोंको अनुशीलनके लिए ही सही, स्टीनको

देनेमें प्रसन्नता होनी चाहिये। इस सम्बन्धमें स्टीनने लिखा है कि 'मेरे इस अर्द्ध दैवी संकेतके प्रभावसे भिक्षुकी हिम्मत कुछ बढ़ी। वह मुझे गुफाके प्रवेशद्वारसे अन्दर जानेवाले प्रशस्त मार्गपर ले गया। इस मार्गकी बगलमें एक दूसरा सँकरा प्रवेशमार्ग बना हुआ था जिसका बहिर्द्वार रुक्ष कपाटोंसे बन्द था। यह गुफाके प्रशस्त मार्गसे चार फुट की उँचाईपर अवस्थित था। भिक्षुने मेरे लिए सँकरे प्रवेशमार्गके बन्द दरवाजोंको खोल दिया। दरवाजोंके खुलते ही चट्टानोंको काटकर बनाये गये जिस छोटेसे कक्षका दर्शन मिला उससे किसी की भी आखें खुल जातीं। भिक्षु एक छोटासा प्रदीप लिये हुए था। कक्षमें, इस प्रदीपके धुँधले प्रकाशमें, एकके ऊपर एक बिना क्रमसे तहोंमें लदी हुई परिवेष्टित पाण्डुलिपियोंका करीब १० फुट ऊँचा अम्बार सहसा उद्‌भासित हो उठा। बादमें नाप करनेसे पता चला कि पुस्तकोंके इस अम्बारने पाँच सौ घन फुटकी जगह घेर रखी थी।'

उपर्युक्त संग्रहके कुछ वेष्टनोंका परीक्षण करनेपर पता चला कि उनमें अनेक भाषाओंमें लिखी गयी पाण्डुलिपियाँ तो हैं ही गेजकी तरहके रेशमी कपड़ों और लाइनेनपर बनाये गये बोधिसत्वों तथा बौद्ध कथाओंसे सम्बद्ध दृश्योंके चित्र भी हैं। इन चित्रोंका कलात्मक सौन्दर्य निराला है। परीक्षणके बाद इस अनुपम संग्रहको प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक हो गया। इस प्रसंगमें स्टीनने लिखा है कि 'हम सभी लोग थक गये थे। मैंने इस अवसरका लाभ उठाकर भिक्षुसे अपने आराध्य वीर एवं साधुपुरुष ह्वेनसांगके बारेमें पुनः लम्बी वार्ता करनेका विचार किया। मैंने भिक्षुसे कहा कि आपके पथप्रदर्शन और अनुग्रहका इससे अच्छा प्रमाण और क्या मिल सकता है कि मुझे आपने एक गह्वरस्थ मन्दिरमें ह्वेनसाँगके समयके उन पवित्र अवशेषोंकी आश्चर्य-जनक गुप्त निधिका दर्शन करनेकी अनुमति दी जिनके एक बड़े अंशको वे अपने भारत भ्रमणसे साथ ले आये थे और जिसकी देख-भाल 'ताङ्-सेङ्'के आप जैसे उत्साही आराधक कर रहे हैं।' इसके

बाद हम लोग मन्दिरके बारजेमें चुपचाप खड़े रहे और ताओ-शिह अपने महान् सन्तके उन साहसिक यात्राओंके सम्बन्धमें विस्तारसे वार्ता करता रहा जिनका गुफाओंके सुरक्षित भित्तिचित्रोंमें अंकन किया गया है। ताओ-शिह द्वारा खोजे गये और दिनके प्रकाशसे सुरक्षित इन पवित्र अवशेषोंके प्रति अपने औत्सुक्य, आग्रह और रुचिको दिखानेके लिए जो सर्वाधिक प्रभावकारी नैतिक आख्यान मैं प्रस्तुत कर सकता था वह उस भित्तिचित्रमें अंकित था जिसमें ह्वेनसांगको अपने भारवाही पशुपर धार्मिक ग्रन्थोंका विपुल भार लादे हुए भारतसे चीन वापस आता दिखाया गया है।

'अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील मनःस्थितिमें होनेपर पुरोहितको यह स्वीकार करना पड़ा कि उसे उस महान् पण्डित साधुने बौद्धज्ञान-विज्ञानके इन अमूल्य अवशेषोंको प्राप्त करनेकी जो प्रेरणा दी है उसका उद्देश्य यह कभी नहीं हो सकता कि ये सदाके लिए एक अंधेरी गुफामें बन्द पड़े रहें। उसने यह भी स्वीकार किया कि वह स्वयं अध्ययन अथवा अन्य किसी प्रकारसे इन ग्रन्थोंके साथ न्याय करनेमें बिलकुल असमर्थ है। इसी अवसरपर स्टीनके चीनी सचिव चाङ्ने विचारोंको मुलायम तरीकेसे प्रस्तुत करनेकी अपनी विवेकपूर्ण प्रणालीकी सारी शक्ति लगाकर उसके सामने यह प्रश्न उपस्थित किया कि क्या ऐसी स्थितिमें यह स्पष्ट नहीं है कि अदृष्ट विधानकी प्रेरणासे उसे साहित्यिक और अन्य प्रकारके अवशेषोंका यह जो विपुल भाण्डार प्राप्त हो गया है यदि वह उसका उपयोग ह्वेनसांगके मेरे जैसे निष्ठावान् शिष्यको करने दे और इस प्रकार यदि मैं इस भाण्डारको पाश्चात्य अनुसंधाताओं और विद्वानोंके लिए सुलभ कर सकूँ तो यह उसका एक महान् धार्मिक कृत्य होगा? बातोंके सिलसिलेमें गौण रूपसे चाङ्ने इस बातकी ओर भी संकेत कर दिया कि इस पवित्र त्यागके उपलक्ष्यमें साधुको उस बौद्ध पीठके पुनर्निर्माणके लिए पर्याप्त धन भी दिया जायगा जिसके प्राचीन गौरवकी पुनः प्रतिष्ठाके लिए वह इतना परिश्रम कर रहा है।

भिक्षुको सहायता देनेकी बात कहकर स्टीन केवल पाँच सौ रुपयेमें तुङ्-हुआनसे ९ हजार पाण्डुलिपियाँ और पुराने चित्र उठा लाया। जब संसारको स्टीनकी इस खोजका पता चला और मालूम हुआ कि उसे संस्कृतके अनेक लुप्तप्राय मूलग्रन्थ तथा अनेक प्राचीन चित्र प्राप्त हुए हैं तो पण्डित मण्डलीमें बड़ी खलबली मच गयी। दूसरे ही वर्ष फ्रांसके महान् पण्डित पीलियटने भी स्टीनका अनुकरण किया और उसके द्वारा किये गये कार्यको और भी सम्पूर्णतासे सम्पन्न किया। उसने चीन जाकर प्राचीन ग्रन्थोंके संग्रहको इस व्यवस्थित ढंगसे छान डाला कि जब कुछ वर्षों बाद स्टीन पुनः उन गुफाओंके पास पहुँचा तो वहाँ कोई भी महत्त्वकी ऐसी पाण्डुलिपि नहीं बच गयी थी जिसे कोई अपने साथ ले जाना चाहता। चीनसे प्राचीन पोथियोंके विशाल संग्रहके पश्चिमी नगरोंमें स्थानान्तरित हो जानेके समाचारसे चीनकी जनता तो क्षुब्ध हुई किन्तु इसके साथ ही चीनके शैक्षिक क्षेत्रों और विद्वन्मण्डलीमें गुफाओंके प्रति व्यापक रुचि पैदा हो गयी। कोमिंतांग सरकारने भी समर्थ कलाकारोंके तत्त्वावधानमें तुङ्-हुआनमें एक इन्स्टीट्यूट स्थापित करनेकी व्यवस्था की। चीनकी नयी सरकार तो प्राचीन चीनी कलाके इस विशाल निधिकी महत्ताके प्रति बहुत ही जागरूक है। उसने इसे अपने विशेष संरक्षणमें ले लिया है। १९५१ में वसंतकालमें पीकिंगमें एक बड़ी प्रदर्शनीका आयोजन हुआ था जिसमें चीनके आधुनिक कलाकारोंने तुङ्-हुआनकी अधिकांश गुफाओंके प्रतिनिधि भित्तिचित्रोंकी रंगीन प्रतिकृतियाँ जनताके अवलोकनार्थ प्रस्तुत की थीं। इस प्रकार समयका चक्र फिर पलटा है और सात शताब्दियोंकी उपेक्षाके बाद तुङ्-हुआन पुनः महान् पुनर्जागरणका केन्द्र बनता जा रहा है।

ऐसा प्रतीत होता है कि तुङ्-हुआन जिस समय गौरवके चरम शिखरपर अधिष्ठित था, उपत्यकाके सम्मुखीन पार्वत्य पार्श्वके निचले आधे भागपर 'पलस्तर' किया गया था और उसपर कलात्मक चित्र

अंकित किये गये थे। शताब्दियोंकी उपेक्षाके बाद अब यत्र-तत्र कुछ थोड़े-से चित्रोंका अवशेष मिल जाता है। किसी किसी स्थानपर भारतीय पुराणोंमें वर्णित अप्सराके चित्र स्वयं पर्वतपर मिल सकते हैं। इन चित्रोंकी रूपरेखासे स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये किसी अन्य बड़े चित्र-विन्यासके अंग हैं। पर्वतके अन्दर बनी हुई ४६० गुफाओंमें वी राजवंश (छठी शताब्दी) से लेकर युआन राजवंश (तेरहवीं शताब्दी) तक सात सौ वर्षोंकी व्यापक कलात्मक साधनाकी—चित्रांकन, अलंकरण और रूपविन्यासकी अक्षय निधि रक्षित है। चट्टानोंको काटकर मन्दिर बनानेकी कल्पना भारतसे ही ली गयी है। तुङ्-हुआनकी चित्रकलाकी विषयवस्तु भी बौद्ध कथाओं और प्रतिमाओंसे ही ली गयी है। इसके अतिरिक्त इन गुफाओंकी अनेक महत्त्वकी विशेषताओंपर भी भारतीय कलाकी छाप परिलक्षित होती है। जैसा कि सिल्कॉकने लिखा है 'इन गुफाओंकी चित्रित छतें भारतीय स्थापत्यके सादृश्यके आधारपर ही आयताकार भित्ति खण्डोंमें विभाजित की गयी हैं।' चट्टानोंमें काटकर बनाये जानेवाले ताकोंके वृत्ताकार और त्रिपार्श्विक तोरणोंका मूल भी भारतसे ही लिया गया है। यहाँके चित्रांकन और कलामें पिप्पल-पत्रकी जो प्रधानता मिलती है वह सीधे भारतसे ली गयी है। इसका सम्बन्ध बोधिवृक्षकी पावनतासे है। यहाँकी कलाकी ये मुख्य विशेषताएँ चित्रोंके प्रधानतः चीनी हो जानेपर भी बराबर अन्ततक बनी रहीं। सबसे प्राचीन गुफा पहली बार सन् ५७२ में वी सम्राटों के समयमें चित्रित की गयी थी। इस प्रकार अजन्ताकी गुफाओंसे यहाँ की गुफाएँ कमसे कम दो सौ वर्ष बादकी हैं। अजन्ताकी कुछ बादकी गुफाएँ इनकी सम-सामयिक है। चित्रण और रूप-विन्यासकी दृष्टिसे सर्वोत्तम रचना प्राचीनतर गुफाओंमें ही हुई है, यद्यपि ताङ्-युगके चित्रोंमें भी शिल्पकी पूर्णता और प्रेरणाकी सचाई मिलती है। कमसे कम जहाँतक बौद्ध चित्रकलाका सम्बन्ध है, ताङ् कालकी चित्रकला कुछ विलासोन्मुख और ह्रासकी ओर अग्रसर हो चली थी। वी युगके चित्रोंमें प्राण और ओजकी प्रतिष्ठा हुई है और रचना भी हर दृष्टिसे परिपूर्ण और

पुष्ट है। ताङ् युगकी चित्रकला धीरे-धीरे अधिकाधिक कल्पना-प्रवण और रूपाश्रित हो चली। अलंकरण और रूपगत चमत्कार दिखलानेकी प्रवृत्ति बढ़ती गयी। चित्रित आकृतियोंको अतिरंजित ढंगसे सजाया जाने लगा। वी युगके चित्रोंपर भी भारतीय कलाकी गहरी छाप लक्षित होती है। खासकर बुद्धके पूर्वजन्मोंकी घटनाओंका वर्णन करनेवाली जातककथाओंके आधारपर बनाये गये चित्रोंमें भारतीय कलाका प्रभाव स्पष्ट है। उदाहरणके लिए एक बत्तखकी जीवनरक्षाके लिए गरुड़-पक्षीको अपने मांसका टुकड़ा देते हुए बोधिसत्त्व अथवा भूखों मरनेवाली व्याघ्री और शावकोंकी प्राणरक्षाके लिए अपना प्राणोत्सर्ग करते हुए राजकुमारके चित्र लिये जा सकते हैं। ये दोनों ही चित्र वी युगके हैं। इन दोनोंपर भारतीय प्रेरणा और रचनाशिल्पका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

यद्यपि वी युग चित्र-कलाकी दृष्टिसे सर्वाधिक रचनात्मक युग था फिर भी ताङ्-युगकी गुफाओं और उनके चित्रोंको केवल अनुकरणात्मक या ह्रासोन्मुख कलाका प्रतीक नहीं कहा जा सकता। राष्ट्रीय महत्ता और गौरवके इस युगमें चीनकी कलात्मक प्रतिभाने काव्य, चित्रकला और मूर्त्तिकलाके क्षेत्रमें अपना सर्वाधिक विशिष्ट प्रकाशन किया है। ताङ् युगके आरम्भ और मध्यकालमें वी युगकी प्रेरणाका स्रोत निरन्तर प्रवहमान रहा है किन्तु वर्णविन्यास, रचनाशिल्प और चित्राङ्कन-विधिमें परिवर्तन हुआ है। ताङ् युगके चित्रकार ऐसे रासायनिक रंगका प्रयोग करते थे जो समयके व्यतीत होनेके साथ उड़ जाता है। चित्र अपेक्षाकृत बहुत बड़े होते हैं, उनके दृश्य-विधानमें अनेक व्यक्तियोंकी भीड़-सी लग जाती है। साथ ही एक नये प्रकारके मानव-शरीरकी उद्भावना होती है जिसमें भारतीय और चीनी विशेषताओंका सम्मिश्रण पाया जाता है। चित्रोंकी कथा-वस्तु बुद्धके आत्मदानकी सरल कहानियोंपर आधृत न होकर ब्राह्मणोंके साथ हुए बौद्ध वाद-विवादोंसे सम्बद्ध हो जाती है। इन चित्रोंकी एक लोकप्रिय कथाका सम्बन्ध एक युवराज

द्वारा बुद्धको समर्पित किये गये एक ऐसे राजछत्रसे है जिसे राजाने ब्राह्मणोंके प्रभावमें आकर पुनः प्राप्त कर लेनेका प्रयत्न किया था। इसपर युवराजकी पत्नी, बच्चे और उनके परिचारकगण भिक्षु बन गये हैं। यह कथा अनेक गुफाओंमें विभिन्न रूपोंमें अंकित की गयी है। ताङ् युगके कलाकारों द्वारा अपेक्षाकृत बड़ी गुफाओंमें अंकित चित्रोंकी प्रिय विषय-वस्तु पश्चिमकी पावन-भूमि अर्थात् भारत है। ऐसा प्रतीत होता है कि चीनके आरम्भिक यात्रियों और खासकर ह्वेन सांगके भारतसे लौटनेके बाद भारत चीनकी कल्पनाको पावन और पुण्यशालिनी भूमिके रूपमें अनुप्रेरित करने लगा। इस पावन-भूमिके दृश्योंके चित्रणमें ताङ् कलाकारोंने कल्पनाविलासका मुक्त ढङ्गसे उपयोग किया है। तीन अत्यधिक बड़ी गुफाओंमें परिनिर्वाणके बादकी बुद्धकी महदाकार प्रतिमाओंका दर्शन किया जा सकता है। इन प्रतिमाओंके साथ बुद्धके वे शिष्य भी हैं जो तथागतके परिनिर्वाणपर शोक प्रकट करते दिखाये गये हैं। यहाँ ताङ् कलाकारोंकी कलाके सर्वोत्कृष्ट रूपका दर्शन मिलता है। इन प्रतिमाओंका अंगसौष्ठव, गरिमा और सौकुमार्य देखते ही बनता है। गुफाओंकी भित्तियोंपर उन देशोंके राजाओंका चित्रण किया गया है जहाँ बुद्ध निवास और उपदेश करते थे। इन चित्रोंमें बुद्धके परिनिर्वाणके अवसरपर इन नरेशोंका शोक विह्वल होकर उनके अवशेषोंको प्राप्त करनेके लिए एकत्र होना दिखाया गया है। ताङ् कलाकारोंने समासीन मुद्रामें बुद्धकी दो सर्वाधिक ऊँची मूर्तियोंका भी निर्माण किया है। इनमेंसे एक मूर्ति तो ६० मीटरसे भी अधिक ऊँची है। जिस गुफामें यह मूर्ति अवस्थित है, दुर्भाग्यवश उसकी दीवालोंपर बने चित्रोंको ताओवादी पुरोहितने नष्ट करके मूर्तिको आच्छादित करनेके लिए उसपर एक नवभूमिक पगोडेका निर्माण करा दिया है। २० मीटर ऊँची दूसरी अपेक्षाकृत छोटी मूर्ति भी उतनी ही सुन्दर है। उसे गुफामें ठीक उसी रूपमें देखा जा सकता है जिस रूपमें ताङ्-कलाकारोंने उसका निर्माण किया था। यह मूर्ति जिस विशाल

गुफामें अवस्थित है उसकी भित्तियाँ अनुपम चित्रोंसे समलंकृत हैं। इन चित्रोंमें दुर्लभ कलात्मक सौन्दर्यकी प्रतिष्ठा हुई है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि ताङ्-कालीन गुफाएँ वी और सुई-कालीन गुफाओंकी अपेक्षा यद्यपि बुद्धि और रूपवैचित्र्यपर अधिक आधृत हैं और उनमें उतनी भक्ति भावना और अनुभूति नहीं मिलती, फिर भी उनमें चित्रकला और मूर्त्तिशिल्पकी कुछ सर्वोत्कृष्ट कृतियाँ सन्निहित हैं।

आगे चलकर (सन् ८००-९००) ताङ् कालीन गुफाओंमें कलाकी दृष्टिसे स्पष्ट ह्रासोन्मुखता दिखाई देने लगती है। ताङ् युगके अन्तिम चरणकी गुफाओंमें बनी मानवीय मूर्तियों और चित्रोंकी आकृतियोंमें जिस प्रकारकी मांसल भावना और ऐहिक सुखानुभूति एवं आत्मपरितोषकी भावनाकी अभिव्यक्ति हुई है, भरेपूरे कपोलोंका जैसा अंकन किया गया है उसमें बौद्ध कलाकी अन्तर्निहित आध्यात्मिक शान्ति और गरिमा प्रतिफलित नहीं होती। प्राणिमात्रके प्रति प्रेमकी भावना, गंभीर आध्यात्मिक निष्ठासे उद्भूत दैहिक और मानसिक संतुलन तथा आनन्दकी अनुभूति एवं जीवनकी तपस्साधना महान् बौद्ध कलाके आधारभूत तत्त्व रहे हैं। तुङ्हुआनकी वी-कालीन कलामें भी इन तत्त्वोंका साक्षात्कार किया जा सकता है, किन्तु शताब्दियोंके बीतनेके साथ-साथ कलामें इन तत्त्वोंका अधिकाधिक अभाव होता गया।

पाँच राजवंशोंके कालमें (९०७-९६०) जब तुङ्हुआन क्षेत्र तुर्कीके महान् त्साओ परिवारके अधीन हो गया था, कलाके क्षेत्रमें कुछ अच्छी कृतियाँ सामने आयीं। त्साओ परिवारके एक शासकने दो बड़ी गुफाओंका निर्माण कराया। इन गुफाओंको बुद्धके जीवनसे संबद्ध सुन्दर चित्रोंसे सजाया गया। सुङ् वंशके शासन (१०००-१२००)के साथ एक नयी परम्पराका आरम्भ होता है। कलाकार नयी गुफाओंका निर्माण, उनमें बुद्धकी विशालकाय प्रतिमाओंकी स्थापना और उनकी दीवालोंपर चित्रोंका अंकन तो कर देते हैं, किन्तु इसके साथ-साथ वे

पुराने चित्रोंपर फिरसे रंग चढ़ा कर उन्हींके आधारपर नये चित्र भी प्रस्तुत करने लगते हैं। कहीं-कहीं तो इन नये चित्रोंके पीछेसे पुराना चित्र भी साफ-साफ झलकता रहता है। कलाकारोंकी रुचिमें ह्रासकी प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है और उनके चित्रोंकी भी वी या ताङ्_कालके चित्रोंसे कोई तुलना नहीं की जा सकती।

मंगोल राजवंशने कलाके क्षेत्रमें तान्त्रिकताका सन्निवेश किया। तुङ्_हुआनके वातावरणमें मंगोलोंका यह अवदान विशेष रूपसे खटकनेवाला और बेतुका लगता है। इस युगमें बनी गुफाओंमें तान्त्रिक देवी-देवताओं-की मैथुन-मुद्राओंके चित्र दिखाई देते हैं। लामाओंका तान्त्रिक धर्म भारतीय शाक्त सम्प्रदायका ही परिवर्तित रूप है। कलाकी दृष्टिसे इन चित्रोंको शक्ति और सौन्दर्यसे वंचित नहीं कहा जा सकता।

यद्यपि तुङ्_हुआनकी गुफाओंके भित्तिचित्रोंकी प्रधान प्रवृत्ति बौद्ध ही है, फिर भी यह नहीं समझना चाहिये कि सभी चित्र धार्मिक या बुद्धके जीवनसे ही सम्बद्ध हैं। अनेक गुफाओंमें सामान्य जनताके दैनिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले चित्र देखे जा सकते हैं। इन चित्रोंमें जीवनके सामान्य कार्योंमें लगे नर-नारियोंका चित्रण किया गया है। कहीं उन्हें हल जोतते हुए, कहीं फसल काटते हुए, कहीं दूध दुहते हुए दिखाया गया है। किसी-किसी चित्रमें गवर्नरके जुलूस और शिविकाओंमें ले जायी जाती हुई महिलाओं आदिका चित्रण भी किया गया है। नृत्य, संगीत और साधारण आमोद-प्रमोदके चित्र भी विरल नहीं हैं। एक मनोरंजक चित्रमें चीनके विभिन्न प्रान्तोंके यात्रियोंको शांसीस्थित एक पवित्र पार्वत्य क्षेत्रकी यात्रापर जाते हुए दिखाया गया है।

इन गुफाओंमें निरन्तर ६ सौ वर्षोंतक अल्पाधिक प्रेरणासे सृजनका कार्य चलता रहा है। ये गुफाएँ वस्तुतः सारे एशियाकी अमूल्य निधि हैं, क्योंकि इन गुफाओंमें कमसे कम आरम्भिक तीन शताब्दियोंमें भिक्षुओंका एक महान् अन्तरराष्ट्रीय सम्प्रदाय निवास करता था। गुफाओंके सृजनका कार्य मुख्यतः चीनी कलाकारोंने किया है।

गुफाओंके अलंकरण और इनकी चीनी विशेषताओंसे यह स्पष्टतः प्रमाणित हो जाता है। इन्हें धार्मिक प्रेरणा तथा सम्भवतः आरम्भिक रचना-शिल्प भारतसे ही प्राप्त हुआ है, फिर भी इनपर ईरानी और तुर्की तथा अन्य देशोंके प्रभाव भी लक्षित होते हैं। बौद्ध धर्म जैसे महान् अन्तर-राष्ट्रीय धर्मने कभी भी जातियों और राष्ट्रोंमें भेद-भाव नहीं किया है। असंख्य गुफाएँ एशियाके विभिन्न भागोंसे आये सहस्रों पुनीत भिक्षुओंके साधना एवं आश्रम-स्थल रह चुकी हैं।

चीनी इतिहासकी दृष्टिसे तुङ् हुआनका बहुत ही विशिष्ट महत्त्व है, क्योंकि यहाँ हमें एक ही स्थानपर चीनके अनेक शताब्दियोंके जीवन, विभिन्न युगोंकी वेशभूषाओं, यातायातके साधनों, स्थापत्य-कलाके रूप-विधानों इत्यादिका अतुलनीय संकलन प्राप्त हो जाता है।

यह सोचनेका पर्याप्त आधार मौजूद है कि तुङ् हुआनने संसारके सामने अपने सारे रहस्य अभी खोले नहीं हैं। हालके अनुसंधानोंसे इस बातका संकेत मिलता है कि अभी कमसे कम १०० गुफाएँ भूगर्भस्थ हैं। जो गुफाएँ प्रकाशमें आ गयी हैं उनकी अपेक्षा ये भूगर्भस्थ गुफाएँ अधिक सुरक्षित हालतमें हो सकती हैं। तुङ् हुआनकी अनुसंधानशाला इन गुफाओंको उद्घाटित करनेकी योजनापर विचार कर रही है।

पांडित्यके नामपर कला और साहित्यके प्रति की गयी नितान्त असाधारण बर्बरताकी एक घटनाका उल्लेख किये बिना इस यात्राका वर्णन समाप्त करना मेरे लिए सम्भव न होगा। हम भारतवासी कलात्मक निधियोंकी चोरीसे परिचित हैं। तुङ् हुआनको भी कुछ लोभी पण्डितों द्वारा की गयी ऐसी चोरियोंका अनुभव प्राप्त है। किन्तु वार्नर नामके एक अमेरिकीने यहाँ जिस प्रकारकी चोरी करनेका आश्चर्यजनक प्रयत्न किया, कलात्मक निधियोंकी चोरीके इतिहासमें उसका कोई जोड़ नहीं मिल सकता। उसने रासायनिक प्रक्रियासे यहाँके भित्तिचित्रोंको विशेष प्रकारसे बनाये गये पटफलकोंपर अविकल रूपसे उतारकर उन्हें अमेरिका ले जानेका प्रयत्न किया था। इस प्रयत्नमें कतिपय सुन्दरतम चित्र ऐसे

क्षतिग्रस्त हो गये कि उनका किसी प्रकारसे सुधार करना असम्भव हो गया। कहा जाता है कि वह यहाँसे ऐसे २४ चित्र उठा ले गया। इसी प्रकारका दूसरा प्रयत्न और व्यापक पैमानेपर किया गया था, किन्तु सौभाग्यवश चीनी जनताके न्याय्य आक्रोशके कारण वह सफल न हो सका।

तुङ्-हुआनमें किये जानेवाले भावी कार्यके सम्बन्धमें यह आवश्यक प्रतीत होता है कि भारत और चीन दोनों जगह गुफाओंके भित्ति-चित्रोंके संरक्षणका उत्तरदायित्व जिन लोगोंपर है उनमें निकट सहयोग स्थापित हो। आवश्यकता इस बातकी है कि 'अजन्ता' और 'बाघ'का अध्ययन तुङ्-हुआनके प्रकाशमें और तुङ्-हुआनका अध्ययन 'अजन्ता' तथा 'बाघ'के प्रकाशमें सावधानीसे किया जाय। मेरी यात्राके कुछ महीनों बाद, तुङ्-हुआन अनुसंधानशालाके संचालक डाक्टर चाङ्का चीनी शिष्टमण्डलके सदस्यके रूपमें भारत जाना सम्भवतः इस दिशामें उठाया गया पहला कदम था।

तुङ्-हुआनकी इन अमर गुफाओंका यह संक्षिप्त सर्वेक्षण कतिपय निम्नलिखित मन्तव्योंसे समाप्त किया जा सकता है—जीवन्त, कलात्मक और सांस्कृतिक जीवनसे परिपूर्ण ऐसा विशाल बौद्ध विहार गोबी मरुभूमिके मध्यमें कैसे स्थापित हो सका? क्या भिक्षुओंने अपने एकान्त मानसिक विपर्यय और आवेगजनक जन-समूहसे दूर चिन्तनका जीवन व्यतीत करनेकी इच्छा हीसे अपनेको मरुभूमिके इस छोटे-से शाद्वलमें दीवालोंके अन्दर बन्दकर लिया था? सात सौ वर्षोंकी निरन्तर साधनाके बाद यह कैसे सम्भव हुआ कि इन गुफाओंमें रहनेवाले लोग इन्हें इनकी महान् कलात्मक निधियों और विशाल ग्रन्थालयोंके साथ छोड़कर चले गये। अभी इन प्रश्नोंका निर्णायक ढंगसे कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता, किन्तु पुरातत्त्ववेत्ताओं और इतिहासकारोंकी खोजोंके आधारपर हम तुङ्-हुआनके विकास, ह्रास और परित्यागके कारणोंको कुछ-कुछ समझ सकते हैं।

यह एक सुप्रसिद्ध बात है कि पाँचवीं शतीतक बौद्ध धर्म चीनमें पूर्णतः प्रतिष्ठित हो चुका था। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय चीनकी मुख्यभूमि, जो तुङ्-हुआनसे ८० मील दूर आनसीतक फैली हुई थी और भारतकी सीमाके बीचका क्षेत्र स्थानीय शासकोंके अधीन था जो कट्टर बौद्ध थे। चीनमें आनेवाले प्रथम महान् धर्मप्रचारक कुमारा-जीव, जो एक कुचियन राजकुमारी और एक भारतीय पिताके पुत्र थे, स्वयं इन्हीं राज्योंमेंसे एकके थे। कमसे-कम उनके समयसे इस मार्गसे भारत और चीनके बीच बड़े पैमानेपर यातायातका अटूट सिलसिला प्रारम्भ हो गया। सर ऑरेल स्टीनने भारतीय सीमासे सीधे तुङ्-हुआन-तक रास्तेमें बने अनेक विहारों और गुफामन्दिरोंका पता लगाया है। मुझे पता चला है कि सिंकियांगके गुफा-मन्दिरोंके चित्र तुङ्-हुआनके भित्तिचित्रोंसे भी उत्कृष्ट हैं, इसलिए यह मान लेना उचित होगा कि इन गुफा-मन्दिरों और विहारोंका निर्माण भारत और चीनके बीच आने-जानेवाले यात्रियों और धर्मप्रचारकोंके लिए धर्मशालाओंके रूपमें किया गया था। तुङ्-हुआनकी गुफाएँ भारतसे चीनके लिए होनेवाली लम्बी यात्राकी आखिरी मंजिल पर थीं, क्योंकि उस समय चीनकी प्रसिद्ध दीवाल आनसी (पश्चिमी शान्ति) तक फैली हुई थी। उस समय तुङ्-हुआन बाइजेण्टाइन तथा पश्चिमी अरबसे चीनसे स्थापित वार्तावहनके मुख्य मार्गपर अवस्थित था। ताङ्-सम्राटोंके शासनकालमें चीनका इन क्षेत्रोंसे भी कुछ आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्ध विकसित हो चला था।

दशवीं शतीके आरम्भ होनेपर भारतमें बौद्धधर्मके ह्रास तथा काबुलकी घाटीमें इस्लामके प्रवेशके फलस्वरूप भारत और चीनके बीच यातायातका सम्पर्क काफी घट चला था। इसीलिए भारत और चीनके बीचके इस मार्गपर तुङ्-हुआन तथा अन्य स्थानोंके गुफा-मन्दिर धीरे-धीरे नष्ट होने लगे। कुछ समयके लिए यह क्षेत्र तिब्बतके नियन्त्रणमें चला गया, इसीलिए बादके समयमें बनी गुफाओंपर तान्त्रिक प्रभावकी प्रचुरता मिलती है। अन्तमें मंगोलोंकी विजयके बाद मध्य एशियामें होने-

वाली उथल-पुथलके परिणामस्वरूप इस क्षेत्रका जीवन्त सांस्कृतिक जीवन विनष्ट हो गया। इसकी अभिव्यक्ति हमें तुङ्-हुआनमें मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुफाओंको छोड़नेके पहले भिक्षुओंने पोथियोंके अपने उस विशाल संग्रहको छिपा देनेकी सावधानी बरती थी जिसे वे अपने साथ ले जानेमें असमर्थ थे। वहाँ वे भूगर्भके संरक्षणमें तबतक दबे पड़े रहे जबतक ताओवादी वाङ्ने एक गुफाके पुनरुद्धारके अपने सत्प्रयत्नके सिलसिलेमें उनका पता नहीं लगा लिया और उनका प्रहरी नहीं बन बैठा। वाङ् इस अमूल्य निधिपर यक्षकी तरह बैठ गया। वह इस निधिकी महत्तासे सर्वथा अनभिज्ञ था।

आज तुङ्-हुआनमें पुनः कलात्मक कार्यकलापमें तीव्रता आ गयी है और एक नये जीवनका संचार हुआ है किन्तु इस बार नयी गुफाएँ बनाने और उन्हें बुद्धके जीवनकी सम्बद्ध घटनाओंका चित्रण करनेवाले चित्रोंसे अलंकृत करनेका कार्य नहीं चल रहा है बल्कि प्राचीन कलात्मक कृतियोंके अनुसन्धान, संरक्षण और उनकी प्रतिकृति प्रस्तुत करनेका आन्दोलन चलाया जा रहा है। इस मरु-प्रदेशमें छिपे रहस्योंका उद्घाटन किया जा रहा है। गुफाओंके पास ही एक कला-मन्दिर और संग्रहालयकी स्थापना हुई है जिनसे इन रेगिस्तानी क्षेत्रोंमें चीन और भारतकी कलात्मक परम्पराओंको पुनरुज्जीवित किया जा रहा है। ये वेही क्षेत्र हैं जहाँ शताब्दियों पूर्व दोनों देशोंके सहयोगसे कला और ज्ञानकी इतनी समृद्धि हुई थी।

हम लोग एक विशेष विमान द्वारा, जो हमारे ही लिए अनुग्रहपूर्वक भेजा गया था, लानचाऊ वापस आ गये। लानचाऊमें मैंने एक ऐसे गाँवका निरीक्षण किया जहाँ भूमि-सुधार केवल आंशिक रूपमें लागू किया गया था। यहाँ मैंने राष्ट्रके अल्पसंख्यकोंके लिए बने विशिष्ट महाविद्यालय और श्रमिक सांस्कृतिक केन्द्रका भी निरीक्षण किया।

मैं जिस गाँवमें गया था वह ह्वांग हो (पीली नदी) के १८ द्वीपोंमेंसे एकपर बसा हुआ है। इस गाँवमें केवल भेड़ोंकी खालसे बने बेड़ेसे ही

पहुँचा जा सकता है। लानचाऊसे बहनेवाली पीली नदीकी धार इतनी तेज और खतरनाक है कि उसपर नावें चल ही नहीं सकतीं। नदीमें यातायातके लिए जो बेड़ा उपयोगमें आता है उसे भेड़की कई खालोंको फुला कर वर्गाकार रूपमें बाँधकर तैयार किया जाता है। धाराके विरुद्ध जानेमें इसका उपयोग नहीं किया जा सकता, इसलिए उसे धाराके साथ ही नदीपर बहनेके लिए छोड़ दिया जाता है। इसपर एक बार सवार हो जानेपर यह प्रर्याप्त रूपसे सुरक्षित मालूम पड़ा किन्तु एक सबसे खतरनाक नदीमें इस मामूली-से बेड़ेपर यात्रा करनेका अनुभव बड़ा ही रोमाञ्चकारी था। हम लोग करीब आध घंटेमें द्वीपपर पहुँच गये।

येन थेन गाँवमें कुल ७१ घर हैं और उसकी आबादी करीब २०० है। गाँवकी भूमि दुनियाकी सबसे अधिक उपजाऊ भूमि है। इसका निर्माण नदी द्वारा लायी गयी ऐसी उर्वर मिट्टीसे हुआ है जिसमें पशुओंकी हड्डी और वनस्पति आदिकी खाद स्वतः तैयार हो कर मिली रहती है। यह द्वीप केवल २०० वर्ष पहले अस्तित्वमें आया है। हमने ऐसे अनेक द्वीपोंको निर्माणावस्थामें देखा है। जिस द्वीपपर हम लोग गये थे वहाँ सात गाँव बसे हुऐ थे। वहाँ इन सातों गावोंके प्रधान श्री वीने, जिन्हें हम जेलदार कह सकते हैं, हमारा स्वागत किया। ग्राम-परिषदके अध्यक्ष श्री ली हान-फू, जो एक आदर्श किसान हैं और अन्य प्रमुख किसान गाँवकी यात्रामें हमारे साथ रहे। अभी गाँवमें भूमिका पुनर्वितरण नहीं हुआ था। इसका विचार दो महीने बाद हेमंतकालीन फसलके कटनेपर करनेका किया जा रहा था किन्तु जनमुक्तिकी तिथिसे ही लगानमें २५ प्रतिशतकी कमी कर दी गयी थी और हर प्रकारके अवैध भुगतान बन्द कर दिये गये थे। श्री ली हान-फूके पास ५ मो (करीब १ एकड़) भूमि थी। गाँवमें जमींदार, धनी, मध्यवर्गीय और गरीब किसानोंकी श्रेणियाँ मौजूद थीं। मुक्तिअभियानकी सफलताके बाद सरकारने उन्हें बीज, खाद और औजार प्रदान किये थे। सरकारने उन्हें आर्थिक सहायता भी दी थी। इसलिए

उत्पादन ३० प्रतिशत बढ़ गया था। गाँवमें एक प्रकारके श्रम-विनिमय-की प्रणाली कार्यान्वित हो रही थी जिसके नेता श्री हान-फू थे। इसके लिए श्रमिकोंका एक दल तैयार किया गया था जिसके अन्तर्गत ४६ व्यक्तियोंके नाम लिखे गये थे। इस दलके अधीन प्रत्येक व्यक्तिको अपने अवकाशके समयमें खेतीके काममें दूसरोंकी सहायता करनी पड़ती थी। इस प्रणालीसे हर खेतपर श्रमशक्ति बढ़ गयी थी। श्री ली हान-फूने मुझे बताया कि वे तीन कारणोंसे समूचे कांसू प्रान्तके आदर्श किसान निर्वाचित हुए हैं। पहला कारण तो उनके द्वारा स्थापित उत्पादनका कीर्तिमान है। दूसरा श्रम-विनिमय प्रणालीका उनके द्वारा किया जानेवाला नेतृत्व है। तीसरा कारण उनकी साधारण कार्यक्षमता है। श्री फूने तीन तमगे पहन रखे थे और एक तमगा उनके पास था। राजनीतिक दृष्टिसे गाँवके लोग बहुत जागरूक और शिक्षित थे। इसका कारण सम्भवतः यह था कि यह द्वीप नगरके पास पड़ता था। मैंने उन लोगोंसे कोरिया-को सहायता देनेके लिए छेड़े गये आन्दोलनके सम्बन्धमें अनेक प्रश्न किये। इन सभी प्रश्नोंका जवाब उनकी जबानपर था। इसमें सन्देह नहीं कि जमींदारोंकी ज्यादतियाँ समाप्त हो जाने और सरकारसे सहायता मिलनेके कारण गाँवमें एक नयी चेतना जग गयी है।

लानचाऊमें केन्द्रीय जनवादी सरकारने राष्ट्रीय अल्पसंख्यकोंके लिए जिस प्रकारके महाविद्यालयका निर्माण किया है, १९५० में इसीके साथ ऐसे ही दो महाविद्यालयोंका निर्माण और दो स्थानोंमें किया गया था। इनमेंसे एक तो पीकिंगमें केन्द्रीय राष्ट्रीय शिक्षणशालाके रूपमें स्थित है और दूसरा दक्षिण पश्चिमके अल्पसंख्यकों और कबायलियोंके लिए चेङ्तू-में बना हुआ है। लानचाऊका महाविद्यालय उत्तर पश्चिमी क्षेत्रके अल्प संख्यकोंके लिए है। कहा जाता है कि उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रमें बाईस राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समूह हैं। वस्तुतः इन्हें मुख्यतः तीन समूहों—मुसलमान, मंगोल और तिब्बतीमें ही विभाजित किया जा सकता है किन्तु चीनी सरकारने मुसलमानोंको अनेक छोटी-छोटी जातीय इकाइयोंमें विभाजित

कर दिया है। विधानतः केवल शेंसी और कांसूके चीनी मुसलमानोंको ही मुसलमान कहा जाता है। सिंकियांगके मुसलमान उइघर, कजाक आदि श्रेणियोंमें विभाजित हैं।

लानचाऊका अल्पसंख्यक महाविद्यालय उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रका केन्द्रीय शिक्षालय है। इसके अतिरिक्त तीन और महाविद्यालय हैं। इनमेंसे एक मुख्यतः तिब्बतियोंके लिए है जो चिङ्हियामें स्थित है। दूसरा सिंकियांगमें है जो उस क्षेत्रकी जनताके उपयोगमें आता है। तीसरा मंगोलोंके लिए है। अल्पसंख्यक समूहोंको अल्पकालिक पाठ्यक्रमकी शिक्षा देनेके लिए सचल पाठशालाओंकी भी व्यवस्था की गयी है।

लानचाऊमें वहाँके गवर्नरने, जो प्रसिद्ध मुसलिम युद्धनेता मा हुआङ्-कुईके निकटसम्बन्धी हैं, हम लोगोंके स्वागतमें एक दावत दी। आतिथेयोंमें गवर्नरकी तरह कुछ और मुसलमान भी थे किन्तु ये पूर्णतः चीनी या हंस थे। दूसरे चीनियोंसे उनमें कोई अन्तर न था। खास तौरपर शेचुआनसे लाये गये एक अजगरके मांससे प्रस्तुत व्यंजन इस दावतकी प्रमुख विशेषता थी। चीनमें रहते समय अन्य लोगोंकी तरह मुझे भी ऐसे कई विशिष्ट व्यंजनोंका स्वाद लेनेका मौका मिला है जो दूसरे देशोंसे आये लोगोंके लिए अजीबसे लगते हैं। किन्तु यह पहला अवसर था जब कि मेरे सामने अजगरके मांस द्वारा प्रस्तुत दुर्लभ स्वादिष्ठ व्यंजन परसा गया था। पहले तो मुझे पता ही नहीं चला कि यह किस चीजका व्यंजन है किन्तु मेरी पुत्रीने, जो कुछ कुछ चीनी समझ लेती है, हमारे चीनी मित्रों की वार्तासे यह जान लिया कि यह साँपका मांस है। उससे यह संकेत मिलने पर मैंने गवर्नरसे इस व्यंजनके माधुर्यकी सराहना करते हुए जिज्ञासा प्रकट की कि यह किस चीजका मांस है। मेरी सराहनासे गवर्नरको बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसे अजगरका मांस है जो केवल शेचुआनमें ही मिल सकता है। इसका स्वाद मुर्गीके बच्चोंके सफेद मांसकी तरह था। साँपका मांस खाते हुए मुझे चाहे जितनी झिझक हुई हो

किन्तु मैं इस बारेमें बड़ा सावधान था कि यह हमारे आतिथेयोंपर प्रकट न हो। मैं उसे ऐसा स्वाद लेते हुए खा रहा था कि मानो मैं इसकी बहुत दिनोंसे प्रतीक्षा कर रहा था।

दूसरे दिन हम सामान्य हवाई यातायात व्यवस्थासे पीकिंग वापस आ गये।

बारहवाँ परिच्छेद

चीनमें मेरे दौत्य कार्यकी समाप्ति

मेरी पत्नीके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें डाक्टरोंने सलाह दी थी कि उन्हें पूर्णतः स्वस्थ बनानेके लिए यह आवश्यक है कि मैं एक लम्बे अरसेतक उन्हें लेकर किसी ऐसे गर्म देशमें रहूँ जहाँ सूर्यका प्रकाश अच्छी तरह सुलभ हो सके। इसीलिए मैंने प्रधान मन्त्री नेहरूजी से अनुरोध किया था कि मेरी नियुक्ति मिस्रमें कर दें। मुझे जाड़ेके पहले ही अपना पद त्याग करके अक्तूबरतक भारत वापस आ जाने की अनुमति मिल गयी। किन्तु शीघ्र ही नेहरूजीने अपने आदेशमें कुछ परिवर्तन कर दिया। मुझे फरवरी या मार्चमें कुछ महीनोंके लिए पुनः चीन जानेको कहा गया जिससे मैं एक दो ऐसे महत्त्वके प्रश्नोंका निबटारा कर सकूँ जिसपर उस समय विचार-विमर्श चल रहा था और यदि सम्भव हो तो कोरियामें चल रही युद्धविराम वार्ताकी अन्तिम अवस्थाओंमें भी कुछ सहायता दे दूँ। मैं अक्तूबरके आरम्भतक भारत वापस आ गया। मैंने इस बातका अनुरोध किया कि मुझे जाड़ोंमें भारतमें न रहकर यूरोप जाकर अपने सम्पर्कोंको ताजा करने और पश्चिमकी राजनीतिक गति-विधिकी प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करनेकी अनुमति दी जाय। उस वर्ष संयुक्त राष्ट्रसंघकी साधारण सभाकी बैठक पेरिसमें हो रही थी। नेहरूजीने मुझसे कहा कि इस बैठकमें शामिल होनेवाले भारतीय प्रतिनिधिमण्डलके साथ मैं भी चला जाऊँ। इससे अनुत्तरदायित्वपूर्ण अटकलबाजियोंपर निर्भर न करके मुझे जनमतके प्रतिनिधि नेताओंसे प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करनेका अवसर मिलेगा। इस यात्राके सिलसिलेमें मैं ब्रिटेन जाकर वहाँ कुछ समय रहनेके लिए भी स्वतन्त्र था।

साधारण सभाकी बैठकके रस्मी तौरपर आरम्भ हो जानेके कुछ दिनों बाद ही मैं पेरिस पहुँच गया। प्रतिनिधिमण्डलके नेता श्री बेनेगल नरसिंहरावने मुझे विशिष्ट राजनीतिक समितिका सदस्य नामजद कर दिया था। यह अच्छी तरह समझा जा रहा था कि सभाके सामने आनेवाले महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंके लिए मैं बहुत अधिक समय न दे सकूँगा, इसलिए प्रतिनिधिमण्डलने राजनीतिक समितिमें समय-समयपर मेरे स्थानपर कार्य करनेके लिए श्री आर० के० नेहरूको तथा परराष्ट्र विभाग अर्थात् उच्चायुक्तके कार्यालयके प्रधान श्री हकसारको मेरा परामर्शदाता नियुक्त कर दिया। समितिके सामने पहला प्रश्न अध्यक्षके चुनावका था। पोलैण्डके स्थायी प्रतिनिधि श्रीकाजे सूचीको श्रीबर्गिनसे पेरिसमें मेरी उपस्थितिके सम्बन्धमें पता चल गया था। वे पहले ही दिन मेरे पास यह सुझाव लेकर आये कि समितिकी अध्यक्षताके लिए तुर्की प्रतिनिधिके विरोधमें, जिसका अमेरिका तथा उत्तरी अतलांतक सन्धि-संघटनमें शामिल राष्ट्र समर्थन कर रहे थे, मैं अपना नाम उपस्थित करनेकी अनुमति दे दूँ। श्री बी० एन० राव इस सुझावसे बहुत प्रसन्न हुए, किन्तु मैंने अपने लिए जो कार्यक्रम बना रखा था उसपर विचार करते हुए समितिके अध्यक्षपदकी जिम्मेदारियोंको स्वीकार कर लेना मेरे लिए कठिन था। इसके अतिरिक्त मैं इस सुझावके राजनीतिक अभिप्रायोंको भी अच्छी तरह समझ रहा था। इसलिए मैंने इस सुझावको स्वीकार करनेमें स-धन्यवाद अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। मैंने साफ-साफ बतला दिया कि मैं पेरिसमें तीन या चार हफ्तोंसे अधिक ठहरनेकी आशा नहीं करता।

पेरिसमें रहते समय एक ऐसी कौतूहलजनक बात हुई जिससे मेरा पर्याप्त मनोविनोद हुआ। स्वभावतः वहाँ चीनकी परिस्थितियोंके सम्बन्धमें जनताकी बड़ी रुचि थी। पत्रोंके संवाददाता मुझसे मुलाकात करने तथा चीनकी नयी सरकारके बारेमें वक्तव्य प्राप्त करनेके लिए मुझे बराबर तंग किया करते थे। दिल्लीके मेरे कुछ भाषणोंसे पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिकामें काफी हलचल मच गयी थी। इसलिए मैंने इस अवसरका

लाभ उठाकर सुदूरपूर्वकी गतिविधिके सम्बन्धमें भारतीय दृष्टिकोण और मुख्यतया चीनके साथ अपने सम्बन्धोंकी व्याख्या की। कोमितांग प्रतिनिधियोंको यह पसन्द न आया। उन्होंने एक विशेष पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलनका आयोजन किया। उसमें कोमितांगके प्रमुख प्रतिनिधियोंने मेरे खिलाफ उग्र भाषण किये और मुझपर कम्युनिस्ट होनेके आरोप लगाये। किन्तु यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि सम्मेलनमें जो कुछ कहा गया उसकी ओर किसी भी पत्रने कोई ध्यान न दिया।

यद्यपि मैं पेरिसमें थोड़े समयतक ही रहा फिर भी मैंने फ्रांसके कई राजनीतिक नेताओं तथा पत्रोंके प्रमुख समीक्षकोंसे भेंट की। मैंने देखा कि क्वाई डी आरसेको चीनकी परिस्थितियोंके सम्बन्धमें बहुत ही अच्छी जानकारी थी। उसमें किसी प्रकारका सैद्धान्तिक पूर्वाग्रह नहीं था। उसने स्पष्ट शब्दोंमें यह स्वीकार किया कि विएतनामकी परिस्थितिको देखते हुए फ्रांसके लिए चीनके सम्बन्धमें किसी स्वतन्त्र नीतिका अनुसरण करना कठिन है। उनकी सारी जिज्ञासाएँ अन्ततोगत्वा एक ही प्रश्नपर आ टिकती थीं। वह प्रश्न यह था कि मैं हो-ची मिन्हके साथ वार्ता द्वारा समझौतेकी क्या सम्भावनाएँ समझता हूँ। मैंने उनसे विएतमिन्हकी स्थितिको स्पष्ट करनेका यथाशक्य प्रयत्न किया, क्योंकि मैं उसे न केवल राजदूत होआंगकी मार्फत बल्कि पीकिंगके अन्य सूत्रोंसे भी जानता था। बादमें मुझे फ्रांसके राजनीतिक नेताओंके जो पत्र प्राप्त हुए उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि मेरी वार्ताका उनपर कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा था, चाहे उस समय यह प्रभाव दिखाई भले ही न पड़ा हो।

पेरिसमें तीन सप्ताह रहकर मैं लन्दन चला गया। लन्दनमें श्री कृष्ण मेननने मेरे लिए एक अत्यन्त उपयोगी कार्यक्रम तैयार कर रखा था। इसके लिए उन्होंने सारा प्रबन्ध बखूबी कर लिया था। मैं ब्रिटेनके परराष्ट्र कार्यालयके सर्वश्री इडेन, सिलविन लायड, स्ट्रांग, लार्ड रीडिंग तथा अन्य महत्त्वके अधिकांश व्यक्तियोंसे मिला। राष्ट्रमण्डलीय सचिव लार्ड इस्मेको मैं भारतसे ही जानता था। वाल्टर मांकटन तथा मैंने

भारतकी देशी रियासतोंके राजाओंके मामलोंमें वर्षोंतक साथ-साथ काम किया था। श्री आर० ए० बटलरसे भी मेरा कुछ परिचय था। श्री कृष्ण मेननने मेरी लंदन यात्राको एक कार्यनियुक्त अधिकारीकी यात्राके रूपमें ग्रहण किया और दोनों दलोंके सभी प्रमुख राजनीतिक व्यक्तियोंसे मेरे मिलनेका कार्यक्रम निर्धारित कर लिया। इन नेताओंसे मेरी बहुत ही रोचक वार्ताएँ हुईं। प्रधानमन्त्री नेहरूने मेरी यात्राके सम्बन्धमें लार्ड माउण्टबैटनको पहलेसे ही लिख रखा था। उन्होंने मुझे निजी तौरपर अपने तथा अपनी पत्नीके साथ भोजन करनेके लिए आमन्त्रित किया। हम लोगोंकी वार्ताका मुख्य विषय कश्मीर था। हम लोग इस बातपर विचार करते रहे कि सुरक्षा परिषदमें कश्मीरके मामलेमें क्या किया जाय क्योंकि उस समय ग्राहमकी रिपोर्टपर विचार-विमर्श चल रहा था। मैंने पति पत्नी-दोनोंकी भारतके कल्याण तथा उसके सुनाममें सच्ची दिलचस्पी देखी। लेडी माउण्टबैटनको भारतकी सम्पूर्ण गतिविधि और समूचे देशमें होनेवाले कार्योंकी बहुत अच्छी जानकारी है। समय-समयपर भारतकी यात्रा करनेके कारण भारतीय मामलोंमें उन्हें ऐसी अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो गयी है जो कम लोगोंके पास होगी। मैंने इसे बहुत ही सौभाग्यकी बात समझा कि भारतके पास ऐसे दो अच्छे मित्र मौजूद हैं।

निश्चयात्मिका बुद्धि, विचारोंकी दृढ़ता, राजनीतिक उद्देश्योंके प्रति स्पष्ट दृष्टि और उन उद्देश्योंकी सिद्धिके लिए अटूट उत्साह—इन गुणोंके लिए मैं सदासे श्री कृष्ण मेननका प्रशंसक रहा हूँ। मुझे यह भी मालूम है कि उनके भीतर अपकर्षकारक तत्त्व भी मौजूद हैं। ऐसे लोग खासकर भारतके रूढ़ नागर सेवा (सिविलसर्विस) में पाये जाते हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि 'मूर्खोंको प्रसन्नतापूर्वक बर्दाश्त न कर पानेकी उनकी असमर्थता'के कारण, जिसके लिए वे काफी बदनाम हैं, उनके अनेक शत्रु बन गये हैं किन्तु मुझे यह नहीं मालूम था कि उच्चायुक्तके रूपमें उन्हें लंदनमें कितने प्रकारके कार्य करने पड़ते थे। लंदनमें रहनेवाले भारतीयोंके कल्याण-

के लिए वे छात्रावास, क्लब तथा अन्य कई प्रकारकी संस्थाएँ चलाते थे। उन्होंने इण्डिया लीगसे भी अपना सम्बन्ध बनाये रखा था। इण्डिया लीग ब्रिटिश राजनीतिज्ञ नेताओंका वह संघटन है जिसकी स्थापना उन्होंने ब्रिटेनमें सक्रिय राजनीतिज्ञका जीवन बितानेके समय की थी। मैंने यह भी देखा कि अपने सामान्य कूटनीतिक कार्योंके अतिरिक्त वे भारतकी नयी पीढ़ीमें—उच्चतर अध्ययनके लिए भारतसे ब्रिटेन आनेवाले बहुसंख्यक भारतीय युवकों एवं युवतियोंमें स्थायी रुचि रखते हैं। इन छात्रोंके साथ उनके सम्बन्ध बहुत ही मैत्रीपूर्ण और अनौपचारिक थे। ब्रिटेनमें अपने निवासके अल्पकालमें ही मैं कमसे कम बारह बार उनके साथ किसी न किसी संस्थामें अवश्य गया। मैंने सर्वत्र उच्चायुक्तको छात्रोंके साथ मुक्त-रूपसे मिलते-जुलते देखा। वे छात्रोंके बीच ऐसा अनुभव करते थे मानो वे भी उन्हींमेंसे एक छात्र हैं।

मैं वर्षके अन्ततक भारत आ गया। यूरोपमें छ सप्ताह रहकर मुझे दो बातोंका विश्वास हो गया। एक तो यह कि यूरोपीय राष्ट्र अपनी ही राजनीतिक तथा आर्थिक परेशानियोंमें बुरी तरह उलझे रहनेके कारण सुदूरपूर्व सम्बन्धी अमेरिकी काररवाईपर कोई तात्त्विक प्रभाव डालनेमें समर्थ न हो सकेंगे। इसके फलस्वरूप सुदूरपूर्वका तनाव कम न होगा और वह उस समयतक जारी रहेगा जबतक अमेरिका स्वयं कोई दूसरी नीति प्रयोगमें लानेका निश्चय न कर ले। दूसरी यह कि फ्रांस यद्यपि हिन्द-चीनमें चल रहे 'घृणित युद्ध'को समाप्त करनेके लिए उत्सुक है फिर भी उसे अमेरिका ऐसा करने न देगा और इसके अनिवार्य परिणाम-के रूपमें समय बीतनेके साथ-साथ फ्रांसका सामाजिक और आर्थिक संकट गहरा होता जायगा। इसके अलावा मुझे इस बातका भी दृढ़ विश्वास हो गया कि भारत अबतक शीतयुद्धमें किसी भी प्रकारसे शामिल न होने और उससे तटस्थ रहनेकी जो नीति अपनाता आ रहा है उसके अतिरिक्त किसी भी दूसरी नीतिका अपनाना उसके लिए आत्महत्याके समान होगा, क्योंकि शीतयुद्धकी प्रगति, चाहे वह मूलतः जहाँसे भी

शुरू हुआ हो, अमेरिकाकी अवसरवादी नीतिसे ही निर्धारित होती है और अमेरिका अपने मित्रराष्ट्रोंके हितों और स्वार्थोंका ख्याल नहीं करता। वह हिन्दचीनमें युद्ध जारी रखनेके लिए फ्रांसपर जिस प्रकारसे दबाव डाल रहा था उससे मुझे यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गयी थी।

भारत पहुँचनेपर नेहरूजीने मुझसे कहा कि मैं तुरन्त चीन वापस चला जाऊँ और कोरियाई वार्ताको सन्तोषजनक परिणामपर पहुँचानेके लिए अन्तिम प्रयत्न करूँ। नेहरूजीकी यह भी इच्छा था कि मैं पीकिंग रवाना होनेके पूर्व रंगूनमें बर्माके प्रधानमन्त्री श्री थाकिन नूसे भी मिल लूँ। नवम्बरमें दिल्ली आनेपर श्री थाकिन नूने निजी तौरपर मुझसे चीन और बर्माके सम्बन्धोंपर विचार-विमर्श किया था और बर्मा जानेके समय उन्होंने नेहरूजीसे कहा था कि वे मुझे दो या तीन दिनोंके लिए बर्मा भेज दें जिससे मैं उनके मन्त्रिमण्डलके विभिन्न सदस्योंके साथ इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श कर सकूँ।

मेरी बर्मा-यात्रा बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई। बर्माके प्रधान मन्त्री सन्तस्वभावके पुरुष हैं। उनका बहुत-सा समय वन्दना और उपवासमें बीतता है। उन्होंने मेरा बहुत ही हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने मन्त्रिमण्डलके सदस्योंके साथ मुझे भोजनके लिए आमन्त्रित किया। इस अवसरपर हम लोगोंने चीन और बर्माके सम्बन्धोंपर कुछ विस्तारसे विचारविमर्श किया। मुख्यतः दो प्रश्न ऐसे थे जिनपर बर्मी सरकारको गम्भीर चिन्ता थी। पहला प्रश्न तो बर्मामें कोमितांग छापेमार सैनिकोंकी स्थितिसे सम्बन्ध रखता था। बर्मी सरकारको इस बातकी आशंका थी कि युन्नान स्थित कम्युनिस्ट सेनाएँ इन डाकू सैनिकोंका पीछा करती हुई सीमा पारकर बर्मामें घुस आ सकती हैं। दूसरा प्रश्न बर्मा और चीनकी अनिर्णीत और अनिश्चित सीमा-रेखाका था। पहले प्रश्नपर मैंने एकाधिक बार नेहरूजीके कहनेपर चीनी अधिकारियोंसे विचार-विमर्श किया था। मैंने इस सम्बन्धमें श्री चाऊ एनलाईसे जब

कभी भी विचार-विमर्श किया तो उन्होंने मुझे इस बातका गम्भीरता-पूर्वक विश्वास दिलाया कि जबतक बर्मी सरकार कोमिंतांगके उद्धत सैनिकोंके विरुद्ध पर्याप्त काररवाई करती रहेगी पीकिंग कोई ऐसा कदम न उठायेगा जिससे बर्माको परेशानी हो। दूसरे प्रश्नको मैंने कभी नहीं उठाया था। कारण इसके लिए मुझसे पहलेसे कुछ कहा नहीं गया था। बर्मी सरकारके अधिकारीगण मुझसे यह जानना चाहते थे कि दक्षिण-पूर्वी एशियाके सम्बन्धमें चीनकी स्थितिके प्रति मेरी सामान्य धारणा क्या है। वे विशेष रूपसे यह भी जानना चाहते थे कि क्या मेरे ख्यालसे चीन अनिश्चित सीमा-रेखाके प्रश्नको उसी रूप में उठायेगा जिस रूपमें अतीतमें कोमिंतांग सरकारने अपने विभिन्न अनियमित कार्योंसे इसे उठानेका प्रयत्न किया था। पहले प्रश्नपर तो मैंने मुक्त रूपसे विचार-विमर्श किया, किन्तु दूसरे प्रश्नके सम्बन्धमें कहा कि यदि हमारे प्रधान मन्त्री मुझे अधिकार प्रदान करें तो मैं इस प्रश्नपर चीनी सरकारके साथ अनौपचारिक ढंगसे विचार-विमर्श करनेको प्रस्तुत हूँ।

दूसरे दिन परराष्ट्र मन्त्रीने मुझे एक दावत दी जो रातमें बहुत देर-तक चलती रही। बर्माके लोग बहुत ही मिलनसार होते हैं। वे हमेशा प्रसन्न रहते हैं। उनमें विनोदकी एक सहजात और संक्रमणशील प्रवृत्ति होती है। यद्यपि मेरा विमान प्रातःकाल ही रवाना होनेको था और इस-लिए मुझे कुछ विश्राम कर लेनेकी बड़ी आवश्यकता थी, फिर भी वे मेरा साथ नहीं छोड़ना चाहते थे और रात दो बजेतक बातें करते और मनो-रंजक कहानियाँ सुनाते रहे। उनका यह कहना था कि रात साढ़े ग्यारहतक तो चीनी राजदूत भी दावतमें उपस्थित रहे, इसलिए उनकी उपस्थितिमें उन्हें औपचारिक और सुसंयत बने रहना पड़ा, अतः असली पार्टी तो उनके जानेके बाद ही शुरू हुई। जो भी हो, वातावरणका परिवर्तन बहुत ही ध्यान देने योग्य था। बर्मी अधिकारियोंसे मिलकर मैंने अनुभव किया कि चीनकी हालकी प्रगतिसे बर्मी लोग काफी घबड़ा-से गये हैं। अपने देशकी सीमासे सटे हुए एक विशालकाय कम्युनिस्ट राजके अभ्युत्थानसे

उन्हें काफी परेशानीका अनुभव हो रहा है।

अठारह महीने पूर्व जब मैं बर्मा गया था तबसे अबकी स्थितिमें आशातीत सुधार हो चला था। ऊ नूके व्यक्तित्वने उन सभी कठिनाइयोंपर विजय प्राप्त कर ली थी जो पहले बिलकुल अभिभूत कर देनेवाली प्रतीत होती थीं। बर्माके पुरोहितवर्गको सुधारकर नियन्त्रणमें ला दिया गया था। सरकारने करेन विद्रोहका भी सफलतासे सामना किया था। वे सारे आन्तरिक मतभेद, जिनके कारण शासकीय दल कमजोर हो गया था, बहुत हदतक दूर कर दिये गये थे। बर्माकी आन्तरिक स्थितिका सुदृढ़ होना और भारतके साथ उसका निकट तथा दृढ़ मैत्रीका सम्बन्ध स्थापित होना—ये दो ऐसे तथ्य हैं जिन्हें बहुत कम लोग पहलेसे समझते थे। १९४७ के पूर्व ब्रिटेन यह सोचता था कि बर्माका दृष्टिकोण भारतके प्रति शंकालु और शत्रुतापूर्ण बना रहेगा। बर्मास्थित चेट्टियरों और वहाँ बसे हुए भारतीय व्यापारिक समाजके कारण भारतका दृष्टिकोणभी बर्माकी राष्ट्रीय सरकारके प्रति मैत्रीपूर्ण नहीं रह सकेगा, किन्तु दोनों देशोंके प्रधान मन्त्रियोंकी बुद्धिमत्ता और दोनों देशोंके सामने उपस्थित वृहत्तर समस्याओंकी उनकी सूझबूझके कारण बर्मा और भारतके बीच दृढ़ मैत्री तथा समझदारीका सम्बन्ध स्थापित हो गया है। इसका दक्षिण एशियामें स्थिरता लानेमें बड़ा महत्त्व है।

मैं फरवरीके आरम्भमें पीकिंग वापस चला गया। पीकिंग पहुँचनेके तत्काल बाद ही श्री चाऊ एन-लाईने मेरा स्वागत किया। यूरोपकी स्थितिमें वे बड़ी दिलचस्पी ले रहे थे। उन्होंने मुझसे ब्रिटेन और फ्रांसकी आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियोंके सम्बन्धमें अनेक प्रश्न किये। मैंने उन्हें बताया कि ब्रिटेनकी स्थितिमें बहुत बड़ा सुधार हुआ है। वहाँकी जनता दिन-दिन दिक्कतोंसे पार होती रही है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रिटेनने शान्तिपूर्ण ढंगसे और यथासम्भव कमसे कम तोड़-फोड़से एक बहुत ही प्रभावकारी सामाजिक क्रान्तिकी सृष्टि की है। यदि कोई राजनीतिक सिद्धान्त इस मान्यताके आधारपर खड़ा किया जायगा कि

ब्रिटेनमें दिन-दिन सामाजिक अशान्ति बढ़ रही है तो इससे केवल गलत निष्कर्ष ही निकलेंगे। मुझे ऐसा लगा कि श्री चाऊ एन-लाईको मेरी इस बातसे बड़ा आश्चर्य हुआ। शान्तिपूर्ण क्रान्तिकी सम्भावना स्वीकृत मार्क्सवादी सिद्धान्तके विरुद्ध जाती है, इसलिए स्वभावतः उनके जैसे व्यक्तिके लिए, जिसकी गैरकम्युनिस्ट देशोंके सम्बन्धमें प्रत्यक्ष जानकारी बहुत ही कम है, यह बात बिलकुल अविश्वसनीय है कि समस्याओंका समाजवादी समाधान कम्युनिस्ट क्रान्तिके एक अच्छे विकल्पके रूपमें प्रस्तुत किया जा सकता है। चीनी सांस्कृतिक प्रतिनिधिमण्डलका भारतमें जैसा स्वागत हुआ था उससे श्री चाऊ एन-लाईको बड़ी प्रसन्नता हुई थी। उन्होंने भारतीय सद्भावना मण्डलके शीघ्र ही चीन आनेकी आशा प्रकट की।

दो घण्टेकी लम्बी और हार्दिक मुलाकातके बाद मैंने श्री चाऊ एन-लाईको सूचित किया कि मेरी सरकार तिब्बतके साथ स्थापित सम्बन्धोंके पुनर्नियमनपर विचार-विमर्श करनेको तैयार है। विदा लेनेके पूर्व ही उन्होंने यह प्रश्न छेड़ दिया था और इस बातका भी संकेत कर दिया था कि नेपालके साथ सीधा कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करनेमें वे हमारी सेवाओंका स्वागत करेंगे। मैंने उनसे कहा कि नेपालकी स्थिति कुछ उलझी हुई, अनिश्चित और अस्पष्ट-सी है, इसलिए इस मामले पर विचार करनेके पूर्व कुछ समयतक प्रतीक्षा करना अच्छा होगा। श्री चाऊ एन-लाईने इस सारी समस्यापर शीघ्र ही मेरे साथ फिर विचार-विमर्श करनेका वचन दिया।

अप्रैलके अन्ततक भारतीय सद्भावनामण्डल पीकिंग पहुँच गया। इसका नेतृत्व श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित कर रही थीं। यह भारतके सांस्कृतिक जीवनका अच्छा प्रतिनिधित्व करता था। आचार्य नरेन्द्रदेव और पण्डित अमरनाथ झा भारतके शैक्षिक जीवन और पाण्डित्य का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। प्रतिनिधिमण्डलमें वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, इंजीनियर, पुरातत्त्ववेत्ता आदि सभी प्रकारके लोग थे। सभी अपने अपने क्षेत्रके

विशिष्ट प्रतिनिधि और अपनी उपलब्धियोंके लिए प्रख्यात व्यक्ति थे। भारतीय शास्त्रीय नृत्यका प्रतिनिधित्व सुश्री शान्ताराव कर रही थीं। बेन्द्रेके रूपमें प्रतिनिधिमण्डलमें एक प्रख्यात चित्रकार भी शामिल था। प्रतिनिधिमण्डल जिस रूपमें संघटित हुआ था उससे बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि मैं जानता था कि श्रीमती पण्डित अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रमें अपनी महान् प्रतिष्ठा और अपने तौर-तरीकोंके आकर्षणसे चीनी जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव डालेंगी, तथा प्रतिनिधिमण्डलके दूसरे सदस्य अपनी विभिन्न प्रकारकी प्रतिमाओंसे भारतको चीनी जनताके समीप लानेमें समर्थ होंगे। प्रतिनिधिमण्डलका चीनमें बड़े उत्साहसे स्वागत किया गया।

भारतीय सद्भावनामण्डलके चीन आनेके अवसरपर मैंने श्रमिक प्रासादमें आधुनिक भारतीय कलाकी एक प्रदर्शनीका आयोजन कर रखा था जिसका उद्घाटन श्री चाऊ एन-लाईने किया था। आधुनिक भारतीय कलाका वैविध्य और उसकी समृद्धि चीनी जनताके लिए बड़ी ही प्रेरणादायक और आकर्षक थी। प्रदर्शनीमें प्रतिदिन बड़ी संख्यामें लोग आया करते थे। प्रदर्शनीके उद्घाटनके अवसरपर भाषण करते हुए श्री चाऊ एन-लाईने चीन पर भारतीय कलापरम्पराके पड़नेवाले प्रभावकी चर्चा की थी। इस सम्बन्धमें उन्होंने तुङ्‌ हुआन की गुफाओंके भित्तिचित्रोंका उदाहरण देते हुए कहा था कि ये भित्तिचित्र चीन और भारतके सहयोगके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। सुश्री शान्तारावके नृत्यों तथा उनके द्वारा प्रस्तुत भारतनाट्यम् और मोहिनी अत्तमकी सजीव व्याख्याकी भी बड़ी प्रशंसा हुई थी।

मुझे कोरियाई शान्तिवार्ताके प्रश्नको पुनः चलानेके लिए श्रीमती पण्डितकी उपस्थितिका लाभ उठानेमें बड़ी प्रसन्नता हुई। प्रतिनिधिमण्डलके चीन पहुँचनेके पहले ही मैंने श्री चाऊ एन-लाईसे कह रखा था कि कोरियाके प्रश्नपर श्रीमती पण्डितसे विचार-विमर्श करना उपयोगी होगा, क्योंकि वे राष्ट्रके संकटके समयमें न केवल वाशिंगटनमें भारतकी राजदूत रह चुकी हैं बल्कि व्यक्तिगत रूपसे नेहरूजीसे अपने स्वतन्त्र

विचार भी व्यक्त कर सकती हैं। इसलिए मैंने अपने निवासस्थानपर खास-खास आत्मीयजनोंके एक सीमित भोजका आयोजन किया। इस भोजमें चीनी सरकारकी ओरसे केवल सर्वश्री चाऊ एन-लाई, चाङ्-हान-फू, चान चिया-काङ् और एक दुभाषिया तथा हमारी ओरसे श्रीमती पण्डित, स्वयं मैं और श्री कौल शामिल हुए थे। भोजके बाद हम लोगोंने युद्धबन्दियोंके प्रश्नपर कुछ हदतक विचार-विमर्श किया, क्योंकि युद्ध विरामके रास्तेमें यह प्रश्न सबसे बड़ा रोड़ा बना हुआ था। श्री चाऊका यह आग्रह था कि दोनों पक्षके बन्दियोंको सामान्य नियमके अनुसार परावर्तित किया जाय। अमेरिका इसके विरुद्ध था, इसलिए मुझे गतिरोध दूर करनेका कोई उपाय नहीं दिखाई देता था, किन्तु फिर भी हम लोगोंने तटस्थ रूपसे समस्याके परीक्षणकी सम्भावना पहली बार व्यक्त की। इस विचार-विमर्शसे एक लाभ यह अवश्य हुआ कि श्रीमती पण्डित-को इस बातका दृढ़ विश्वास हो गया कि यदि किसी ऐसे उपयुक्त सूत्रका विकास नहीं किया जाता जिसमें यह प्रश्न भी शामिल हो जाय तो अन्ततोगत्वा युद्ध विरामवार्ता भङ्ग हो सकती है।

प्रतिनिधिमण्डलके पीकिंगसे रवाना होनेसे पूर्व श्रीमाओ त्से-तुंगने उसका स्वागत किया। श्रीमती पण्डितकी उनसे बड़ी ही रोचक वार्ता हुई। वार्ताके बाद श्रीमाओ त्से-तुंगने सुश्री शान्तारावका नृत्य भी देखा। इस अवसरपर भारतीय अतिथियोंके स्वागतमें चीनकी ओरसे विशेष रूपसे प्रस्तुत एक नृत्यकाभी आयोजन किया गया था। इस नृत्यके कार्यक्रमका चरमोत्कर्ष उस समय दिखाई पड़ा जब कि सम्पूर्ण रङ्गमञ्च शतदल कमलोंसे परिपूर्ण हो उठा और प्रत्येक कमलमेंसे एक-एक नारी-मूर्ति तथा मध्यवर्ती कमलमेंसे नर्तकी राजकुमारी आविर्भूत हुई। मैं नहीं कह सकता कि इस नृत्यका अभिप्राय भारतीय पुराणोंमें वर्णित लक्ष्मीकी अवतारणाकी कथाको प्रस्तुत करना था या नहीं, किन्तु यदि उसका यही अभिप्राय रहा हो तो उससे भारत और श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित दोनोंका अभिनन्दन हो जाता था। श्री चाऊ एन-लाईने मुझे बताया कि

इस नृत्यकी रूपरेखा नृत्य अकादमीको स्वयं उन्होंने दी थी।

पीकिंगमें अपना कार्यक्रम समाप्त करनेके बाद प्रतिनिधिमण्डल मंचूरिया गया। वहाँ जाकर उसे स्वयं अपनी आँखोंसे यह देखनेका अवसर प्राप्त हुआ कि किस प्रकार श्री काओ काङ् उस महत्त्वपूर्ण क्षेत्रका समाजवादकी एक प्रयोगशालाके रूपमें संचालन कर रहे हैं। इसी क्षेत्रके बारेमें चीनविरोधी प्रचारकोंने यह उड़ा रखा था कि यह क्षेत्र रूसियोंके अधीन है। मंचूरियासे प्रतिनिधिमण्डल विशेष ट्रेनसे हुआई नदी परियोजनाके निरीक्षणके लिए गया। इस परियोजनाके अन्तर्गत बाढ़ नियन्त्रण और सिंचाईकी संयुक्त-योजना शामिल है। नवचीन द्वारा कार्यान्वित की जानेवाली यह अपने ढङ्गकी पहली योजना है। मैं भी प्रतिनिधिमण्डलका स्वागत करनेके लिए शंघाई पहुँच गया था, क्योंकि मैंने नगरमें प्रतिनिधिमण्डलके पदार्पण करनेके अवसरपर एक कला प्रदर्शनीका आयोजन कर रखा था जिसका उद्घाटन श्रीमती सुन यात-सेन करनेवाली थीं। श्रीमती सुन यात-सेन प्रधानमन्त्री नेहरूजीकी पुरानी मित्र हैं। १९४८ में मेरे चीन पहुँचनेके समयसे ही उनकी मुझपर कृपा रही है। क्रान्तिके बाद भी हमलोगोंका बराबर सम्पर्क बना रहा यद्यपि मैं उन्हें परेशान न करनेकी इच्छासे औपचारिक अवसरोंपर ही उनसे मिला करता था। नवचीनमें उनकी स्थिति नितान्त अपवादस्वरूप थी। स्वभावतः वे श्री सुन यात-सेनकी अनुयायिनी थीं। वे कम्युनिस्ट नहीं थीं। उनके मकानमें दीवालपर उनके दिवंगत पतिके अतिरिक्त और किसी व्यक्तिका चित्र नहीं था। वे एक सांस्कृतिक महिलाका जीवन व्यतीत कर रही थीं। उनकी रुचि अपेक्षाकृत जनकल्याणकारी कार्योंमें ही अधिक थी। वे एकात्मभाव और लगनसे अपनेको उस महान् संघटनको अर्पित कर चुकी थीं जिसकी उन्होंने स्थापना की थी। इस संघटनका नाम चीन-कल्याण समाज (चाइना रिलीफ सोसाईटी) था। अब इसे सरकारने अपने हाथमें ले लिया था। यद्यपि वे चीनी जनवादी गणतन्त्रके छ उपाध्यक्षोंमेंसे थीं, तथापि वे सामान्यतः शंघाईमें ही रहकर अपनी विभिन्न संस्थाओं-

का निरीक्षण करती रहती थीं। पहली अक्तूबर जैसे केवल महत्त्वके सामाजिक अवसरोंपर ही वे पीकिंग आ जाया करती थीं।

श्रीमती सुन-यात सेनने-अपने निजी बंगलेमें हम लोगोंका स्वागत किया। बंगलेमें प्रतिनिधिमण्डलके सभी सदस्य उपस्थित थे, इसलिए वे कुछ औपचारिक ढंगसे व्यवहार कर रही थीं और चीनीमें ही बोलती थीं। उनकी बातोंका एक दुभाषिया अनुवाद करता जाता था। श्रीमती पण्डितको उनका चीनी भाषामें बोलना कुछ अजीब और कृत्रिम-सा मालूम पड़ा, क्योंकि उन्हें मालूम था कि श्रीमती सुन यात-सेनका अंग्रेजी भाषा-पर बहुत अच्छा अधिकार है। वस्तुतः श्रीमती सुन यात-सेनकी अंग्रेजी उनके दुभाषियेकी अंग्रेजीसे कहीं अच्छी थी, किन्तु चीनमें औपचारिक अवसरोंपर दुभाषियेके माध्यमसे ही बातचीत करनेके नियमका बड़ी कड़ाईसे पालन किया जाता है यद्यपि आपसी व्यवहारमें इस नियमका पालन नहीं किया जाता। स्वयं श्रीमती सुन जब हमलोगोंको विदा देने बाहर आयीं तो उन्होंने निजी तौरपर मुझसे अंग्रेजीमें ही बातचीत की किन्तु सार्वजनिक रूपको तो उन्हें बनाये ही रखना था।

दूसरे दिन श्रीमती सुनने प्रदर्शनीका उद्घाटन करते हुए भारतके सम्बन्धमें बहुत ही उदारतापूर्ण विचार व्यक्त किये। दो दिनों बाद मैंने प्रतिनिधिमण्डलके सम्मानमें एक भोज दिया। इसमें श्रीमती सुन, श्री चेन यी तथा नगरकी कम्युनिस्ट पार्टीके नेता और सरकारी अधिकारी शामिल थे। क्रान्तिके बादसे श्रीमती सुन कभी भी किसी सार्वजनिक भोजमें शामिल नहीं हुई थीं। उन्होंने मुझसे कहा कि जब वे भारतके सम्मानमें प्रदर्शनीका उद्घाटन करनेके लिए आयीं तो एक मित्रके रूपमें मेरे प्रति सौजन्य दिखलानेके लिए उनका भोजमें शामिल होना भी आवश्यक था। भोजके बाद सुश्री शान्तारावका नृत्य हुआ। श्रीमती सुन तथा जनरल चेन यी दोनोंने नृत्यकी बड़ी प्रशंसा की। श्रीमती सुनको भारतीय नृत्यका कुछ ज्ञान भी था। वे बर्लिनमें श्री उदयशंकरका नृत्य देख चुकी थीं।

जनरल चेन यी कई मानोंमें विशेष प्रकारके व्यक्ति थे। वे देखनेमें ४० पार कर रहे थे। उनका शरीर सुसंघटित और व्यक्तित्व सुन्दर था। उनकी आँखोंमें एक चमक थी और उनकी चाल-ढाल बड़ी आकर्षक थी। उनकी सैनिक शक्तिकी कहानियाँ चीनके घर-घरमें प्रचलित थीं। उन्होंने तथा चीनके एकाक्ष अजगर लीउ पो-चीने मिलकर मध्य चीनमें च्याङ्‌ काई-शेककी समूची सैनिक शक्तिको उद्‌ध्वस्त कर दिया था और सुचाऊकी बड़ी लड़ाईमें विजय प्राप्त की थी। वे शान्तुङ्‌से लेकर फूकिनतक समूचे पूर्वी चीनके सैनिक प्रशासक थे। उन्हें शंघाईके मेयरकी नागरिक प्रशासकीय उपाधि भी प्राप्त थी। बातचीतसे पता चलता था कि उनकी जानकारी बहुत ही ऊँचे दर्जेकी है। वे बिना किसी प्रकारकी हठवादिताके अनेक राजनीतिक समस्याओंपर बड़े बुद्धिमत्तापूर्ण ढंगसे विचारविमर्श करते थे। किन्तु उनकी जिस विशेषतासे मैं सबसे अधिक प्रभावित हुआ वह काव्य, संगीत और नृत्यमें उनकी रुचि थी। वे सुश्री शान्तारावके नृत्य तथा उस नृत्यके वाद्ययन्त्रोंकी संगीतको न केवल समझते और उसकी सराहना करते जाते थे बल्कि उसकी कलाकी बारीकियोंपर भी विचारविमर्श करते थे। सैनिकके रूपमें तो उनकी उपलब्धि बेजोड़ थी ही, एक कविके रूपमें भी उनकी कुछ प्रसिद्धि थी। इस प्रकार श्री चेन यीके व्यक्तित्वमें मुझे चीनकी प्राचीन संस्कृति और नवयुगकी गतिमत्ताका विशिष्ट सम्मिश्रण दिखाई देता था।

श्री चेन यीने भी हम लोगोंके स्वागतमें नृत्य और संगीतके कार्यक्रमकी व्यवस्था की थी। हम लोगोंके सामने श्री मी लान-फाङ्‌ द्वारा बौद्ध-कथावस्तुके आधारपर रचित एक विशेष प्रकारके गीतिनाट्यका कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। प्रतिनिधिमण्डलने नगरकी अनेक सार्वजनिक संस्थाओंका भी निरीक्षण किया। उसे नवचीनकी औद्योगिक प्रगतिका परिचय करानेके लिए कुछ कारखाने भी दिखाये गये। शंघाईसे प्रतिनिधिमण्डल हान्‌चाऊ गया और वहाँसे अपनी वापसी यात्रामें वह कैण्टन पहुँचा। इस सद्‌भावनामण्डलको आशातीत सफलता

प्राप्त हुई। इसमें सन्देह नहीं कि इस सफलताका बहुत बड़ा श्रेय श्रीमती पण्डितके व्यक्तित्व और आकर्षणको है। उनकी मैत्री-भावनासे चीनी जनता उनके पीकिंग पहुँचनेके पहले दिनसे ही प्रभावित होने लगी थी।

प्रधानमन्त्री नेहरूजीने मुझे प्रतिनिधिमण्डलके भारत वापस चले आनेपर पीकिंगमें अपना पदत्याग कर देनेकी अनुमति प्रदान कर दी थी। अन्तिम महीनेमें मुलाकातों और दावतोंका दौर पूर्ववत् चलता रहा, किन्तु मुझे स्वभावतः तिब्बतकी समस्याका समाधान प्राप्त करनेकी विशेष चिन्ता थी। मैं कोरियाई युद्ध-बन्दियोंकी समस्याके सम्बन्धमें भी कुछ कर पानेके लिए प्रयत्नशील था, क्योंकि पानमुनजानमें चलनेवाली युद्ध-विरामवार्ताके रास्तेमें सबसे बड़ा रोड़ा यही समस्या थी। श्रीमती पण्डितके चीनसे बिदा होनेके तुरन्त बाद ही मुझे प्रधान मन्त्रीका एक व्यक्तिगत सन्देश प्राप्त हुआ। इस सन्देशमें कुछ ऐसे प्रस्ताव दिये गये थे जो आशाजनक और उत्साहवर्द्धक प्रतीत होते थे। संक्षेपमें इन प्रस्तावोंका यह आशय था कि कोरियाई युद्ध-बन्दियोंकी देखभालके लिए एक तटस्थ आयोग संघटित कर दिया जाय। उत्तर कोरिया तथा उसके मित्रराष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंको बन्दियोंसे स्वतन्त्रतापूर्वक मुलाकात करनेका अवसर दिया जाय जिससे वे आयोगको अपेक्षित स्पष्टीकरण दे सकें। इन प्रस्तावोंपर श्रीकृष्ण मेनन तथा ब्रिटेनके अधिकारियोंके बीच विचार-विमर्श हो चुका था, यद्यपि इन्हें उपस्थित करनेका उत्तरदायित्व पूरी तरहसे हम लोगोंपर ही था। मेरे चीनसे विदा होनेकी निर्धारित तिथिसे दो दिन पूर्व श्रीचाऊ एन-लाईने मुझे अपने निवासस्थानपर एक निजी भोजके लिए आमन्त्रित किया। भोजके समय उन्होंने मेरे साथ इन प्रस्तावोंपर विस्तारसे विचार-विमर्श किया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि चीनको ये प्रस्ताव सिद्धान्ततः स्वीकार्य होंगे, फिर भी स्पष्टीकरणकी अवधिके समय युद्धबन्दियोंके नियन्त्रण तथा उनसे साक्षात्कार करनेके तरीकों आदिपर बहुत ही छानबीनके साथ वार्ता करनेकी आवश्यकता होगी। कुल मिलाकर प्रस्तावके सम्बन्धमें उनकी प्रतिक्रिया सन्तोषजनक थी। मेरे पास यह विश्वास करनेका पूरा

आधार हो गया कि ये प्रस्ताव सफल होंगे। अन्ततोगत्वा हुआ भी यही, यद्यपि इसमें छ महीनेकी कड़ी सौदेबाजी हुई।

तिब्बतकी समस्या अपेक्षाकृत सरल थी। श्री चाऊ एन-लाई तिब्बतमें हमारे व्यापारिक और सांस्कृतिक स्वार्थोंकी वैधता स्वीकार करते थे। उन्होंने यह सुझाव दिया कि ल्हासास्थित राजनीतिक अभिकरणको, जिसकी वैधता संदिग्ध है, भारतीय महावाणिज्यदूतके दूतावासके रूपमें बदल दिया जाय और इसके बदलेमें इसी प्रकारका एक चीनी वाणिज्य दूतावास भी बम्बईमें खोल दिया जाय। मुझे उनका सुझाव स्वीकार करनेका अधिकार मिल चुका था। जहाँतक हमारी तिब्बतस्थित अन्य संस्थाओं, पदों आदिका सम्बन्ध था, उनमेंसे तारकी लाइनों, यातुङ्स्थित सैनिक रक्षक दल आदिको समयसे धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया और व्यापारिक तथा अन्य अधीनस्थ अभिकरणोंको वाणिज्य दूतावासके सामान्य सम्बन्धोंके ढाँचेके अन्तर्गत ला दिया गया। इन विषयोंपर यथावसर अनुकूल परिस्थिति आनेपर विचार करनेका निश्चय किया गया। ल्हासामें हमारे प्रतिनिधित्वकी मुख्य समस्या इस प्रकार सन्तोषजनक ढंगसे हल हो गयी। मुझे चीनसे विदा होते समय इस बातकी प्रसन्नता हुई कि अब चीन और भारतके बीच कोई मुख्य समस्या नहीं रह गयी है।

आप पूछेंगे नये चीनके सम्बन्धमें मेरी सामान्य धारणा क्या है? मैंने पीकिंगमें चीनकी केन्द्रीय जनवादी सरकारके प्रमुख नेताओंके निकट सम्पर्कमें दो वर्षसे भी अधिक समय व्यतीत किया था। मैं नानकिंगमें भी उस समय रह चुका था जब कोमितांग सरकार शक्तिशाली थी। मैंने उसके दुःखद विघटन और अन्ततोगत्वा पतनके भी दृश्य देखे थे। मैंने पाँच महीनेका ऐसा कठिन समय भी काटा था जिस समय चीनमें मेरी आधिकारिक स्थितिको कोई मान्यता प्राप्त न थी। यह ठीक है कि पाँच महीनेके इस समयमें चीनमें मुझे एक नये समाजको विकसित होते देखनेका अवसर मिला। इस अल्पकालमें ही जिस नाटकीयतासे पुराने युगका अन्त और नये युगका आरम्भ हुआ उसका अनुभव सचमुच

बहुत ही रोचक है। इसी समयमें एक ओर कोमिंतांग जैसे महान् आन्दोलनसे जो आशाएँ की जा सकती थीं उनका दुःखद अन्त हो रहा था जिसके अनिवार्य फलस्वरूप चतुर्दिक् अव्यवस्था फैल गयी थी, कितने ही गर्हित विश्वासघातों और कितने ही व्यक्तियोंके विषादपूर्ण अवसानके दृश्य देखनेको मिले। दूसरी ओर एक नये युगका उत्साहपूर्ण समारम्भ हो रहा था। नवप्रभातके रूपमें इसका अभिनन्दन किया जा रहा था। इसके पीछे न जाने कितनी महत्वाकांक्षाएँ थीं—कितनी महान् आशाएँ थीं। इसके प्रति सर्वत्र आशावादिता व्याप्त थी।

मेरे मस्तिष्कमें नये चीनके सम्बन्धमें तीन धारणाएँ बहुत ही स्पष्ट रूपमें विद्यमान हैं। पहली धारणा तो यह है कि नवचीन असंदिग्ध रूपसे एशियाके पुनर्जागरणकी चरम परिणतिसे सम्बन्ध रखनेवाली एक महान् घटना है। नवचीनकी कम्युनिस्ट क्रान्तिको लेकर जो विवाद खड़ा किया जाता है, उसके फलस्वरूप संसार और मुख्यतः यूरोपकी जनता इस आधारभूत तथ्यकी उपेक्षा कर जाती है। एशियाका यह पुनर्जागरण कोमिंतांगसे ही आरम्भ हुआ था। अपने आरम्भिक उत्कर्षके दिनोंमें, विगत दो महायुद्धोंके बीचके कालमें, इसने एशियाई जनताके महान् अग्रगामी आन्दोलनका प्रतिनिधित्व किया था। एशियाई जागर्तिकी अग्रिम पंक्तिसे राष्ट्रवादी चीनके च्युत होनेका कारण केवल यही नहीं था कि कोमिंतांग सरकार भ्रष्टाचार, राजनीतिक एवं सैनिक दुर्बलताका शिकार हो गयी थी और ऐकान्तिक रूपसे अमेरिकापर निर्भर करने लगी थी, इसका कारण यह भी था कि उसने एशियाकी नयी चेतनाका प्रतिनिधित्व करना छोड़ दिया था। चीनके कम्युनिस्ट नेताओंको यदि पड़ोसी राष्ट्रोंकी अपेक्षाकृत अधिक सहानुभूति प्राप्त हुई तो इसका कारण उनका कम्युनिज्म नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि वे एशियाई जनताके विचारोंमें जो नया परिवर्तन आया था, उसे अच्छी तरह समझते थे और शुरूसे ही पाश्चात्य राष्ट्रों तथा अमेरिकासे सम्बन्ध रखनेवाली एशियाई समस्याओंकी गहरी समझ-बूझका परिचय देने लगे थे।

दूसरी बात यह है कि चीनकी नयी सरकार मुझे चीनमें एक सुदृढ़ केन्द्रीय सरकार कायम करनेकी दिशामें अग्रसर उस सौ वर्ष पुरानी प्रगतिकी परिणति प्रतीत होती है जिसका सूत्रपात मांचूयुगके उत्तरार्द्ध में ही चीनके महान् शासकोंने कर दिया था। कोमिंतांगने भी इस प्रगतिको कुछ हदतक आगे बढ़ाया था और एक ऐसी सरकारकी स्थापना की थी जो चीनके अधिकांश भू-भागपर अपना प्रभुत्व कायम कर सकी थी। बाहरी परिस्थितियों, जापानके हस्तक्षेप, बड़े राष्ट्रोंके दृष्टिकोण, चीनके पूँजीपति वर्गका, जो राजनीतिक क्षेत्रमें भी बड़ा अधिकार रखने लगा था, पश्चिमके पूँजीपतियोंके साथ गठबन्धन तथा बहिर्वर्ती क्षेत्रोंमें स्थानीय युद्धनेताओंकी शक्तिके कारण कोमिंतांग सरकारका स्वाभाविक विकास रुद्ध हो गया। कम्युनिस्टोंके उत्कर्षके साथ चीनके इतिहासमें पहली बार एक सुदृढ़, संयुक्त केन्द्रीय सरकार अस्तित्वमें आयी है जिसका साइबेरियाकी सीमासे लेकर हिन्दचीनतक और प्रशान्त महासागरसे लेकर पामीरतक प्राचीन 'दैवी साम्राज्य'के समूचे क्षेत्रपर एक छत्र आधिपत्य स्थापित है। यह ठीक है कि साम्राज्यशाहीके पुराने दिनोंमें, हंस, ताङ्, युआन, मिङ् और मांचुओंके समयमें समूचा चीन एक साम्राज्यके अन्तर्गत एक केन्द्रीय सरकारके अधीन संयुक्त था, किन्तु यह सरकार 'देवपुत्र' सम्राट्के रहस्यमय अस्तित्वपर निर्भर करती थी और सम्राट् दैवी आदेशोंसे अपने महान् राज्याध्यक्षोंके माध्यमसे शासन करता था। वह सरकार आजके सर्वव्याप्त इस केन्द्रीय जनवादी सरकारसे सर्वथा भिन्न थी जो रलों, हवाई यातायात, डाक, तार, बेतारके तार आदि वार्तावहनके सभी आधुनिक साधनोंसे सुसज्ज है और इस सबसे ऊपर जिसके पास एक शक्तिशाली राष्ट्रीय सेना और एक ऐसा दीक्षित, सुशिक्षित और अनुशासित दल मौजूद है जिसकी शाखाएँ सारे देशमें फैली हुई हैं। चीनका यह केन्द्रीकरण,चाहे अच्छा हो या बुरा, किन्तु यह एक बहुत ही महत्त्वका तथ्य है, क्योंकि इसने परस्पर असंपृक्त और एक बिखरे हुए जन-समूहको एक ऐसे संयुक्त राष्ट्रके रूपमें बदल दिया है जो

चीनके अपार साधनोंको संघटित करने और उपयोगमें लानेमें समर्थ है। इस प्रकियासे चीन आज सचमुच एक 'महान् शक्ति' बन गया है जिसका कि वह बराबर दावा करता रहा है।

ऐबटने अपने यूरोपका प्रसार (एक्सपैंसन ऑव यूरोप) नामक ग्रन्थमें लिखा है कि 'इतिहासमें किसी युगको स्मरणीय बना देनेवाली विभिन्न घटनाओंमें कोई भी घटना इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होती जितनी किसी एक राष्ट्रकी विश्वके गण्यमान्य राष्ट्रोंकी समानतामें आ जाने या उनसे प्रभुत्वमें बढ़ जानेकी घटना होती है। पहले दीर्घकालतक अनिवार्य रूपसे घटनाचक्रका विकास होता रहता है। तदनन्तर किसी असाधारण परिस्थितिके उत्पन्न हो जानेसे अथवा किसी विशिष्ट व्यक्तिकी महत्त्वाकांक्षा या योग्यताके कारण उसमें एक नयी गति आ जाती है। अन्तमें घटनाचक्रका पर्यवसान किसी बड़ी उथल-पुथल या बड़े पैमानेपर शस्त्रबलके निर्णायक प्रयोगमें होता है जिसके फलस्वरूप शक्ति, धन और रक्तका भारी अपव्यय होता है। इस प्रकार विश्वके राष्ट्रोंमें एक नवागत और नवोत्थित राष्ट्र शक्तिपूर्वक अपना स्थान बना लेता है। फिर इन नयी परिस्थितियोंमें अन्य राष्ट्रोंका आपेक्षिक ह्रास हो जाता है और उन्हें अपनेको इसके अनुरूप बनाना पड़ता है। इतिहासमें घटनाचक्रका यही अनिवार्यक्रम बारबार उपस्थित होता रहता है। यही विश्वके राजनीतिक रंगमंचपर होनेवाले अभिनयकी प्रगति और वैशिष्ट्यका मुख्य अभिप्राय है।' चीन एक महान् शक्ति बन गया है और आग्रह कर रहा है कि उसे इसी रूपमें स्वीकार किया जाय। अन्य राष्ट्रोंके लिए विश्वकी राजनीतिमें किसी ऐसे नये राष्ट्रके आगमनको मान्यता देना और उसके फलस्वरूप उत्पन्न होनेवाली नयी स्थितिके अनुरूप अपनेको बना लेना आसान नहीं होता। सुदूरपूर्वका संघर्ष इसीका परिणाम है। नये चीनके जीवनके प्रत्येक अंगमें यही संघर्ष प्रतिफलित हो रहा है। नये चीनमें जो कुछ भी अच्छा या बुरा हो रहा है उसकी एक मुख्य प्रेरक-शक्ति संघर्षकी यही भावना है। नवचीनके शक्तिप्रदर्शन, उसकी

संघर्षशीलता, जो कोई भी उसके अधिकारोंको माननेसे इनकार करता है उसको ललकारनेकी उसकी प्रवृत्ति; इतना ही नहीं, आज चीनी जनतामें जो उत्साह दिखायी पड़ रहा है, जनताकी अपार शक्ति सर्वत्र मुक्त होकर जिस रूपमें रचनात्मक कार्योंमें लगी हुई है, न केवल सत्ता बल्कि औद्योगिक तथा अन्य प्रकारकी महत्तामें भी दूसरे बड़े राष्ट्रोंकी समकक्षता प्राप्त करनेका उसमें आज जो अटूट संकल्प जगा हुआ है—इस सबके पीछे यही प्रवृत्ति काम कर रही है।

नवचीनकी जिस तीसरी विशेषताने मुझे प्रभावित किया है वह उसकी अपने जीवन और संस्कृतिका नैरन्तर्य बनाये रखनेकी अभिलाषा है, यद्यपि नये विचारके नेता जिन वस्तुओंको सामन्ती और प्रतिक्रियावादी व्यवस्थाका कुपरिणाम समझते हैं उन्हें निर्मम भावसे नष्ट कर दिया जाता है। चीनियोंने चीनी होनेके अतिरिक्त और कुछ भी बननेकी प्रवृत्ति नहीं दिखाई है। रूसकी उपलब्धियोंकी प्रशंसा करते हुए भी उन्होंने अपनी वेशभूषा, भोजनका अपना विशेष ढंग, अपने शिष्टाचार और अपनी विशिष्ट जीवन प्रणालीका त्याग नहीं किया है। कनफ्यूशियनवाद, उसकी पाँच आज्ञाओं, धार्मिक अनुष्ठानों, विधिविधानों और बोलने तथा लिखनेके उसके कृत्रिम तरीकोंके कट्टर विरोधी होते हुए भी नये चीनके नेताओंने अपने देशके इतिहासकी पुनर्व्याख्या करते हुए वर्तमानका अतीतसे सम्बन्ध स्थापित कर रखा है। जिस श्रद्धा और सावधानीसे वे चीनके प्राचीन स्मारकोंकी रक्षा कर रहे हैं, जिस प्रकार उन्होंने प्राचीन कलारूपोंको नया जीवन प्रदान किया है और चीनके प्राचीनकालके इतिहासके सम्बन्धमें खोज करनेका उनमें जैसा उत्साह दिखाई दे रहा है, उससे नवीनको प्राचीनसे जोड़नेकी उनकी प्रबल भावनाका ही परिचय मिलता है।

चीनमें सर्वत्र शिक्षा-प्रसार, सभी क्षेत्रोंमें शीघ्र प्रगति और सभी चीजोंमें शीघ्रतासे सुधार लानेका संकल्प दिखाई देता है। यह ठीक है कि इन सारे कार्योंकी मुख्य शक्ति कम्युनिस्ट पार्टीसे ही प्राप्त होती है किन्तु

पार्टीके बाहर भी ऐसे लोगोंकी विशाल संख्या मौजूद है जिनमें उसी प्रकारका उत्साह भरा हुआ है। जनता ऐसे लोगोंको बर्दाश्त नहीं कर पाती जो हाथपर हाथ धरे बैठे रहना चाहते हैं और उन लोगोंके प्रति तो बिलकुल निष्ठुर हो उठती है जो प्रगतिके इन सारे कार्योंका विरोध करते हैं। नौकरशाही, आत्मपरितोष और निश्चिन्तताकी भावना तथा सामान्य निष्क्रियताके विरुद्ध 'सानफान'के विलक्षण आन्दोलनके रूपमें जो महान् राष्ट्रीय संघर्ष छेड़ा गया था वह प्रगतिकी ओर होनेवाले कृतसंकल्प अभियानका ही एक अङ्ग था। निरन्तर छ महीनेतक सभी क्षेत्रोंमें जनताके आचरणमें शुद्धता लाने और राष्ट्रकी कार्यक्षमता बढ़ानेके लिए समूचे देशमें बहुत ही जोरदार आन्दोलन चलता रहा। इस आन्दोलनमें कम्युनिस्ट पार्टीसे लेकर, विश्वविद्यालयों तथा व्यावसायिक क्षेत्रोंतक सर्वत्र ऊपरसे नीचेतक शुद्धिका विराट् आयोजन किया गया। अपराधी व्यक्तियोंपर सार्वजनिक रूपसे अभियोग लगाये गये। लोगोंको जनताके सामने अपनी गलतियोंको स्वीकार करनेके लिए विवश किया गया। राष्ट्रीय चरित्रके संशोधनके लिए ऐसे विचित्र तरीके अख्तियार किये गये कि कभी-कभी तो वे मुझे मानसिक उत्पीड़नसे मालूम होते थे। इसमें सन्देह नहीं कि राष्ट्रका चरित्र-निर्माण ही इन सबका एकमात्र महान् उद्देश्य था किन्तु इसके लिए जिन तरीकों का उपयोग किया गया वे मुझे कुछ-कुछ पुराने जमानेमें बलप्रयोगसे मनुष्योंके विचार बदलनेके लिए होनेवाले धार्मिक उत्पीड़न जैसे मालूम पड़ते थे।

संक्षेपमें नये चीनके सम्बन्धमें मेरी यह धारणा है कि उसने एक ऐसी बड़ी उथल-पुथलकी सृष्टि की है जिससे उच्च सभ्यतासे सम्पन्न चीनी जनता, जो बिखरी हुई और असंघटित अवस्थामें पड़ी हुई थी, आज संघटित होकर उठ खड़ी हुई है और चीनमें एक महान् आधुनिक राजका निर्माण हुआ है। उसने जनताकी बँधी हुई अपार शक्तिको उन्मुक्त कर दिया है, उसे एक नयी आशा और चीजोंको देखनेकी नयी दृष्टि दी है। उसने राष्ट्रमें महान् उत्साहका संचार किया है और उसमें आगे बढ़नेका

अदम्य संकल्प जाग्रत कर दिया है किन्तु इन नितान्त वाञ्छनीय उद्देश्योंकी सिद्धिके लिए जो तरीके काममें लाये जाते हैं वे बहुत बार स्वतन्त्र विचारके प्रतिकूल पड़ते हैं। राजकी तुलनामें व्यक्ति बिलकुल नगण्य-सा हो गया है। यह चीनके लिए एक विलक्षण बात है। इससे नये चीनकी क्रान्तिने चीन और एशियाके लिए जो कुछ किया है उसकी सराहना करते हुए भी मन कुछ खिन्न हो जाता है।